श्रीमती भागवन्ती देवी धर्म पत्नी श्री रोशनलाल
डुग्गर भठिन्डेवाले, ११६ वीर नगर दिल्ली-७

जैनधर्मभूषण प्रचार मन्त्री पंडित मुनि

श्री प्रेमचन्द्र जी महाराज

का

विहार और प्रचार

भाग १

सम्पादक

श्री भवानीशंकर त्रिवेदी

प्रकाशक

[भ]ागवन्ती देवी धर्मपत्नी श्री रोशन लाल दुग्गर

[झ]ण्डे वाले--११६ वीर नगर, दिल्ली-७

प्रकाशक

श्रीमती भागवन्ती देवी भठिन्डेवाले

११६ वीर नगर, दिल्ली-७

मुद्रक

पाईनीयर फाईन आर्ट प्रेस

दिल्ली-६

सूची

विषय	पृष्ट

विहार और प्रचार

एक विचार

"खुशनुमा दुनिया में वोह हाजतरवां मीनार हैं।
रोशनी से जिनकी मल्लाहों के बेड़े पार हैं।"

भारतीय संस्कृति, संत-संस्कृति है। उसकी जड़ों का—जो बहुत गहरी हैं—पोषण संतों ने किया है। उसका निर्माण बनाव संतों ने अपने पुरुषार्थ तथा श्रम से किया है। और यह सांस्कृतिक निर्माण एवं सृजन उसने एक स्थान पर मठाधीश बनकर नहीं, एक जगह आसन जमाकर नहीं, प्रत्युत यत्र-तत्र-सर्वत्र पैदल घूम-घूम कर, भारत के इस छोर से उस छोर तक पद-यात्रा तथा लम्बे-लम्बे विहार करके किया है। मार्गजनित अनेक विघ्न बाधाओं और संकट की विकट घाटियों को पार करके उसने धर्म, संस्कृति और सभ्यता का प्रकाश जन-जन के मन तक पहुंचाया है।

एक दिन भारत के महान सन्त महावीर और बुद्ध ने भी इस विहार पथ के पथिक बनकर अपने अहिंसा और सत्य के दिव्य संदेश द्वारा भारत के मैदानों में एक नयी क्रांति की उथल-पुथल मचा दी थी, भारत की काया पलट कर दी थी। महावीर और बुद्ध के अनुगामी भिक्षु और त्यागी सन्त ज्ञान की मशाल हाथ में लेकर जन मानस में ज्ञान की ज्योति जगाते हुए भारत के मैदानों में इधर से उधर तक घूम गए थे। उनके कठिन-कठोर और लम्बे विहारों के कारण भारत के एक प्रांत का नाम ही 'विहार' पड़ गया था, जो आज भी उनके विहार तथा प्रचार का जीवित स्मारक बनकर उनकी श्रम-निष्ठा की स्मृति को उद्बुद्ध कर रहा है।

महावीर की शासन परम्परा में पले हुए आज हम सन्त लोग जब पैदल विहार करते हुए गावों और नगरों में पहुंच जाते हैं, तो हमारे सामने अनेक

नये-नये प्रश्न आते रहते हैं। भारतीय जनता की ओर से। अभी-अभी जब मैं मेरठ से दिल्ली आ रहा था, तो गाजियाबाद में एक नयी सभ्यता एवं शिक्षा में दीक्षित महाशय ने मेरे से पूछा—"आप लोग मोटर, रेल और वायुयान में यात्रा क्यों नहीं करते ? पैदल विहार में आपको अनेक कठिनाइयों और परेशानियों का सामना करना पड़ता है, और समय तथा शक्ति का भी अपव्यय होता है। आप धीरे-धीरे चलकर महीनो में थोड़ी-सी यात्रा कर पाते हैं। रेल मोटर और वायुयान से आप चन्द घण्टों में कहीं के कहीं पहुंच सकते हैं फिर क्यों न आप ऐसा कर लेते ?"

मैंने कहा— विहार करना, पैदल चलना— यह तो सन्त का कुल धर्म है, कर्त्तव्य है। विहार के पीछे उसकी अहिंसक संस्कृति का मूल भूत आदर्श है। स्व-पर कल्याण-कामना का चमकता हुआ उद्देश्य रहता है संत की विहार यात्रा के मूल में। नियमित रूप में विहार करने से संत के संयम-जीवन चादर उजली बनी रहती है। उस पर आसक्ति, शैथिल्य, दौर्बल्य और विकार वासनाओं के काले दाग धब्बे नहीं लगने पाते। जीवन के उस वहते प्रवाह में किसी भी प्रकार का मैल जम नहीं पाता, ठहर नहीं पाता। उसमें संयम की पवित्रता निर्मलता अपने मूल रूप में बनी रहती है, इतना ही नहीं प्रत्युत वह संयम मूलक पवित्रता दिन-दिन बढ़ती रहती है। जीवन यथार्थतः आगे-आगे साफ सुथरा वनता चला जाता है विहार की नियमित एवं योजनापूर्ण दिव्य रेखाओं पर डालने से। पानी बहता ही अच्छा और संत चलता ही अच्छा— इस लोकोक्ति में जीवन का यथार्थ साकार होकर बोल रहा है :—

"बहता पानी निर्मला, पड़ा गंधीला होय !
साधु तो रमता भला, मैल न लागे कोय।"

इसीलिए, भारत का संत स्थावर नहीं, जंगम है। मठाधीश नहीं, परिव्राजक है। एक जगह जमकर बैठनेवाला नहीं, घुम्मकड़ है।

अपने जीवन की पवित्रता के साथ-साथ, अपनी विहार यात्रा तथा घुमक्कड़ी में वह जिन्दगी की सही राह से भूले भटके यात्रियों को भी जीवन

की सही राह दिखलाता है। जन-जन को ज्ञान का अमृत पिलाता है। अपने ज्ञान के उजियारे से जन मानस के अंधेरे को दूर भगाता है। अपनी दिव्यवाणी से वह सोते हुओं को जगाता है। अंगराई लेने वालों को बैठाता है। बैठे हुओं को उठाता है, उठते हुओं को चलाता है और चलते हुओं के कदमों को और गति देता है। भरत के संत का जीवन तो एक ऐसी पारसमणि है, कि जो भी उसके साथ अपना सम्पर्क स्थापित करता है, उससे छू जाता है, वह सोने का बन जाता है। जीवन की दरिद्रता एवं अभद्रता सदासर्वदा के लिए मिट जाती है उसकी।

इस प्रकार, भारत का सन्त—विशेषतः भगवान् महावीर की शासन-परम्परा में पला हुआ सन्त—आज के गये-बीते युग में भी स्व-पर के जीवन निर्माण का दुहरा दायित्व निभाता हुआ चल रहा है। आपके कथन के अनुसार, यदि संत भी मोटर, रेल और वायुयान में उड़ने लगे, तो सबसे पहले तो वह स्वयं अपने धर्म, कर्त्तव्य और अहिंसात्मक संस्कृति की हत्या कर बैठेगा। दूसरे, जन साधारण तक उसकी पहुँच फिर कहां हो सकेगी ? फिर तो वह कलकत्ता, बंबई, मद्रास, की दौड़ लगाएगा। वायुयान से उड़ान भरने पर तो लन्दन, पेरिस, न्युयार्क, वाशिंगटन, मास्को और टोकियो ही उसकी यात्रा के लक्ष्य बिन्दु बन जाएंगे। फिर वह धरती पर चलना भूलकर आकाश में उड़ने वाला बन जाएगा। गांव की साधारण जनता तक फिर कैसे पहुंचेगा ? आपको भी फिर ये हमारे जैसी मूर्तियां कहां नजर आएंगी इधर से उधर पद-यात्रा करती हुई और अहिंसा-सत्य का जन साधारण में प्रचार करती हुई ?

"इतना ही नहीं, विहार और पद-यात्रा का परित्याग करके वायुयान अथवा अन्य वाहन की ओर दौड़ने वाला भारत का सन्त फिर स्वाधीनता की अपनी मस्ती में नहीं रह पाएगा। फिर तो वह पराधीनता की शृंखलाओं में जकड़ जाएगा। रेल, वायुयान में उड़ान भरने के लिए फिर उसे पैसा भी चाहिए। दूसरों के आगे दीन-हीन बनकर हाथ पसारने के लिए उसे मजबूर होना पड़ेगा एक दिन। और यह बात याद रखिए कि ज्यों ही उसका जीवन

पैसे की ओर झुका, तो बस वह एकदम आकाश से जमीन पर ही गिरता जाएगा। फिर वह सन्त न रह कर कुछ और बन जायगा। पैसे के पीछे हजार हजार बुराइयां और वासनात्मक लहरें उसके जीवन को घेर लेंगी चारों तरफ से। वह विकार वासनाओं और दुनियावी प्रलोभनों का पुञ्ज बन जाएगा फिर एक तरह से। फिर वह किसी और का न बनकर मात्र अपनी लालसाओं, एषणाओं, इच्छाओं तथा महत्वाकांक्षाओं का दासानुदास बन जाएगा। कहिए, क्या आपको यह सब मंजूर है एक सन्त की जिन्दगी में ?

मेरी बात सुनकर वह प्रश्नकर्त्ता महाशय हाथ जोड़ते हुए बोले—"हां, महाराज ! आपकी बात सवा सोलह आने सही है। इतनी दूरदर्शिता से मेरे जैसा साधारण बुद्धि का आदमी कैसे सोच सकता है। सन्त तो आज यहां तो कल वहां— इस तरह विहार-माला में रमता ही भला।

इन सब विचारों की छाया में, यह प्रांजलतापूर्वक कहा जा सकता है कि सन्त के विहार और प्रचार का परस्पर अटूट संबन्ध है। उन दोनों को अलग नहीं किया जा सकता। विहार से अलग प्रचार और प्रचार से पृथक् विहार का कोई विशेष महत्व नहीं। दोनों का मूल्य महत्व एक-दूसरे से जुड़े रहने में ही है। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं वास्तव में।

प्रस्तुत पुस्तक 'विहार और प्रचार' इन्हीं विचारों और भावनाओं की ही तो एक जीती-जागती तसवीर है। महावीर की शासन-परम्परा के अनुगामी, स्थानकवासी जैन समाज के एक महान सन्त श्रद्धेय मंत्री श्री प्रेमचन्द जी महाराज के विहार और प्रचार की एक चलती फिरती झांकी है इसमें। जिसका अवलोकन-प्रत्यवलोकन करते ही आदत के एक सच्चे सन्त का उज्ज्वल, समुज्ज्वल, महोज्ज्वल जीवन का चल चित्र आंखों और मन के सामने आने लगता है, किस प्रकार भारत के इस महान् सन्त ने पंजाब, दिल्ली, उत्तर-प्रदेश राजस्थान, बंबई और सौराष्ट्र आदि प्रांतों में घूम-घूम कर जन मानस में अहिंसा एवं सत्य की ज्योति जगाई, जैन-दर्शन तथा जैनधर्म की दिव्य विचार-धारा जन-जन तक पहुंचाई, कहां, किस प्रकार उन्होंने भूले भटके और

वासनाओं में अटके मानव समुदाय को सुमार्ग पर लगाया, किस प्रकार हिंसक, क्रूर और कठोर मानस में भी अहिंसा तथा जीव-दया की कोमल एवं मृदुल भावनाएं जगायीं। भारत के ओर छोर तक किस तरह भागीरथ प्रयत्न द्वारा उन्होंने ज्ञान की गंगा बहाई, किस प्रकार अपनी निर्भयता भरी हुंकार-ललकार और सिंह गर्जना से अनेक रूढ़ियों और जड़ परम्पराओं के खोल को तोड़ फैंकने में अपनी वीरता का सक्रिय परिचय दिया, किस प्रकार उन्होंने 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' जीवन को अर्पण-समर्पण करके एड़ी-चोटी का पसीना एक किया, मार्ग जनित कठिनाइयों और तूफानों का मुस्कराहट के साथ स्वागत करके किस तरह जनता को उन्होंने ज्ञान का अमृत पिलाया हज़ार हज़ार हाथों से। य ही सब विचार-झलकियां को देखने को मिलेंगी, पाठकों को 'विहार और प्रचार' नामक इस अपूर्व-अनोखी कृति में।

दूसरे किन्तु स्पष्ट शब्दों में कह दूं, तो 'विहार और प्रचार' में पाठकों को भारत के एक जाने-माने, प्रचारक, इस महाजन् सन्त के व्यक्तित्व की झलक, विचार की झलक, आचार की झलक, व्यवहार की झलक, विहार की झलक, प्रचार की झलक, सजीवता के साथ देखने को मिलेगी। उनके जीवन और अनुभव तथा विहार और प्रचार की ये जिन्दा झलकियां जीवन की ठीक दिशा पाने-पहचानने के लिए पाठकों के अन्तर्गन को झकझोर कर प्रेरित-उत्प्रेरित करेंगी—ऐसा मेरा विश्वास है।

ज्येष्ठ-दशहरा
चांदनी चौक
दिल्ली
७-६-५७

—मुनि सुरेशचन्द्र, "शास्त्री"<br>"साहित्यरत्न"

निवेदन

इस प्रचार और विहार का विवरण किसी लिखितशृंखलावद्ध डायरी के आधार पर प्रस्तुत कहीं किया गया। आप श्री के सुशिष्य श्री वनवारीलाल जी महाराज ने अपनी स्मृति के द्वारा यथासंभव यह संकलन करने का प्रयास किया है। ऐसी परिस्थिति में यदि इसमें कहीं कोई न्यूनाधिकता रह गई हो तो उदाराशय महानुभाव इसकी ओर ध्यान न देंगे। आशा है महाराजश्री का यह विहार और प्रचार संकलन समाज की तात्कालिक गतिविधि के परिचय में सहायक होने के साथ ही साथ धर्म-भावना की वृद्धि में भी सहायक सिद्ध होगा।

—सम्पादक

रतलाम के विहार से लेकर जोधपुर चातुर्मास तक से विहार व प्रचार का परिचय प्रेमसुधा द्वितीय भाग के प्रारम्भ में भी प्रकाशित हो चुका है।

इस अवधि में महाराजश्री ने रतलाम से वम्बई समस्त गुजरात काठियावाड़ तथा मेवाड़, मारवाड़ आदि प्रांतों की हजारों मील लम्बी पद-यात्रा करते हुए इन प्रांतों में आध्यात्मिक भावना तथा सम्यत्त्व की ज्योति को सर्वत्र प्रज्वलित करने का अत्यन्त स्तुत्य कार्य किया है। इसका विस्तृत विवरण प्रेमसुधा द्वितीय भाग में देखें, यहाँ संक्षेप में दिया जा रहा है।

विहार प्रचार जो २०१४ में छपा था उसके समाप्त होने पर विहार-प्रचार का दूसरा संस्करण छप कर आप के हाथ में है, विहार और प्रचार का दूसरा भाग जिस में महाराज श्री का इस से आगे स्वर्गवास तक का वर्णन होगा आशा है कि थोड़े दिनों तक छप कर आप के सम्मुख आ जायेगी।

प्रवेश

चतुर्विध श्रीसंघ का ऐसा कौन धर्मानुरागी सदस्य होगा जो बालब्रह्मचारी पंजाबकेशरी पंडितरत्न शास्त्रज्ञ जैनधर्म भूषण मंत्री श्री १००८ प्रेमचन्द जी महाराज के व्यक्तित्व और कृतित्व से परिचित न हो। क्या बालक, क्या वृद्ध, क्या युवक, क्या युवती, क्या श्रावक, क्या श्राविका, क्या साधु, क्या साध्वी, सभी आपके नाम और अनुपम कार्यों से भली भांति परिचित और प्रभावित हैं। महाराज श्री जहां पधार जाते हैं अथवा जहां चातुर्मास में विराजते हैं वहां के समाज में एक उत्साह की अनुपम लहर सी छा जाती है। आपके प्रवचनामृत का पान करने के लिए जैन व जैनेतर जनता सदा लालायित रहती है। यही कारण हैं कि आपके सारगर्भित पांडित्य पूर्ण व्याख्यान 'प्रेमसुधा' के नाम से पुस्तकों के रूप में कई भागों में प्रकाशित हो चुके हैं।

महाराज श्री के सम्पूर्ण परिचय से अवगत होने की जिज्ञासा का प्रत्येक हृदय में जागृत होना स्वाभाविक ही है। दूसरी ओर संत पुरुष अपने बारे में कभी कुछ कहना नहीं चाहते। ऐसी स्थिति में हमें जो भी कुछ थोड़ा बहुत परिचय प्राप्त हो जाय उसी से संतोष कर लेना चाहिए।

हां तो महाराज श्री का जन्म आज से ५७ वर्ष पूर्व संवत् १९५७ सन् १९०० में नाहन स्टेट के अत्यन्त रमणीय प्रदेश में हुआ था। महाराज श्री के पूर्वजों की चलाचल सम्पत्ति व पैत्रिक भूमि रियासत नाहन व रियासत नालागढ़ दोनों स्थानों पर थी। महाराज श्री का जन्म तो नाहन रियासत की पोंटा साहब तहसील के अन्तर्गत ताल्वाल नामक ग्राम में हुआ था। पर

आपका लालन पालन आदि नालागढ़ स्टेट के अन्तर्गत दभोटा नामक ग्राम में हुआ ।

आपकी जन्म भूमि तारूवाल ग्राम को प्रकृति अपनी सम्पूर्ण सुषमा प्रदान किए हुये है । यमुना तट पर अवस्थित इस ग्राम के प्रान्तर भाग को अनुपम वनों की हरियाली सदा आच्छादित किये रहती है । विशाल शाल वृक्षों की पंक्तियाँ इस ग्राम के सौन्दर्य में मानो चार चांद ही लगा देती हैं । इस प्रकार प्रकृति सौन्दर्य से परिपूरित पर्वतीय प्रदेश के पवित्र प्रशांन्त वातावरण में जन्म पाकर तथा दूसरे पार्वतीय स्थान में अभिवृद्ध हो महाराज श्री के अन्तर्तम में निसर्गत: विरक्ति की भावनाएँ प्रारम्भ से ही प्रवुद्ध होने लगी थीं ।

नालागढ़ रियासत के अंतर्गत दभोटा ग्राम भी खूब हरा भरा और बारहों मास शस्यश्यामल रहने वाला एक मनोहर स्थान है । यह ग्राम चारों ओर की भूमि से ऊपर उठी हुई एक पहाड़ी के शिखर पर इस प्रकार अवस्थित है मानो शरीर पर उत्तुंग मस्तक सुशोभित हो रहा हो । इस ग्राम के दोनों ओर कलरव करती हुई सरिता बारहो मास प्रवाहित रहती है ।

महाराज श्री का जन्म एक सामान्य सैनी राजपूत परिवार में श्री चौधरी गैंदामल जी के घर अनुमानतः सन् १६०० में हुआ । आपकी माता श्रीमती साहब देवी जी भी एक बड़ी धर्म परायण सुशील आदर्श महिला थीं । आपका बचपन का नाम बाबू राम था । तेरह चौदह वर्ष की अवस्था में शतलुज नदी के तट पर अवस्थित रोपड़ नगरी में आपका कुछ समय के लिए आना हुआ ।

वैराग्य भावना का उदय :—रोपड़ में उस समय महा तपस्वी मुनिराज श्री गोविंद राम जी महाराज वृद्धावस्था के कारण स्थानापति रूप से विराजमान थे । उसी वर्ष चारित्रचूड़ामणि बालब्रह्मचारी पंजाबकोकिल श्री मया राम जी म० के सुशिष्य बाल ब्रह्मचारी श्री वृद्धि चंद जी महाराज व श्री कंवर सेन जी महाराज और श्री मामचन्द जी महाराज, ठाणा तीन का चातुर्मास रोपड़ में सम्पन्न हुआ । स्थानीय श्री संघ के उत्साही सदस्य श्री चौधरी दुनी-

चंद जी ओसवाल के सुपुत्र लाला लक्ष्मण दास जी भावुक बाबूराम को साथ लेकर उन दिनों श्री गोविन्दराम जी महाराज के दर्शनार्थ उपाश्रय में जाया करते थे। श्री गोविन्दराम जी महाराज का जब चातुर्मास के पूर्व ही स्वर्गवास हो गया, तो बालक बाबूराम ने लाला लक्ष्मण दास जी के साथ श्री वृद्धि चन्द जी महाराज आदि मुनिराजों के दर्शनार्थ आने का क्रम जारी रखा। इस प्रकार हमारे चरितनायक भी जैन मुनिराजों के सम्पर्क में आये। जैसे शुभ्र वस्त्र पर कोई भी रंग अनायास चढ़ जाता है और उत्तरोत्तर वह रंग चटकीला और गहरा होता जाता है, वैसा ही बालक बाबू राम जी के निर्मल अंतःकरण पर वैराग्य की छाप बचपन में ही लग गई। देखते ही देखते वैराग्य का रंग इतना गाढ़ा हो गया कि—

सब दुनियावी रंगों को छोड़ रंग-हीन निर्मल श्वेत चादर धारण कर मुनि वृत्ति को अपनाने का निश्चय कर लिया। जो वैराग्य भावना का अंकुर एक बार मानस-भूमि में उग चुका था वह धीरे-धीरे पल्लवित और पुष्पित होकर कुछ ही समय में फल ले आया। और परिणाम स्वरूप चातुर्मास की समाप्ति होते ही पन्द्रह वर्ष की अल्पवय में ही आपने मुनिराज श्री वृद्धि चन्द जी महाराज के चरण कमलों में दीक्षा ग्रहण कर ली।

स्वयं दीक्षित होने के लगभग पच्चीस वर्ष पश्चात् आपने-अपने अग्रज (सगे बड़े भाई) श्री तुलसी राम जी को भी दीक्षा दे दी।

इस प्रकार न केवल आपने स्वयं, प्रत्युत अपने परिवार वालों को भी आत्म-कल्याण के मार्ग पर चलने चलाने का क्रियात्मक उदाहरण उपस्थित कर दिखाया। महात्मा बुद्ध ने जिस प्रकार अपने परिवार के बड़े लोगों (पिता आदि) को दीक्षित कर उन्हें आत्म-कल्याण के मार्ग पर चलाया था। ठीक उसी प्रकार श्री प्रेमचन्द जी महाराज ने भी अपने अग्रज को दीक्षित कर—

'Charity Begins at Home'

अंग्रेजी की इस उक्ति को 'आत्म कल्याण के मार्ग पर पहले अपने घर

वालों को चलाओ', इस रूप में चरितार्थ कर दिखाया। अहोभाग्यशाली है वह परिवार, वे जननी तथा जनक जिनकी दो दो संताने मुनिवृत्ति ग्रहण कर अपने और समाज के लोक-परलोक दोनों सुधारने के लिए प्रयत्नशील हो मुक्ति से प्रशस्त पथ पर चल पड़े।

महाराज श्री के सम्बन्ध में श्री विजय मुनि जी महाराज ने 'जैन प्रकाश' के सं० २०१४ के श्री महावीर जयन्ती अंक में बड़े ही भाव पूर्ण शब्दों में मार्मिक उद्‌गार व्यक्त किए हैं। पाठकों के लाभार्थ मुनि श्री के वे भाव यहाँ ज्यों के त्यों उद्धृत किए जा रहे हैं—

एक ज्योतिर्धर व्यक्तित्व—

पंजाब केसरी श्रद्धेय प्रेमचन्द्रजी महाराज

(श्री विजय मुनि, साहित्यरत्न)

एक महान् व्यक्तित्व जो कठोर होकर भी मृदु है, वृद्ध होकर भी विचारों में तरुण है, पुराना होकर भी जैन-संस्कृति के प्रसार में नया है। वह महान् व्यक्तित्व है—"पंजाब केसरी, जैन धर्मभूषण श्रद्धेय प्रेमचन्द्रजी महाराज।" "विचारक, अद्वितीयवादी, ओजस्वी प्रवक्ता और समाज सुधारक" इन चार शब्दों की गागर में जैन भूषणजी महाराज की विशाल जीवन सागर अन्तर्भुक्त हो जाता है। यदि पंजाब केसरीजी महाराज का इससे भी संक्षिप्त परिचय पाना हो तो मैं स्पष्ट शब्दों में कहूंगा—

"जैसा विचार, वैसा उच्चार और जैसा उच्चार वैसा आचार।" न किसी प्रकार की लाग, न किसी प्रकार की लपेट और न किसी प्रकार की हेरा-फेरी जो विचारा, वह कह दिया, जो कह दिया, वह कर दिखाया। ज्योतिर्मय जीवन में सर्वत्र प्रकाश-ही-प्रकाश, अन्धकार को वहां जगह नहीं।

गृहस्थ कहा करते हैं, और सन्त भी कहा करते हैं—"पंजाब केसरी बड़े ही कठोर हैं।" मैं भी इस सत्य को स्वीकार करके चलने वालों में हूं। परन्तु

कुछ विचार-भेद के साथ। जीवन न सदा मृदु अच्छा, और न सदा कठोर अच्छा। श्रद्धेय पंजाब केसरीजी महाराज के जीवन को सदा कठोर मानकर चलने वाला भूल में हैं। वे कठोर हैं, अवश्य ही कठोर हैं, परन्तु व्यवहार के प्रारम्भिक क्षणों में हैं। आप जरा आसन जमाकर उनके श्री चरणों में बैठिए, आपको लगेगा कि यह व्यक्तित्व असाधारण है। उपनेत्र में से झाँकते हुए तेजस्वी नेत्रों का तेज आपको दहला देगा, वाणी की प्रथम स्वर भी सम्भवतः आपको कठोर प्रतीत हो, परन्तु आप डरिए नहीं। कोई तत्व चर्चा, कोई समाज चर्चा छेड़ दीजिए फिर आप देखिये, जिसे आप भयावह समझते थे, वह कितनी अभय की मूर्ति हैं। जिसे आप कठोर समझते थे, वह कितना मृदु है। वस्तुतः कठोरत्व उनके हृदय में नहीं, व्यवहार में भी नहीं, वह है उनकी वाणी में। इसका एक कारण है और वह है—"स्वयं अनुशासन में रह कर चलना और दूसरों को भी वे अनुशासन की सीमा से बाहर देख नहीं सकते। अनुशासन—प्रियता उनके दिव्य जीवन का सहज-सुलभ गुण है, उसकी रक्षा के लिए उनकी वाणी का स्वर कठोर हो जाता है। किन्तु उनका मानस सदा सरस, मृदु और मधुर है। अनुशासन की संरक्षा के लिए अभिव्यक्त होने वाली कठोरता उनका दूषण नहीं बल्कि भूषण है। भारतीय संस्कृति में सफल शासक वही है जो समय पर मृदु भी हो सकता है और समय पर कठोर भी हो सकता है। एक संस्कृत कवि के शब्दों में पंजाब केसरी जी महाराज के सम्बन्ध में कहना होगा—

"वज्रादपि कठोराणि, मृदूनि कुसुमादपि।"

वे वज्र से भी कठोर हैं, और कुसुम से भी अधिक कोमल। उनके महान् जीवन की व्याख्या इससे अधिक सुन्दर, अन्य नहीं हो सकती।

उनके जीवन के सम्पर्क में जो भी एक बार आ जाता है, वह उन्हें जीवन-भर भूलने की भूल नहीं कर सकता। जिस व्यक्ति ने उनके प्रथम दर्शन किए हैं, उससे यदि पूछा जाय तो वह यही कहेगा—

"जैसा सुना, वैसा देखा। नहीं, नहीं सुनने से अधिक देखा। सुनने से जो चित्र अधूरा था, देखने से वह पूरा बना।" उनके जीवन के सम्बन्ध में यह तथ्य है कि "श्रुत को दृष्ट बनाकर वह व्यक्ति टोटे में नहीं रह सकता।"

श्रद्धेय पंजाब केसरी जैनधर्म भूषण मन्त्री श्री प्रेमचन्द्रजी महाराज के जीवन का बाहरी परिचय यह होगा—

"सुघड़ और सुन्दर शरीर। लम्बा कद भरवा शरीर, उज्ज्वल गोरा रंग। उन्नत और विशाल भाल। सिर पर दुग्धधवल केशराशि, विरलरूप में सुशोभित। नासिका समरूप में अवस्थित आर्यत्व का प्रबल प्रमाण। अनुभवशीलता को अभिव्यक्त करती—घनी भौंहें। चमचमाती आंखें उपनेत्र में से पार होकर आत्मिक तेज प्रकट करती हैं। मधुर मुस्कान से भरा चेहरा। पैरों में अंगद जैसी दृढ़ता और हाथों में हनुमान जैसी अपरिमित शक्ति। जिस सिद्धान्त पर कदम रखा, फिर वहां से हटना मुश्किल। जिस काम को हाथों में उठा लिया, फिर उसे करके ही छोड़ा।" यह है उस व्यूढोरस्क, महाबाहु पंजाबकेसरी श्रद्धेय जैनभूषणजी महाराज का चलचित्र जो आज भी पंजाब, मेवाड़ मारवाड़, मालवा, महाराष्ट्र, गुजरात और थली प्रान्त में पंचवर्षीय सुदीर्घ विहार यात्रा पूरी करके भारत की राजधानी देहली में विराजित हैं।

जैसा सुन्दर आपका शरीर है, उससे भी बढ़कर सरस और मधुर आपका कोमल मानस है। उसमें प्रान्त और सम्प्रदाय के क्षुद्र घेरे नहीं हैं। उसमें तो आपको सर्वगुणग्रहिता का ही वास मिलेगा। आपका मृदुल मानस समाज की हीन दशा देखकर विचारमग्न होने लगता है। समाज के अभ्युदय में आप को कितना रस है, कितनी लगन है और आप उसके कल्याण के लिए कितने प्रयत्नशील हैं। इस बात का प्रमाण आपके सदुपदेश द्वारा संस्थापित एवं प्रचारित वेजीटेरियन सोसाइटी है, जिसके माध्यम से आपने पंजाब के ग्राम-ग्राम में और नगर-नगर में इसकी शाखाएं खोलकर मांस-भोजियों को निर्मास भोजी बनाया। समाज की रक्षा के लिए आपने पंजाब में और गुजरात में जो काम किए हैं वे किसी से छुपे हुए नहीं हैं। सुधारक के रूप में आपने सभी

समाजगत बुराइयों को दूर करने का भरसक प्रयत्न किया है और आज भी आप इस क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। जैन धर्म और जैन संस्कृत के प्रचारकों में आपका मुख्य स्थान है। सादड़ी, सोजत और भीनासर के सम्मेलनों में समाज के संघटन के लिए जो महान् कार्य आपने किए हैं उनसे कौन अपरिचित है। समाज के संघटन को सुरक्षित रखने के लिये आपने संघ विघटकों को ललकार दी है। कान्फ्रेंस द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर में आपने प्रश्न चार के उत्तर में स्पष्ट रूप से श्रमण संघ के संघटन में सुदृढ़ आस्था व्यक्त की है और नया संघटन करने वाले श्रीयुत डोसीजी और उनके प्रच्छन्न गुरुओं को स्पष्ट चेतावनी भी दी है—

"जो नया संघटन स्वतन्त्र रूप से कोई साधु या कोई श्रावक कर रहा हो वह'''......उचित नहीं।"

निर्भीकता आपका विशेष गुण है। संघ संघटन में विघटन की दरार डालने वाले चाहे सैलाना के श्रीयुत डोसीजी हों, या उनके पीछे रह कर विघटन करने वाले कोई मुनि हों, आपकी निर्भीक चेतावनी दोनों को समान भाव से है। भला जिस संघटन के लिए आपने इतना महान परिश्रम किया है, उसे यों ही टूटने देना कैसे सहन कर सकते हैं। संघटन के प्रति यह सुदृढ़ निष्ठा आपकी वस्तुतः प्रशंसनीय है।

आपका सर्वतो महान् गुण है, वक्तृत्व कला। आपकी भाषण शैली बड़ी ही रसीली और ओजपूर्ण है। भाषण क्या है? शान्त एवं हास्य रस के अद्भुत सम्मिश्रण की सरिता ही बहने लगती है, जिसमें श्रोतागण झन-चून करते आनन्द में झूमने लगते हैं। भाषण के बीच-बीच में व्यंग्य करते रहना, आपके आनन्दी हृदय का सहज स्वभाव ही है। भाषा सीधी सादी, रसील और विचार नूतन हैं। भावों के दुराव-छराव को आप जरा भी पसन्द नहीं करते। आपके ओजस्वी प्रवचनों का प्रभाव जनता के मानस पर अमिट रूप में पड़ता है। अपने प्रवचनों में सिद्धान्त का विश्लेषण करके विषय को गम्भीर

बनाने की कला में आप बेजोड़ हैं। आपके प्रवचन 'प्रेम सुधा' के रूप में प्रकाशित हो रहे हैं। पाठक उनका अध्ययन करके भी श्रद्धेय पंजाब केसरी जी महाराज के महान् व्यक्तित्व के सम्बन्ध में बहुत कुछ ज्ञानोपार्जन कर सकते हैं। महासागर से जितना भी ले सकें, अच्छा है।'[1]

पाठक गण, पूर्व प्रस्तुत परिचय से पंजाब केसरी श्री श्रद्धेय महाराज श्री के दिव्य जीवन की एक झलक आप देख ही चुके हैं। महाराज श्री के मुनि जीवन को हम अनायास ही दो प्रमुख भागों में विभक्त देखते हैं, प्रथम संवत १९९० तक का मौन साधनात्मक जीवन, तथा द्वितीय संवत् १९९१ के पश्चात् का साधना सहित प्रचार व लोकोपकार मय जीवन।

साधु जीवन स्वीकार करने के पश्चात् महाराज श्री के लगभग पन्द्रह चातुर्मास अपने प्रातः स्मरणीय गुरुदेव श्री १००८ बाल ब्रह्मचारी श्री वृद्धि-चन्द जी महाराज के साथ ही साथ सम्पन्न हुए। चातुर्मास हो या विहार इन पन्द्रह वर्षों की अवधि में महाराज श्री प्रतिक्षण प्रतिपल सतत साधना-तत्पर रहे। शास्त्र-चिन्तन सूत्र व आगमों का अध्ययन तथा वैयावृत्य या साधु-सेवा ही को आप इस अवधि में अपना प्रमुख कर्तव्य मान कर उसी में दत्तचित्त हो गये। बात तो यह है कि जब तक कोई भी साधक अहर्निश की साधना के द्वारा स्वयं अपने में कुछ विशेष क्षमता, योग्यता और अनुभूति आदि प्राप्त न कर ले तब तक आत्मा-कल्याण के साथ-साथ लोक-कल्याण के प्रशस्त पथ पर निर्द्वन्द्व गति से अग्रसर होना बड़ी टेढ़ी खीर है।

साधु को पंचमहाव्रतधारी तो होना ही चाहिए इसके साथ ही साथ वैयावृत्य-व्रतधारी तथा स्वाध्यायशील भी होना आवश्यक है। भगवान् महावीर स्वामी ने वैयावृत्य से तीर्थंकर पद की प्राप्ति जैसे महान फल की प्राप्ति का विधान किया है। तीर्थंकर पदवी से बढ़ कर और कोई पदवी विश्व में हो सकती नहीं। जिस व्रत के द्वारा वह पदवी भी प्राप्त हो जाय उसकी महिमा

---

[1] जैन प्रकाश ८-४-५७ के अंक से उद्धृत

का कौन वर्णन कर सकता है। यही कारण है कि महाराज श्री ने अपने साधु जीवन का सुदीर्घ काल पंचमहाव्रतों के पालन के साथ ही साथ वैयावृत्य और स्वाध्याय के द्वारा आत्म-शक्ति के विकास के लिए समर्पित कर दिया। और जब पंजाबकेसरी की आत्म-ज्योति पर्याप्त प्रबुद्ध हो उठी, और इतनी पूंजी एकत्रित करली गई कि जिसका कुछ भाग श्रीसंघ के अन्य अंगों में भी वितरण किया जा सके तो आप आत्म-कल्याण के साथ ही साथ लोक-कल्याण के लिए भी कटिबद्ध हो गये।

आगामी पृष्ठों में पंजाबकेसरी श्रीयुत प्रेमचन्द्र जी महाराज के द्वारा विगत पच्चीस वर्षों में सम्पन्न हुई समाजसेवा-सम्बन्धी विविध प्रवृत्तियों का दिग्दर्शन कराने का यथामति प्रयत्न किया जा रहा है। महापुरुषों के कार्य-कलापों के स्मरण चिन्तन व पठन-पाठन से विचारों व भावनाओं के उदात्तीकरण के साथ ही साथ आत्मा में निसर्ग उज्ज्वल पवित्र प्रेम की पावन मंदाकिनी बह निकलती है।

प्रिय पाठक वृन्द, आइये हम भी श्री प्रेमचन्द जी महाराज के पच्चीस वर्ष के पुनीत चरित्र की सुमधुर शीतल स्निग्ध सतत प्रवाहित रस धारा का आस्वादन व अवगाहन कर अपने आप को भी उनके कर्मशील जीवन के पद चिन्हों पर चल सकने को प्रस्तुत करने के लिए प्रयत्नशील हो जायें। साथ ही साथ यह भी देखते चलें कि विगत दो युगों में हमारा चतुर्विध श्रीसंघ साधु साध्वी और श्रावक-श्राविकाओं का समाज प्रगति-पथ पर अग्रसर होता हुआ कहां तक पहुँचा है, उसने इन वर्षों में क्या उपार्जित किया है और क्या खोया है, क्योंकि आत्मालोचन भी प्रत्येक श्री संघ के सदस्य का वैयक्तिक और सामाजिक परम प्रमुख कर्तव्य है।

देहली चातुर्मास

(सं० १९९१)

इस पुनीत चरित चिन्तन व आत्मालोचन रूप महाराज श्री के प्रचार व विहार का श्रीगणेश वीर संवत २४६० विक्रम संवत १९९१ (सन् १९३४) से करना उचित प्रतीत होता है।

यह वर्ष वास्तव में अनेक दृष्टियों से ऐतिहासिक महत्वपूर्ण एवं स्मरणीय था।

अजमेर में अखिल भारतीय वृहत् साधु सम्मेलन सोल्लास सम्पन्न हो चुका था। इस ऐतिहासिक सम्मेलन के संदेश को नगर नगर ग्राम ग्राम व घर-घर पहुँचने के लिए साधु-साध्वी गण बड़े उत्साह-शील दिखाई दे रहे थे। श्रीसंघ के प्रत्येक सदस्य का मुखमंडल अमन्द उत्साह की आभा से आलोकित हो रहा था। राजनैतिक दृष्टि से देखने पर ज्ञात होता है कि राष्ट्र व देश स्वातंत्र्य-प्राप्ति के लिए अपने अंतिम प्रयत्न की तैयारी में लगा हुआ था।

किन्तु वाह्य दृष्टि से यह समय कुछ अवसाद का सा प्रतीत होता था। आशा और निराशा की विचित्र द्वाभा की इस वेला में सांसारिक मोह का त्याग कर समाज कल्याण के लिए बद्ध-परिकर हो जाने वाले महापुरुषों— साधु-संतों, मुनिराजों, महात्माओं तथा राजनैतिक नेताओं के लिए कर्म की अनुपम प्रेरणा प्रकृति से ही प्राप्त हो रही है।

बस ऐसे ही समय में पंजाबकेसरी श्री प्रेमचन्द जी महाराज का संवत १९९१ का चातुर्मास भारत की राजधानी देहली नगरी में बड़े समारोह के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ। उसी वर्ष देहली के पड़ोसी प्रमुख नगर भारत

वर्ष की पुरानी राजधानी आगरा नगरी को स्वर्गीय आचार्य पूज्य श्री १००८ काशीराम महाराज का चातुर्मास कराके उनके उपदेशामृत पान करने का अभूतपूर्व अवसर प्राप्त हुआ था।

चातुर्मास समाप्त होते होते साधु-समाज विहारोद्यत हो आठ मास के लिए ग्राम ग्राम व नगर नगर में विचरण करते हुए नाना प्रकार के परिषहों को सहन करने के लिए सानन्द तत्पर हो जाता है।

पंछी का और साधु का क्या ठिकाना, आज यहां तो कल कहां। आज यहां अपनी अमृत वर्षा से सैकड़ों हजारों नर नारियों के हृदयों में आत्म कल्याण की भावना भर रहे हैं, तो, कुछ ही दिनों पश्चात् पैदल विहार करते हुए भी जाने कितने कोसों दूर जाकर वहां के समाज को कृतार्थ करते हैं। न भूख की चिन्ता न प्यास की। न इन्हें धूप सताये न गर्मी न सर्दी। कड़कती हुई धूप हो, आकाश अंगारे उगलता हो, नीचे से पृथ्वी तपे हुए लाल लोहे की तरह जल रही हो, पर फिर भी यह दृढ़व्रती मुनिराज ग्रामानुग्राम नंगे सिर नंगे पांव विचरण करते ही रहते हैं।

धन्य है इनके हृदय में जगमगाती हुई वह लोक-कल्याण की भावना, जिससे प्रेरित व प्रोत्साहित होकर ये मुनिराज वर्ष के आठ मास तक निरन्तर पैदल विहार करते हुए सदा सर्वदा अपने लक्ष्य की प्राप्ति की ओर कदम बढ़ाते ही जाते हैं। एक बार आगे बढ़ा हुआ इनका कदम फिर पीछे हटने का नाम नहीं लेता।

ऐसे हैं ये वीर। और जो महावीर के उपासक हों वे भला ऐसे क्यों न हों। इसी साधु-चर्या का पालन करते हुए संवत् १९९१ के चातुर्मास समाप्ति के दिवस निकट आ पहुंचे। विविध नगरों और ग्रामों के श्रावक श्राविकाओं के गण सामूहिक रूप से एकत्रित हो होकर विभिन्न स्थानों व स्थानकों में यत्र तत्र विराजित आदरणीय मुनिराजों व आर्याओं की सेवा में उपस्थित हो अपने अपने ग्रामों व नगरों को उन साधु साध्वियों के पावन चरण-रजकणों

से पवित्र करने की प्रार्थना करने लगे। उधर मुनिराज भी उसे भाइयों और बाइयों की आग्रह भरी विनती के अनुसार सुखे समाधे विविध क्षेत्रों को परसने के भाव व्यक्त करने लगे।

उक्त परम्परा—क्रमानुसार जब पंजाब केसरी मन्त्रीपद विभूषित श्री प्रेमचन्द जी महाराज का संवत् १६६१ का चातुर्मास देहली सदर बाजार में बड़े आनन्द व उत्साह के साथ सम्पन्न हो गया, तो महाराज श्री की सेवा में विविध नगरों के श्रीसंघों के डेपुटेशन अपने अपने नगरों को परस कर कृतार्थ करने की विनती करने के लिए आने लगे।

महाराज श्री के लिए ही क्यों सभी प्रमुख मुनिराजों के लिए यह समय बड़ा ही विचित्र और स्मरणीय होता है। सभी आग्रह एक दूसरे से बढ़ कर होते हैं। किसके लिए स्वीकृति दें, और किसके लिए स्वीकृति न दें। बड़े-बड़े वैभवशाली सब प्रकार की सुख सुविधाओं से भरे पूरे महामहिम नगरों की भी विनतियाँ होती हैं और महा दरिद्र सब प्रकार के अभावों से ग्रस्त, जीवन की समग्र सुख सुविधाओं से रहित दूर एकान्त कोनों में पड़े हुए, गरीब गावों और कस्बों के श्रद्धालु नर-नारियों की भी विनति होती है। वे भी चाहते हैं कि महाराज श्री के चरण स्पर्श से हमारी धरती भी कृतार्थ हो। सर्वत्र सम भाव रखने वाले मुनिराज भी सब प्रकार के सुख दुःख और सुविधा असुविधा की कुछ परवाह न कर प्रत्येक क्षेत्र को परसने के लिए सदा तत्पर रहते हैं।

अतः जब अनेक नगरों की विनतियों में से फर्रुख नगर से आये हुए शिष्ट मंडल ने महाराज श्री से अत्यन्त करुण और विनीत वचनों में अपने हार्दिक मनोभावोंको व्यक्त करते हुए निवेदन किया कि—

महाराज जी, हमारे क्षेत्र में बहुत समय से किसी भी स्थानक वासी साधु साध्वी महाराज के पधारने की कृपा नहीं हुई है। अतः यदि आप हमारे क्षेत्र को परसने की कृपा करें तो आपकी बहुत ही अनुकम्पा होगी।

फर्रुखनगर में यूं तो जैन समाज पर्याप्त संख्या में है। पर स्थानकवासी समाज के घर बहुत थोड़े से केवल चार पांच हैं और बाकी सब के सब दिगम्बर जैन मान्यता वाले हैं। यदि कोई मुनिराज पधार जाय तो हम भी अपने धर्म की प्रभावना करना चाहते हैं। कई वर्षो से किसी मुनिराज के न पधारने पर भी हम किसी दूसरे के प्रभाव में नहीं आये। यदि अब भी हमारे क्षेत्र में कोई साधु साध्वी जी महाराज न पधारे तो हमारी संतति पर दूसरों के प्रभाव पड़ने की संभावना हो सकती है।

इस प्रकार निवेदन करते करते फर्रुखनगर के इस शिष्ट मंडल में सम्मिलित चौधरी मनोहर लालजी आदि भाइयों की आखों में आंसू झलकने लगे।

उक्त सारी परिस्थिति को देख कर उनकी आग्रह भरी विनती को मान देते हुए महाराज श्री ने सुखे समाधे इस क्षेत्र को परसने के भाव दर्शाये। इस पर समागत शिष्ट मंडल परम पुलकित हो हमने नगर को लौट गया।

इस प्रकार सदर बाजार देहली का चातुर्मास सानन्द सम्पन्न हो कर चांदनी चौक बारादरी स्थानक देहली में महाराज श्री ने पदार्पण किया।

स्थविर गणावच्छेदक-पदविभूषित श्री छोटे लाल जी महाराज वात रोग (वायु) की व्यथा के कारण यहीं पर ठाणापति रूप में विराजमान थे। उस वर्ष वर्तमान श्रवणसंघाचार्य श्री आत्माराम जी महाराज का चातुर्मास भी गणावच्छेदक पंडित श्री छोटे लाल जी महाराज की सेवा में ही सम्पन्न हुआ था।

कविसम्राट् श्री अमर चन्द जी महाराज ठाणा दो भी अध्ययन के लिए इस चातुर्मास में यहीं पर विराजित थे। पंडित श्री हेमचन्द जी महाराज और कवि श्री अमर चन्द जी महाराज इन दोनों मुनिराजों को अध्ययन कराने के लिए जैन दर्शन के प्रकाण्ड विद्वान् वेचरदास जी का प्रवन्ध किया गया था।

राजधानी से अपूर्व मुनि मिलन

इस प्रकार उक्त मुनिराज तो देहली में पहले से विराजित थे ही, इसी समय

पूज्य श्री अमोलक ऋषि जी महाराज भी बारादरी में पधार गये। तदनन्तर तात्कालिक युवाचार्य तथा बाद में आचार्य पद को सुशोभित करने वाले बाल ब्रह्मचारी पंजाबकेसरी पंडितरत्न पूज्य श्री काशीराम जी महाराज तथा शतावधानी पंडित श्री रतनचन्द जी महाराज, श्री भागमलजी महाराज व उनके सुशिष्य श्री पंडित त्रिलोकचन्द जी महाराज आदि मुनिवृन्द भी देहली सदर बाजार के स्थानक में पधार गये।

ये सब मुनिराज अजमेर बृहत् साधु सम्मेलन में भाग लेकर आगरा आदि नगरों में चातुर्मास कर देहली पधारे थे।

इस प्रकार हम देखते हैं कि देहली श्रीसंघ के लिए संवत् १९९१ का यह वर्ष सचमुच स्मरणीय एवं ऐतिहासिक गौरव सम्पन्न था। जबकि भारत भर की प्रमुख विभूति स्वरूप अनेक महामहिम मुनिराजों के पदार्पण से यह नगरी कृतार्थ हुई थी। सचमुच वे क्षण कैसे अनर्घ थे, वह अवसर कैसा स्वर्णिम था, जब कि राजधानी को, और यहाँ के चतुर्विध श्रीसंघ को पूज्य श्री काशी राम जी महाराज, पूज्य श्री अमोलक ऋषि जी महाराज शतावधानी श्री रतन चन्द जी महाराज, जैन धर्म दिवाकर पूज्य श्री आत्माराम जी महाराज, आदि अनेक प्रमुख संघ संचालक श्रद्धेय मुनिराजों के दर्शन एवं उपदेशामृत पान करने का एक साथ सौभाग्य प्राप्त हुआ था। वास्तव में ऐसे अविस्मरणीय अवसर किन्हीं पुण्यशाली नगरों को कभी कभी ही प्राप्त होते हैं।

देहली सदर बाजार और चांदनी चौक बारादरी के स्नातकों में श्रद्धालु श्रावक श्राविकाओं तथा जिज्ञासु साधु साध्वियों की भीड़ लगी ही रहती थी। जब देखो तभी शास्त्राध्ययन, तत्व-चिन्तन और विविध शंकाओं का समाधान होता रहता था।

देहली से विदाई

भला कौन मुनिराज हो सकता था, जो ऐसे दिव्य जीवन में कभी कभी प्राप्त होने वाले सुअवसर को छोड़ इन सब मुनिराजों से बिछुड़ना चाहेगा।

किन्तु साधु-नियमों की यही तो बड़ी कठोर मर्यादा है, कि बड़े से बड़े सुअवसरों को भी स्वेच्छा पूर्वक सानन्द अपने नियम पालन के लिए छोड़ देना पड़ता है। सब प्रकार के ममता मोह का परित्याग ही साधु जीवन का सबसे बड़ा लक्षण है। तदनुसार देहली में विराजित इन सब मुनिराजों ने भी निर्धारित नगरों की ओर विहार का उपक्रम कर ही दिया।

बाल ब्रह्मचारी गुरुदेव श्री वृद्धिचन्द जी महाराज के साथ पंडित रत्न श्री प्रेमचन्द जी व आपके शिष्य श्री बनवारी लाल जी ठाणा तीन ने चिराग दिल्ली की ओर विहार किया। इस विहार के समय देहली के जैनाजैन भाइयों बाइयों की हार्दिक श्रद्धा सहस्र मुखी हो कर उमड़ पड़ी थी। देहली से विहार कर महाराज श्री यहाँ से १२ मील दूर चिराग़ दिल्ली नामक छोटे से कस्बे में जा विराजे। प्राचीन बादशाही जमाने में यहां से दिल्ली का चिराग़ दिखाई देता था, इसलिए इस गांव का नाम चिराग़ दिल्ली रक्खा गया। यह एक छोटा सा गांव है। यहां पर कुछ श्रद्धालु जैन भाइयों के घर हैं। जो साधु-सेवा के लिए सदा उद्यत रहते हैं। यहां से चलकर आप महरौली पधारे। महरौली दिल्ली से १६ मील दूरी पर अवस्थित है, प्रसिद्ध कुतुब मीनार यहीं पर है।

कुतुब मीनार को पहले गुप्त वंशी सम्राटों ने बताया था। इसका प्राचीन नाम 'यमुना-स्तम्भ है। बाद में कुतुबद्दीन ऐबक ने इसे इस्लामी रूप देकर उसे अपने नाम पर विख्यात कर दिया। कुतुबमीनार से पास में ही पृथ्वीराज के बनाये हुए भवनों और मन्दिरों के ध्वंसावशेष हैं। जिनको मुसलमान सम्राटों ने मस्जिदों के रूप में परिवर्तित कर दिया था। यहां पर चन्द्रगुप्त का बनाया हुआ प्रसिद्ध लोह स्तम्भ है, जो संसार का एक महान् आश्चर्य समझा जाता है। क्योंकि आज सोलह सौ वर्ष बीत जाने पर भी वर्षा वायु या धूप का इस पर कोई भी प्रभाव न पड़ा। वह ज्यों का त्यों ऐसे चमक रहा है मानों अभी ढलकर आया हो, इस स्तम्भ का निर्माण चौथी शताब्दी में चन्द्रगुप्त के समय में हुआ था। इनके अतिरिक्त यहां अन्य भी अनेक प्राचीन खंडहर हैं, जो यह घोषित कर रहे हैं कि प्राचीन युग में यह एक बहुत बड़ा वैभव

शाली समृद्ध नगर था। और कभी भारत की राजधानी रहने का सौभाग्य भी इसे प्राप्त हो चुका था।

अनेक छोटे मोटे सरोवरों वापी-कूप तलावों, छोटी छोटी पहाड़ियों, और सघन विशाल वृक्षों से सुशोभित वनों उपवनों ने इस स्थान को रमणीय बना दिया है। महाराज श्री के यहां पर दो तीन प्रभावशाली प्रवचन हुए। यहां से चलकर इस मुनिमंडली ने भाड़सा नामक कस्बे की जनता को अपने धर्मोपदेशों से कृतार्थ किया। भाड़सा में ये मुनिराज लगभग पन्द्रह दिन विराज कर वहां से दो मील दूर अवस्थित गुड़गांवा की छावनी जा पहुंचे। यहां पर भी महाराज श्री के दो प्रभावशाली प्रवचन हुए।

यहां से विहार कर हरसू पधारे। यहाँ दो दिन विराज कर आपने गढ़ी नामक कस्बे को अपने पद रज से पावन किया। यहां पांच छः दिन तक धर्म-प्रचार कर आप फर्रुखनगर पधार गये। जैसाकि पहले कहा है देहली में यहां पधारने के लिए महाराज श्री से आग्रह भरी विनती की गई थी। इसीलिए महाराज श्री यहाँ पधारे थे। यहाँ पर लगभग पन्द्रह दिन तक महाराज श्री का विराजना हुआ, प्रतिदिन व्याख्यान-वाणी का अपूर्व ठाठ लगा रहता था। बाजार के चौंक में श्री महाराज का सार्वजनिक व्याख्यान भी हुआ। इसमें क्या जैन क्या अजैन सभी भाइयों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। इस प्रकार स्थानीय जनता ने सामूहिक रूप से पंजाबकेसरी श्री प्रेमचन्द जी महाराज के प्रवचनामृत का पान कर अपने को कृतार्थ किया।

यहां पर स्थानकवासी समाज के दो परिवार प्रमुख हैं। श्री चौधरी मनोहर लाल जी का परिवार तथा श्री लाला कल्लूमल जी का परिवार इन दोनों परिवारों में धार्मिक भावना बलवती हैं। यह लोग बड़े उत्साही सामाजिक कार्यकर्ता व संघ-हितैषी हैं। यहां पर प्रवचन में भाग लेने वाले अनेक श्रद्धालु भाइयों को महाराज श्री ने सामयिक का पाठ लिखवाया तथा याद करवाया। इन लोगों ने प्रतिदिन सामयिक करने का नियम भी लिया।

फर्रुखनगर का पानी बहुत खारा प्रत्युत कड़वा है, इसीलिए मुनिराजों

को पानी लेने के लिए बहुत दूर रेलवे स्टेशन पर जाना पड़ता था। यहां पर रेलवे इंजन से पानी लाना पड़ता। पानी के कष्ट के कारण ही मुनिराज यहां पधारने और विराजने का साहस कम ही कर पाते थे। पर श्री प्रेमचन्द जी महाराज और उनके गुरुदेव नाना प्रकार के परिषह सह कर भी लोक-कल्याण करने के लिए सर्वदा उद्यत रहने का निश्चय कर चुके थे, इसीलिए आप यहां पधारे और स्थानीय समाज को प्रोत्साहित किया।

यहां से विहार कर महाराजश्री छोटे-छोटे गांवों में धर्म प्रचार करते हुए झज्झर तहसील की ओर अग्रसर हो गये। मार्ग में जो छोटे-मोटे गांव पड़ते थे, वहां के निवासी प्राय: स्थानकवासी जैन मुनिराजों के नियमों से सर्वथा अपरिचित थे, इसीलिए इस मुनिमंडली को आहार, पानी आदि के अनेक प्रकार के कष्टों का स्थान-स्थान पर सामना करना पड़ता था। कहीं आहार की व्यवस्था न होती, तो कहीं पानी की। बहुत से लोग तो जैन साधुओं को पहिली बार देख विस्मित से रह जाते। इस विहार के समय मार्ग में सैलाना नामक छोटा सा ग्राम आया। आहार का समय था और फिर बहुत दूर तक किसी ग्राम के आने की सम्भावना न थी, इसीलिए महाराज श्री आहार लेने के लिए गांव में चले गये; आप जब एक घर के द्वार पर पहुंचे घर में से कोई औरत लकड़ी लेकर महाराज को मारने के लिए आगे बढ़ी। तब महाराज श्री ने बड़े धैर्य के साथ उस भद्र महिला को शान्त किया और जैन मुनि राजों के नियम संक्षेप में समझाते हुए कहा कि हम लोग कोई चोर नहीं हैं। हम जैन साधु हैं, जो मांग कर ही भिक्षा लाते हैं और चाहे कैसी भी सर्दी गर्मी क्यों न हो सदा नंगे सिर नंगे पांव पैदल चलते हैं, खाने पीने का सामान भी अपने साथ नहीं रखते। आहार के समय यदि कहीं हमारी मर्यादा के अनुसार आहार मिल गया तो उसे ग्रहण कर लेते हैं। यह सुन कर उसने बड़ी श्रद्धा के साथ महाराज को आहार दान दिया। दोपहर के पश्चात् महाराज श्री ने यहां की जनता को जैन धर्म से परिचित कराने के लिए एक प्रवचन किया। इस व्याख्यान को सुनने के लिए गाँव के बहुत से लोग एकत्र हो गये, महाराज श्री

के इस भाषण से ग्राम के सब लोग जैन मुनियों के प्रति श्रद्धाशील बन गये और कुछ दिन वहीं विराजने के लिऐ आग्रह करने लगे। एक भाई के हृदय में तो भक्ति भावना इतनी प्रबल रूप से जाग्रत हुई कि वह घी शक्कर लेकर महाराज श्री के पास पहुँच गया और हाथ जोड़ कर कहने लगा "महाराज हम गरीब किसानों के पास और है ही क्या यह दोनों मेरे घर की वस्तुएं हैं आप यदि इन्हें स्वीकार कर लेंगे तो मुझे बहुत प्रसन्नता होगी।" महाराज ने उस भोले भक्त को बड़े प्रेम से समझाया कि हम लोग इस प्रकार लाई हुई वस्तु को ग्रहण नहीं करते, स्वयं लोगों के घरों में जाकर रूखा सूखा जो कुछ मिलता है अपने लकड़ी के बने हुए पात्र में मांग लाते हैं। इस प्रकार जैन धर्म से सर्वथा अपरिचित उन अनेक ग्रामों में धर्म प्रचार करती हुई यह मुनिमंडली तहसील झज्झर नगर में जा पहुंची। यहाँ पर दिगम्बर जैनों के तो बहुत घर हैं, पर स्थानकवासी सम्प्रदाय का कोई घर नहीं, फिर भी साधुओं को आहार पानी की कोई असुविधा नहीं होती।

यहां पर जो सज्जन उस समय तहसीलदार थे वह यहीं के निवासी जैन थे। तहसीलदार साहब ने उन मुनिराजों के प्रति अपना हार्दिक भक्ति भाव दर्शाया। उनकी धर्मपत्नी व पुत्रवधू भी महाराजश्री के दर्शन के लिए आईं। प्रसंगवश तहसीलदार साहब की पत्नी ने कहा कि 'महाराज मैं अट्ठारह पुत्रों की जननी बन चुकी हूँ, किन्तु अशुभ कर्मोदय के कारण आज एक भी पुत्र जीवित नहीं है, केवल एक ही पुत्र का विवाह हो पाया था, उसकी पत्नी विधवा के रूप में यह आप के सामने बैठी है। अपनी करुणकहानी कहते कहते उस देवी की आखों में आंसू डबडबा आये, गला रुंध सा गया मानों सब पुत्र एक-एक करके उसके सामने आ गये हों। इस प्रकार शोक-संतप्त उस देवी को सान्त्वना देते हुए महाराज ने कहा कि बस सब अपने कर्मो के भोग हैं। यह संसार तो ऋण-बन्धु है। कोई पुत्र बन कर बदला लेता है तो कोई पिता बन कर। इसलिए समझदार व्यक्ति को संयोग-वियोग के माया चक्र में नहीं फंसना चाहिए। इस प्रकार धीरज बंधाकर महाराज श्री ने उसके हृदय में धर्म के प्रति प्रभावना उत्पन्न करने का प्रयत्न किया।

रोहतक में श्री महावीर जयन्ती

झज्झर से विहार कर श्री महाराज जी अनेक छोटे बड़े क्षेत्रों को परसते हुए रोहतक पधारे। वहां पर अनुमानतः पन्द्रह सोलह वर्ष से वयोवृद्ध श्री रामनाथ जी महाराज स्थविर रूप से विराजमान थे। श्री रामनाथ जी महाराज पं० श्री मायाराम जी महाराज के सगे छोटे भाई थे। इनकी सेवा में सरल स्वभाव श्री जसराम जी व सेवाभावी पं० अमीलाल जी महाराज विराजमान थे। यहां बहुत दिनों तक महाराज श्री के धर्मोपदेश का क्रम चलता रहा। परिणाम स्वरूप स्थानीय जैन समाज में धार्मिक भावों के प्रति बड़ा उत्साह दिखाई देने लगा।

कुछ दिन बीतने पर श्री भगवान महावीर की जयंती का पवित्र पर्व-दिवस निकट आ गया जान नगर के दिगम्बर व स्नातक वासी दोनों समाजों के प्रतिनिधि मिल कर महाराज श्री की सेवा में उपस्थित हुए और प्रार्थना करने लगे कि महावीर जयंती के इस शुभावसर पर हम लोग मिलकर एक संयुक्त आयोजन में आपके उपदेशामृत का पान करना चाहते हैं। अतः उस दिन आप भगवान् महावीर स्वामी के जीवन पर प्रवचन करने की कृपा करें। महाराज श्री की स्वीकृति पाकर शिष्ट मण्डल के प्रतिनिधि गण परम हर्षित हुए।

निश्चित कार्यक्रमानुसार चैत्र शुक्ल त्रयोदशी की प्रातःकाल बड़ी धूम-धाम के साथ प्रभात फेरी निकाली गई। इस प्रभात फेरी में जिस उत्साह के साथ मधुर स्वर में धार्मिक गीत गाये जा रहे थे. जिस प्रकार उच्च स्वर में जयघोष किये जा रहे थे उनके कारण सारा वातावरण धार्मिक उल्लास से परिपूर्ण हो गया। सूर्योदय के पश्चात् दोनों समाजों की ओर से संयुक्त प्रतिनिधि मण्डल महाराज श्री की सेवा में फिर उपस्थित हुआ। महाराज श्री ने उन्हें प्रसंगोचित संक्षिप्त उपदेश दिया। वे लोग महाराज श्री के मुखारविन्द से मंगलिक सुनकर सहर्ष वहां से विदा हुए। दोपहर के पश्चात् नगर से बाहर लाला कपूर

चन्द जी दिगम्बर जैन के बगीचे के विशाल मैदान में महावीर जयन्ती के उत्सव के सम्बन्ध में एक विराट सभा का आयोजन किया गया था। इस सभा में कई हजार नर नारियों ने वड़े उत्साह के साथ भाग लिया। पं० श्री प्रेमचन्द जी महाराज ने इस सभा में भगवान महावीर स्वामी के जीवन पर ऐसे प्रभाव-शाली ढंग से प्रकाश डाला कि सभा में उपस्थित सभी श्रोतागण मन्त्रमुग्ध हो घंटों तक तन्मयता के साथ आपके प्रवचनामृत का पान करते रहे। सभा की समाप्ति पर रोहतक जिला काँग्रेस के अध्यक्ष महोदय ने बड़ी ही श्रद्धाभक्ति के साथ स्थानीय जनता की ओर से महाराज श्री के प्रति आभार प्रदर्शित किया। सभी लोग शत-शत मुख से महाराज श्री की प्रशंसा करते-करते न अघा रहे थे। इस प्रकार रोहतक में महावीर जयंती का उत्सव बड़ी धुमधाम के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ।

उस समय मुनि पं० श्यामलाल जी अपनी शिष्य मण्डली सहित रोहतक ही में विराजमान थे। आपने भी समारोह के अवसर पर महाराज श्री के प्रवचन में भाग लिया।

महावीर जयंती का उत्सव समाप्त हो जाने पर स्थानीय श्री संघ के सदस्यों ने महाराज श्री से चातुर्मास यहीं करने के लिये बड़ी आग्रह के साथ विनती की इस पर बड़े महाराज (श्री वृद्धिचन्द जी महाराज) ने द्रव्य, क्षेत्र, काल तथा भाव देखते हुए सुखे समाधे चातुर्मास करने की स्वीकृति प्रदान की।

रोहतक से विहार कर महाराज श्री कलानौर पधारे। यहाँ बड़े महाराज के मूत्र रोग व वृद्धावस्था के कारण लगभग दो मास तक इस मुनिमण्डली ने यहीं पर विराज कर जनता को धर्मोपदेश देकर अनुगृहीत किया। यहां से विहार कर महाराज श्री रोहतक होते हुए कानि ग्राम पधारे। यहाँ की जनता को दस पन्द्रह दिन तक अपने मधुर उपदेशों से मुग्ध कर चातुर्मास करने के लिये आप फिर रोहतक पधार गये।

रोहतक चातुर्मास

(सं० १९९२)

वीर संवत् २४६१ विक्रम संवत् १९९२ सन १९३५ का चातुर्मास रोहतक में हुआ। इस चातुर्मास में महाराज श्री ने राज्यप्रशेणी सूत्र व ढाल सागर (महाभारत) का प्रवचन प्रारम्भ किया। महाभारत की दिव्य कथा सुनकर जनता हर्ष विभार हो जाती थी। फलतः उपस्थिति उत्तरोत्तर बढ़ने लगी। कुछ ही दिनों में श्रद्धालु श्रोतागणों की संख्या इतनी बढ़ गई कि स्थानाभाव के कारण दिगम्बर जैन धर्मशाला के विशाल प्रांगण में आपके प्रवचन का आयोजन किया गया।

उन दिनों स्थानीय स्कूल व कालिजों में, ग्रीष्मावकाश चल रहे थे। अतः उन कालिजों के विद्यार्थीगण भी आपके प्रवचनों से पर्याप्त लाभ उठाते थे। राज्यप्रशेणी सूत्र के केशी तथा परदेशी राजा के प्रश्नोत्तरों में जिन आध्यात्मिक तत्वों का प्रतिपादन किया गया है, उनका आधुनिक, विज्ञान के साथ बहुत तारतम्य है, इसीलिये कालिजों के छात्रगण उक्त प्रश्नोत्तरों के प्रसंग को बड़ी श्रद्धा के साथ सुनते और उन पर मनन करने का प्रयत्न किया करते थे।

पर्यूषण पर्व में श्री अन्तगड सूत्र का वाचन किया गया। इससे प्रभावित होकर स्थानीय श्री संघ ने धर्म ध्यान का खूब लाभ उठाया।

चातुर्मास भर रोहतक में धर्म ध्यान का खूब ठाठ लगा रहा। इस चातुर्मास में ही देहली में विराजित गणावच्छेदक पं श्री छोटे लाल जी महाराज का स्वर्गवास हो गया था, और चातुर्मास से पूर्व आषाढ़ मास में अमृतसर नगर में पूज्य श्री सोहनलाल जी महाराज भी स्वर्ग सिधार चुके थे।

अतः इस समय समस्त मुनिमण्डली के समक्ष दो प्रश्न उपस्थित थे, प्रथम तो आचार्य पद पर किसी अधिकारी मुनिराज की नियुक्ति का तथा दूसरा श्री मयाराम जी महाराज की मुनिमण्डली का गणावच्छेदक नियुक्त करने का। क्योंकि मुनि श्री छोटे लाल जी महाराज श्री मयाराम जी के तीस चालीस साधुओं के गणावच्छेदक थे।

चातुर्मास समाप्त होते ही मूणक से श्री बनवारीलाल तथा श्री फकीरचन्द जी महाराज और हांसी से श्री मदनलाल जी महाराज व श्री राम जी लाल जी महाराज आदि मुनिगण रोहतक पधार गये। इस प्रकार यहां पर उक्त मुनिगणों का मधुरमिलन हुआ। इस समय उक्त मुनिराजों ने मिलकर गणावच्छेदक पदवी-प्रदान के सम्बन्ध में पारस्परिक परामर्श किया।

पर्याप्त विचार विनिमय के पश्चात् मुनिगण इस निर्णय पर पहुँचे कि गणावच्छेदक की पदवी पं श्री वनवारी लाल जी महाराज को प्रदान की जाय। निर्णय को क्रियात्मक रूप देने के लिये पण्डित रत्न श्री वृद्धिचन्द जी महाराज श्री वनवारी लाल जी महाराज, श्री मदनलाल जी महाराज, श्री रामजी लाल महाराज आदि मुनिगण देहली की ओर चल पड़े।

इसी समय पं० श्री प्रेमचन्द जी महाराज को कुतिया ने काट खाया, कई दिनों तक चिकित्सा होने पर भी घाव पूरा न भर सका। फलतः बहुत दिनों तक महाराज श्री को रोहतक में ही रहना पड़ा, और आप श्री मदनलाल जी महाराज आदि के साथ देहली की ओर विहार न कर सके।

उक्त सब मुनिराज मार्ग के अनेक छोटे मोटे ग्रामों और कस्बों को परसते हुए यथासमय दिल्ली पहुँच गये। यहां पर बहुसूत्री पं० श्री नत्थूलाल जी महाराज, पं० श्री राधाकृष्ण जी महाराज, श्री कंवरसेन जी महाराज आदि सर्व मुनिराजों ने मिलकर श्री वनवारी लाल जी को गणावच्छेदक पद पर नियुक्त किया।

कुछ समय के पश्चात् रोहतक से श्री पं० प्रेमचन्द जी महाराज ठाना दो भी देहली पधार गये। श्री कँवरसेन जी महाराज को श्वास का रोग था, अतः

श्रान स्वर्गीय गणावच्छेदक श्री छोटे लाल जी महाराज की सेवा में ही रहते थे। श्री कँवरसेन जी महाराजश्री वृद्धिचन्द जी महाराज के सांसारिक बड़े भाई थे। साधु अवस्था में उनके शिष्य रूप थे। गणावच्छेदक श्री छोटे लाल जी महाराज के स्वर्गवास के पश्चात् देहली में गणपति मुनिराज के न होने से श्री कँवर-सैन जी को श्री रामनाथ जी महाराज की सेवा में रोहतक लाने का निश्चय किया गया।

उक्त मुनिराज उस समय देहली में विराजित श्री कँवरसेन जी महाराज को रोहतक ले आये और यहां पर उन्हें श्री रामनाथ जी की सेवा में रख दिया गया।

पूज्य श्री काशीराम जी महाराज को आचार्य पदवी

इस समय गणावच्छेदक पं० श्री बनवारी लाल जी महाराज श्री रामनाथ जी महाराज, श्री वृद्धिचन्द जी महाराज, श्री प्रेमचन्द जी महाराज, श्री नाथूलाल जी महाराज, श्री मदनलाल जी महाराज आदि मुनिराज रोहतक में विराजमान थे। यहां पर होशियारपुर से वंशीलाल जी आदिप्रमुख भाइयों का शिष्ट मण्डल आया और उन्होंने निवेदन किया कि होशियार पुर में युवाचार्य पं० श्री काशी-राम जी महाराज को आचार्य पदवी प्रदान करने के लिए समारोह होने वाला है। अतः आप सब मुनिराज इस शुभावसर पर अवश्य होशियारपुर पधारें।

रोहतक में विराजित सब मुनिराजों के परस्पर विचार विनिमय के पश्चात् गणावच्छेदक श्री पं० बनवारी लाल जी महाराज श्री मदनलाल जी महाराज, श्री राम जी लाल महाराज आदि मुनिराजों ने होशियार पुर जाने का निश्चय किया और यह मुनिमण्डली होशियार पुर की ओर चल पड़ी।

पं० श्री वृद्धिचन्द जी महाराज की वृद्धावस्था के कारण पं० श्री प्रेमचन्द जी महाराज होशियारपुर न जा सके। इसके पश्चात् पं० श्री वृद्धिचन्द जी महाराज आदि मुनिराजों ने रोहतक से रुंढाणा को विहार कर दिया और छोटे २ ग्रामों में धर्म प्रचार करते हुए रुंढाणा ग्राम पधारे। यहां पांच सात दिन

विराज कर अपने प्रवचनों द्वारा जनता के हृदयों में धर्म ध्यान के प्रति रुचि जागृत की। यहां से विहार कर छोटे मोटे गांवों को परसते हुए बटणा पधारे। वहां थोड़े दिन पहले ही धर्मध्यान के लिए एक बड़ा सुन्दर भवन निर्मित हुआ था। इस भवन में महाराज श्री के बड़े प्रभावशाली प्रवचन हुए। बटाणां से विहार कर गंगाणा हाट आदि क्षेत्रों में पदार्पण करते हुए महाराज श्री सफीदम मण्डी पधारे।

आपके वहां पहुंचने के दो दिन पश्चात् श्री भागमल जी महाराज, श्री कस्तूरचन्द जी महाराज, श्री पं० त्रिलोकचन्द जी महाराज आदि मुनिराज भी यहां पधार गये।

यहां की मण्डी में महाराजश्री के सार्वजनिक प्रवचनों में श्रोतागण बड़ी भारी संख्या में भाग लेते थे। उपस्थित जन समूह में जैन, अजैन सभी लोग दत्तचित होकर महाराज श्री का उपदेश सुना करते थे। यहां पांच सात दिन विराज कर आप सिन्धाणे की ओर पधारे यहां आपके तीन सार्वजनिक प्रवचन हुए। एक दिन प्रवचन में आर्य समाज के एक स्वामी जी ने अनेक प्रकार के प्रश्नोत्तर किये। महाराज श्री ने उनके प्रश्नों का यथोचित उत्तर दिया। इस वार्तालाप में जब स्वामी जी के पांव उखड़ गये तो वे अपना सा मुंह लेकर सभा स्थान से उठकर जाने लगे। तब उपस्थित जन समूह ने उन्हें बैठकर महाराज के प्रवचनामृत के पान करने का अनुरोध किया। तब तो वे बैठकर महाराज का उपदेश शान्तिपूर्वक सुनने लगे। इस शास्त्र चर्चा को सुनकर संघ के सदस्यों का उत्साह खूब बढ़ा और जैन धर्म की पर्याप्त प्रभावना हुई। सभी श्रोतागण आनन्दविभोर हो गये। यहां से विहार कर महाराज श्री मुवाणां पधारे। यहां सीताराम जी जैन के तबेले के बाहर प्रवचन होते रहे। सात आठ सौ की उपस्थिति प्रतिदिन होती थी।

यहां गांव में एक दिन यह चर्चा सुनी गई कि एक नवजात शिशु एक झाड़ी के नीचे दबा पड़ा था। लोग उसे निकाल लाये और उसे ग्राम के चौकीदार को सौंप दिया। जिसने उसके पालन पोषण का उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले

लिया। इस घटना की गांव में काफी चर्चा होती रही। इन्द्रियों के असंयम के कारण ही ऐसी दुर्घटनायें होती हैं। बाल-विवाह बेमेल विवाह आदि कुप्रथाओं के कारण भी ऐसे जघन्य अपराधों को प्रोत्साहन मिलता है।

इस गांव में कुछ लोग ऐसे भी थे जो दूसरों के गौ भैंस आदि चुरा कर उन्हें कसाइयों के कत्ल खाने में बेच आते थे। बूचड़खाने में बेचने का मुख्य कारण यह था कि ढूंढने पर उन पशुओं का कहीं कोई चिन्ह न मिल जाय। इस प्रकार के निरीह पशु व्यर्थ ही मौत के घाट उतार दिये जाते थे। महाराज श्री के प्रवचनों से प्रभावित होकर उन लोगों ने इस प्रकार के चोरी आदि कुकर्मों का परित्याग कर दिया।

इस इलाके के लोग प्रायः तालाब का पानी पीते हैं। और उस तालाब के पानी में बहुत से छोटे-छोटे जलजन्तु होते हैं। एक भाई ने तो यहां तक बताया कि स्नान करने के पश्चात् जब कपड़े निचोड़ कर झाड़ते हैं तो उसमें से हजारों जीव झड़ते हैं। इन लोगों को महाराज श्री ने बिना छाने पानी पीने का त्याग करवाया। कई परिवारों ने पानी छानने योग्य कपड़ा सभी घरों में वितीर्ण किया। जिससे जलजन्तुओं की रक्षा हो सके।

तेरह पन्थियों से शंका समाधान

मुवाना से विहार कर नगूरा ग्राम पधारे। यहां पर चार-पांच दिन विराज कर जनता में धार्मिक जागृति उत्पन्न की। एक दिन दोपहर के पश्चात् तीन चार बजे के लगभग एक तेरह पन्थी श्रावक पांच सात जाटों को अपने साथ लेकर महाराज श्री की सेवा में उपस्थित हुआ। उसने उन जाटों को पहले ही से सिखा रखा था कि महाराज श्री से कैसे प्रश्न करना। जाटों ने महाराज श्री से प्रश्न किया कि आप दया-दया पुकारते हैं, पर आप स्वयं भी दया का पालन करते हैं या नहीं। महाराज श्री ने कहा कि हम तो दया का पालन करते ही हैं। उसने कहा मान लीजिए कि एक आदमी आपके मकान में आ गया, वह व्यक्ति चक्षुहीन बधिर व गूंगा है। जहां पर आप दूसरे मंजिल में विराजमान हैं, वह वहां पर आ गया। फिर वह नीचे जाना चाहता है, किन्तु

नीचे जाने का मार्ग—सीढ़ियों से उतरते हुए उसे विस्मृत हो गया, वह खुले द्वार से जाने का प्रयत्न करने लगा जहां पर वह नीचे भी गिर सकता है। ऐसी अवस्था में क्या आप नीचे गिरने से उसका बचाव करोगे?

महाराज श्री ने उत्तर दिया, हां क्यों नहीं, दया करना तो हमारा मुख्य कर्त्तव्य है। तब वे लोग बोले—आप उसे कैसे बचायेंगे। क्योंकि सर्व प्रकार से उसे भान नहीं है। यदि आप उसे आह्वान करेंगे कि उस ओर मत जाओ, परन्तु उसे आपकी आवाज सुनाई नहीं देती, अगर आप संकेत करेंगे तो वह देखने में असमर्थ है, ऐसी अवस्था में आप क्या कीजियेगा। इस पर महाराज श्री ने इस प्रकार उत्तर दिया कि हम न उसे पकड़ेंगे न आवाज देंगे जिस स्थान पर गिरने का भय होगा उसके आगे हम खड़े हो जायेंगे। हमारे शरीर से वह टकरा कर सावधान होकर चला जायेगा। इस प्रकार हम उसकी रक्षा कर सकते हैं, अब तुम ही बतलाओ कि हमने उसकी दया पाली या नहीं? तब जाटों ने उत्तर दिया हां आपने उसकी दया पाली इसमें कोई सन्देह नहीं।

तब महाराज श्री ने तेरह पन्थी भाई के बहकाए हुए जाट से पूछा कि इन तेरह पन्थियों के सिद्धान्तों के अनुसार उसे बचाने के कारण मुझे पाप हुआ या धर्म? इस तेरह पन्थी भाई से पूछो?

तब वह बोला—यह तो निस्सन्देह धर्म का कार्य हुआ।

महाराज श्री—आप लोग तो कह रहे हैं कि धर्म हुआ पर अपने साथी तेरह पन्थी भाई से तो पूछ देखो कि पाप हुआ या धर्म। तब तेरह पन्थी भाई ने महाराज श्री से पूछा कि आप ही बताएं कि आपके सिद्धान्त के अनुसार क्या हुआ।

महाराज श्री—हम तो पहले ही कह चुके हैं कि हमारे सिद्धान्त के अनुसार तो यह धर्म ही हुआ है। हम तो इसे धर्म ही मानते हैं। पर तुम बताओं कि क्या हुआ।

इस पर जाटों ने तेरह पन्थी भाई से कहा कि तुम क्यों नहीं कहते कि

धर्म हुआ। तब तो तेरह पन्थी भाई खिसियाना सा हो गया और वह अपने साथी जाटों के भय से दबी जवान से बोला कि हां मैं भी कहता हूं कि धर्म हुआ, किन्तु उसके सिद्धान्तानुसार उसकी आन्तरिक मान्यता तो किसी जीव को बचाने में पाप ही की थी।

नगूरा ग्राम से विहार कर ये मुनिराज वडौदी पधारे। इस वडौदी ग्राम के निवासी जाट लोग अधिकतर जैन धर्मावलम्वी ही हैं। सामायिक, संवर, पोषे चौवीहार आदि धर्म क्रियायें खूब करते हैं। अग्रवाल जैनों के भी चार-पांच घर हैं। यहां कुछ दिन विराज कर धर्म प्रचार किया। पुनः यहां से विहार कर खटकड गांव में पधारे। एक दो दिन यहां भी धर्म प्रचार कर कसूण पधारे। यहां पर भी चार पांच भाषण महाराज श्री ने दिये और फिर वडौदा पधार गये।

यह जगत्-प्रसिद्ध पंजाव कोकिल संयमशील चारित्रचूड़ामणि श्री मयाराम जी महाराज की परम् पवित्र मातृभूमि है। यहां एक ही मोहल्ले के तेरह जाटों ने जैन मुनियों का उपदेश सुन जैन मुनि के रूप में दीक्षा ग्रहण की थी। जिनमें कई बड़े-बड़े ज्ञानवान तपस्वी तथा क्रियाशील सन्त हुए हैं। यहां भी महाराज श्री ने चार पांच दिवस रह कर अपने प्रवचन से जनता को उपदेशामृत से तृप्त किया। यहां के जाट लोग बहुत बड़ी संख्या में जैन धर्म का पालन करते हैं और सामायिक प्रतिक्रमण आदि क्रियाओं में भी दृढ़ हैं।

यहां से विहार कर महाराज श्री उचाणा मण्डी, घसो, निर्वाणा-मण्डी धम्मताण आदि क्षेत्रों में दो-दो चार-चार दिन धर्म प्रचार करते हुए टुहाणा पधारे। टुहाणा में तीन चार प्रवचन देकर जाखल मन्डी होते मूणक पधारे।

यहां पर श्री गणेशीलाल जी महाराज, श्री मेलाराम जी महाराज, आदि मुनिराज विराजमान थे। मूणक में कुछ दिनों तक प्रवचन होते रहे। कुछ समय पश्चात् वुढ़लाढ़ा मन्डी के स्थानक वासी जैन श्री संघ की ओर से शिष्ट मण्डल आया और उसने महाराज श्री से विनती की कि हमारे क्षेत्र में श्री

आदीश्वर जैन पाठशाला का वार्षिकोत्सव मनाया जा रहा है, इस शुभावसर पर आप श्री अवश्य पधारने की कृपा करें।

समागत शिष्टमण्डल की विनती को मान्यता देते हुए महाराजश्री ने बुढ-लाडा मंडी पधारने की स्वीकृति प्रदान की।

महाराज श्री मूणक से विहार कर जाखल मन्डी व वरेटा मन्डी आदि क्षेत्रों को परसते हुए बुढलाड़ा मन्डी पधारे। वहां पर पाठशाला का वार्षिक उत्सव मनाया जाने लगा। इस अवसर पर बाहर से भी कुछ नेता उपदेशक आदि आये थे। जिनमें श्री कर्मानन्द जी स्वामी, श्री भगवन्त राय वैद्य कोटले वाले आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। कर्मानन्द स्वामी पहले आर्य समाज के प्रमुख प्रचारक रह चुके थे। उस समय वे आर्य समाज की ओर से जैन समाज से वाद-विवाद करने वालों में प्रमुख माने जाते थे।

एक बार इन्हीं कर्मानन्द स्वामी ने अखिल भारतीय जैनों से १०० प्रश्न किये थे, जिनका उत्तर अम्बाला छावनी की श्री "चम्पा बाई शास्त्रार्थ संस्था" नामक संस्था की ओर से दे दिया गया था।

एक बार किसी दिगम्बर जैन पण्डित के साथ शास्त्रार्थ करते हुए कर्मानन्द स्वामी दिगम्बर पण्डित की शास्त्रोक्त उक्तियों का उत्तर न दे सके। फलत: गम्भीर चिन्तन के पश्चात् उनकी विचार धारा बदल गई। आप जैन मान्यता स्वीकार कर जैन धर्म में दीक्षित हो गये। आपने फिर जैन धर्मशास्त्रों का खूब अध्ययन किया और ईश्वर सृष्टिकर्त्ता है तथा वेद ईश्वरीय ज्ञान है, आदि अनेक आर्यसमाज के सिद्धान्तों के विरुद्ध कई पुस्तकें प्रकाशित कीं। इन्होंने वेद में जैन धर्म का अस्तित्व प्रमाणित करने के लिए एक ट्रैक्ट प्रकाशित किया। हां तो पाठशाला के उत्सव पर महाराज श्री का एक अत्यन्त प्रभाव शाली प्रवचन हुआ। इस प्रवचन में महाराज श्री ने धर्मास्तिकाय आदि षट् द्रव्यों का बड़ा ही सूक्ष्म और व्यापक विवेचन किया। इस विवेचन को सुनकर उपस्थित जनसमूह हर्ष गदगद हो महाराज श्री की ज्ञान गरिमा की प्रशंसा करने लगा। स्वामी कर्मानन्द जी ने अपने भाषण में बताया कि ईश्वर सृष्टि कर्त्ता नहीं है, और वेद ईश्वरीय नहीं है। फिर श्री भगवन्तराय जी वैद्य ने

पाठशालाके सम्बन्ध में चर्चा करते हुए विद्या के महत्व पर प्रकाश डाला। पाठशाला का यह उत्सव दो तीन दिन तक बड़े समारोह के साथ मनाया जाता रहा। वार्षिक महोत्सव के पश्चात् श्री स्वामी कर्मानन्द जी महाराज श्री के पास स्थानक में आये और जैन सिद्धान्तों और तीर्थङ्करों के सम्बन्ध में खूब विस्तृत चर्चा हुई। उन्होंने यह भी बताया कि वेदों में किन किन तीर्थङ्करों का वर्णन व नाम आता है, इससे भी जैन धर्म की प्राचीनता स्पष्ट सिद्ध होती है।

यहां के श्री संघ ने महाराज श्री से आग्रह भरी विनती की कि चातुर्मास यहीं करके स्थानीय श्रीसंघ को कृतार्थ कीजिये। महाराज श्री ने चातुर्मास का समय निकट आता देख चातुर्मास की स्वीकृति प्रदान कर दी। यहां से विहार कर एक रात गुरना गांव में ठहरे, रात्रि को प्रवचन किया। प्रातः सूर्य निकलने के पश्चात् भिक्की नामक कस्वे में पधारे। यहाँ श्री वृजलाल जी की कोठी पर विराजे और प्रवचन का प्रवन्ध श्री दौलत राम जी अग्रवाल के नौहरे (मकान के विशाल आंगन) में किया गया।

यहां पर श्री वृद्धिचन्द जी महाराज की वृद्धावस्था व रुग्णता के कारण महाराज श्री को लगभग ढाई तीन मास तक विराजना पड़ा। नगर के सब लोग भारी संख्या में मिल कर महाराज श्री के प्रवचनों का लाभ उठाते रहे। स्थानीय जैन समाज के अतिरिक्त जाट, जमींदार आदि अजैन जनता ने भी महाराज श्री के प्रवचन से पर्याप्त लाभ उठाया। यहां जैनियों के घर तो केवल दस वारह ही हैं, अधिकतर अजैन जनता है।

वहुत से लोगों ने शराव व मांस का त्याग किया। यहां पर लगभग तीस अग्रवालों के घर सिक्ख वने हुए हैं, उनमें से भी कई भाइयों ने सामायिक करनी आरम्भर की।।

यहां पर इतने अधिक लोगों ने शराव का त्याग किया कि एक दिन शराव का ठेकेदार हँसी में कहने लगा कि यहां के दूसरे लोगों के लिए तो आप का यहां विराजना लाभदायक हुआ, पर मेरे लिये तो आपका आगमन हानि का ही कारण वना, क्योंकि आपके उपदेशों से प्रभावित हो कर वहुत से लोगों ने शराव पीना छोड़ दिया है, जिससे मेरी आमदनी में वहुत घाटा पड़ गया।

बुढलाड़ा चातुर्मास

(सं० १९९३)

वीर संवत २४६२ विक्रमी सं० १९९३ सन् १९३६ का चातुर्मास बुढलाड़ा में। भिक्की से चातुर्मास करने के लिये ये मुनिराज बुढलाडा पधारे। चातुर्मास में महाराज श्री ने उत्तराध्ययन सूत्र व रामायण प्रारम्भ की। यहां के प्रवचन में जनता ने बहुत उत्साह के साथ भाग लिया। पर्यूषण पर्व में श्री अंतगड सूत्र' का वाचन किया।

संवत्सरी के पश्चात् यहां पर आर्य समाज व सनातन धर्म के पंडितों में बडा भारी शास्त्रार्थ हुआ। आर्यसमाज की ओर से पं० बुद्धदेव विद्यालंकार और पं० देवेन्द्र नाथ जी तथा सनातन धर्म की ओर से पं० माधवाचार्य जी व पं० श्री कृष्ण शास्त्री शास्त्रार्थ के लिये आये हुए थे। यह शास्त्रार्थ कई दिनों तक चलता रहा।

इसी शास्त्रार्थ चर्चा के प्रसंग में एक दिन किसी आर्य समाज के प्रचारक ने आर्य समाज मन्दिर में जैनों की दया की मजाक उड़ाई और कहा कि "किसी जैनी की दुकान के सामने किसी व्यक्ति ने एक मकोड़ा पकड़ लिया और कहा कि या तो मुझे गुड़ की भेली दो नहीं तो मैं इस मकोड़े की टांग तोड़ता हूं।"

जैनी भाई ने गिड़गिड़ाते हुए कहा कि नहीं नहीं इसकी टांग मत तोड़ो मैं तुम्हें गुड़ की भेली दिये देता हूँ।

वास्तव में यह एक आर्य समाजी प्रचारक की मिथ्या कल्पना ही थी। इसमें कुछ भी सत्य का अंश न था, क्योंकि यदि जैन लोगों को इस प्रकार डरा

कर कोई उनसे चीज छीनने लगे, तब तो उन्हें अपना अस्तित्व बचाना ही कठिन हो जाय।

आर्य-समाज मंदिर में भाषण देते हुए उन प्रचारक महोदय ने यह भी कहा कि देखो जैनियों की गप्प। उनके शास्त्र में लिखा है कि जूं अड़तालीस कोस की होती है।

इस अवसर पर महाराज श्री ने अपने एक भाई को इस कार्य के लिये नियुक्त किया हुआ था कि आर्यसमाज मंदिर में यदि जैन सिद्धान्त के विरुद्ध कोई कुछ बात कहे तो हमें सूचना देना।

तब उस भाई ने सूचना दी कि जूं के विषय में ऐसा आर्य समाज के प्रचारक ने कहा है। यह सुनकर महाराज श्री ने मास्टर कालू राम जी से आर्य समाज के प्रधान को पत्र लिखवाया कि 'जिस जैन शास्त्र में अड़तालीस कोस की जूं लिखी है, उस ग्रन्थ का पूरा पूरा परिचय और प्रमाण दें। यदि प्रमाण न दे सकें तो इस मिथ्या कल्पना के लिये सार्वजनिक रूप से क्षमायाचना करें। यदि आप यह प्रमाणित न कर सकें तो यह मानना होगा कि जिसने ऐसा कहा है, जिस आर्य-समाज की पुस्तक में ऐसा लिखा है और जिसने यह लिखा है वह सब झूठे हैं।"

इस पत्र के पहुंचने के पश्चात् कई दिनों तक आर्य समाज की ओर से कोई उत्तर न आया। फिर एक दिन उनके पंडित देवेन्द्र नाथ जी स्वयं महाराज श्री के पास आ पहुंचे और कहने लगे कि आपके शास्त्रों में जूं के विषय में ऐसा नहीं लिखा है। अड़तालीस कोस की जूं का उल्लेख तो दिगम्बर जैनों के शास्त्रों में है।

यह सुनकर महाराज श्री ने बड़ी दृढ़ता के साथ कहा कि जूं के परिमाण की मान्यता के विषय में दिगम्बर जैनों और हमारी मान्यता में कोई अंतर नहीं है। आप दिगम्बर शास्त्रों से भी जूं का पूर्वोक्त प्रमाण सिद्ध नहीं कर सकते। यदि आप सच्चे हैं तो उन शास्त्रों के नाम पाठ और स्थल आदि का पूरा पूरा विवरण दें। इस प्रकार बात चीत कर पंडित जी तो चले गये। कुछ

दिन बाद आर्य समाज के मंत्री महोदय कुन्दन लाल जी महाराज श्री के पास आये और उन्होंने आर्य समाज की ओर से जैन धर्म के विरोध में कही गई मिथ्या बातों के लिये क्षमायाचना की।

चातुर्मास उठते समय यहां के बहुत से लोगों ने महाराज श्री के प्रवचनों से प्रभावित होकर मृतक पितरों के श्राद्ध का परित्याग कर दिया।

कब्रों की पूजा का खण्डन

इस प्रदेश के बहुत से हिन्दू लोग भी हदर शेख तथा मीरा साहब की कब्रों की पूजा किया करते थे। जैनी, सनातनी सिक्ख सभी जातियों के बहुत से लोग इन कब्रों पर जाकर मनोतियां मनाया करते थे। ये दोनों कब्रें मलेर कोटला में हैं, इसलिये बहुत से लोग बड़े ढोल ढमाके व बाजे गाजे के साथ मलेर कोटला में इन कब्रों पर पहुँचते थे। यहां आ कर कोई सन्तान के लिये मनौती करता, कोई रुपये पैसे के लिये तो कोई मुकदमों की विजय के लिये। मानों ये मुर्दो की कब्रें ही सब कुछ कर सकती हैं। उन दिनों वे लोग वहाँ जाकर चावलों की देग पका कर बांटते थे और कब्रों पर बकरों की कुर्बानी देते थे। इस प्रकार सैकड़ों निरपराध पशु अकारण ही मौत की घाट उतार दिये जाते थे। इसके अतिरिक्त जब हिन्दू लोग अपनी बहन बेटियों को लेकर अपनी मान्यता पूरी कराने वहां जाते तो कई बार बहुत से मुसलमान गुण्डे उन हिन्दू बहिन बेटियों पर आक्रमण भी कर बैठते थे। जिन हिन्दुओं के पैसे से वे पलते थे उन्हीं पर वे अत्याचार करते थे। हा हिन्दू जाति कैसा भयंकर है तेरा अज्ञान, और अँध विश्वास, महाराज श्री के प्रवचनो से प्रभावित होकर बुढ़लाड़ा के बहुत से परिवारों ने इस कब्र पूजा की कुप्रथा का भी सर्वथा परित्याग कर दिया।

चातुर्मास समाप्ति के कुछ दिन पूर्व रतिया बावला नामक गांव के कुछ भाई महाराज श्री की सेवा में उपस्थित हुए और प्रार्थना की कि आप हमारे क्षेत्र को भी पावन करें। हमारे गांव में बीस पच्चीस घर जैनियों के हैं, पर वे नाम मात्र के ही जैन हैं, क्योंकि कहने को तो हम अपने आपको जैनी ही कहते

हैं, किन्तु जैन धर्म के सम्बन्ध में हमें कोई विशेष जानकारी नहीं है। बहुत दिनों से हमारे क्षेत्र में किसी मुनिराज का पधारना नहीं हुआ। इसलिए हमारे क्षेत्र में आप श्री का पधारना अत्यावश्यक है।

चातुर्मास समाप्त होने पर उनकी विनती को मान देते हुए इस मुनिमंडल ने रतिया वावला की ओर विहार किया। वहां पहुँचने पर आपके प्रवचन प्रारम्भ हुए। जिनमें से कई सार्वजनिक व्याख्यान बाजार के चौक में जाटों के मोहल्ले में हुए। इन व्याख्यानों में जनता हजारों की संख्या में उपस्थित होती थी। यहां के निवासी भी हदर शेख और मीरा साहब की कबरों पर जाकर मन्यता मानते थे। हदर शेख और मीरा साहब के नामाङ्कित तावीजों को बहुत से लोग अपने गलों में डाले या भुजाओं में बान्धे रहते थे। हाथ की अंगूठी और टड्डे (स्त्रियों की बाहों पर पहनने के आभूषण विशेष) आदि गहनों पर भी इन मुसलमान फकीरों के नाम अंकित रहते थे। महाराज श्री ने यहां पर भी इस कुप्रथा के निवारण के लिए बड़े ओजस्वी शब्दों में जनता को बार-बार चेतावनी देते हुए सम्यक्त्व अपनाने के लिए प्रेरित किया। आपने एक बार अपने सार्वजनिक व्याख्यान में उपस्थित जन-समूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि हे हिन्दू जाति, तू इस प्रकार के पाखंड और अन्ध विश्वास का शिकार बन रही है, यह बड़े दुःख का विषय है। हमारी संस्कृति और सभ्यता इतनी प्राचीन और गौरवशालिनी है कि हमें दूसरों के द्वारों पर झांकने की कोई आवश्यकता ही नहीं। सभी कुछ तो हमारे यहां प्राप्त है। वह कौन सी चीज है जो हमारे यहां न मिल सके। राम, कृष्ण, हनुमान और महावीर स्वामी के नाम लेवा भाइयों, क्या आप इन सब को भूल गये हैं। क्या उनके नाम में कोई शक्ति नहीं रही है, जो आप लोग उन्हें छोड़ हदर शेख और मीरा साहब के पुजारी बन रहे हैं। यह कितने दुःख और शर्म का विषय है कि आप लोग अपने पूज्य व उपास्य इष्ट देवों को छोड़ इधर-उधर भटकते हुए धक्के खाते फिरते हैं। भला मुर्दों की कबरें पूजने से भी कभी किसी का कल्याण हुआ है जो मुसलमान लोग यह मानते हैं कि कबरों के साथ उनकी

रुहें या आत्माएं भी वहीं दबी पड़ी है, और वे आत्माएं अपनी शक्ति से मनुष्य का कल्याण कर सकती हैं, वे उन कबरों पर जाकर भले ही नाक रगड़ते फिरें, पर यह है सर्वथा मिथ्याकल्पना। क्योंकि आत्मा कभी मृत शरीर या मिट्टी में दबी पड़ी नहीं रह सकती। इसलिए जो हिन्दू जाति आत्मा की अमरता और पुनर्जन्मवाद में विश्वास रखती हो, और यह मानती हो कि आत्मा एक शरीर को छोड़कर दूसरा शरीर धारण कर लेती है, वह भला उस कब्र की पूजा क्यों करेगी, जहां पर किसी की मिट्टी दबी पड़ी हो। भला कब्र में कभी वह शक्ति हो सकती है कि वह किसी की इच्छा को पूरी कर सके। जो समझदार होकर भी इतनी मोटी सी बात को भी न समझ सकें, उनको क्या कहा जाय? इसका निर्णय आप ही करें। इसलिए आप लोग अपने आपको पहचानें अपने धर्म और महापुरुषों व देवी देवताओं के महत्व को पहचानें और प्रतिज्ञा करें कि आज से हम कब्रों की पूजा करना छोड़ अपने धर्म में ही श्रद्धा लाएंगे।

महाराज श्री के ऐसे प्रभावशाली उपदेश से प्रभावित होकर सब लोगों ने तत्काल कब्र पूजा के परित्याग की प्रतिज्ञा की, और मीरा साहब और हदर शेख के नामांकित कड़े, तावीज, अंगूठी, टड्डे (भुजा का अनंत) आति उतार-उतार कर उन सबको तड़ातड़ तोड़ व उतार फेंक दिया। इन तोड़े हुए चाँदी के तावीज आदि का वजन सेर भर के लगभग हो गया था। इस प्रकार यहां की जनता ने इस भयंकर अंधविश्वास से अपना पीछा छुड़ा लिया।

बुढ़लाड़ा मंडी के मास्टर कालू राम जी ने उन तावीज आदि को एकत्रित कर कहा कि मैं मिथ्यात्व भंडन की स्मृति के रूप में इन्हें अपने पास रखूंगा। यहां पर महाराजश्री ने बहुत से लोगों को सामायिक करने का नियम करवाया। महाराज श्री यहां विराजने से, धर्म की खूब प्रभावना हुई। जैन भाइयों में तो अपने धर्म के प्रति श्रद्धा विशेष रूप से हो गई।

यहां से विहार कर आपश्री मार्गवर्ती क्षेत्रों को परसते हुए उकलाना मंडी पधारे। यहां की मंडी में दो तीन व्याख्यान देकर बीठिम्बडा पधारे। यहां पर

यह मुनिमंडली लगभग दस दिन तक धर्म प्रचार करती रही। एक दिन एक पंडित जी ने आकर महाराज श्री से कहा कि यहां के हिन्दू लोग अपने गऊ बैल आदि पशु मुसलमानों के हाथों में बेच देते हैं। बाद में वे ही पशु बूचड़-खानों में जाकर कटते थे। इस हिंसात्मक कार्य को बन्द करवाने का प्रयत्न करना चाहिए।

इस पर महाराज श्री ने फरमाया कि यहां के जेलदार नम्बरदार और गांव के प्रमुख लोगों से मिलकर सबको किसी एक स्थान पर इकट्ठा किया जाए, ताकि उन्हें कुछ समझाया जा सके। पंडित जी ने ऐसा ही किया, और सब लोग एक पंचायती चौपाल में बड़ी संख्या में एकत्रित हो गये। महाराज श्री ने वहां पधार कर वहां पर उपस्थित व्यक्तियों के समक्ष इसी विषय पर विचार व्यक्त करते हुए उन्हें भली भांति समझाया। जिससे प्रभावित होकर उन लोगों ने इस हिंसात्मक प्रथा को बन्द करने के लिए एक प्रतिज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर किये। बहुत से अपठित भाइयों ने अपने अंगूठे लगाये, और यह निश्चय किया कि भविष्य में कोई भी हिन्दू किसी मुसलमान को बूचड़ खाने में भेजने के लिए कोई पशु नहीं बेचेगा।

इस शुभ कार्य में हस्ताक्षर करते समय सरदारीमल जैन अग्रवाल ने हस्ताक्षर नहीं किये। अतः सब लोगों ने उसे बहुत लज्जित किया, और कहा कि गांव के नियम का उल्लंघन कर तुम पशु नहीं बेच सकोगे। अन्त में उसे भी सब लोगों के साथ सहमत होना पड़ा।

यहाँ से विहार कर महाराज श्री धसो और वहां से उचाणा मंडी, बड़ौदा, बड़ौदी होते हुए जींद पधारे।

जींद में दस बारह दिन तक धर्म-प्रचार कर यहां से जुलाना मन्डी होते हुए खरेटी गांव पधारे। यहाँ पर भी आपके प्रभावशाली प्रवचन हुए। जैन व जाट लोगों ने पर्याप्त संख्या में उपस्थित होकर महाराज श्री के प्रवचनों से उठाया।

क्या ईश्वर सृष्टिकर्त्ता है

यहां पर एक आर्यसमाजी सज्जन ने ईश्वर के कर्त्ता विषय में बहुत देर तक प्रश्नोत्तर किये। महाराज श्री ने आर्य समाजी भाई के सामने चार बातें रक्खी कि आप लोग ईश्वर में ये चार बातें मानते हो—

१. वह ईश्वर सर्वज्ञ है, २. सर्वदर्शी है, ३. सर्वशक्तिमान् है, ४. और न्यायकारी है।

यदि आप ईश्वर को सृष्टि कर्त्ता मानते हो, तो ईश्वर के पूर्वोक्त चारों गुण नष्ट हो जाते हैं। आप लोग जहाँ ईश्वर को सृष्टि कर्त्ता मानते हैं, वहाँ उसे कार्य फल प्रदाता भी मानते हैं। सृष्टि तो अनन्त अनन्त काल से प्रवाह रूप से चली आती है, इसका कोई भी निर्माता नहीं है। अब रहा प्रश्न ईश्वर के कर्म फल देने का। आप लोग ईश्वर को थानेदार के समान फल-दाता मानते हो, तुम्हारा कहना है कि चोर चोरी करके स्वयं कारावास में जाना नहीं चाहता। उसे थानेदार पकड़ कर कारावास में ले जा कर दन्ड देता है। इसी प्रकार यह जीव भी बुरे कर्म करके स्वयं उसका फल भोगना नहीं चाहता, किन्तु ईश्वर उस जीव को कर्म फल भुगतवाता है।

पर थानेदार के समान ईश्वर को कर्म फलदाता मानने से उसके गुणों में दोषापत्ति आती है। यह उदाहरण ईश्वर पर लागू नहीं होता। चोर चोरी थानेदार की जानकारी में नहीं करता, यदि थानेदार को ज्ञात हो जाय, कि अमुक व्यक्ति अमुक स्थान पर चोरी करने वाला है। तो वह उसे रोकने का पहले ही से प्रबन्ध कर लेगा। यदि यह पता लगने पर भी वह चोरी रोकने की चेष्ठा नहीं करता तो स्वयं अपराधी बनता है। यदि वह कहता है कि चोर चोरी करले फिर मैं उसे दन्ड दूंगा तो ऐसा करने से वह न्याय कर्त्ता के पद से गिर जाता है। यदि वह आँखों से देखता हुआ चोर को चोरी करने से नहीं रोकता तो साथ ही उसका दयालुपन भी नष्ट होता है। थानेदार तो अल्पज्ञ और अल्प शक्ति आदि अनेक त्रुटियों से युक्त है, किन्तु ईश्वर तो सर्वज्ञ

है, वह तो पहले ही जान लेता है कि अमुक स्थान पर चोरी होने वाली है। तो फिर वह उसे क्यों नहीं रोकता। यदि कहो कि ईश्वर को क्या ज्ञात है कहां चोरी होने वाली है। तो ऐसा मानने से ईश्वर की सर्वज्ञता नष्ट हो जायेगी। यदि वह देखता है और फिर भी चोर को चोरी करने से मना नहीं करता, तो वह दयालु नहीं। क्योंकि उसने जिसकी चोरी हो रही है उस पर दया नहीं की। यदि वह चोरी करने के वाद दन्ड देता है तो वह न्यायकारी नहीं। यदि कहो कि ईश्वर तो चोर को चोरी करने से रोकता है किन्तु वह नहीं रुकता, वह जबरन ही चोरी कर लेता है, ऐसा मानने से ईश्वर की सर्व-शक्तिमत्ता का गुण नष्ट हो जाता है। फलत: थानेदार की उपमा ईश्वर पर घटित नहीं हो सकती।

इस प्रकार महाराज श्री की ओर से युक्ति युक्त उत्तर मिलने पर वह आर्य समाजी भाई निरुत्तर होकर चला गया।

यहां से महाराजश्री रोहतक पधारे। वहां ठाणा पति रूप से श्री रामनाथ जी महाराज आदि मुनिराज विराजमान थे। श्री रामनाथ जी महाराज की सेवा में श्री कंवर सेन जी महाराज भी विराजमान थे। यहां पर वहुत दिनों तक प्रवचन का क्रम चलता रहा महाराज श्री के यहां विराजते हुए दुवारा महावीर जयन्ती का पुण्य पर्व आ गया। अत: स्थानीय जनता ने सामूहिक व सम्मिलित रूप से महावीर जयन्ती मनाने का निश्चय किया। स्थानीय समाज की ओर से महाराज श्री की सेवा में अनुरोध किया गया कि आपश्री इस महोत्सव पर कुछ उपदेश देने की अवश्य कृपा करें।

तदनुसार लाल कपूर चन्द जी जैन की वगीची में विराट सभा का आयोजन किया गया। जिस में महाराज श्री के भगवात महावीर स्वामी के पवित्र जीवन सम्बन्धी प्रवचन को सुनकर जनता हर्ष विभोर हो उठी। महाराज श्री के प्रवचन समाप्त हो जाने पर हजारों की संख्या में उपस्थित जन समूह के समक्ष स्थानीय कोर्ट के जज महोदय ने महाराज श्री के प्रवचन की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

यहां जींद की बिरादरी के लोग महाराज श्री से चातुर्मास की विनति करने आये। पंडित रत्न गुरु देव श्री वृद्धि चन्द्र जी महाराज ने सुखे समाधे चातुर्मास की विनती स्वीकार करली। कुछ दिन पश्चात् यहां से विहार कर कानी पधारे यहां पर दो पोणे दो मास तक महाराज श्री के प्रवचन होते रहे। यहां से फिर रंढाणा की ओर विहार किया। मार्ग में एक गांव में ठहरे, जहां एक आर्य समाजी सज्जन ने ईश्वर कर्तृत्व विषय पर अनेक प्रश्न किये। महाराज श्री ने उनके प्रश्नों का संक्षेप में उत्तर देते हुए बताया कि तुम्हारी आर्य समाज संसार में ये तीन वस्तुएं अनादि मानती है :—

ईश्वर, जीव, और प्रकृति

जब ये तीनों वस्तुएं अनादि हैं, तो भला ईश्वर ने और कौन सी वस्तु बनाई? जिससे तुम ईश्वर को सृष्टिकर्त्ता मानते हो। इस उत्तर से वह मौन हो गया।

यहां से आप रंढ़ाणा पधारे। दुपहर के पश्चात् जाट आदि बहुत से लोग प्रवचन सुनने को आये। ये लोग महाराज श्री के नाम व प्रवचन से पहले ही से परिचित व प्रभावित थे। उस दिन महाराज श्री कुछ अस्वस्थ होने के कारण व्याख्यान देने में असमर्थ थे।

वह जान कर वे लोग अपनी सीधी सादी भाषा में बोले कि 'चलो न यार जो बढ़िया लेक्चर देने वाला हो या बढ़िया सांग करने वाला हो, उन्हें मरोड़ आ ही जाती है।'

ऐसा कहते हुए उनके मन में कोई बुरा भाव न था। क्योंकि वे लोग तो अपने सब काम काज छोड़ कर बड़ी श्रद्धा से महाराज श्री का प्रवचन सुनने आये थे, जिसका लाभ न मिलने से निराशा के कारण उनके मुख से ऐसे शब्द निकल पड़े।

अन्दर बैठे हुए महाराज श्री उनके ऐसे वचन सुनकर मन ही मन मुस्करा पड़े। उनकी सीधी सीधी अभिव्यक्ति के कारण आप प्रसन्न हो रहे थे। वास्तव में ग्रामीण लोगों का जीवन प्रायः ऐसा ही निष्कपट और भद्र होता है। वे लोग उस समय तो ऐसा कहते चले गये। पर दूसरे दिन जब महाराज श्री ने उन्हें अपने प्रवचनामृत से अप्लावित कर दिया तो वे बहुत प्रसन्न हुए।

जीन्द चातुर्मास

(सं० १९९४)

रंढाणा से विहार कर महाराज श्री जीन्द पधारे।

वीर संवत २४६३ विक्रमी संवत १९९४ सन् १९३७ का चातुर्मास जीन्द हुआ चातुर्मास प्रारम्भ होने के बीस दिन पहले ही आप यहां पधार गये थे।

गणावच्छेदक पदवी विभूषित श्री बनवारी लाल जी महाराज व तपस्वी श्री फकीर चन्द जी महाराज, ठाणा दो पहले ही से यहां विराजमान थे क्योंकि उनका चातुर्मास जींद नगर के समीपवर्ती कसूण नामक क्षेत्र में करने का निश्चय हो चुका था।

श्री वृद्धिचन्द्र जी महाराज का स्वर्गवास

यहां पर चातुर्मास के प्रारम्भ से पूर्व ही पंडित श्री वृद्धिचन्द जी महारा अस्वस्थ हो गये। यद्यपि आपने श्री रामनाथ जी महाराज आदि कई मुनि के पास समय समय पर अपने जीवन की त्रुटियों की आलोचना कर आत शुद्धि करली थी। और आपके पेशाब में शूगर आती थी, इस रोग के रोगी व भूख और प्यास अधिक मात्रा में लगती है। वह भूख को सहन नहीं क सकता इसलिए उपवास करना आप के लिए बड़ा कठिन था, तो भी आलोच द्वारा लिए गए प्रायश्चित को उतारने के लिए कई बार पांच पांच दिन त के आपने उपवास किये।

यहां पर गणावच्छेदक श्री बनवारी लाल जी महाराज के समक्ष भी आ शुद्ध हृदय से अपनी आलोचना की। केवल एक नंदी सूत्र अपनी निश्राय रख कर दूसरे शास्त्रों का ममत्व त्याग दिया। चातुर्मास प्रारम्भ होने

महाराज श्री का स्वास्थ्य उत्तरोत्तर बिगड़ने लगा। अस्वस्थता बढ़ गई और महाराज श्री के पैरों और मुंह पर सूजन आने लगी। जिससे प्रतीत होता था कि अब महाराज श्री शीघ्र ही इस चोले को त्यागने वाले हैं। अतः महाराज श्री की ओर से इधर-उधर सब साधु साध्वी और श्रावक श्राविकाओं के संघों को क्षमापना पत्र भेज दिये गये। जिसमें महाराज श्री ने मन, वचन आदि के द्वारा भूल से की गई असातना आदि के लिए सबसे क्षमा याचना की गई थी।

यद्यपि आप परम शान्त और सबके पर प्रिय थे, फिर भी आपने क्षमा मांगनी उचित समझी।

अन्तिम समय निकट जान श्री प्रेम चन्द जी महाराज ने महाराज श्री से निवेदन किया कि मेरे योग्य शिक्षा व उपदेश देने की कृपा कीजिए।

तब महाराज श्री ने अपने मुखारविन्द से यही आदेश दिया कि 'खूब संयम पालना'। गुरुदेव का बस यही आदेश व आशीर्वाद महाराज श्री के जीवन में प्रतिक्षण साथ दे रहा है।

संवत् १९९४ की सावन वदी एकादशी को गुरुदेव श्री वृद्धिचन्द जी महाराज अत्यधिक दुर्वल व अस्वस्थ हो गये। यहां तक कि बोलना भी कठिन हो गया। थोड़ा सा दिन शेष रहते श्री प्रेमचन्द जी महाराज ने महाराज श्री को सागारी संथारा करा दिया। थोड़ी देर बाद बुड़लाढ़ा मंडी का एक भाई डाक्टर को लेकर आया। उसने महाराज श्री का बुखार देखा, तो वह किंकर्त्तव्य विमूढ़ रह गया, क्योंकि उस समय उन्हें लगभग १०८ डिग्री ज्वर था। धीरे-धीरे दिन वित चला, और चराचर मात्र पर रात्रि ने अपनी काली चादर डाल का उपक्रम प्रारम्भ कर दिया। संसारी प्राणी मीठी नींद की गोद में सोने जा रहे थे, तो उधर बालब्रह्मचारी मुनिराज गुरु श्री वृद्धिचन्द जी महाराज भी अनंत निद्रा की गोद में विश्राम लेने की ओर कदम कदम बढ़ते जा रहे थे। मन्द श्वासों की गति के साथ आपके जीवन की ज्योति क्षीण होती जा रही थी।

इस प्रकार सूर्योदय से कुछ समय पूर्व आपकी जीवन-लीला समाप्त हो गई

बस फिर क्या था, देखते ही देखते सारे नगर में आपके स्वर्गवास का समाचार फैल गया । कुछ ही क्षणों में हजारों श्रद्धालु नर-नारियों की भीड़ वहां एकत्रित हो गई । देह-त्याग के समय महाराज श्री के सिर बाल एकदम सीधे खड़े हो गये, और आंखे ज्यों की त्यों खुली रहीं ।

शास्त्रीय दृष्टि से यह उच्च गति का सूचक है । महाराज श्री के शरीर को देखकर ऐसा प्रतीत होता था, कि मानो ये तो जीवित ही हैं ।

जीन्द के श्रावक संघ ने तार, पत्र, व आदमियों के द्वारा दूसरे नगरों व गांवों के थी संघों को महाराज श्री के स्वर्गवास की सूचना भेज दी । ज्यों ज्यों लोगों को सूचना मिलती गई, त्यों त्यों बाहर के भी हजारों लोग एकत्रित हो गये । सहस्त्रों नर नारियों के समूह के साथ महाराज श्री की अर्थी प्रमुख बाजारों और मोहल्लों से होती हुई, सायंकाल चार बजे के लगभग चौधरी ब्रज लाल जी के बाग में पहुँची । वहां उनका चन्दन आदि के द्वारा दाह संस्कार किया गया ।

महाराज श्री के शव पर स्थानिय व बाहर के ८१ दुशाले डाले गये थे । इस प्रकार दाह संस्कार कर सब लोग स्थानक में लौट आये । और महाराज श्री से मंगली सुन अपने अपने घर विदा हुए ।

गुरु श्री वृद्धि चन्द जी महाराज का संक्षिप्त परिचय—

दूसरे दिन सावन वदी त्रयोदशी को स्थानिय व बाहर से आई हुई दर्शनार्थी जनता के समक्ष भाषण देते हुए श्री प्रेमचन्द जी महाराज ने स्वर्गीय गुरु श्री वृद्धिचन्द जी महाराज के जीवन वृत्त पर अत्यन्त मार्मिक रूप से प्रकाश डाला । आपके जीवन का परिचय देते हुए महाराज श्री ने बताया कि स्वर्गीय गुरु श्री वृद्धिचन्द जी महाराज वीर भूमि मेवाड़ के निवासी थे । आपका जन्म उदयपुर रियासत के अन्तर्गत बगडून्दा नामक एक छोटे गांव में हुआ था । आप जन्म से ओसवाल लोढ़ा थे । आपके पिताश्री दृढ़ धार्मिक भावना वाले श्रावक थे । उन्होंने मुनिराजों के समक्ष यह प्रतिज्ञा की थी की मेरे घर का कोई भी बेटा बेटी यदि दीक्षा लेनी चाहेगा, तो में उसे मना नहीं करूंगा ।

कैसा महान् है यह त्याग। बचपन से ही आपके हृदय में धार्मिक संस्कार जागृत हो गये थे। धर्म ध्यान में खूब मन लगता था। कुल परम्परा के अनुसार छुटपन में ही आपके माता पिता ने आपकी सगाई कर दी थी, वे लोग आपके विवाह के भी स्वपन देखने लगे थे। बेटे की सगाई कर देने के बाद भला किस माता के हृदय में यह लालसा प्रबल वेगमती न हो उठेगी कि वह अपनी नई नवेली सलोनी सुकुमारी पुत्रवधू के ठुमुकते हुए पांवों की पायलों की मधुर रुनझुन रुनझुन ध्वनि से अपने घर आँगन को मुखरित होता देखे। प्रत्येक माता उत्सुकता पूर्वक उस दिन की प्रतीक्षा करती है, जबकि उसके लाडले लाल की पुत्रवधु के रूप में साक्षात् गृहलक्ष्मी का उसके घर में पदार्पण हो। उस जननी के हृदय की दशा का भला कौन वर्णन कर सकता है। जिसका होनहार बालक घर में नववधू को लाने के स्थान पर घर वालों से ममता मोह त्याग घर बार के सब सु ख वैभव को बिसार मुनि वृत्ति को अपनाने के लिए अग्रसर हो रहा हो। इस प्रकार एक ओर तो दिन पर दिन आपके हृदय में वैराग्य की भावना बढ़ती जा रही थी, तो दूसरी ओर माता पिता की उत्सुकता बढ़ रही थी, आपका शीघ्राति शीघ्र विवाह करने की। एक दिन जननी जनक ने विवाह की निश्चित तिथि से आपको सूचित किया और बताया कि तुम्हारा लग्न आने वाला है।

यह सुन विवाह के प्रस्ताव को ठुकराते हुए आपने अपनी वैराग्य भावनाओं को माता पिता के समक्ष प्रकट कर दिया। और बताया कि मेरे विचार तो इन विष भरे भोग भुजंगो की त्याग कर दीक्षा लेने के हैं, इसलिए हे पिता जी मैं विवाह नहीं करवाना चाहता, आप मुझे इसके लिए बाध्य न करें।

माता पिता ने यह सुनकर बड़े धैर्य और शान्ति के साथ समझाया कि बेटा, इस उठती हुई जवानी की तरंगों में साधु वृत्ति का पालन बड़ा ही कठिन है। यह तो स्वयंभू रमण समुद्र को भुजाओं से तैर कर पार करना है, सुमेरु पर्वत को कांटे में रख कर तोलना है, और मोम के दांतों से लोहे के चने चबाना है। यह साधुपना बच्चों का खेल नहीं। इसमें सब प्रकार की सुख

सुविधाओं को छोड़कर स्वेच्छापूर्वक सैंकड़ों कष्ट उठाने पड़ते हैं। यह कह कर उन्होंने संयम-पालन केसब कष्टों का बड़े विस्तार से वर्णन कर सुनाया।

माता पिता की सब बातें सुनकर आपनेक हा कि आत्म-साधना के पथिक के मार्ग में आने वाली ये सब प्रकार की आपत्तियों कष्टों और विघ्न बाधाओं का सामना करना ही पड़ता है। संयम के कष्ट सहन करने के लिए ही तो साधु बनना है, साधु बनकर भी यदि सुख सुविधाओं के पीछे पड़े रहे तो गृहस्थ को ही क्यों छोड़ा जाय। संयम पालन करने में जो कष्ट आते हैं वह कोई नई बात नहीं है।

तब अन्ततर आपको गोगुन्दा के पास ले जाया गया। उन राजा साहब ने भी आपको अनेक प्रकार से समझाया बुझाया। आपने राजा साहब को भी यही उत्तर दिया कि अब मेरा मन सांसारिक सुख भोगों या घर बार के माया मोह में नहीं लगता। ऐसी दृढ़ वैराग्य भावना को देखकर राजा साहब ने भी कहा कि यदि आपके ऐसे ही शुभ विचार हैं तो आप अपने कार्य में स्वतन्त्र हैं।

इस प्रकार पिता जी ने संयम के कष्ट तो बताये पर संयम लेने से मना नहीं किया। अन्त में माता पिता ने सोचा कि अब इन्हें दीक्षा दिला देना ही उचित होगा, तदनुसार आपके सांसारिक पक्ष के ताऊ के पुत्र श्री नेमीचन्द जी महाराज (जो जैन साधु बने हुए थे) के पास अपने खर्च से बड़े ठाठ बाट के साथ उन्हें दीक्षा दिला दी।

धन्य है उस माता पिता जिन्होंने अपने होनहार पुत्र रत्न को अपगे हाथों दीक्षा दिला दी। यह इस कलिकाल में सत्ययुग जैसी घटना है। आपके साथ ही आपके बड़े भ्राता श्री कंवर सेन जी भी दीक्षा लेना चाहते थे, किन्तु उनका विवाह हो चुका था। और उनकी पत्नी तेरह पंथियों की बेटी थी। उसने बड़ा भारी कलह किया और कहा कि यदि तुम दीक्षीत हो जाओगे तो मैं कुए में गिर कर अपने प्राण दे दूंगी। इस प्रकार कुछ घर वालों के आग्रह और कुछ भोगावली कर्मोदय से आप अपने छोटे भाई के साथ तब दीक्षा न ले सके। बारह वर्ष बाद जब आपकी धर्म पत्नी कालधर्म को प्राप्त हो गई, तो आप

अपने छोटे भाई श्री वृद्धिचन्द जी महाराज के पास शिष्य रूप से दीक्षित हो गये।

श्री वृद्धिचन्द जी महाराज ने दीक्षा तो अपने ताऊ जात भाई श्री नेमी चन्द जी महाराज के पास ही ली थी, पर जब कुछ वर्षों के बाद पंजाब से चरित्रचूडामणि, क्रियापात्र, मधुर गायक पंजाब कोयल श्री मया राम जी महाराज मेवाड़ में पधारे तो उनका उच्च कोटि का क्रियाचरित्र देखकर आपने श्री मायाराम जी महाराज की सेवा में रहने के लिए अपने दीक्षा गुरु श्री नेमीचन्द जी महाराज से आज्ञा मांगी। इस पर श्री नेमीचन्द जी महाराज ने सहर्ष बड़ी उदारता के साथ श्री मयाराम जी महाराज के पास रहने की आज्ञा दे दी। इस प्रकार आप श्री मयाराम जी महाराज के साथ पंजाब में पधार गये।

आपने अनुमानतः उन्नीस वर्ष की आयु में दीक्षा ली थी, और अड़तालीस वर्ष की लम्बी अवधि तक संयम का पालन किया तथा ६७ वर्ष की आयु में देह त्याग कर स्वर्ग पधारे।

आपके पवित्र जीवन चरित्र को सुनकर सभी श्रोतागण भावमग्न हो गये।

जींद के चातुर्मास में पर्यूषण पर्व बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। महाराज श्री ने अंतगढ़ सूत्र का वाचन किया। धर्मध्यान और तपस्याएं भी खूब हुई संवत्सरी के दिन चौरासी लाख जिवायोनियों से क्षमा याचना की।

जींद के इस चातुर्मास में व्याख्यान वाणी और धर्म ध्यान का खूब ठाठ लगा रहा और तपस्याएं भी बहुत हुईं।

चातुर्मास समाप्त हो जाने पर गणावच्छेदक श्री बनवारी लाल जी महाराज को कसूण से जींद आना था, उनकी सेवा में स्वागतार्थ एक मुनिराज पहुंचे, तब वे तीनों मुनिराज वहां से जींद पधारे।

श्री फकीर चन्द जी महाराज को चातुर्मास में ही श्वास रोग हो गया था। अतः आप उपचार के लिए जींद पधारे थे, इसी कारण श्री प्रेम चन्द जी

महाराज को चातुर्मास समाप्ति के अनन्तर भी पांच सात दिन तक और जीन्द ही विराजना पड़ा। एक सप्ताह के पश्चात् यहां से विहार कर दिया गया। विहार के समय यहां के श्रीसंघ ने बहुत बड़ी संख्या में एकत्रित होकर महाराज श्री को विदाई दी। बहुत दूर तक सब लोग साथ चलते रहे। नगर से काफी दूर तक उन्हें साथ आया देख महाराज श्री ने मार्ग में खड़े होकर मांगलीक सुनाई। सारी जनता महाराज श्री की विदाई से बहुत विह्वल हो रही थी, किन्तु साधु का धर्म तो ग्रामानुग्राम विचरने का ही है।

यहां से विहार कर महाराज की मार्गवर्ती ग्रामों को परसते हुए रोहतक पधारे। यहां कुछ दिन विराज कर श्री राम जी लाल महाराज व महाराज श्री आदि मुनिराज यहां से विहार कर कनी आदि छोटे ग्रामों में विचरते हुए पुरखास गांव में पधारे। यहां पिपली खेड़ा ग्राम से श्री नत्थूलाल जी महाराज, पं० श्री मदन लाल जी महाराज, आदि मुनिराज भी पधार गये। यहां पर कुछ दिन तक चोपाल में सार्वजनिक प्रवचन होते रहे।

यहां से विहार कर चिलकाना खेड़ी, डेरामोवटी होते हुए झज्झारो गढ़ी पधारे। यहां दो या तीन दिन तक धर्मोपदेश देकर ग्रामानुग्राम विचरते हुए यमुना पार कर छपरोली पधारे।

यहां पर पूज्य श्री पृथ्वीचन्द श्री महाराज व कवि श्री अमर चन्द जी महाराज आदि मुनिराज विराजमान थे। यहां दो दिन धर्म प्रचार कर कुरड़ी ग्राम पधारे। तीन चार दिन यहां विराज कर स्थानीय जनता को अपने धर्मोपदेश से लाभान्वित किया। यहां से तितरवाड़ा आदि ग्रामों को परसते हुए यमुना पार कर राजा खेड़ी होते हुए आप बड़सत पधारे। यहां पर मुलतान सिंह नामक एक वैरागी को जैन भागवत दीक्षा दी। यहां से महाराज श्री छोटे-बड़े गावों में विचरते हुए करनाल पधारे। यहां पर सात आठ दिन तक विराज कर खूब धर्मोपदेश किया।

पंचकूला गुरुकुल का वार्षिकोत्सव

करनाल में पंचकूला श्री जिनेन्द्र गुरुकुल के अधिकारी वर्ग का एक शिष्ट मण्डल महाराज श्री की सेवा में उपस्थित हुआ। उसने विनती की कि हमारे गुरुकुल का वार्षिकोत्सव होने वाला है, इस शुभावसर पर आप श्री पधारने की कृपा कर हमें अनुग्रहीत करें। महाराज श्री ने सुखे समाधे पधारने की स्वीकृति दे दी। यहाँ से आप जूंडला और काछवे आदि ग्रामों में धर्म प्रचार करते हुए थानेसर (कुरुक्षेत्र) पधारे। यहां की विशाल धर्म शाला में महाराज श्री के दो प्रवचन हुए और एक व्याख्यान ईश्वर कर्तृत्व विषय पर खुले बाजार में हुआ। इस व्याख्यान में स्थानीय बड़े बड़े पंडित व नव युवकों ने विशेष उत्साह के साथ भाग लिया।

यहाँ पर सढोरा के श्रीसंघ की ओर से नव युवकों का एक शिष्टमंडल आया और उन्होंने अपने क्षेत्र को परसने की विनती की। उनके निवेदन को स्वीकार करते हुए महाराज श्री ने सढोरा की ओर विहार कर दिया। सढोरा का नव युवक मंडल भी महाराज श्री के साथ साथ रहा, महाराज श्री शाहाबाद होते हुए अम्वाला पधारे। यहां पर आपके सात आठ प्रवचन हुए, जिनमें से एक सार्वजनिक व्याख्यान स्कूल में हुआ। इस व्याख्यान में हरिजन व चमार लोगों ने भी बड़ी संख्या में भाग लिया। वे हरिजन और चमार विवाह शादी के अवसरों पर सूअर मारा करते थे। इसलिए महाराज श्री ने अपने व्याख्यान में जीव हिंसा करने वालों को अपने पापों के फल जिस तरह भोगने पड़ते हैं, उन का विस्तार से वर्णन कर श्रोताओं को हिंसा वृत्ति छोड़ देने के लिए प्रेरित व प्रोत्साहित किया। हिंसा के दुष्परिणाम को सुनकर उन लोगों ने विवाह आदि के अवसर पर सूअर मारने का त्याग कर दिया, यहाँ से विहार कर मलाणी ग्राम पधारे। यहां पर नगर की धर्मशाला में व्याख्यान देकर यहां से चल कर मार्ग में एक रात ठहर सढ़ोरा पधारे। सढोरा में १० दिन तक दोनों समय प्रवचन होते रहे। यहां पर कई दिनों तक निरन्तर वर्षाधिक्य के कारण आहार पानी का परिषह विशेष हुआ। क्योंकि कई दिनों तक आहार पानी न ला

सके। यहां से छोटे बड़े गांवों को परसते हुए महाराज श्री अम्वाला छावनी और वहां से अम्बाला शहर पधारे। अम्बाला शहर में लगभग सात आठ दिन तक आपकी व्याख्यान वाणी का मधुरामृत प्रवाह वहता रहा।

अम्वाला शहर में सनातन धर्मालम्वी लाला देवराज पुरी महाराज

अम्वाला शहर में सनातन धर्मावलम्वी लाला देवराज पुरी महाराज श्री के प्रवचनों से प्रभावित होकर जैन धर्म के प्रति विशेष श्रद्धा शील हो गये। आप का धर्म प्रेम दिन प्रति दिन वढ़ता ही रहा है। आज आप सपरिवार जैन धर्म का पालन कर रहे हैं, आपने श्रावक के १२ व्रत भी ग्रहण कर लिए हैं। प्रतिक्रमण, पच्चीस वोल का थोक आदि भी सीख लिया है। आप युवक होते हुए भी गम्भीर धैर्य शील और शान्त स्वभाव के सज्जन पुरुष हैं। दीन दुखियों को दान देने के लिए भी आप सदा उद्यत रहते हैं, व्यापार में भी जहां तक हो सके झूठ न वोलने का प्रयत्न करते हैं। आपकी वाणी इतनी मधुर है कि उसे सुनते ही दूसरा कोई भी व्यक्ति सहसा आपका प्रशंसक वन जाता है। जड़ मूर्तिवाद तीर्थवाद आदि के आप पहले पक्के पुजारी थे, हजारों रुपये खर्च कर आप सपरिवार दूर-दूर तक यात्रा के लिए जाया करते। किन्तु आज आप इन सव प्रकार के मिथ्यात्व के भार से मुक्त हो गये। और शुद्ध देव गुरु व धर्म पर निष्ठा रखते हैं। साथ ही यथाशक्ति दयावप्रोपे आदि धर्म क्रियाएं भी करते हैं। पुण्योदय के प्रताप से आप की धर्मपत्नी भी सामयिक, दया, पौषध आदि में श्रद्धाशील तथा सेवा करने वाली मिली है। ऐसी ये सव वस्तुएं विना पुण्य के नहीं मिलती। गत वर्ष से इस दम्पति ने आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत भी धारण कर लिया है। यह सव महाराज श्री के प्रवचनों का ही प्रभाव है। महाराज श्री जहां जहां भी चातुर्मास में विराजते हैं आप प्रायः सेवा व दर्शनों का लाभ लेते रहते हैं।

यहां से महाराज श्री वनूड़ पधारे। अम्वाला के वहुत से नव युवक यहां तक साथ में आये थे। यहां से खरड़ में तीन चार दिन विराज कर कुराली होते हुए रोपड़ पधारे।

इस नगर को आज कल रोपड़ कहते हैं, किन्तु इसका पुराना नाम रूपा नगरी था। इस नगर के एक ओर शतलुज दरिया वहता है और दूसरी ओर इसी शतलुज में से निकली हुई एक वड़ी विशाल नहर है। नगर के साथ ही दरियाव पर एक विशाल बांध बांध कर यह वड़ी भारी नहर निकाली गई है। शतलुज पर बने हुए बान्ध का यह दृश्य सचमुच बड़ा ही नयनाभिराम है। बान्ध पर एक ओर दरियाव की मुख्य धारा का जल पुल के अनेक खम्भों में से होकर वड़ी द्रुत गति से नीचे गिरता हुआ बहता है, तो दूसरी ओर अथाह जल प्रवाह वड़ी भारी नहर में गिर रहा है। मानव और प्रकृति के पारस्परिक सहयोग से बने हुए बांध के इस रमणीय दृश्य को देखते देखते मानव के तन मन नयन आदि सभी अनुपम शान्ति शीतलता व आनन्द का अनुभव करते हैं। जैसा कि पहले कहा गया है महाराज श्री को इसी नगर में जैन धर्म की प्राप्ति, विरक्ति व दीक्षा का लाभ हुआ था।

यहाँ से विहार कर विक्कों नामक ग्राम को परसते हुए आप नाला गढ़ पधारे यहां पर प्रात: सायं दोनों समय प्रवचन होते रहे। यहां पर महाराज श्री के सांसारिक ग्राम दभोटा के लोग महाराज श्री के दर्शनार्थ आते रहे। एक दिन, आपके सांसारिक वड़े भ्राता श्री तुलसीराम जी भी दर्शनों के लिए आये। महाराज श्री ने आपको भी उपदेश दिया। उससे प्रभावित होकर आपके बड़े भाई श्री तुलसी राम जी ने कहा कि मैं भी इस संसार के मोह-बन्धनों को तोड़ कर दीक्षा लेना चाहता हूं किन्तु मुझे अभी एक बार वापिस घर जाना होगा, जब आप यहाँ से रोपड़ की ओर विहार करेंगे तो मैं मार्ग में आप को अवश्य आ मिलूंगा। और अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार विना किसी को कहे भरा भराया घर छोड़ कर आप महाराज श्री को मार्ग में ही आ मिले। यहां से रोपड़, खरड़ आदि क्षेत्रों को परसते हुए आप पंचकूला गुरुकुल पहुंच गये। यहां पर वर्तमान श्रमण संघाचार्य श्री आत्माराम जी महाराज, श्री मदन लाल जी महाराज, श्री रामजी लाल जी महाराज आदि मुनिराज पहले ही से विराजमान थे। यहां पर गुरुकुल का वार्षिकोत्सव बड़े समारोह के साथ मनाया जाने लगा।

इस उत्सव की अध्यक्षता इन्दौर मध्य प्रदेश के सुप्रसिद्ध राय बहादूर सेठ श्री कन्हैया लाल जी भंडारी कर रहे थे। इस अवसर पर होशियार पुर आदि कई नगरों की भजन मंडलियां भी आई थीं। श्री कर्मानन्द स्वामी आदि दिगम्बरी मान्यता वाले प्रमुख व्यक्तियों ने भी इस उत्सव में बड़े उत्साह के साथ भाग लिया था। इस अवसर पर बाहर से आये हुये सज्जनों की ओर से चालीस हजार रुपये गुरुकुल की सहायतार्थ प्राप्त हुए। उत्सव के अध्यक्ष सेठ कन्हैयालाल जी भंडारी ने आठ हजार रुपये का आदर्श दान दिया।

यहां से विहार कर महाराज श्री बनूड़, राजपुरा आदि क्षेत्रों में पदार्पण कर पटियाला पधारे। यहां पर सेठ अछरुमल जी की कोठी में दस पन्द्रह दिन तक प्रवचनों का ठाट लगा रहा। इन्हीं दिनों यहां पर श्री महावीर जयन्ती का उत्सव बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। जिसमें महाराज श्री का भगवान श्री महावीर स्वामी के जीवन के सम्बन्ध में अत्यन्त भावपूर्ण प्रवचन हुआ। रात्रि को कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें अनेक प्रसिद्ध कवियों नें भगवान महावीर के जीवन के सम्बन्ध में बड़ी भावपूर्ण कविताएँ सुनाईं। यहां से विहार कर कल्याणपुरा गाँव में एक रात ठहर नाभा पधारे। यहां पर पंडित श्री रामस्वरूप जी महाराज और श्री अमर मुनि जी महाराज ठाणा तीन से विराजित थे। यहां पर श्री अमर मुनि जी ने अपने प्रेम और प्रवचनों के द्वारा स्थानीय जनता को अत्यन्त आकर्षित किया हुआ था। यहाँ श्री अमर मुनि जी के प्रवचनों में जैनेतर जनता भी बड़ी संख्या में भाग लेती थी। बहुत से श्रद्धालु जनों ने आपके प्रवचनामृत का पान कर जैन धर्म अंगीकार कर लिया। श्री अमर मुनि जी एक बड़े भावुक और प्रेम मूर्ति युवा सन्त थे। यहां पर महाराज श्री आठ नौ दिन तक विराजे। आपके प्रवचन के समय विशाल भवन जनता से खचाखच भर जाता था। इस प्रकार स्थानीय नागरिकों ने श्री प्रेमचन्द जी महाराज के प्रेमामृत तथा अमर मुनि जी महाराज के अमर उपदेश से पूरा-पूरा लाभ उठाया।

नाभा से विहार कर अमर गढ़ एक रात विराज कर मलेर कोटला

पधारे। मलेर कोटला में स्थानक वासी समाज के लगभग तीन सौ घर हैं, जिनमें से अधिकतर अग्रवालों के हैं। यहाँ लगभग दस बारह दिन ठहर कर धार्मिक प्रभावना की वृद्धि की। यहां के जैन संघ ने महाराज श्री के ओजस्वी उपदेशों से प्रभावित होकर पितृश्राद्ध करने और मृतकों की हड्डियों को हरिद्वार ले जाकर गंगा जी में डालने की कुप्रथा का त्याग कर दिया।

इस प्रकार त्याग करने पर कुछ ब्राह्मण लोगों ने विरोध किया। एक दिन एक ब्राह्मण महाशय महाराज श्री के पास आये, और उन्होंने महाराज श्री से पूछा कि क्या आपने श्राद्ध व गंगा जी में अस्थियाँ डालने का जैन समाज से त्याग करवाया है। महाराज श्री ने फरमाया कि हाँ और पंडित जी से पूछा कि क्या ब्राह्मणों को जिमाने से पितरों को पहुंचता है ?

पंडित जी ने उत्तर दिया—जी हाँ।

फिर महाराज श्री ने पूछा आप भी अपने पीछे संतान छोड़कर आये हैं, आप का भी वह संतान श्राद्ध करती होगी। आपको भी श्राद्धों के दिनों में आपकी भूतपूर्व संतान के द्वारा किये गये श्राद्ध के पदार्थ मिलते होंगे ? वे बोले जी हाँ।

महाराज श्री ने पूछा कि इसका प्रमाण क्या है ?

पंडित जी ने झट से कहा कि कभी-कभी बैठे-बैठे डकार आ जाती है। यह पूर्व संतान के द्वारा किये गये श्राद्ध का फल नहीं तो और क्या है।

यह सुनकर वहाँ पर बैठे हुए लोग हंसे और महाराज श्री ने कहा कि श्राद्ध तो साल के ३६५ दिनों में एक ही दिन होता है, उसी दिन डकार आनी चाहिए। किन्तु डकार तो जब किसी समय श्राद्ध के दिनों के सिवा दूसरे दिनों में भी आ जाती है ऐसा क्यों ? अब तो पंडित जी निरुत्तर हो गये। और अपना-सा मुंह लेकर चलते बने।

यहाँ पर फरीदकोट की बिरादरी और पटियाले के भाई महाराज श्री के चातुर्मास की विनती के लिए आये। दोनों ने अपने-अपने क्षेत्र में चातुर्मास करने की विनती की।

इस पर महाराज श्री ने उनके सामने अपने विचाप उपस्थित करते हुए कहा कि जो बिरादरी सामूहिक रूप से श्राद्ध व हरिद्वार आदि स्थानों पर मृतकों की अस्थियां डालने त्याग करने का वचन दे, मेरे वहीं पर चातुर्मास करने का भाव है। फरीदकोट वालों ने महाराज श्री के उक्त आदेश को सहर्ष स्वीकार कर लिया। फलतः महाराज श्री ने उन्हे चातुर्मास की सहर्ष स्वीकृति दे दी। चातुर्मास की स्वीकृति प्राप्त होने से फरीदकोट की विरादरी परम प्रसन्न हो वापिस लौट गई।

व समाजी की शंका का समाधान

यहां से विहार कर महाराज श्री मार्ग में एक रात ठहर कर अहमद गढ़ ी पधारे। यहां पर दो तीन दिन व्याख्यान देकर गुञ्जरवाल पधारे। ां भी तीन चार व्याख्यान आपके हुए, यहां से आप राय कोट पहुंचे। वहां ा बारह दिन तक विराज कर अपने धर्मोपदेशों से जनता को लाभान्वित ्या। यहां श्री खड़क चन्द जी महाराज ठाणा तीन ठाणापतिरूप से विराज- ान थे। आप तीनों सगे भाई हैं। यहां से विहार कर एक रात्रि मार्ग में हरते हुए जगरावां पधारे। यहां महाराज श्री आठ दस दिन तक विराजे, क दिन एक देव समाजी भाई ने कर्तृत्व विषय पर महाराज श्री से कुछ श्नोत्तर किये। इन प्रश्नोत्तरों के सिलसिले में उस देव समाजी भाई ने कहा के जो कुछ करती है वह प्रकृति (कुदरत) ही करती है। तब महाराज श्री ने छा कि वह प्रकृति जड़ है या चेतन? इस पर उसने कहा कि इसका मुझे कुछ ज्ञान नहीं है। तब महाराज श्री ने उत्तर दिया कि इसका ज्ञान हो जाने पर तुम्हें अपने आप इस प्रश्न का उत्तर मिल जायगा, इस पर विचार करना। यहां से महाराज श्री मोगा मंडी पधारे, वहां पर दो दिन विराजकर वहां से ग्रामानुग्राम विचरते हुए जीरा नामक कस्बे में पदार्पण किया। बीस बाईस दिन तक यहां की जनता को प्रवचनामृत का पान करा कर आप आगे चल पड़े। तलवंडी, मुदकी, आदि ग्रामों में एक एक रात बिता कर फरीद कोट पहुंचे।

फरीदकोट चातुर्मास

(संवत् १९९५)

इस प्रकार वीर सं० २४६४ विक्रम सं० १९९५ तदनुसार सन् १९३८ के चातुर्मासार्थ फरीद कोट नगर में प्रवेश के समय स्थानीय जनता ने आपका बड़ा भव्य स्वागत किया। यहां पर प्रातः काल व मध्यान्ह दोनों समय प्रवचनों का क्रम चलता रहा।

श्री तुलसीराम जी व मंगतराम जी की दीक्षा

फरीद कोट में श्रावण सुदी त्रयोदशी को दो भाईयों की दीक्षाएँ हुईं। प्रथम महाराज श्री के भाई श्री तुलसीराम जी की जो नालागढ़ से ही महाराज श्री के साथ वैरागी रूप में रहते आ रहे थे और दूसरे श्री मंगतराम जी की। फरीद कोट के श्री संघ ने बड़े उत्साह और धूम-धाम के साथ दीक्षा महोत्सव की तैयारी की थी। इस महोत्सव के अवसर पर हाथी घोड़ा बैण्ड बाजे आदि का आयोजन दर्शनीय था।

पंचकूला गुरुकुल के प्रचारकों की भजन मंडली, बुड़लाढ़ा मन्डी की पाठशाला के मास्टर कालूराम जी के विद्यार्थियों की भजन मंडली, व फरीद कोट की भजन मंडलियों ने मिल कर इस उत्सव की रौनक को खूब बढ़ा दिया था। अनेक प्रकार के साज बाज से युक्त कई बैंड बाजे जुलूस के आगे-आगे चल रहे थे। उनके पीछे सजे-धजे घोड़े मदमाती व चंचल गति से आगे बढ़ते जा रहे थे। बीच-बीच में भजन मंडलियां अपने मनोहर भजनों के द्वारा जन मन को आकर्षित कर रही थीं। इस प्रकार यह शानदार भव्य जुलूस प्रमुख बाजारों से होता हुआ बरकत हाल के सामने बने हुए विशाल पंडाल में

पहुंचा। दीक्षार्थियों की सवारी एक अत्यन्त सुसज्जित रथ में थी। यह रथ फिरोजपुर के दिगम्बर जैन भाइयों का था। इसके आगे लगे हुए चीनी के घोड़ों तथा चित्रकारी का कार्य दर्शनीय था। कहते हैं कि उस समय उसकी लागत अस्सी हजार रुपये के लगभग आई थी। इस प्रकार यह भव्य जुलूस पंडाल के पास पहुंच कर एक विराट सभा के रूप में परिवर्तित हो गया। यह पंडाल भी बड़े ही सुन्दर ढंग से बनाया और सजाया गया था।

दीक्षा महोत्सव के प्रारम्भ में सर्वप्रथम स्थानीय सरकारी स्कूल के अध्यापक कविराज श्री विद्यारत्न जी जैन ने मंगलाचरण का पाठ किया। मंगला चरण के पश्चात् फरीद कोट की भजन मण्डली ने एक ऐसा मर्मस्पर्शी भजन गाया, जिसे सुनकर वैराग्य की भावनायें अनायास ही उद्बुद्ध होने लगीं। तदनन्तर महाराज श्री ने दीक्षा लेने के उद्देश्य और वैराग्य की भावनाओं की व्याख्या करते हुए एक अत्यन्त प्रभाव शाली प्रवचन किया।

महाराज श्री के प्रवचन समाप्त होने पर आप श्री ने दोनों वैरागी भाइयों को दीक्षा का पाठ पढ़ा कर जैन भागवत दीक्षा दी।

फरीद कोट के इस चातुर्मास में लगभग पांच सात सौ दया व पोषे हुए। व्रत आयंबिल भी खूब हुए। संवत्सरी पर्व नगर से बाहर सरकारी हाईस्कूल में मनाया गया। जिसमें महाराज श्री ने आठ बजे से बारह बजे तक प्रवचन किया। संध्या समय वहीं पर संवत्सरी प्रतिक्रमण करके चौरासी लाख जीवा-योनियों से क्षमा याचना की। श्रावक गण ने भी वहीं पर पौसे किये। प्रातः वहां से वापिस थानक पधार गये। इस प्रकार सुखे समाधे धर्म प्रचार करते करते यह चातुर्मास सानन्द सम्पन्न हुआ।

चातुर्मास समाप्त होने पर मार्गशीर्ष कृष्ण प्रतिपदा के दिन फरीद कोट नगर से विहार कर मुनिराज गांव के बाहर आ विराजे। यहां से कोट कपूरा होते हुए जैता मण्डी पधारे। अपने धार्मिक प्रवचनों से यहां की जनता को दो तीन दिन तक लाभान्वित कर यहां से भी विहार कर दिया। रेलवे लाइन के

साथ-साथ चलते और मार्गवर्ती छोटे-मोटे क्षेत्रों को परसते हुए मुनि श्री मानसा मंडी पधारे। यहां पर रात्रि में उपस्थित भाइयों के समक्ष उपदेश देकर फिर प्रातः विहार कर बुढलाढ़ा मंडी पहुँचे। यहां से बरोटा व जाखल मंडियों में धार्मिक भावना को जागृत कर मूणक पधारे।

मूणक में श्री गणेशीलाल जी महाराज व श्री बनवारीलाल जी महाराज आदि मुनिराज पहिले से विराजित थे। यहां पांच दिन तक आपके सार्वजनिक व्याख्यान हुए। श्री शान्ति मुनि जी की दीक्षा भी यहाँ पर इसी समय हुई। मूणक से दस मुनिराजों का एक साथ विहार हुआ। यहाँ से टुहाना में तीन दिन तक धर्म प्रचार कर बडौदा आदि मार्गवर्ती क्षेत्र को परसते हुए इस मुनि मंडली ने जींद में पदार्पण किया।

जींद में श्री शान्ति मुनि जी को बड़ी दीक्षा का पाठ पढाया गया। यहां तीन चार दिन विराज कर जुलाना मन्डी आदि ग्रामों में धार्मिक भावों को जागृत करके ये मुनिराज रोहतक पधारे। रोहतक की जनता को दस पन्द्रह दिन तक सदुपदेश से आनन्दित किया। गणावच्छेदक श्री बनवारीलाला जी महाराज तो रोहतक में विराज गए और महाराज श्री विहार कर यहां से कलानौर पधारे। यहां तीन चार दिन तक महाराज श्री के सार्वजनिक व्याख्यान होते रहे।

उस समय कलानौर में मुसलमानों का बहुत अधिक जोर था। वे लोग किसी भी प्रकार का हिन्दुओं का प्रचार कार्य नहीं देख सकते थे। यहां के हिन्दु मन्दिरों में मुसलमान शंख घडियाल आदि भी नहीं बजाने देते थे। स्थानीय हिन्दु जनता अपनी बहिन बेटियों की इज्जत बचाने में भी सदा भयभीत और शंकित सी रहती थी। इसलिये महाराज श्री के सार्वजनिक प्रवचन कराते हुए भी वे लोग डर रहे थे।

ऐसी स्थिति देखकर महाराज श्री ने एक बनिये से पूछा कि मुसमानों के हाथों अपनी मान प्रतिष्ठा को बेच कर तुम लोग यहां क्यों पड़े हुए हो।

रोहतक पहुंचे। महाराज श्री के यहाँ पधार जाने पर गणावच्छेदक श्री बनवारीलाल जी महाराज आदि ठाणा ३ ने मूणक की ओर विहार कर दिया। यहाँ कुछ दिन ठहर कर 'कानी' नामक ग्राम में धर्म प्रचार करने गये। रोहतक में श्रीराम नाथ जी महाराज के स्वर्ग सिधार जाने के कारण श्री कँवर सेन जी महाराज को यहाँ से मूणक ले जाना था, इसलिए महाराज श्री कानी से वापस रोहतक पधारे। चार पांच दिन यहाँ ठहर कर श्री कँवर सेन जी महाराज को डोली में उठाकर विहार कर दिया ? रोहतक से खरेटी आदि ग्रामों को परसते हुए जींद पधारे। जींद में चार पाँच दिन विराज कर इस मुनि-गण ने मूणक की ओर विहार किया। यहाँ से वड़ोदा आदि ग्रामों में होते हुए टुहाना पधारे।

यहां पर आर्य समाज मन्दिर में महाराज श्री का सार्वजनिक व्याख्यान हुआ। यहां से विहार कर आप लोग मूणक पहुँचे। रोहतक से मूणक तक अस्सी नव्वे मील की लम्बी यात्रा में ये मुनिराज श्री कँवर सेन जी महाराज को डोली में उठा कर लाये थे। धन्य है यह सेवाभाव ? वयोवृद्ध श्री कँवर सेन जी महाराज को मूणक में श्री बनवारी लाल जी महाराज के पास स्थानापति रूप से रख दिया। उनकी सेवा के लिये मुनि श्री तुलसीराम जी भी वहीं रहें।

मूणक से विहार कर महाराज श्री मार्ग में दो रातें विता जब कैंथल नगर के पास पहुंचे तो महाराज श्री के स्वागतार्थ वहां के बहुत से लोग नगर से बाहर आये और अपने साथ अंग्रेजी बैण्ड बाजा भी लाये।

तब महाराज श्री ने पूछा कि आप लोग यह बैण्ड किस लिने लाये हैं ? उत्तर मिला कि आप श्री के स्वागत के लिये। तब महाराज श्री ने समझाय कि हमारे स्वागत में बैंड आदि बाजे नहीं होने चाहियें और न बैण्ड वाले लोगों को हमारे साथ ही चलना चाहिये।

बैण्ड आदि बाजों से जैनमुनियों का स्वागत करना जैन मुनियों की परम्पर के विरुद्ध है। यह गाजे बाजे तो जैनमुनि अपनी दीक्षा के समय ही त्याग दे हैं।

यह सुनकर लोगों ने बैण्ड बाजों को वहीं से लौटा दिया और जनता का जलूस जय के नारों से समस्त वातावरण को गुंजाता हुआ महाराज श्री के पीछे पीछे चलने लगा। इस प्रकार वहां के श्रद्धालु जनों ने बड़े उत्साह के साथ महाराज श्री का हार्दिक स्वागत किया। महाराज श्री यहां नौ दस दिन तक विराज कर धर्म प्रचार करते रहे। आपके तीन सार्वजनिक व्याख्यान अग्रवाल धर्मशाला में हुए।

कैंथल से महाराज श्री सीवन आदि ग्रामों में धर्म प्रचार करते हुए समाणा पधारे। यहां पर श्री महावीर जयन्ती का उत्सव निकट आ गया था, इसलिये स्थानक वासी और श्वेताम्बर मूर्ति पूजक जैन समाज ने सम्मिलित रूप से श्री महावीर जयन्ती उत्सव मनाने का निश्चय किया और महाराज श्री से इस शुभ अवसर पर प्रवचन करने की प्रार्थना की। इसलिये आप यहां दस बारह दिन तक विराजे। महावीर जयन्ती का महोत्सव एक विशाल पंडाल में मनाया गया। महाराज श्री ने अपने प्रवचन में बताया कि भगवान् महावीर स्वामी इस दुःख भरी दुनिया में शान्ति और अहिंसा का संदेश लेकर आये थे। आपने अपने सन्देश में संसार के लोगों को यही बताया था कि यदि तुम स्वयं जीवित रहना चाहते हो तो दूसरों को भी जीने दो। दूसरे किसी प्राणी की हत्या मत करो, स्वयं सुख चाहते हो तो दूसरों को दुख मत दो। जीओ, और जीने दो यही महावीर स्वामी के उपदेशों का मुख्य सूत्र था। इस प्रवचन में हिन्दुओं के अतिरिक्त मुसलमानों ने भी बड़ी संख्या में भाग लिया। यहां पर पटियाला की बिरादरी महाराज श्री के चातुर्मास की विनती के लिये आयी। तदनुसार महाराज श्री ने पटियाला में चातुर्मास करने की विनती स्वीकार कर ली। यहां कई दिनों तक बड़े उत्साह के साथ व्याख्यानों का क्रम चलता रहा। जिन में बहुत से मुसलमान भी सम्मिलित होते थे। विहार के दिन व्याख्यान सभा में एक मुसलमान नवयुवक के महाराज श्री के गुण गान में एक सुन्दर कविता पढ़ी, जिसे सुनकर सब लोग अत्यन्त प्रसन्न और प्रभावित हुए।

समाणे से विहार कर यहां से डेढ़ दो मील पर पास के ग्राम में रात्री में विश्राम किया और दूसरे दिन प्रातःकाल चलकर नाभा पधारे। यहां पर चार

पांच दिन धर्म प्रचार किया। यहां एक भाई को बिरादरी ने किसी कारण से जाति-बहिष्कृत कर रक्खा था। महाराज श्री ने बिरादरी को समझा बुझा उसे फिर जाति में सम्मिलित करा दिया।

नाभा से विहार कर मद्दरगढ़ आदि ग्रामों को परसते हुए आप धूरीमंडी पधारे। यहाँ दो सार्वजनिक व्याख्यान हुए। यहां से श्री टेकचन्द जी महाराज और श्री भागचन्द जी महाराज इन दो मुनिराजों ने तो मूणक की ओर विहार किया तथा महाराज श्री ने ठाणा चार से मलेर कोटला की ओर विहार किया। यहाँ चार पांच दिन तक सार्वजनिक व्याख्यानों का आयोजन किया गया। यहाँ से मोहला होते हुए रायकोट पधारे।

उस समय रायकोट की बिरादरी में बड़ा भारी पारस्परिक मन मुटाव चल रहा था। इस वैमनस्य का मुख्य कारण यह था कि नत्थूलाल जंगीराम विलायतीराम आदि पांच घरों की दुकानों पर धर्म ध्यान करने के लिए स्थान था। जिसकी देख-भाल ये पांच घर वाले ही किया करते थे। साधु साध्वी भी उसी में ठहरा करते थे। और यहाँ की बिरादरी भी वहीं पर धर्म ध्यान करती थी। इन पांचों घरों व बिरादरी में झगड़ा इस बात का था कि स्थानक बिरादरी के अधिकार में रहना चाहिए। पांच घर वालों का कहना था कि यह मकान हमारा है, इसलिये इस पर हमारा ही अधिकार रहेगा। इस प्रकार केवल मकान पर अधिकार की बात को लेकर पारस्परिक वैमनस्य चल हरा था। पंजाब के प्रमुख नगरों के भाई राय कोट आये और उन्होंने दोनों पार्टियों को समझाने के बहुत प्रयत्न किये, परन्तु किसी को भी सफलता न मिली। उन समझाने वाले भाईयों में से लाहौर के जज साहिब लाला रलाराम जैन भी थे। जाते समय उनके मुख से एक ऐसीं खटकने वाली बात निकल गई जिससे वह पाँचों घर क्रुद्ध हो गये। परिणाम स्वरूप इन पाँच घर वालों ने मन्दिर मार्गी आचार्य श्री वल्लभ विजयजी से रायकोट पधारने की विनती की। वल्लभ विजयजी ने उनसे मूर्ति पूजक बनने के वायदे लिए और उनकी विनती स्वीकार कर ली।

एक समय ऐसा था जबकि इन पांच घरों के मुखिया लाला नत्थू लाल जी

इतने दृढ़ विचारों के थे कि उन्होंने राय कोट में आये हुए आचार्य श्री वल्लभ विजयी जी को इसी स्थानक में ठहरने भी नहीं दिया था। और आज ऐसा समय आ गया कि उन्होंने स्वयं मन्दिरमार्गी आचार्य को अपना क्षेत्र स्पर्शने की विनती की।

इसके लिए वल्लभ विजय जी ने इन्हें कई प्रकार के प्रलोभन भी दिये। यह भी कहा कि तुम जहां भी विवाह शादी आदि सम्बन्ध करना चाहोगे, वहीं हो जायगा। इसके अतिरिक्त उन्होंने धन आदि की सहायता देने का प्रलोभन भी दिया। इन पांच घरों में से एक व्यक्ति ऐसा भी था जो कुबड़ा था, योग्य न होने से उसका कहीं विवाह न होता था। अब तो उसकी आयु भी काफी हो गई थी, ऐसे व्यक्ति का भी वल्लभ विजय जी की कृपा से विवाह हो गया।

महाराज श्री ने यहां के समाज में एकता स्थापित करने के लिए बड़ा भारी प्रयत्न किया। दोनों पार्टियां एकत्रित हो भी गईं, पर दोनों एक दूसरे को दोष देने लगीं। और इस प्रकार वाद विवाद बहुत बढ़ गया। जिसमें उन पांच घर वालों ने कहा कि इस मकान को नया बनाने के लिए बिरादरी पहले दस हजार रुपया रक्खे ? इसके उत्तर में मलेर कोटला के भाई कावली मल जी ने कहा कि मैं दे सकता हूँ तब पांच घरवालों ने कहा कि यहां की बिरादरी देवे पर स्थानीय बिरादरी ने यह बात स्वीकार नहीं की।

इस प्रकार स्थानीय बिरादरी ने भी उस समय विचार से काम नहीं लिया। दूसरी बात यह थी कि यहाँ अपनी सम्प्रदाय के तीन मुनिराज विराजमान थे, श्री खड्गचन्द जी महाराज, श्री जीवाराम जी महाराज, व श्री बेली राम जी महाराज। इन तीनों मुनिराजों का रुख भी पांच घर वालों की ओर ही विशेष था। तथा नाथू लाल श्रावक के साथ इनका राग भाव भी अत्यधिक था। ऐसा होते हुए भी इन मुनिराजों ने गुत्थी को सुलझाने के लिए पांच घर वालों को कोई अच्छा सुझाव नहीं दिया, जिससे यह समस्या सुलझ जाती।

आगे चल कर नत्थू लाल श्रावक ने स्वयं यह बताया कि यदि यह तीनों मुनिराज यदि हमें कह देते कि तुम मन्दिर मार्गी आचार्य के पास मत जाओ तो

हम कभी आचार्य वल्लभ विजय जी की विनती के लिए न जाते। हम तो अपनी जिद्द में पागल ही हो गये थे, समय पर हमें इन मुनिराजों की ओर से ऐसी शिक्षा नहीं मिली, जिससे हम सम्भल सकते।

यहां पर अग्रवालों की धर्म शाला में महाराज श्री के तीन सार्वजनिक व्याख्यान हुए। जिनमें हजार डेढ़ हजार के लगभग उपस्थिति होती थी। यहां से विहार कर महाराज श्री गुज्जर वाल पधारे यहाँ पर तीन दिन तक व्याख्यान देकर लुधियाना पहुँचे।

लुधियाना में वर्तमान श्रमण संघाचार्य श्री आत्मा राम जी महाराज के गुरु श्री सालिगराम जी महाराज ठाणापति रूप से विराजमान थे। और पूज्य श्री आत्मा राम जी महाराज भी उन्हीं की सेवा में विराजते थे श्री प्रेमचन्द जी महाराज भी उनकी सेवा में जा विराजे।

कुछ समय पश्चात् पूज्य श्री पृथ्वी चन्द जी महाराज, श्री श्यामलाल जी महाराज, उपाध्याय कवि श्री अमर चन्द जी महाराज आदि ठाणा आठ लुधियाना पधारे। इस प्रकार उस समय लुधियाना में व्याख्यान वाणी का अपूर्व ठाठ लग गया। यहां श्री प्रेमचन्द जी महाराज के दो सार्वजनिक व्याख्यान धर्म शाला में हुए। कुछ समय बाद रायकोट की बिरादरी लुधियाना पहुंची, उन्होंने कहा कि अमुक तारीख को हमारे यहां श्री वल्लभ विजय जा बड़े आडम्बर के साथ प्रवेश करेंगे। और जनता को आकर्षित करने के लिए अनेक प्रकार के समारोह रचेंगे, इसलिए उस समय अपनी बिरादरी को सम्भालने के लिए और धर्मोपदेश का लाभ देने के लिए अपने किसी योग्य मुनिराज के वहां पहुंचने की बड़ी आवश्यकता है। तब उपाध्याय श्री आत्माराम जी महाराज ने फरमाया कि यथाशक्य आपके क्षेत्र में मुनिराजों के भेजने का प्रयत्न किया जायगा।

तदनुसार पं० श्री हेमचन्द जी महाराज, श्री प्रेमचन्द जी महाराज, कवि श्री अमरचन्द जी महाराज आदि मुनिराजों ने रायकोट की ओर विहार कर दिया। एक रात मार्ग में बिताकर आप लोग गुज्जरवाल पधारे! वहां से विहार कर दूसरे दिन रायकोट पहुंचे।

रायकोट में श्री वल्लभ विजय जी के साथ मोर्चा

इस अवसर पर रायकोट के समाज ने वहां पर पधारे हुए उक्त मुनिराजों का बड़े उत्साह के साथ स्वागत किया। जयघोष की ध्वनियों से गगन मंडल गूंजने लगा। यहाँ के समाज की ओर से मुनिराजों के प्रवचन के लिए एक सुसज्जित विशाल पंडाल का निर्माण किया गया था। इस भव्य पंडाल में दैनिक प्रवचनों का क्रम बड़े उल्लासपूर्ण वातावरण में आरम्भ हुआ। हजार बारह सौ श्रोतागण प्रतिदिन प्रवचन में भाग लेने के लिए उपस्थित होने लगे।

दो तीन दिन के पश्चात् बैंड बाजे व नृत्य-संगीत आदि के बड़े भारी आडम्बर के साथ श्री वल्लभ विजयी जी ने रायकोट में प्रवेश किया। इस अवसर पर मूर्ति पूजकों ने श्री वल्लभ विजय जी महाराज तथा स्थानक वासी मुनि श्री खडग्चन्द जी महाराज की जय ध्वनि के नारे लगाये। इसलिये जनता को यह संदेह हुआ कि खडग्चन्द जी महाराज मूर्ति पूजकों से संहमत हैं।

वे लोग दो तीन दिन तक बड़े भारी समारोह के आडम्बर रचते रहे। मन्दिरमार्गी आचार्य ने अपनी मूर्ति पूजा के मन्डन का खूब प्रचार किया।

और इधर श्री प्रेमचन्द जी महाराज ने अपने प्रभावशाली प्रवचन के द्वारा जनता को चेतनोपासना का महत्व बताते हुए कहा कि आत्मा को सम्यक ज्ञान सम्यक दर्शन, और सम्यक् चरित्र की प्राप्ति किसी चेतन-उपास्य देव के द्वारा ही हो सकती है।

उपासक और उपास्य ये दोनों भिन्न-भिन्न वस्तुएं हैं। उपासक होता है उपासना करने वाला और उपास्य होता है जिसकी उपासना की जाय, उपासक से उपास्य अधिक गुणशील होना चाहिए। इसीलिए तो उपासक उपास्य की उपासना करता है। अन्यथा उसे उपासना करने की क्या आवश्यकता। उपासक और उपास्य दोनों ही चेतन होते हैं, तभी तो उपास्य अपने गुण उपासक को दे सकते हैं और उपासक भी ग्रहण कर सकता है। यह नहीं हो सकता कि उपासक तो चैतन्य हो, और उपास्य जड़ हो। विद्यार्थी चैतन्य हो और अध्यापक जड़ हो तो विद्यार्थी को उससे भली विद्या कैसे प्राप्त हो

सकेगी ? इतना ही नहीं यदि चैतन्य अध्यापक भी विद्यार्थी से विद्या में न्यून हो तो विद्यार्थी की विद्या की पूर्ति नहीं हो सकती। जहाँ पर जड़ाकृति रूप कल्पित मास्टर हो, वहाँ तो विद्यार्थी को मिलना ही क्या है। इसीलिए यदि आप लोग गुणशील बनना चाहते हैं तो गुणशील चैतन देव गुरु की उपासना कीजिए यही उपासना का सुन्दर मार्ग है। आपने उपस्थित जन समूह को सम्बोधित करते हुए स्पष्ट शब्दों में कहाकि स्थानक वासी जैन समाज की संस्कृति चेतन उपासना की है, जड़ उपासना की नहीं।

एक दिन आर्य समाज के एक प्रमुख नेता ने व्याख्यान में कुछ निवेदन करने की अनुमति मांगी। महाराज श्री ने उन्हें अपने भाव व्यक्त करने की सहर्ष अनुमति दे दी। उन्होंने अपने भाषण में कहा कि यहाँ पर दो स्थानों पर प्रवचन हो रहे हैं। एक ओर श्री वल्लभ विजय जी महाराज का और दूसरी ओर आप श्री का। क्या ही अच्छा हो, कि दोनों ही मुनिराजों का एक ही स्थान पर प्रवचन हो, जिससे जनता दोनों मुनिराजों के व्याख्यान से लाभ उठा सके।

महाराज श्री ने फरमाया कि मैं तो तैयार हूं। आप चाहे किसी भी स्थान पर हम दोनों के व्याख्यानों का प्रबन्ध करा दें। आप दूसरी ओर से भी पूछलें, वे भी तैयार हैं या नहीं। इस पर वे आर्यसमाजी भाई वल्लभ विजय जी के पास गये, पर उन्होंने उनकी बात स्वीकार नहीं की।

रायकोट में यह बात भी सुनने में आई कि श्री वल्लभ विजय जी ने यह घोषणा की कि मुझे तीन कोट विजय करने हैं। १. रायकोट, २. स्यालकोट, और ३. फरीदकोट। ये तीनों स्थानक वासी सम्प्रदाय के क्षेत्र हैं। फिर यह भी सुनने में आया कि चातुर्मास रायकोट में करेंगे, और मन्दिर की नींव यहीं स्थापित करके फिर विहार करेंगे।

यहां के समाज ने महाराज श्री से चातुर्मास करने की विनती की। इस पर महाराज श्री ने फरमाया कि मैं तो चातुर्मास पटियाले का मान चुका हूँ। क्योंकि पटियाले के अग्रवाल स्थानक वासी भाईयों में अपने धर्म के प्रति दिन

पर दिन शिथिलता आती जा रही है। इसलिए वहां चातुर्मास का होना अत्यावश्यक हैं।

आप लोग चातुर्मास की विनती श्री मदनलाल जी महाराज से कर सकते हैं। वे इस समय कुसूर में विराजमान हैं। उनका चातुर्मास गुजरांवाले माना हुआ है। आप गुजरांवाले के भाईयों से चातुर्मास की मांगनी कर सकते हैं। क्योंकि वहां के श्रावक बड़े समझदार व चतुर हैं, सम्भव है वे आपकी मांग स्वीकार कर लेंगे। यदि श्री मदनलाल जी महाराज किसी कारण विशेष से यहां पर चातुर्मास न कर सकें, तो वे पटियाले कर सकते हैं और मैं यहां कर लूंगा।

तदनुसार यहाँ के समाज ने गुजरांवाले के भाईयों को तार देकर कुसूर बलाया, और वे स्वयं भी कुसूर पहुंचगये।

वहां विराजित श्री मदनलाल जी महाराज से रायकोट में चातुर्मास करने की विनती की। और कहा कि इस वर्ष रायकोट में चातुर्मास करना बहुत आवश्यक है। इस पर गुजरांवाले के भाईयों ने भी महाराज श्री से यही विनती की कि इस वर्ष आप श्री का चातुर्मास रायकोट में ही हो तो अच्छा है।

इस पर श्री मदनलाल जी महाराज ने फरमाया कि यदि श्री कवि जी मेरे साथ रायकोट में रहें तो मैं वहां चातुर्मास कर सकता हूं। इस पर स्थानीय समाज ने लुधियान पहुंचकर कवि जी के गुरु पूज्य श्री पृथ्वीचन्द जी महाराज व उपाध्याय श्री आत्माराम जी महराज से कवि जी का चातुर्मास रायकोट कराने की विनती की। पूज्य श्री व उपाध्याय श्री की स्वीकृति लेकर भाई लुधियाने से रायकोट पहुंचे और उन्होंने कवि श्री अमरचन्द जी महाराज को पूज्य श्री की स्वीकृति की सूचना दे दी।

तब पं० श्री हेमचन्द जी महाराज व कवि श्री अमरचन्द जी महाराज आदि मुनिराजों ने रायकोट से लुधियाने की ओर तथा महाराज श्री ने मलेर कोटला की ओर विहार किया।

आप श्री एक रात मार्ग में ठहर कर दूसरे दिन मलेर कोटला पहुँच गये। यहाँ की मन्डी में दो तीन हजार श्रोतागणों की उपस्थिति में महाराज श्री के प्रभावशाली प्रवचन हुए। इन प्रवचनों में मुसलमानों ने भी पर्याप्त संख्या में भाग लिया। यहाँ के हिन्दू और मुसलमानों में बहुत दिनों से झगड़ा चला आ रहा था। इस झगड़े में कई मनुष्यों की हत्याएँ भी हो गई थीं। इसलिए यहाँ की हिन्दू और मुसलमान जनता ने महाराज श्री के प्रवचनों से प्रभावित होकर महाराज श्री से निवेदन किया कि आप कुछ समय यहीं विराज कर इस झगड़े को मिटाने की कृपा कीजिए। उधर चातुर्मास का समय निकट आ रहा था, अतः पटियाले समय पर पहुंचना आवश्यक था। इसलिए समयाभाव के कारण महाराज श्री मलेर कोटला में अधिक न विराज सके।

मलेर कोटला से विहार कर एक रात मार्ग में बिताकर आप नाभा पधारे। यहाँ की मन्डी में डेढ़ दो हजार की जनता की उपस्थिति में महाराज श्री के दो प्रभावशाली प्रवचन हुए। यहाँ से आपने पटियाला की ओर विहार किया और दो रात मार्ग में ठहर कर पटियाले जा पहुँचे।

पटियाला चातुर्मास

(सं० १९९६)

इस प्रकार वीर संवत् २४६५ विक्रम संवत् १९९६ तदनुसार सन् १९३९ का चातुर्मास करने के लिये आप श्री का पटियाला नगर में प्रवेश हुआ।

प्रवेश के समय स्थानीय जैन व जैनेतर जनता ने आपके स्वागत में बड़े उत्साह पूर्वक बड़ी भारी संख्या में भाग लिया। जन समूह के जय घोषों से सब गली बाजार प्रतिध्वनित होते जा रहे थे। इस प्रकार मुख्य मार्गों से होते-होते महाराज श्री सेठ अछरूमल जी की कोठी पर पधार गये।

स्वागतार्थ आई हुई जनता को प्रसङ्गोचित संक्षिप्त उपदेश देकर धर्म कर्म में दृढ़ रहने के लिए प्रेरित किया। सब लोग मंगलीक सुनकर सानन्द अपने अपने घरों को विदा हो गये।

दूसरे दिन के प्रवचन में महाराज श्री ने बड़े सरल एवं वैज्ञानिक ढंग से समझाया कि चातुर्मास किस लिए किया जाता है। चातुर्मास से क्या-क्या लाभ होते हैं आदि-आदि।

महाराज श्री के प्रवचनों की पटियाला नगर में धूम मच गई। दिन पर दिन श्रोतागणों की संख्या बढ़ती जा रही थी। उपस्थित यहां तक बढ़ी कि बाद में आने वालों के लिए बैठने को स्थान तक मिलना कठिन होने लगा। इसलिए लोग सूर्योदय से पहले ही स्थानक में आकर भर जाते थे।

इस चातुर्मास में महाराज श्री ने निम्नलिखित गाथा की व्याख्या की—

सारं दंसणं नाणं सारं तव नियम संजमं शीलं।
सारं जिणवर धम्मं सारं, संलेहणा पंडिये मरणम्॥

यद्यपि का इस गाथा विस्तार बहुत ही विशाल है, किन्तु यहां पर संक्षिप्त रूप से इसका भावार्थ ही दिया जा रहा हैं। इस गाथा में आध्यात्मिक दृष्टि से सार भूत पदार्थों का दिग्दर्शन कराया गया है।

१ सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान व सम्यक् तप नियम, संयम और शील और जिनोपदिष्ट जिन धर्म एवं संलेखन पूर्वक पांडित्यमरण उक्त पदार्थ ही इस संसार में सार हैं।

इसके अतिरिक्त चंदन बाला और सुन्दर राजा की ढ़ाल भी सुनाई महाराज श्री के चातुर्मास से पटियाला की जैन और जैनेतर जनता में धार्मिक भावना की खूब प्रभावना हुई। यहां के बहुत से खत्री अरोड़े आदि भाईयों ने भी गुरु धारणा ली। और सामयिक आदि का पाठ याद कर सामयिक करना प्रारम्भ किया। इस चातुर्मास में महाराज श्री के प्रवचनों में आये हुए भजनों का खत्री जाति के बाबू श्री कृपा राम जी (रिटायर्डमास्टर) ने संग्रह किया।

इस संग्रह को प्रेम संग्रहीत नामक पुस्तिका के रूप में हिन्दी और उर्दू भाषा में प्रकाशित किया गया। उर्दू में मास्टर कृपा राम जी ने इसे अपने खर्च से छपवाया और हिन्दी में लाला श्री शादीराम जी जैन ओसवाल ने प्रकाशित करवाया। ये पुस्तकें प्रेमी जनता को विना मूल्य भैंट की गई। धार्मिक जनों ने इनसे खूब लाभ उठाया।

पर्यूषण पर्व में श्री अन्तगढ़ सूत्र का वाचन किया गया तथा संवत्सरी पर्व बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। क्योंकि इस वर्ष श्रावण दो थे इसलिए यह चातुर्मास पांच महीने का हुआ।

प्रेम पब्लिक लायब्रेरी की स्थापना

चातुर्मास समाप्ति के कुछ दिन पूर्व महाराज श्री के तीन बड़े प्रभावशाली सार्वजनिक व्याख्यात हुए। पहला अनाथालय में, दूसरा सनातन धर्म हाई स्कूल मे और तीसरा गौशाला में हुआ। गौशाला के व्याख्यान में महाराज श्री ने गोवध के कारणों पर बड़े विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि मांस

खाना भी गोवध का एक कारण है। इस प्रवचन के प्रभाव ने हजारों लोगों ने मांसाहार का परित्याग कर दिया।

इस प्रकार चातुर्मास बड़े आनन्द और उल्लासमय वातावरण में समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। चातुर्मास की समाप्ति पर महाराज श्री ने मार्गशीर्ष कृष्णा प्रतिपदा को दो तीन बजे के लगभग पटियाले से विहार कर दिया। इस विहार के समय चार पांच हजार का जनसमूह महाराज श्री को विदाई देने के लिए एकत्रित हुआ था। इस समय जनता ने जिस अगाध श्रद्धा भक्ति का परिचय दिया, वह स्मरणीय है। यहां से विहार कर महाराज श्री लाला अछरूमल जी के बाग की कोठी में विराजे। बाग में आई हुई जनता को महाराज श्री ने पन्द्रह बीस मिनट तक मधुर उपदेश से कृतार्थ किया।

पटियाला की जनता ने यह विचार किया कि श्री प्रेमचन्द जी महाराज के इस ऐतिहासिक चातुर्मास की स्मृति में किसी ऐसी संस्था की स्थापना की जाय जिससे महाराज श्री की स्थायी स्मृति पटियाले में बनी रहे और जिससे जनता भी अधिक से अधिक लाभ उठा सके। विचार विमर्श के पश्चात् यह निश्चय किया गया कि महाराज श्री के नाम पर एक प्रेम पब्लिक लायब्रेरी व वाचनालय की स्थापना की जाय, जिसमें प्रत्येक जाति के व्यक्ति सहयोग दे सकें और सदस्य बन सकें। तदनुसार बहुत से भाई तो तत्काल सदस्य बन गये और उन्होंने चंदा भी लिखा दिया।

इस प्रेम पब्लिक लायब्रेरी का स्थान जैन सभा में रखा गया।

पटियाले से विहार कर महाराज श्री एक रात मार्ग में बिताकर समाणा पहुंचे। यहां पर जैन हाल नया ही बना था, यहां की जनता को आठ नौ दिन तक महाराज श्री ने धर्मोपदेश दिया। यहां श्रद्धालु भाईयों और बाईयों का निरन्तर तांता लगा रहता था।

समाणा से विहार कर नाभा, मलेर कोटला आदि क्षेत्रों का परसते हुए महाराज श्री लुधियाना पधारे। यहां महाराज श्री धर्म ध्यान के लिए नियत

स्थान पुरानी कोतवाली में विराजे। आपने प्रवचनों का क्रम आरम्भ कर दिया। कुछ दिनों बाद पूज्य श्री पृथ्वीचन्द जी महाराज, श्री मदनलाल जी महाराज, कवि श्री अमरचन्द जी महाराज आदि मुनिराज भी रायकोट का चातुर्मास समाप्त कर लुधियाना पधार गये। स्थानीय श्री संघ ने उपाध्याय श्री आत्माराम जी महाराज से निवेदन किया कि हम कोतवाली के खुले मैदान में सार्वजनिक व्याख्यान का प्रबन्ध करना चाहते हैं। ताकि नगर की जैन और जैनेतर सभी जनता लाभ उठा सके।

तब उपाध्याय जी महाराज ने आप श्री को प्रवचन करने की आज्ञा दी।

महाराज श्री के तीन प्रवचन जैन दर्शन और जैनेतर दर्शन की मान्यताओं के सम्बन्ध में हुए। इन प्रवचनों से आपके दर्शनशास्त्र सम्बन्ध अगाध पांडित्य का परिचय प्राप्त होता था।

लुधियाने से विहार कर महाराज श्री फिलोर होते हुए फगवाड़े पधारे। यहाँ आपके तीन चार प्रवचन हुए। यहां की बिरादरी में कुछ आपसी मनमुटाव चल रहा था, आपने उसे मिटाया। यहां से चलकर दो तीन दिन में होशियारपुर पहुंचे। यहां पर आठ नो दिन तक विराजे, और रत्नचन्द नामक एक वैरागी भाई को दीक्षित किया।

यहां अमृतशहर श्री संघ की ओर से एक शिष्ट मण्डल आया और उसने विनती की हमारे नगर में स्वर्गीय पूज्य श्री सोहनलाल जी महाराज का जन्म दिवस महोत्सव मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आप श्री अवश्य पधारने की कृपा करें। महाराजा श्री ने सुखे समाधे पधारने की स्वीकृति दे दी। होशियारपुर से विहार कर महाराज श्री दो दिन मार्ग में ठहरते हुए जालन्धर पधारे।

महासती पार्वती जी का स्वर्गवास

यहां पर जगत प्रसिद्ध व्याख्यात्री महाविदुषी, बाल ब्रह्मचारिणी, महासती श्री पार्वती जी वृद्धावस्था के कारण बहुत दिनों से स्थानापन्न रूप से विराजमान

थी। उस समय वे अत्यधिक अस्वस्थ थीं। अतः महाराज श्री महासती जी को दर्शन देने पधारे। सती जी की वृद्धावस्था व रोग के कारण अत्यधिक दुर्बल व कृष तथा जीर्ण शीर्ण शरीर की अवस्था देखकर महाराज श्री के मन में विचार आया कि महासती जी के शरीर की पूर्वावस्था कितनी दृढ़ सुडौल और प्रभावशाली थी. किन्तु आज उसी शरीर की कैसी अवस्था हो गई है। यह इस शरीर का स्वभाव है कि वह सदा एक सी अवस्था में नहीं रह सकता। कुछ समय पश्चात् श्री नाथुलाल जी महाराज आदि मुनि भी यहाँ पधार गए।

यहाँ कुछ दिन धर्म प्रचार कर महाराज श्री कपूरथला पधारे। जालन्धर के बहुत से भाई कपूरथले तक महाराज श्री के साथ आए। यहां दो तीन दिन विराज कर आपने गुरु के जंडियाले की ओर विहार किया। दो तीन दिन मार्ग में ठहरते हुए जंडियाले पहुंचे। यहाँ की जनता ने महाराज श्री का बड़े भारी उत्साह के साथ भव्य स्वागत किया।

यहाँ ज्ञात हुआ कि महासती श्री पार्वती जी महाराज का स्वर्गवास हो गया है। यहाँ पर अमृतसर केशिष्ट मण्डल ने आकर फिर अमृतसर पधारने की वीनती की। अतः यहाँ से विहार कर महाराज श्री अमृतसर पधारे। यहाँ समाज ने मसाराज श्री का बड़े उत्साह पूर्वक स्वागत किया। सैंकड़ों भाई व बाई महाराज श्री को नगर से बाहर बहुत दूर तक स्वागत करने के लिए आये थे। वे सब जय घोष करते हुए बड़ी धूम-धाम के साथ महाराज श्री को अपने साथ स्थानक में ले गये। वहाँ महाराज श्री के मुखारविन्द से मंगलीक सुन अपने-अपने घरों को विदा हुए।

यहाँ पर पूज्य श्री सोहनलाल कन्या पाठशाला में महाराज श्रीस्वर्गीय पूज्य श्री के जन्म दिवस के अवसर पर उनके जीवन चरित पर बड़े ही मार्मिक ढंग से प्रकाश डालते हुए बताया कि वे कैसे महान् मुनिराज थे। इस पाठशाला की छात्राओं ने भी बहुत-सी सुन्दर कविताएं पढ़ीं। विद्यार्थियों ने भजन सुनाये कवि कंसराज गोहर, और कवि शोरीलाल ने भी पूज्य श्री सोहनलाल जी महाराज के जीवन सम्बन्ध रखने वाली अनेक सुन्दर प्रभाव-

शाली कविताएं सुनाई। इस प्रकार पुज्य श्री का जन्म दिवस हमारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ।

अमृतसर की जैन बिरादरी में उस समय दो पार्टियाँ थीं। एक तो जैन सभा और दूसरी मित्रमण्डल। इन दोनों पार्टियों में परस्पर काफी विरोध चल रहा था। महाराज श्री ने उपदेश देकर दोनों पार्टियों का झगड़ा मिटा दिया।

यहाँ के स्थानक में महाराज श्री के प्रवचन प्रतिदिन होते थे यहाँ आपके दो सार्वजनिक व्याख्यान स्थानीय अध महाविद्यालय में हुए। इन व्याख्यानों में क्या जैन क्या अजैन सभी लोग भारी संख्या में उपस्थित हुए। इस विद्यालय में अन्धे (प्रज्ञाचक्षुओं) को ब्रेल सिष्टस से लिखने और पढ़ने का शिक्षण दिया जाता है। यहाँ बहुत से प्रज्ञाचक्ष अध्ययन करते हैं। महाराज श्री ने प्रज्ञाचक्षुओं से पढ़वाया और लिखवाया उन्होंने ठीक ढंग से शुद्ध-शुद्ध लिख और पढ़कर सुनाया, यहां के संस्कृताध्यपक पं० हरिभानुदत्त शास्त्री (प्रज्ञा चक्षु संस्कृत के अच्छे विद्वान हैं, अपने अर्न्ध होकर सब ग्रन्थ मौखिक याद कर संस्कृत की शास्त्री परीक्षा पास की। हिन्दी संस्कृत कई बड़े-बड़े विद्वान् आपके शिष्य हैं वास्तव में ऐसी संस्थाएं मानव जाति के लिए अत्यन्त उपयोगी हैं।

एक बना दिया। और इस प्रकार कलह मिट गया ।

लाहौर से विहार कर महाराज श्री एक रात मार्ग में बिताकर मरीद की मन्डी पधारे। वहाँ से दूसरे दिन कामों की मन्डी पधारे। यहाँ से विहार कर गुजरांवाला पधारे । यहां के जैन व अजैन समाज ने महाराज श्री का भव्य स्वागत किया। गुजरांवाले में महाराज श्री बेरी वाले चौंक के धर्मस्थान में विराजे। दूसरे दिन से प्रवचनों का क्रम आरम्भ हो गया। जिनमें जनता भारी संख्या में उपस्थित होकर धार्मिक लाभ उठाने लगी।

गुजरांवाले के जैन समाज में भी दो पार्टियां थीं। इनका फंड व मकान सब कुछ अलग-अलग था। महाराज श्री के प्रयत्नों से इन दोनों पार्टियों का एकीकरण हो गया । दोनों ने मिलकर अपने अधिकारियों का एक संघ के रूप में संयुक्त चुनाव भी कर लिया। सब फंड आदि सारी सम्पत्ति जैन सभा के सुपुर्द कर जैन सभा नामक भवन में अपना एक कार्यालय बना लिया। इस जैन सभा के अध्यक्ष श्री लाला दीवान शाह जी और प्रधान मंत्री बा० मुलख राज जी जैन बी० ए० चुने गये।

यहां के सनातन धर्म मन्दिर के सामने महाराज श्री का एक बड़ा प्रभावशाली प्रवचन हुआ। जिसमें आठ नौ हजार नर नारियों ने भाग लिया। यहां पर स्यालकोट के जैन समाज का शिष्ट मंडल महाराज श्री की सेवा में उपस्थित हुआ। और उसने महावीर जयन्ती के शुभावसर पर स्यालकोट पधारने की विनती की। द्रव्य क्षेत्र, काल व भाव देखते हुए महाराज श्री ने इसकी स्वीकृति दे दी।

यहां के स्थानकवासी समाज ने महाराज श्री से विनती की कि इस वर्ष चातुर्मास आप श्री यहीं करने की कृपा करें।

महाराज श्री ने कहा कि जम्मू जाकर चातुर्मास के सम्बन्ध में निर्णय करने के भाव हैं। यहां से विहार कर एक रात मार्ग में ठहर कर डसका नामक ग्राम पधारे । यहां पर आपके दो प्रवचन हुए। यहां से विहार कर एक रात

मार्ग में रुकते हुए दूसरे दिन स्यालकोट पधारे। यहां के जैन समाज ने आपका वड़ा भारी स्वागत किया। उस समय यहां के स्थानकवासी समाज की जन संख्या तीन साढ़े तीन हजार के लगभग थी।

स्यालकोट में महावीर जयन्ती मनाने के लिऐ खुले मैदान में एक भारी पंडाल बनाया गया। इस सभा में पाँज छः हजार नर-नारियों ने भाग लिया। महाराज श्री ने जब भगवान् महावीर स्वामी के पवित्र जीवन के सम्बन्ध में भाव पूर्ण विचार व्यक्त किये तो सभी उपस्थित श्रोतागण महाराज श्री के प्रवचनामृत का पान कर गद्-गद् हो गये।

महाराज श्री का व्याख्यान समाप्त होने पर देहली से आये हुए दैनिक तेज के सम्पादक तथा कांग्रेस के प्रसिद्ध नेता श्री लाला देश वन्धु जी आदि अनेक सज्जनों ने भी भगवान् महावीर स्वामी के जीवन चरित्र पर भाषण दिये। स्यालकोट में महाराज श्री आठ दस दिन तक विराजे। यहां पर आपके कुछ स्थानीय व कुछ सार्वजनिक प्रवचन हुए। यहां स्थानीय एस० एस० जैन सभा नहीं थी। कुछ प्रमुख श्रावक जैन बिरादरी के नाम से समाज का कार्य करते थे।

महाराज श्री ने लोगों को समझाया और अपने उपदेश से प्रभावित कर नये सदस्यों का चुनाव करवा कर जैन सभा स्थापित करवाई। इसके अध्यक्ष लाला मोती शाह व प्रधानमंत्री मास्टर कृष्ण चन्द्र जी वनाये गने। स्यालकोट से महाराज श्री ने झम्मू की ओर विहार कर दिया। मार्ग में एक रात ठहर कर दूसरे दिन नया शहर पहुँचे। यहां पर महाराज श्री सिक्खों के गुरुद्वारे में ठहरे।

यहां राधास्वामी मत की मान्यता रखने वाला एक सुनार भाई था। वह गुरुद्वारे में ग्रन्थ साहब का पाठ किया करता था। राधा स्वामी मत की मान्यता के सम्बन्ध में महाराजा श्री ने कुछ प्रश्न उस भाई से पूछे। महाराज श्री द्वारा पूछे गये प्रश्नों का संतोष जनक उत्तर न दे सकने के कारण उसने अपनी हीनता समझी। और इसी लिए उसने सिक्खों को वहका दिया कि

इनका प्रवचन गुरुद्वारे में नहीं होना चाहिए। हालाँ कि सिक्ख भाइयों ने गुरुद्वारे में प्रवचन की स्वीकृति दे दी थी। दूसरे दिन प्रातःकाल स्यालकोट व जम्मू की विरादरी के पांच सात सौ के लगभग श्रावका श्रविकाएं वहां आ पहुंचे।

उन्होंने महाराजश्री के प्रवचन के लिए सिक्खों से गुरुद्वारा मांगा। सिक्खों ने गुरुद्वारा देने से इन्कार कर दिया। इस घटना से प्रेरित हो, यहां आये हुए श्रावकों ने यहां पर एक व्याख्यान भवन बनाने का विचार किया। जम्मू के एक भाई ने भवन के लिए भूमि देने का वचन दिया तथा दोनों समाजों ने चन्दा एकत्रित करना आरम्भ कर दिया। भवन निर्माण का कार्य दो भाइयों के हाथों में सौंप दिया गया। फलतः थोड़े समय में ही सुन्दर भवन बनकर तैयार हो गया। यहां पर उस समय महाराज श्री का व्याख्यान गुरुद्वारे में न होकर एक बाग में हुआ। नया शहर से चलकर महाराजश्री एक रात मार्ग में ठहर कर जम्मू पधारे। यहां की बिरादरी ने महाराज श्री का भव्य स्वागत किया। यहां महाराज श्री के प्रवचन स्थानक में होने लगे।

कुछ दिनों के पश्चात् गुजरांवाले के श्री संघ की ओर से आये हुए शिष्ट मंडल ने महाराज श्री के व्याख्यान के समय बड़े भाव पूर्ण शब्दों में चातुर्मास गुजरांवाले में करने की अपील की। महाराजा श्री ने सुखे समाधे चातुर्मास की विनती मान ली। जम्मू में महाराज श्री के दो सार्वजनिक व्याख्यान बाजार में हुए, जिनसे हजारों की संख्या में जनता ने लाभ उठाया।

जम्मू में लाहौर से ऐसी सूचना मिली कि वहां पर मन्दिर मार्गी जैन लोगों ने पैम्पलैटों के द्वारा प्रचार किया कि यहाँ जैनों के सबसे बड़े गुरु श्री वल्लभ विजय जी आ रहे। साथ ही यह भी समाचार मिला कि वल्लभ विजय जी लाहौर आने के समय उनके स्वागत में निकाले गए जलूस में स्थानकवासी समाज भी सम्मिलित होगा। यह सुनकर म० श्री ने फरमाया कि देखो, अपने लोग कैसे भोले हैं। एक ओर तो श्री वल्लभ विजय जी स्थानकवासी समाज को तोड़-फोड़ कर मूर्ति पूजक बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं।

और इधर अपने ये भोले श्रावक इनका स्वागत कर रहे हैं। परस्पर मेल-जोल से रहना अच्छी बात है। पर यह मेल जोल तभी स्थायी हो सकता है जब दोनों ओर से ईमानदारी और सच्चाई हो। जो व्यक्ति एक दूसरे के साथ दाव-पेच की नीति चल रहा हो, उसे प्रोत्साहन देना यह अपने लिए हानि-कारक है।

इसी समय स्यालकोट से मास्टर कृष्णचन्द्र जी जम्मू आये और उन्होंने बताया कि श्री वल्लभ विजय जी के स्वागत के लिए गुजरांवाले में भी बड़े जोर-शोर से तैयारियां हो रही हैं। यह भी ज्ञात हुआ कि उस अवसर पर पुष्प वर्षाकरने के लिए लाहौर से एक वायुयान (हवाई जहाज) का भी प्रबन्ध किया गया है। जलूस में पन्द्रह सोलह बैण्ड बाजे होंगे, स्वागत के लिए आमन्त्रण पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित कर स्थापकवासी क्षेत्रों में भी भेजी जा रही है कि आप अधिक से अधिक संख्या में गुजरांवाले पधार कर आचार्य श्री का स्वागत करें।

मास्टर कृष्ण चन्द्र जी ने यह भी कहा कि स्यालकोट में स्थानकवासी जैन सभा की जनरल मीटिंग हुई। उसमें इस विषय पर विचार किया गया कि गुजरांवाले में मन्दिरमार्गी आचार्य के स्वागत में जाना चाहिए या नहीं। तब काला मोती शाह ने यह ऐलान कर दिया कि जो जाना चाहे जा सकता हैं किसी को रोका न जाय।

फलतः स्यालकोट की अपनी बिरादरी में से पांच सात सो नर-नारियों के गजरांरवाले जाने की सम्भावना है।

यहां पर महाराज श्री के दो व्याख्यान स्यालकोट के आर्य समाज मन्दिर के मैदान में हुए। इन व्याख्यानों में चार पांच हजार जनता उपस्थित होती थी। स्थानीय आर्य समाज के अध्यक्ष के विशेष आग्रह पर महाराज श्री के दो सार्वजनिक प्रवचन छावनी के आर्यसमाज मन्दिर के मैदान में भी हुए। पंडाल आदि की सारी व्यवस्था आर्य समाज की ओर से ही की गई थी।

यहां पर विराजित वयोवृद्ध गणावच्छेदक श्री गोकुलचन्द जी महाराज की सेवा में महाराज श्री लगभग एक डेढ़ मास तक विराजे और जनता में धर्म भावना की खूब वृद्धि करते रहे। तत्पश्चात् यहाँ से दोपहर के वाद विहार कर अठारह मील दूर पसरूर नगर उसी दिन पहुँच गए। महाराज श्री के साथ इस विहार में स्यालकोट के २०-२५ भाई भी थे। इन दिनों महाराज श्री की युवा अवस्था थी, वरन इतने समय में १८ मील का विहार बहुत कठिन है। स्मरण रहे कि यह वही पसरूर नगरी है जिसे पूज्य श्रीकाशीराम जी महाराज जैसे नर पुंगव को जन्म देने का गौरव प्राप्त है। आपने पसरूर में दस बारह दिन विहार कर धर्म प्रचार किया। यहां एक सार्वजनिक प्रवचन भी हुआ। यहाँ से विहार महाराज श्री सात मील की दूरी पर एक ग्राम में ठहरे। यहां आहार तो मिल गया, पर पर्याप्त पानी नहीं मिला, यद्यपि पानी के न मिलने के कारण मुनिराज आहार भी नहीं कर सके। थोड़ी सी छाछ और दो सेर अनुमान पानी दोपहर के बाद कड़कती धूप में संतों ने विहार कर दिया। और डसके पधार गये। मार्ग में कड़कती धूप व आग उगलती लुंओं के थपेड़ों के कारण म० श्री व साथी संतों को प्यास व उष्णता-जन्य वड़े कठिन परिषद् का सामना करना पड़ा। यहाँ एक दो दिन महाराज श्री ने धर्म प्रचार किया और सार्वजनिक व्याख्यान भी दिये।

महाराज श्री ने डसके से चलकर एक रात मार्ग में बिताकर गुजरांवाले विहार कर दिया। महाराज श्री के गुजरांवाले पधारने का समाचार सुन कर सैंकड़ों भाई व बाई दो तीन मील की दूरी पर महाराज श्री का स्वागत करने के लिए सामने आए। गुजरांवाले के प्रमुख भाइयों ने वहां की तात्कालिक

साम्प्रदायिक तनाव पूर्ण परिस्थिति का वर्णन करते हुए बताया कि मुसलमानों ने बैरिस्टर करतारसिंह नामक सिक्ख नेता को कत्ल कर दिया, जिससे सारे शहर में हिन्दू, सिक्ख व मुसलमानों में बड़ा भारी विरोध चल रहा है। साम्प्रदायिक संघर्ष कहीं अधिक उग्र रूप धारण न करले इसलिए सतर्कता और सावधानी से काम लेने के विचार से अधिकारियों ने धारा १४४ लगादी है। इस धारा के अनुसार नगर के सार्वजनिक स्थानों या गली बाजारों में पांच या पांच से अधिक व्यक्ति एकत्रित नहीं हो सकते। कोई भी व्यक्ति अपने साथ लाठी, डंडा, या अन्य शस्त्रास्त्र लेकर नहीं चल सकता।

जिस समय महाराज श्रीनगर के निकट पहुँचे तो महाराज श्री के साथ चलने वाले लोग छोटे-छोटे ग्रुपों में अलग-अलग बिखर गए। केवल चार पांच प्रमुख श्रावक ही महाराज श्री के साथ रहे। इसी समय महाराज श्री ने अकस्मात् पीछे मुड़कर देखा तो ज्ञात हुआ कि उनके पीछे-पीछे कुछ पुलिस वाले भी चले आ रहे हैं। महाराज श्री उन्हें देखकर वहीं खड़े हो गए, और उनको पूछा कि आप लोग हमारे साथ क्यों चले आ रहे हैं। यह सुनकर पुलिस के सिपाहियों ने निवेदन किया कि महाराज आजकल गुजरांवाले नगर का वातावरण बड़ा विक्षुब्ध हो रहा है। कोई दुर्घटना न हो जाय, या आपके प्रति कोई अभद्र व्यवहार न कर बैठे, इसलिए हम आपके साथ हैं। पुलिस के सिपाहियों की यह बात सुनकर महाराज श्री वहीं रुक गये, और पुलिस वालों से बोले कि 'हम कभी कहीं पुलिस की सुरक्षा में नहीं रहते। हिन्दू हो या मुसलमान हम सबके प्रति अहिंसा और प्रेम की भावना रखते हैं, इसलिए हमारा कोई भी शत्रु नहीं है, यही कारण है कि हमें पुलिस की सुरक्षा की कोई आवश्यकता नहीं रहती। इस पर वे सिपाही वहीं ठहर गये और महाराज श्री विहार कर नगर के स्थानक में आ बिराजे।

गुजरांवाला चातुर्मास

(सं० १९९७)

इस प्रकार वीर संवत् २४६६ विक्रम संवत् १९९७ ईस्वी सन् १९४० का चातुर्मास करने के लिए महाराज श्री गुजरांवाला स्थानक में जा विराजे। स्थानक में पहुंच कर वहाँ पर उपस्थित जनता को प्रसङ्गोचित संक्षिप्त रूप से उपदेश देते हुए महाराज श्री ने नगर में शान्ति स्थापन के उपायों पर बल दिया। अपने प्रवचन में महाराज श्री ने सब भाईयों और बाईयों से अपील की कि वे अपना व्यवहार इस प्रकार का बनायें कि उनके कार्यों से नगर में शान्ति-स्थापन में सहायता मिले।

साथ ही सब लोगों को शान्तिनाथ भगवान् की माला फेरने का उपदेश दिया और बताया कि शान्तिनाथ भगवान् शान्ति के अग्रदूत थे। माता के गर्भ में आपके आने मात्र से देश में व्याप्त महामारी जैसा भयंकर रोग भी शान्त हो गया था। अतः आप लोग भी उन शान्ति दाता भगवान शान्ति-नाथ का स्मरण करें जिससे आप के नगर में भी अशान्ति का वातावरण नष्ट होकर शान्ति उत्पन्न हो जाय। इस प्रकार शान्ति का सन्देश देकर महाराज श्री ने समागत जनता को मंगलाचरण सुनाया। जिसे सुनकर श्रावक श्राविका-गण स्थानक से सानन्द विसर्जित हुए।

गुजरांवाले में श्री वल्लभ विजय जी की ओर से यह प्रचार किया गया था कि मुनि श्री प्रेमचन्द जी ने चातुर्मास के लिए शुभ मुहूर्त देखकर प्रवेश नहीं किया। इस पर महाराज श्री ने फरमाया कि हम तो कर्मवादी हैं जो कुछ

कर्मानुसार होगा सो देखा जाएगा पर वल्लभ विजय जी अपने गुजरांवाले प्रवेश के शुभ मुहूर्त को संभाल कर रक्खें।

श्री वल्लभ विजय जी के पास लुधियाना में हजारों रुपये खर्च करके बड़े समारोह के साथ दो दीक्षाएं हुई थीं। दीक्षा देने के पश्चात् श्री वल्लभ विजय जी कांगड़े में मन्दिर यात्रा के लिए गये थे। एक नवीन शिष्य तो वहीं पर गायब हो गया, लोगों के यह पूछने पर कि नवीन शिष्य कहां गया, वल्लभ विजय जी की ओर से यह प्रचार किया गया कि उसे तो वन में सिंह भक्षण कर गया। विश्व विजय नामक उनका दूसरा नया शिष्य गुजरांवाले में उनके साथ ही था। यह अनेक भाषाएं जानता था, और बड़ा भारी व्याख्याता व चतुर समझा जाता था। ऐसा भी ज्ञात हुआ कि उसको दीक्षा दिलाने के लिए श्वेताम्बर मूर्ति पूजक जैन समाज ने कई हजार रुपए उसके घर वालों को भी दिये थे।

वास्तव में मूर्ति पूजक समाज को विश्व विजय जी से बहुत आशाएं थीं। यहां तक ज्ञात हुआ कि श्री वल्लभ विजय जी उसे भावी आचार्य पद देने को भी इच्छुक थे। किन्तु गुजरांवाले में वल्लभ विजय जी और उनके नवीन शिष्य विश्व विजय के विचारों में बड़ा भारी मत भेद हो गया। वास्तव में विश्व विजय जी को जैन धर्म के सिद्धान्तों पर आस्था ही न थी। बात तो यह है कि जैन धर्म के सिद्धान्त व नियमोपनियमों के प्रति दीक्षार्थी के हृदय में जब तक सच्ची श्रद्धा न उत्पन्न न हो जाय, तब तक उसे दीक्षित करना बिना जड़ के वृक्ष के फलों का स्वप्न देखना है। परिणाम स्वरूप गुजरांवाले के चातुर्मास काल में ही विश्व विजय जी विश्व विजय कर गये। अर्थात् भेष छोड़कर अपने पुराने सनातन धर्म में चले गये। इस प्रकार जो वल्लभ विजय जी श्री प्रेमचन्द जी महाराज के मुहूर्त की चिन्ता कर रहे थे, वे स्वयं अपने मुहूर्त को भी सम्भाल कर न रख सके। जो दूसरों का उपहास करता है उसे स्वयं उपहासास्पद बनना पड़ता है।

गुजरांवाला में महाराज श्री के प्रवचन प्रतिदिन होने लगे। नगर के हिन्दू

और मुसलमानों में जो वैर भाव की भावना अब तक बढ़ती चली आ रही थी महारज श्री के प्रवचनों के प्रभाव से वह वैर विरोध दिन पर दिन दूर होता चला गया, जिससे सारे नगर में सुख शान्ति का सुन्दर वातावरण हो गया। फलतः महाराज श्री के प्रवचनों में उपस्थिति भी यहां तक बढ़ी कि श्रद्धालु श्रोतागणों के बैठने के लिए विशाल स्थान भी कम पड़ने लगा।

इस स्थान की कमी का अनुभव करते हुए स्थानीय जैन समाज ने स्थानक की साथ वाली खुली जगह को लकड़ियों के तख्तों से छत दिया, जिससे खुली जगह हो गई। महाराज श्री के प्रवचनों में जो जैनेतर भाई आया करते थे, उन्हें मूर्ति पूजक जैन भाई येन केन प्रकारेण वल्लभ विजय जी के व्याख्यान में ले जाने का प्रयत्न किया करते थे। इस प्रकार यदि कोई भाई वहाँ चला भी जाता है तो भी उसकी वहां सन्तुष्टि न होती और वह फिर से महाराज श्री के प्रवचनों में ही आने लग पड़ता।

यहां की भमड़ी (क्षत्री) जाति के मुखिया श्री अमर चन्द जी प्रतिदिन महाराज श्री के प्रवचनों में आया करते थे। एक दिन मन्दिर मार्गी जो भाई साईकिल लेकर उनके घर गये और उनसे आग्रह करने लगे कि आप हमारे आचार्य श्री के प्रवचन में भी चलें। इस प्रकार बड़ा भारी आग्रह करने पर श्री अमरचन्द जी भमड़ी श्री वल्लभ विजय जी के व्याख्यान सुनने के लिए गये।

स्थानीय दैनिक पत्र के सम्पादक ने दूसरे ही दिन अपने पत्र में यह प्रकाशित कर दिया कि मन्दिर मार्गी समाज के वे दो भाई श्री अमरचन्द जी भमड़ी के घर गये और अपने आचार्य के प्रवचन में आने का उनसे बड़ा भारी आग्रह किया, वे दो दिन श्री वल्लभ विजय जी का प्रवचन सुनकर पुनः श्री प्रेमचन्द जी महाराज के प्रवचन में ही आने लगे हैं।

जिससे मन्दिरमार्गी समाज ने अपना बहुत बड़ा अपमान समझा।

श्री लाला छज्जूराम जी, श्री लाला रंगीलाल जी आदि देहली के बहुत से भाई महाराज श्री के दर्शनार्थ यहां आये। यहां के स्थानीय इन्कमटैक्स के डिप्टी

कमिश्नर श्री संगतराय जी खत्री उक्त देहली वाले भाईयों के मिलने वाले थे। देहली वालों ने उनके सारे परिवार को महाराज श्री के दर्शन करवाये, तथा महाराज श्री का प्रवचन सुनवाया। महाराज श्री के मधुर विद्वतापूर्ण प्रभावशाली प्रवचन को सुनकर उस परिवार के हृदय में महाराज श्री के प्रति बड़ी भारी श्रद्धा के भाव जागृत हो गये। और वे प्रतिदिन प्रवचन में भाग लेने लगे। इस प्रकार इन्कमटैक्स डिप्टी कमिश्नर को प्रतिदिन सपरिवार महाराज श्री के प्रवचन में भाग लेते देखकर श्वेताम्वर मन्दिर मार्गी लोगों के हृदय में ईर्ष्या के भाव बढ़ने लगे, और उन्हें अपनी ओर लाने के लिए उन्होंने डिप्टी कमिश्नर साहब के बंगले पर सवारी भेजकर उनसे निवेदन किया कि आप हमारे आचार्य श्री के प्रवचन में भी अवश्य पधारने की कृपा करें।

मन्दिर मार्गी लोगों के इस प्रकार विशेष आग्रह करने पर डिप्टी कमिश्नर महोदय दो तीन दिन तक आचार्य वल्लभ विजय जी के प्रवचन सुनने के लिए गये। उस समय आचार्य जी अपने प्रवचन में सती मैना सुन्दरी जी का जीवन चरित एक कहानी के रूप में सुना रहे थे।

इन्कमटैक्स डिप्टी कमिश्नर महोदय एक पढ़े लिखे शिक्षित व्यक्ति थे। आप को इन कहानियों के सुनने में भला क्या रुचि हो सकती थी। आपके समक्ष तो उच्च कोटि के ठोस शास्त्रीय सिद्धान्तों का विवेचन किया जाता तो आपकी सन्तुष्टि हो सकती थी। यही कारण था कि आपको वल्लभ विजय जी के व्याख्यान में विशेष रस नहीं आया, और आप फिर से महाराज श्री के प्रवचन में प्रति दिन भाग लेने लगे।

यहां की कपड़ा कमेटी के अध्यक्ष श्री सरदार हाकिम सिंह जी भी मन्दिर मार्गी आचार्य का प्रवचन सुनने के लिए गये। उस दिन आचार्य श्री ने अपने प्रवचन में कहा कि जब मक्खन बनकर तैयार हो जाता है तो उसमें अन्तमुहूर्त अर्थात् दो घड़ी के अन्दर असंख्य जीव उत्पन्न हो जाते हैं। अतः वह मक्खन मांस के समान अभक्ष्य हो जाता है अर्थात् खाने के योग्य नहीं रहता। यह सुनकर सरदार हाकिम सिंह जी ने आचार्य जी से पूछा कि आप घी खाते

हैं या नहीं । आचार्य जी ने कहा हां ! सरदार जी ने फिर कहा कि घी भी तो मक्खन से ही बना है यदि मक्खन में दो घड़ी के अन्तर से असंख्य जीव उत्पन्न हो जाते हैं तो उस मक्खन को अग्नि पर तपाने से उन असंख्य मृतक जीवों के शरीर का रस भी तो घी में आ जाता है, फिर भी जिसे आप खाते हैं वह कैसे भक्ष्य हो सकता है । इसका आचार्य श्री कुछ भी उत्तर न दे सके ।

एक दिन कुछ अजैन भाई महाराज श्री की सेवा में उपस्थित हुये और महाराज श्री से विवेदन करने लगे कि श्वेताम्बर मूर्ति पूजक लोग ऐसा कहते हैं कि श्री प्रेमचन्द जी महाराज दूसरे लोगों से तो प्रेम करते हैं, पर हम से विरोध । अतः उन्होंने कहा कि क्या ही अच्छा हो कि श्री वल्लभ विजय जी तथा श्री प्रेमचन्द जी महाराज के प्रवचन एक ही स्थान पर हों । यह सुनकर महाराज श्री ने फरमाया कि हमने तो कभी इन्कार नहीं किया । दूसरे दिन महाराज श्री ने अपने प्रवचन में भी ऐलान किया कि कल नगर के कुछ सज्जन मेरे पास आये थे । उन्होंने कहा कि श्वेताम्बर मूर्ति पूजक लोग चाहते हैं कि दोनों महाराज जी के प्रवचन एक ही स्थान पर हों ताकि सब लोग दोनों प्रवचनों से लाभ उठा सकें । अतः में आप चोगों को अपनी ओर से स्वीकृति देता हूं कि वे लोग जो भी स्थान उचित समझे मैं वहीं प्रवचन के लिए प्रस्तुत हूं ।

तब सरदार हाकिम सिंह जी व लाला ईश्वरदास जी चानणा आदि भाई श्री वल्लभ विजय जी के पास गए और महाराज श्री का संदेश कह सुनाया किन्तु वल्लभाचार्य के पक्ष ने एक स्थान पर प्रवचन के प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया । इसी प्रकार की बातें चलते-चलते पर्यूषण पर्व का समय भी आ गया ।(स्मरण रहे कि श्वेतांबर मूर्ति-पूजकों के पर्यूषण एक दिन पहले लगते थे) इस समय मूर्ति-पूजक समाज की ओर से एक पत्र स्थानक वासी समाज के पास आया, जिसमें लिखा था कि पर्यूषण पर्व पर दोनों समाज की दूकानें बंद रहें । इस पत्र पर स्थानक वासी समाज ने विचार किया और पत्र का यह

उत्तर दिया कि आज सायंकाल दोनों समाजों के दो-दो प्रमुख व्यक्ति परस्पर मिलकर इस विषय पर विचार विनिमय करलें। तदनुसार दोनों समाजों की ओर से दो-दो प्रमुख श्रावकों को नियुक्त कर दिया गया।

अपनी समाज की ओर से बाबू मुलखराज जी बी. ए. और बाबू हंसराज जी को बात चीत करने के लिए कहा गया। इस प्रकार परस्पर पर्याप्त वार्तालाप हुआ। बातचीत करने के बाद बाबू मुलख राज जी ने कहा कि उस दिन दूकानें बंद करके हम लोग क्या दिन भर बेकार ही बैठे रहेंगे।

इससे तो अच्छा यही हैं कि सारे पर्यूषण पर्व में कारोबार बन्द रहे और दोनों मुनिराजों के प्रवचन एक ही स्थान पर हों, जिससे जैन अजैन सभी लोग लाभ उठा सकें। इस पर दूसरे पक्ष की ओर से उत्तर मिला कि इसका उत्तर तो हम अपने आचार्य श्री से पूछ कर देंगे।

इधर के प्रतिनिधियों ने कहा "बहुत अच्छा, आप पूछ लीजिए।" किन्तु मूर्ति पूजक आचार्य ने इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया।

यहाँ पर पर्यूषण महापर्व बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। महाराज श्री ने अंतगढ़ सूत्र का वाचन किया। भाईयों और बाइयों ने खूब तपस्याएं कीं। पर्यूषण पर्व के पश्चात् बाहर के दर्शनार्थी भाई विशेष रूप से बहुत बड़ी संख्या में आने लगे। बीस पच्चीस दिनों तक दर्शनार्थियों की दैनिक संख्या लगभग तेरह चौदह सौ तक पहुंच गई। बाहर से आने वाले दर्शनार्थियों के लिए भोजन व्यवस्था एक-एक दिन, एक-एक घर बारी-बारी से रखी गई थी। बिरादरी की ओर से दर्शनार्थियों के नाश्ते के लिए प्रातःकाल मिठाई व सोडा लेमन का प्रबन्ध था। दोपहर को आने वाले दर्शनार्थियों के लिए भी बिरादरी की ओर से यही प्रबन्ध था। रात्रि के समय भी दर्शनार्थियों के लिए बिस्तर तथा दूध का प्रबन्ध किया गया था। अमृतसर की बिरादरी कवियों को तथा भजन मंडलियों को अपने साथ लेकर आई। इस प्रकार दो-तीन दिन तक रात्रि में कवि सम्मेलन होता रहा, जिससे सारे नगर में बड़ी भारी चहल-पहल रही।

इसके बाद होशियारपुर की बिरादरी भी दर्शनार्थ आई। वह भी अपने साथ भजन मंडली लाई। इन दर्शनार्थियों तथा भजन मंडलियों के कारण नगर में दिन पर दिन रौनक बढ़ने लगी। इन्हीं दिनों गुरु के जंडियाले तथा लाहौर की बिरादरियाँ भी कवियों व भजन मंडलियों के साथ आईं।

उधर स्यालकोट से महाराज श्री के दर्शनार्थीगण एक स्पेशल में आए। इस पर मन्दिर मार्गी समाज ने लाहौर के दैनिक पत्रों में यह प्रकाशित करवा दिया कि श्री वल्लभ विजयजी महाराज के दर्शनार्थियों की स्पेशल आई है। तब स्थानकवासी समाज ने वापिस पत्रों में यह प्रकाशित करवाया कि स्यालकोट से जो स्पेशल आई थी, वह श्री प्रेमचन्द जी महाराज के दर्शनार्थियों की थी। अतः यह प्रकाशित करवाना कि स्पेशल ट्रेन मन्दिर मार्गी आचार्य वल्लभ विजय जी के दर्शनार्थियों की थी, सर्वथा भ्रामक है।

जैनभूषण की पदवी

इस सुअवसर पर पंजाब केसरी पूज्य श्री काशीराम जी महाराज जो उस समय चातुर्मास रूप से बम्बई में 'विराजमान थे' की ओर से लाहौर के हिन्दी संस्कृत के प्रसिद्ध प्रकाशक मेहर चंन्द्र लक्ष्मण दास फर्म के मालिक लाला खजांची रामजी जैन के नाम पर एक तार तथा पत्र आया कि मुनि श्री प्रेमचंद जी ने अपने प्रभावशाली प्रवचनों के द्वारा समाज में जो धर्म जागृति की लहर उत्पन्न की है और साथ ही समाजोन्नति के लिए जो प्रशंसनीय सेवाएँ की हैं, उनसे प्रसन्न होकर मैं मुनि श्री प्रेमचंद जी को जैनभूषण' की पदवी से विभूपित करता हूँ। तदर्थ लाहौर के श्रीसंघ की ओर से 'जैनभूषण' शीर्षक पत्रिका प्रकाशित करवाई गई। जिस की प्रतिलिपि आगे दी जा रही है—

श्री श्री श्री १००८ जैनमुनि श्री स्वामी

प्रेमचन्द जी महाराज को "जैनभूषण" की उपाधि का प्रदान

दीनानाथ !

आज मेरे हर्ष का पारावार नहीं। मेरे कोष में वे शब्द ही नहीं, जिनसे मैं आप पर और इस उपस्थित जनता पर अपने हर्ष को प्रकट कर सकूं।

स्वामिन् !

आप मेरी नहीं, मेरे कुटुम्ब की नहीं, गुजरांवाला की नहीं पंजाब की नहीं, वल्कि समस्त संसार की सम्पत्ति हैं। इस सृष्टि पर आपका अवतरण परोपकार और प्रेम का उद्देश्य लेकर हुआ है।

दयानिधान ! जैसा कि गीता में कहा है :—

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्

जब जब संसार में पापाचरण अत्यधिक बढ़ने लगता है, तब तब इस संसार में महापुरुषों का अवतरण होता है। प्रभो ! आपका जन्म जैसा कि आपके धार्मिक आचरणों से प्रत्यक्ष होता है, अहिंसा का सन्देह लिये हुए हमारे मध्य ज्योति का प्रकाश करके हमारा उद्धार कर रहा है। आपकी हस्ती हमारे लिए ही नहीं अपितु समस्त समाज के लिए मान का कारण हो रही है।

न्यायाम्भोनिधि !

आप न्याय की साक्षात् मूर्ति हैं। आपने अपने प्रेम के संदेश को घर घर पहुंचाकर पंजाब की जैन विरादरियों में परस्पर की फूट के अंकुर को जड़ से उखाड़कर फेंक दिया है। आपके इस उपकार की गूंज केवल पंजाब में ही नहीं वल्कि आपके धर्माचार्य 'वालब्रह्मचारी, धर्मधुरीण, परम योगी, सत्य के अवतार, क्षमा के सागर, दया के निधान, जैनों के परम गुरु, पंजाव केसरी श्री श्री १००८ श्री स्वामी काशीरामजी महाराज, जो आजकल मुम्बई में धर्मध्वजा लहरा रहे हैं, के कानों में भी पहुंच चुकी है। समाज और धर्म की जो जो

अपूर्व सेवाएं आपने की और कर रहे हैं, वे सब उनके दृष्टिगोचर हो रही हैं। जिस योग्यता, निर्भीकता और चतुरता से आप ने पंजाव की बिरादरियों का संगठन किया है, उसकी सूचना भी उनके पवित्र चरणकमलों में पूर्णतया पहुंच चुकी हैं।

अतएव आपकी उपरोक्त सेवाओं के उपलक्ष्य में उन्होंने एक तार द्वारा समस्त समाज के मुझ तुच्छ सेवक को आज्ञा की है कि आपको "जैनभूषण" की उपाधि से अलंकृत करूं। चुनांचे उनके हुक्म और फरमान के मुताबिक श्री वीर प्रभु का स्मरण करके धर्माचार्य, हमारे हृदयों के देवता, पूज्यवर्य श्री स्वामी काशीरामजी महाराज की ओर से मैं स्थानकवासी समाज की उपस्थित जानता के सम्मुख उनकी आज्ञा को शिरोधार्य करके आपको "जैनभूषण" की उपाधि से विभूषित करने का सौभाग्य लेता हूं।

शासनदेव श्री वीर प्रभु से सविनय हाथ जोड़कर नम्र निवेदन है कि आप को नीरोगता और दीर्घायु प्रदान करें, जिससे आप दिन प्रतिदिन भगवान् के मुक्तिमार्ग को केवल पंजाब प्रान्त में ही नहीं बल्कि संसार के कोने कोने में लेखों और वाणी द्वारा पहुंचा सकें।

२६/६/१६४० मैं हूं आपका अनुचर :
खजानचीराम जैन, लाहौर

लाहौर का श्री संघ यह पत्री छपवाकर महाराज श्री के दर्शनार्थ गुजरांवाले आया। लाहौर निवासी लाला खजांनची रामजी जैन ने यह पत्रिका सभा में पढ़कर सुनाई। इस प्रकार महाराज श्री को जैन भूषण पदवी की प्राप्ति के समाचार से सकल समाज में प्रसन्नता का पारावार उमड़ने लगा।

कुछ दिनों बाद श्री वल्लभ विजय जी की वर्षगांठ का दिन आया। इस अवसर पर मूर्ति पूजक समाज की ओर से बड़े भारी आडम्बर पूर्ण समारोह का आयोजन किया गया। इधर स्थानकवासी समाज ने भी इस समय अमृतसर से प्रसिद्ध कवि कंसराज गौहर व कविराज शोरी लालजी भाप्पा, रेडियो

सिगर मास्टर बख्शा आदि कवियों संगीताचार्यों तथा भजन मंडलियों को बुलाया।

दो तीन दिन तक बड़े जोर शोर के साथ कवि सम्मेलन होता रहा। कवि सम्मेलन के इस आयोजन के दिनों में अनेक प्रकार के धार्मिक व उपदेशात्मक भजनों व कविताओं का ठाठ लगा रहा।

श्वेताम्बर मूर्ति पूजक समाज की ओर से समाचार पत्रों में यह मिथ्या समाचार प्रकाशित करवा दिया कि स्थानकवासी और मूर्तिपूजक दोनों समाजों ने अपने-अपने स्थानों पर श्री वल्लभ विजय जी का वर्षगांठ महोत्सव मनाया।

इसपर स्थानीय प्रमुख श्रावक श्री बाबू मुलखराज जी बी० ए० ने उन्हीं समाचार पत्रों में यह स्पष्टीकरण प्रकाशित करवाया कि हमने तो अपनी ओर से धर्मप्रभावना के लिए स्वतन्त्र रूप में संगीत व कवि सम्मेलन आदि के समारोह का आयोजन किया था; किसी की वर्षगांठ के उपलक्ष्य में नहीं।

श्री प्रेम-वेजीटेरियन सोसाइटी की स्थापना

इसी चातुर्मास में यहां के एक भाई श्री बाबू गुलाब राय जी खत्री अपनी एक स्कीम लेकर महाराज श्री के पास आये और निवेदन करने लगे कि गुजरांवाले में एक "श्री प्रेम-वेजीटेरियन सोसाइटी" (शराब, मांसनिषेध समिति) खोली जाय जिसके निम्न पांच नियम हों :—

१. स्वयं वेजीटेरियन बनना व दूसरों को बनाना।

२. स्वयं सदाचारी बनना व दूसरों को बनाना।

३. विश्व में विश्व प्रेम की भावना जागृत करना।

४. बिना किसी मत भेद के 'अहिंसा परमो धर्मः' का प्रचार करना।

५. दीन दुखियों की यथाशक्ति सहायता करना।

यह योजना महाराज श्री तथा सुशिक्षित प्रतिष्ठित व्यक्तियों को बहुत पसंद आयी। फलतः श्री प्रेम वेजीटेरियन सोसाइटी की स्थापना कर दी गई।

उक्त पाँचों नियमों को मानने वाला प्रत्येक व्यक्ति इसका सदस्य बन सकता है। इस सोसाइटी के प्रधान श्री सरदार हाकिम सिंह जी, उपप्रधान पं० मोहन लाल जी व अहमद दीन बट्ट तथा प्रधान मन्त्री श्री मुलखराज जी जैन बी० ए० चुने गये। इस सोसाइटी ने तत्काल अपना कार्य आरम्भ कर दिया और लोग शराब मांस छोड़ कर धड़ाधड़ इसके सदस्य बनने लगे।

गुजरांवाले में उस समय भमड़ी जाति के क्षत्रियों के लगभग साठ सत्तर घर थे। उस जाति में यह प्रथा थी कि लड़कों के मुंडन के समय नौ बकरे काटे जाते थे। इस भमड़ी जाति के मुखिया श्री अमरचन्द जी ने महाराज श्री के अहिंसात्मक प्रवचनों से प्रभावित होकर इस कुप्रथा को त्याग दिया। आपके साथ आपकी बिरादरी ने भी यह कुप्रथा छोड़ दी थी।

इस भमड़ी बिरादरी के लिये एक अलग ही कसाई की दुकान थी। महाराज श्री के द्वारा मांस का त्याग कराने तथा इस सोसाइटी के प्रबल प्रचार के परिणाम के फलस्वरूप उस कसाई की दुकान उठ गई। इस प्रकार अनेक जीवों को जीवनदान मिल गया।

इस भमड़ी जाति के एक सदस्य बेनी राम जी मांस शराब आदि के बड़े भारी व्यसनी थे। एक दिन उन्होंने भी महाराज श्री के प्रवचन में खड़े होकर यह नियम लिया कि मैं जीवन पर्यन्त शराब व मांस का स्पर्श नहीं करूंगा। उनके इस प्रकार नियम धारण करने से सब लोग बहुत प्रसन्न हुए और उन्हें कागज के फूलों की माला पहनाकर सम्मानित किया। एक बार नमूनिये से पीड़ित होने पर डाक्टरों ने तथा दूसरे लोगों ने औषधि के रूप में थोड़ी सी शराब लेने के लिये उन्हें कहा किन्तु वे अपने नियम पर दृढ़ रहे।

उन्हीं दिनों पंजाब प्रान्त की एस० एस० जैन सभा की जनरल मीटिंग भी यहीं हुई, जिसमें सभा के पदाधिकारियों का नव निर्वाचन भी हुआ। इस प्रकार गुजरांवाले का यह चातुर्मास वास्तव में ऐतिहासिक और स्मरणीय था। इस चातुर्मास में ही धर्म ध्यान के ठाठ व श्री संघ के आदर सत्कार व प्यार की मधुर स्मृतियों को भुलाया नहीं जा सकता।

न केवल स्थानीय प्रत्युत प्रान्त के दूसरे प्रमुख नगरों के श्री संघों ने भी इस उल्लासमय वातावरण की भव्यता को बढ़ाने के लिये पूरा-पूरा योग दिया था।

इस प्रकार संवत् १९९७ का चातुर्मास गुजरांवाले में सानन्द सम्पन्न कर वहां से महाराज श्री ने लाहौर की ओर विहार कर दिया। इस विहार के समय पांच-सात हजार भाइयों व बाइयों के विशाल जन समूह ने बड़े उत्साह के साथ बहुत दूर तक आकर महाराज श्री को विदाई दी। इस विहार से पूर्व अनेक सभा संस्थाओं की ओर से महाराज श्री की सेवा में बहुत से अभिनन्दन पत्र समर्पित किये गये। गुजरांवाला स्थानक से विहार कर महाराज श्री नगर से बाहर लाला विलायती राम जी की कोठी पर ठहरे। इस कोठी पर भी हजारों लोग एकत्रित हो गये। महाराज श्री ने इस उपस्थित जन समू को दस पन्द्रह मिन्ट तक धर्मोपदेश दिया। महाराज के प्रवचन के पश्चात् जैनेतर भाइयों ने इस चातुर्मास को गुजरांवाला नगर के लिए ऐतिहासिक महत्व का बताते हुए महाराज श्री की सेवा में अपने भाव भरे श्रद्धा भक्ति के पुष्प भेंट चढ़ाये। दो बालकों ने महाराज श्री के गुणगान में सुन्दर गीतियां गाई।

यहां से दूसरे दिन विहार कर महाराज श्री कामों की मंडी पधारे। गुजरांवाले के बहुत से भाई यहां तक महाराज श्री के साथ आये। कामों की मण्डी में धर्म प्रचार करते हुए यहां से विहार कर दो रात मार्ग में ठहरे और फिर लाहौर के उपनगर शाहदरा पहुँचे। यहां लाहौर श्री संघ के बहुत से सदस्य महाराज श्री के दर्शनार्थ आये और उन्होंने निवेदन किया कि हम लोगों ने श्वेताम्बर मूर्तिपूजक लोगों को भी आपके स्वागत में सम्मिलित होने के लिए आमंत्रित किया गया।

इस पर महाराज श्री ने कहा कि मेरे स्वागत के लिए आमंत्रण देने की कोई आवश्यकता नहीं थी। न मैं ऐसा स्वागत चाहता हूं। यदि वे अपनी श्रद्धा से सम्मिलित होना चाहें तो हो सकते हैं।

दूसरे दिन शाहदरा से विहार कर महाराजश्री लाहौर पधारे। लाहौर के श्रीसंघ ने महाराजश्री का भव्य स्वागत किया। यहां पर महाराजश्री ने सैदमिट्ठा

बाजार में नवनिर्मित विशाल जैन हाल में अपने प्रवचनों का क्रम आरम्भ किया। व्याख्यानों में उपस्थिति उत्तरोत्तर बढ़ती ही जा रही थी। बाहर से आने वाले दर्शनार्थियों का भी तांता लगा रहता था। एक दिन सनातनधर्मी भाइयों की विनती आई कि आप श्री का प्रवचन हमारे गीता भवन में होना चाहिए। उनके आमंत्रण को स्वीकार कर आपने गीताभवन में एक सार्वजनिक व्याख्यान दिया। इस व्याख्यान में हजारों की संख्या में जनसमूह उमड़ पड़ा था।

एण्टी-पाकिस्तान योजना

एक दिन आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध नेता महाशय खुशहालचन्द जी 'आनन्द' का टेलीफोन श्री लाला खजांचीराम जी जैन के नाम आया कि पाकिस्तान दिवस के उपलक्ष में एक विराट् सभा का आयोजन गुरुदत्त भवन में किया जा रहा है। उस अवसर पर हम महाराजश्री का भी व्याख्यान करवाना चाहते हैं।

कुछ समय पश्चात् महाशय जी अपनी कार में बैठ कर स्वयं महाराजश्री की सेवा में उपस्थित हुए और महाराजश्री से उन्होंने निवेदन किया कि हम लोग एण्टी-पाकिस्तान दिवस मना रहे हैं। भारत के सभी प्रान्तों से सभी जातियों के नेतागण इस आयोजन में भाग ले रहे हैं अतः आप भी अवश्य पधारें।

तब महाराजश्री ने फरमाया कि मैं तो संगठन पर कुछ विचार व्यक्त कर सकूंगा। महाशय जी ने बड़ी विनय के साथ कहा कि आप जिस भी विषय पर उचित समझें अपने भाव व्यक्त कर सकते हैं; क्योंकि यह तो निश्चित है कि आप जो भी विचार देंगे वह देश, जाति और समाज के लिए हितारक ही होंगे।

उक्त आयोजन के लिए गुरुदत्त भवन के मैदान में एक विशाल पंडाल बनाया गया था जिसमें अनुमानतः पैंतीस चालीस हजार श्रोतागण उपस्थित थे। निश्चित समय पर महाराजश्री पंडाल में पदार्पण करते ही सारे सभाभवन में हर्ष की लहर दौड़ गई। आपश्री के बैठने के लिए दूसरे लोगों से अलग एक बहुत ऊँचा पाट लगाया गया।

इधर स्थानीय श्रीसंघ के सदस्यों के हृदय में आशंका हो रही थी कि इतने बड़े जनसमूह में महाराजश्री को सफलता कैसे मिलेगी ? क्योंकि महाराजश्री लाउड स्पीकर पर तो बोलते नहीं और यदि एक कोने से दूसरे कोने तक महाराज की आवाज न पहुंची तो सभा में हल्ला-गुल्ला मच जायेगा और जैन समाज का उपहास होगा।

इस समारोह की अध्यक्षता बिहार के भूतपूर्व गवर्नर लोकनायक श्री अणे कर रहे थे। अध्यक्षीय भाषण के अनन्तर दो तीन अन्य प्रमुख नेताओं ने अपने विचार व्यक्त किए। तत्पश्चात् महाराजश्री से प्रवचन करने की प्रार्थना की गई।

महाराजश्री ने अपने प्रवचन को प्रारम्भ करते हुए कहा कि आज जो भारतवर्ष में पारस्परिक फूट दिखाई दे रही है उसका मुख्य कारण चार वादों की विषमता है। वे चारों वाद ये हैं :—

१. धर्मवाद, २. स्थानवाद, ३. शास्त्रवाद, ४. ईश्वरवाद।

अर्थात् धर्मवाद की विषमता, स्थानवाद की विषमता, शास्त्रवाद की विषमता और ईश्वरवाद की विषमता।

ये चारों वादों की विषमताएं वास्तव में पक्षपात और सम्प्रदायवाद के मदान्ध लोगों ने ही अज्ञानता के कारण खड़ी की है। यदि समन्वय बुद्धि से उदारतापूर्वक काम लिया जाय तो ये विषमताएं समत्व में परिणत हो सकती हैं। परिणामस्वरूप ये पारस्परिक राग द्वेष सब प्रकार के द्वन्द्व और संघर्ष सहज ही में समाप्त हो जाते हैं। जिससे धर्म, राष्ट्र, जाति और समाज की उन्नति व रक्षा भी भली भांति हो सकती है और चारों ओर प्रेम की वंशी की मधुर ध्वनि प्रसारित हो सकती है।

१. धर्मवाद

सर्वप्रथम हम देखते हैं कि धर्मवाद की विषमता के कारण मानव-समाज में पारस्परिक महान संघर्ष हो रहा है। वास्तव में अज्ञानजन्य यह संघर्ष मानव

जाति के लिए एक बड़ा भारी अभिशाप है। आज धर्म के नाम पर मानव-मानव में भयंकर विद्वेष और युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो रही है। दूसरे के धर्म को बुरा और अपने धर्म को अच्छा बतलाया जा रहा है। क्या कभी धर्म भी खरा या खोटा हुआ है। धर्म कोई बनिये की दुकान का किराना तो है नहीं, वह तो एक विशुद्ध स्वतन्त्र अनादि अनन्त नित्य ठोस पदार्थ है जो त्रिकालवर्ती है सदा ही खरा है। उसका न कभी नाश हुआ है न हो सकता है। जगत उद्धारक भगवान महावीर स्वामी कहते हैं कि

ऐस धम्मे धुवे निच्चे, सासए जिणदेसिए।
सिज्झा सिज्झन्ति चाणेण सिज्झिस्सन्ति तहवरे ॥१॥

अर्थात् यह धर्मतत्व ध्रुव नित्य शाश्वत और जिनेन्द्रोपदिष्ट है। धर्म तत्व का आचरण कर भूतकाल में अनेक आत्माएं सिद्धपद (आत्मा के चरम उत्कर्ष) को प्राप्त हुई हैं, वर्तमान में भी हो रही हैं, और भविष्य में भी होती रहेंगी। धर्मतत्व जीव को जन्म-जन्मान्तरों के कर्मो से विमुक्त कर मोक्षपद का प्रदाता है। यह पारस्परिक संघर्ष लड़ाई झगड़ों का कारण नहीं हो सकता। धर्म तो पारस्परिक कलह के दावानल को शान्त करने वाला शीतल अमृत का प्रवाह है, जो प्राणियों में विश्व-प्रेम की पावन मन्दाकिनी बहा देता है। यदि कोई धर्म का अर्थ ठीक न समझ कर उसके नाम पर लड़ाई झगड़े करता है तो यह दोष उस व्यक्ति के अज्ञान का है, धर्म का नहीं। धर्म तो सदा सब को सुख देने वाला है, यदि मनुष्य धर्म की आड़ में नाना प्रकार के लड़ाई-झगड़े द्वन्द्व और संघर्ष खड़े कर अपने दुःखों को बढ़ाता है तो इसमें धर्म का क्या दोष! मिश्री तो मुख मीठा करके सबको सुख ही देने वाली है, यदि कोई मनुष्य मूर्खता से मिश्री के डले को अपने या किसी दूसरे के सिर में मार कर दुःख खड़ा कर लेता है, तो इसमें मिश्री का क्या दोष। यह तो मिश्री के दुरुपयोग का ही दुष्परिणाम है। धर्म तो बिछुड़े हुओं को परस्पर मिला कर एक दूसरे के गले से लगाने वाला है। वह मिले हुओं को पृथक् करने वाला नहीं है। धर्म के राजमार्ग पर तो सभी पथिक इधर उधर से आकर एकत्रित हो जाते

हैं। जिस प्रकार किसी महानदी या दरिया को पार करने की इच्छा इधर उधर के अनेक गांवों के लोग एक ही पुल पर पहुंच जाते हैं और उस पुल के सहारे उस बड़ी भारी नदी को पार कर जाते हैं, वैसे ही धर्म रूपी सेतु भी इधर उधर भटकते हुए प्राणियों को अपनी शरण लेकर संसार रूपी-समुद्र से पार कर देता है।

धर्म तो एक अविनाशी और अखंड तत्व है। धर्म के टुकड़े नहीं हो सकते। सम्प्रदाय या मत अनेक हो सकते हैं, किन्तु धर्म तो एक ही अमूर्त्त पदार्थ है। वास्तव में लोगों ने आजकल कल्पित सम्प्रदायों को धर्म मान लिया है। ये सम्प्रदाय ही आज मानव जाति में भयंकर फूट का कारण बने हुए हैं। धर्म और सम्प्रदाय दोनों दो पृथक् वस्तु हैं। यदि मानवजाति प्रेम संगठन, आत्मोत्थान और राष्ट्रोत्थान के साथ साथ वास्तविक शान्ति चाहती है तो उसे सम्प्रदायवाद के विमोह को छोड़कर केवल शुद्ध धर्म की शरण में आना होगा, जिससे वह अपना इहलौकिक और पारलौकिक कल्याण कर सके। यही प्रेय और श्रेय प्राप्ति का एक मात्र साधन है।

२. स्थानवाद

२. अब रहा प्रश्न धर्मस्थान के विषय का, यह कोई ऐसा जटिल प्रश्न नहीं है, जो सुलझाया न जा सके। यदि धर्म-स्थान शब्द के वास्तविक अर्थ को समझने का प्रयत्न किया जाय, तो ज्ञात होगा कि धर्मस्थान शब्द की ध्वनि यही बतलाती है कि धर्मस्थान धर्म-साधन का स्थान है। इससे यह भली भांति स्पष्ट होता है कि कोई भी स्थान अपने आपमें धर्म रूप नहीं है। धर्म अन्य वस्तु है और स्थान उससे भिन्न है। दोनों वस्तुएँ सर्वथा पृथक् हैं।

धर्मक्रियाएं किसी भी स्थान में यदि शुद्ध भावना से की जायं, तो सभी धर्म-स्थानों में की गई वे धर्म-क्रियाएं कर्त्ता के लिए सुख रूप ही होती हैं। अपने मान्य धर्म-स्थानों के सिवा दूसरे धर्म-स्थानों को निकृष्ट दृष्टि से देखा जाता है और अपने को उच्च। हालांकि सभी धर्म स्थान ईंट, गारा, पत्थर,

चूना, सीमेंट, लोहा, लकड़ी आदि जड़ पदार्थों के बने हैं। इनमें उच्च और नीच का प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता। यह तो बनाने वाले व्यक्ति पर निर्भर है, किसी धनवान् ने संगमरमर के बढ़िया स्थान बना डाले तो किसी साधारण समाज ने ईंट गारे के धर्मस्थान ही खड़े कर दिये। भजन स्वाध्याय और इबादत करने वाले साधक के लिए तो ये सब एक जैसे ही हैं। भजन आदि करने वाला साधक तो एक आत्म-साधन की दृष्टि को लेकर ही चल रहा है। मकान के सौन्दर्य और असौन्दर्य को देखने का उसके पास अवसर ही कहां है ?

वास्तव में ये सभी स्थान धर्म-ध्यान और सद्क्रियाएं करने के लिए हैं। क्योंकि इस प्रकार के धर्म स्थान एकान्त रूप होने से सब प्रकार की उपाधियों और विघ्न-बाधाओं से रहित होते हैं। इससे साधक को अपनी धर्म-साधना में सुगमता रहती है, क्योंकि साधक को अपनी साधना की सफलता के लिए चार वस्तुओं का ध्यान रखना पड़ता है। जैसे कि—

१. द्रव्यशुद्ध, २. क्षेत्रशुद्ध, ३. कालशुद्ध, ४. भावशुद्ध। इन चारों में से क्षेत्रशुद्धि भी एक है।

हम देखते हैं कि एक ओर स्थानकवासी जैन भाई अपने स्थानक की महिमा गाते नहीं अघाते, तो दूसरी ओर मंदिरमार्गी जैन भाई अपने मंदिरों और तीर्थ-स्थानों का महत्व बताने में किसी से पीछे नहीं रहते। इसी प्रकार सनातनधर्मी भाई अपने मंदिरों और मान्य तीर्थ धामों की बड़ाई करने में कोई कसर उठा नहीं रखते। इधर मुसलमान, ईसाई और सिक्ख भाई भी अपने मस्जिद, गिरजाघर और गुरुद्वारों की महिमा का खूब बढ़ चढ़ कर बखान करते हैं।

वास्तव में यह सभी धर्म-स्थान पुकारे तो धर्म-स्थानों के नाम जाते हैं। पर इन धर्म-स्थानों में यदि सब क्रियाएं धर्म के अनुसार ही हों, तभी इनके नामों की सार्थकता है। जिन तथाकथित धर्म-स्थानों पर निरीह मूक पशुओं की बलि दी जाती हो, हजारों जीव मौत के घाट उतार दिये जाते हों और

जो स्थान दूसरों से लड़ने झगड़ने के लिए अड्डे बने हों और वे स्थान कदापि धर्म-स्थान कहलाने का अधिकार नहीं रखते।

साथ ही यह भी स्मरण रखना चाहिए कि केवल धर्म-स्थान से कल्याण होने वाला नहीं। कल्याण तो उन धर्म-स्थानों में की गई धर्म-क्रियाओं से होगा। कोई मनुष्य अपने डिब्बे में रक्खे हुए खाद्य पदार्थ को खोल कर जैन स्थानक, जैन मंदिर, सनातन मंदिर, आर्य समाज मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा अथवा गिराजघर या वन उपवन किसी भी स्थान में खाता है तो उसकी भूख अवश्य मिट ही जायगी। यह नहीं कि अमुक स्थान पर बैठकर खाये तभी भूख मिट जायगी, और अमुक स्थान पर बैठकर खायगा तो न मिटेगी। वास्तव में भूख का मिटना खाद्य पदार्थ पर निर्भर है, किसी स्थान-विशेष पर नहीं।

साथ ही यह बात भी याद रखनी चाहिए कि यदि कोई खाली ही डिब्बा खोल कर उसमें हाथ डाल कर फिर मुख में डाले, और झूठ मूठ ही चपर-चपर कर भोजन करने की क्रिया करे तो चाहे वह किसी भी स्थान पर क्यों न बैठा हो तो उनकी भूख मिटेगी नहीं। बस डिब्बे में खाने के पदार्थ होने चाहिएं फिर तो किसी भी स्थान पर बैठ कर खाया जाय, तो भूख मिट ही जायगी। इसी प्रकार जीवन में धार्मिक भावनाएं और क्रियाएं होनी चाहिएं। फिर चाहे वह धर्म क्रियाएं किसी भी स्थान पर की जायं, तो आत्म-कल्याण हो ही जायगा। यदि आत्म रूप डब्बा आत्म-कल्याण रूपी भोज्य पदार्थों से रिक्त है तो भला आत्म-कल्याण कैसे हो सकता है।

३. शास्त्रवाद

३. अब रही शास्त्रवाद की विषमता की समस्या। उसमें मानव जाति के उलझने और खींच तान करने की आवश्यकता नहीं। इस समस्या को भी सरलता से सुलझाया और समझाया जा सकता है। आवश्यकता है केवल गुणग्राहक दृष्टि की और सत्यप्रियता की। आज का आग्रहशील मानव अपने अपने धर्म-शास्त्रों को ही सर्वोपरि मानता है, और दावा करता है कि मेरा

धर्म-शास्त्र ही विश्व के प्राणियों का कल्याण कर सकता है। इतना ही नहीं आज का हठधर्मी मानव दूसरों के मान्य धर्मशास्त्रों की अवहेलना भी करता हैं, और कहता है कि दूसरे सब लोगों के धर्मशास्त्र कपोलकल्पित व मिथ्या है। उन शास्त्रों के मानने से मानव का कल्याण नहीं हो सकता। इस प्रकार आज के अवोध मानव एक दूसरे पर आक्रमण कर पारस्परिक प्रेमभाव को नष्ट कर द्वेषमूलक कलह के दावानल को प्रतिक्षण प्रज्वलित करते रहते हैं। इस प्रकार एक दूसरे के धर्म-ग्रन्थों की निन्दा-स्तुति के कारण निष्पक्ष व्यक्ति भी दुविधा और भ्रम में पड़ जाते हैं। वे एक दूसरे के धर्म-शास्त्रों की निन्दा कर क्या अपनों को और क्या दूसरों को सभी को लाभ के स्थान पर हानि ही पहुँचा रहे हैं। यदि निष्पक्ष दृष्टि से देखा जाय, तो सूत्र, सिद्धान्त ग्रंथ, वेद आदि धर्मशास्त्रों ही के नाम हैं। सूत्र जगतीतल के प्राणियों को जीव, अजीव, आत्मा, परमात्मा, महात्मा, धर्म, अधर्म, पाप, पुण्य, नरक, स्वर्ग, मोक्ष आदि पदार्थों का सम्यक् विवेचन कर इनका बोध कराये उन्हें सूत्र कहते हैं।

भला आप ही बताएं कि ऐसे तत्वार्थ निरूपक सूत्र को मानने से कौन बुद्धिमान पुरुष इन्कार कर सकता है।

सिद्धान्त

सिद्धान्त शब्द कितना महत्वपूर्ण है। यदि इस शब्द के तात्विक अर्थ पर विचार किया जाय, तो ज्ञात होगा कि सिद्धान्त शब्द वस्तु के निर्णय की चरम सीमा का बोधक है। सिद्ध और अन्त इन दोनों पदों के संयोग या समास से सिद्धान्त शब्द बनता है। जिसका अर्थ है वस्तु की सिद्ध। यह 'निर्णय का अन्त करना अर्थात् वस्तु के निर्णय को चरम सीमा तक पहुंचा देना' यह परिभाषा है सिद्धान्त की। इसे भी कोई बुद्धिमान पुरुष अस्वीकार नहीं कर सकता। इसी प्रकार ग्रंथ शब्द भी बड़े महत्व को लिए हुए है। ग्रन्थ उसी शास्त्र को कहा जा सकता है जिसमें अनेक प्रकार के सुन्दर-सुन्दर विषयों का गुन्थन किया गया हो।

वेद

वेद शब्द भी बड़ा महत्वपूर्ण है। वास्तव में वेद शब्द का अर्थ ज्ञान है जिसकी सारे विश्व को परम आवश्यकता है। वेद कागज स्याही और अक्षरों के समुदाय रूप दो चार पुस्तकों का नाम नहीं है। ये कागज स्याही अक्षरों का समुदाय तो अग्नि पानी आदि से नष्ट हो जाने वाला है। पर वेद भगवान् अर्थात् ज्ञान अविनाशी रूप से नित्य, ध्रौव्य, शाश्वत और तीनों कालों में जीवित रहने वाला है।

धर्मशास्त्रों की उपरोक्त व्याख्या करने से यह सहज ही में ज्ञात हो जाता है कि सूत्रादि धर्म-शास्त्रों के सार्थक नाम मानवमात्र के लिए मान्य है। ये मानव-जाति के लिए कल्याणकारक हैं, किसी वाद-विवाद में न पड़ कर भगवान् महावीर स्वामी ने सच्चे शास्त्र का लक्षण करते हुए उत्तराध्ययन सूत्र के तीसरे अध्ययन की आठवीं गाथा में कहा है कि—

जं सुच्चा पडिवज्जन्ति तंवखन्ति महिंसयं।

चाहे किसी नाम का भी कोई शास्त्र क्यों न हो, यदि उससे मानव-जाति को आदि से अन्त तक तप, क्षमा और अहिंसा का उपदेश मिलता है तो वह सच्चा धर्म-शास्त्र है। भगवान् महावीरस्वामी ने कितनी उदारता के साथ मानव मात्र के लिए कल्याणकारक दिव्य उपदेश दिया है। यदि मनुष्य भगवान् के द्वारा की गई सच्चे धर्मशास्त्र की व्याख्या या परिभाषा को विना पक्षपात के जीवन में उतार ले, तो धर्मशास्त्र-सम्बन्धी सभी विषमताएं अनायास समाप्त हो सकती है और मानवमात्र के हृदय में एक दूसरे के प्रति निश्छल पवित्र प्रेम की गंगा तरंगित हो सकती है। जिसमें स्नान कर मानव जन्म जन्मान्तरों के पापों की कालिमाओं को धोकर सच्चा स्नातक या निर्मल बन सकता है। और इस प्रकार अक्षय सुख की प्राप्ति का अधिकारी हो सकता है।

४. ईश्वरवाद

अब रहा प्रश्न ईश्वरवाद की विषमता का। इसमें भी मानव आज इतना

उलभ गया है कि जिसमें से निकलना बड़ा कठिनतम प्रतीत होने लगा है। कोई केवल ईश्वर के नाम या संज्ञा को ही महत्व देता है कोई परमात्मा सिद्ध अकाल पुरुष खुदा आदि ईश्वरवाची संज्ञाओं को महत्व देता है। जैसे कि वेदानुयायी ईश्वर और परमात्मा शब्द को विशेष महत्व देते हैं। जैन सिद्ध शब्द को, सिक्ख अकाल पुरुष को और मुसलमान खुदा शब्द को। इन्हीं शब्दों के फेर-फार में पड़कर ये लोग आपस में लड़ रहे हैं। मुसलमान ईश्वर, परमात्मा और सिद्ध अकालपुरुष नामों से परमात्मा को सम्बोधित करने को या मानने को तैयार नहीं। । दूसरी ओर हिन्दू खुदा के नाम से ईश्वर की सत्ता स्वीकार करने में संकोच करते हैं। वास्तव में देखा जाय, तो यह शब्दों का ही भ्रमजाल है। निष्पक्ष दृष्टि से विचार करने पर ज्ञात होता है कि उपरोक्त सभी सार्थक शब्द परमात्मा के ही वाचक हैं, ऐश्वर्य का धारक होने से वह ईश्वर है, ऐश्वर्य का अर्थ है सम्पत्ति, जो केवल ज्ञान, केवल दर्शन, अनन्त सुख, अनन्त आत्मशक्ति आदि विभूतियों का धारक है वह ईश्वर है।

जो आत्म-विकास की चरम सीमा को प्राप्त है, वह परमात्मा है। जिस के सफल कार्य सिद्ध हैं अर्थात् जिसको कोई कार्य करना शेष नहीं, वह कृतकृत्य या सिद्ध है। जिसका कभी काल नहीं होता, जो कभी मरता नहीं, वह अकाल पुरुष है।

खुदा

जो खुद ही है, जो परमुखापेक्षी नहीं, जिसे किसी दूसरे की सहायता की आवश्यकता नहीं और जो सब प्रकार की भ्रान्तियों से रहित है वह खुदा है। इस प्रकार ईश्वरवाद की विषमता का भी सुन्दर समन्वय हो जाता है। और साथ ही ईश्वरवाद की विषमता-विषयक विवाद भी मिट जाता है। इस के लिए चाहिये केवल एक समन्वयात्मक दृष्टि, किसी कवि ने क्या ही सुन्दर कहा है कि—

अपने-अपने मत की कोई नहीं चाहत हानि
यदि ईश्वर सर्वव्यापक है, तो फिर क्यों खींचातानी है।

वास्तव में ईश्वर अपनी ज्ञान-शक्ति से जड़ और चेतन सभी पदार्थों में व्यापक है। अर्थात् ईश्वरीय ज्ञान का प्रकाश सभी पदार्थों पर पड़ता है, ईश्वर को सर्वव्यापक मानने का कारण उसकी ज्ञान-व्यापकता ही है। ईश्वर व्यक्तिगत रूप से सर्वव्यापक नहीं है। यदि ईश्वर को व्यक्तिगत सर्वव्यापक माना जाय तो अन्य पदार्थ कहां जायेंगे।

अतः सिद्ध होता है कि ईश्वर व्यक्तिगत रूप से सर्वव्यापक नहीं। वह अपनी ज्ञान-शक्ति के द्वारा सर्वव्यापक है।

इस प्रकार महाराजश्री ने उपरोक्त चारों वादों की विषमता का समन्वय ऐसे सुन्दर ढंग से किया कि जिसे सुनकर श्रोतागण-मन्त्रमुग्ध हो गये और शत-शत-कंठों से आपकी सराहना करने लगे। महाराजश्री ने अपने प्रवचन के प्रवाह के क्रम को आगे बढ़ाते हुए बड़े ओजस्वी शब्दों में फरमाया कि जिस पवित्र भारत भूमि में भगवान महावीर, राम, कृष्ण, महात्मा बुद्ध, गुरु नानकदेव, स्वामी दयानन्द सरस्वती आदि अनेक महान् विभूतियां प्रकट हो चुकी हैं, उसी भूमि को आज पाकिस्तान बनाया जा रहा है।

पाकिस्तान का अर्थ है, पवित्र स्थान। क्या वह पवित्र भारत भूमि नापाक याने अपवित्र है, जिसे आज पाकिस्तान याने पवित्र बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है।

ओ मानव, तेरी पक्षपातशीलता की कोई सीमा नहीं। आज तू पवित्र भारत भूमि को पुनः शाब्दिक रूप से पवित्र बनाने जा रहा है, यह तेरी अज्ञता नहीं तो और क्या है। जिस भूमि पर गोरक्षा का बड़ा महत्व चला आ रहा है, क्या तू उस पवित्र भूमि पर गौ जैसे पवित्र और लाभप्रद प्राणी की धर्म के नाम पर कुर्बानी देकर गौ आदि अनेक पशुओं के खून से इसे पवित्र बनाना चाहता है। यह तो ऐसी ही कल्पना है, जैसे कोई मनुष्य शुद्ध पवित्र स्वच्छ वस्त्र को खून में धोकर शुद्ध करना चाहे।

महाराजश्री के इस ओजस्वी प्रवचन को सुनते-सुनते उपस्थित जन-समूह ने ने बार-बार तालियों की गड़गड़ाहट से विशाल पंडाल को गुंजा दिया। और रह-रह कर अनेक प्रकार से जनता अपने उत्साह, आनन्द और हर्ष को व्यक्त करने लगी।

महाजश्री ने अपने प्रवचन में यह फरमाया कि 'हम साधु लोग हैं, साधु का जीवन मर्यादित होता है। फिर भी मैं देश, जाति और धर्म की उचित सेवा के लिए तैयार हूँ।

देश-सेवा से मैं पृथक् कैसे रह सकता हूं। जिस भारत भूमि के रजकणों से मेरे शरीर का निर्माण हुआ पोषण हो रहा है और जिस पर मैं विचरण कर रहा हूँ, तथा जिसे भारत भूमि के अन्न जल तथा दूसरे जीवनोपयोगी पदार्थों को सेवन कर रहा हूँ, उस देश और भूमि के प्रति अपनी वफादारी दिखाने से मैं कैसे वंचित रह सकता हूँ।'

महाराजश्री के मातृ-भूमि के प्रति ऐसे भक्तिभाव-भरे ओजस्वी वचनों को सुनकर जनता ने अनेक प्रकार से अपना हर्ष और उत्साह व्यक्त किया।

दैनिक उर्दू प्रताप के सम्पादक व मालिक महाशय कृष्ण जी उस समारोह के स्टेजसेक्रेटरी या मंचमंत्री थे। महाराज के भाषण के समाप्त होने पर महाशय जी ने खड़े होकर महाराजश्री के प्रवचन के प्रति बड़े सुन्दर और भाव-पूर्ण शब्दों में कृतज्ञता व्यक्त की। साथ ही व्यंग्य रूप से यह भी कहा कि महाराजश्री ने अपने प्रवचन में यह फरमाया कि मैं साधु-मर्यादा में हूँ और साधुमर्यादा के अनुसार देश सेवा कर सकता हूँ।

किन्तु स्वामी जी महाशय ! हमारा निवेदन यह है कि देश पर आपत्ति-काल आता है, उस समय साधु ब्राह्मण आदि किसी का भी भेद नहीं रक्खा जा सकता। अर्थात् सब देशवासियों को देशसेवा में जुट जाना चाहिए।

इस पर महाराजश्री ने तत्काल खड़े होकर बड़े सरल और विनोद भरे शब्दों में फरमाया कि यदि सब लोग गिरफ्तार होकर जेलखाने में चले जायेंगे

तो पीछे देश-सेवा के लिए सप्लाई करने के लिए भी तो कोई चाहिए।

महाराजश्री के इस विनोदपूर्ण उत्तर पर महाशय जी व उपस्थित जनता बहुत हंसी और बहुत प्रसन्न हुई। महाराजश्री के इस उत्तर में प्रश्नकर्त्ता के प्रश्न का यथोचित उत्तर था, साथ ही वचन-विनोद का रस भी।

महाराजश्री के प्रवचन के पश्चात् जिन-जिन व्याख्याताओं ने भाषण दिये, प्रायः वे सब महाराजश्री के भाषण के भावों को लेकर ही बोले और अनेक बार आपके नाम का बड़े सम्मान के साथ उद्बोधन भी किया।

इस विराट् सभा में हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी आदि सभी भाषाओं के समाचार पत्रों के संवाददाता उपस्थित थे। उन लोगों ने महाराजश्री के प्रवचन को अक्षरशः लिपिबद्ध किया और दूसरे दिन आपका भाषण सभी भाषाओं के समाचार पत्रों में प्रथम पृष्ठ पर प्रकाशित हुआ।

कसूर निवासी बाबू लभामलजी जैन बी० ए० ने इस विराट् सार्वजनिक सभा में दिये गये महाराजश्री ने इस ऐतिहासिक भाषण का एक रोचक संस्मरण सुनाते हुए बताया कि जब आपश्री का भाषण प्रारम्भ होने वाला था और आप स्टेज पर खड़े हुए तो, मैं भी सभा में स्टेज से बहुत दूर खड़ा हुआ था। मेरे आस-पास वहां पर बहुत से कालेज के छात्रगण खड़े थे। वे आपस में कहने लगे कि अरे यार इनका तो मुंह पहले बंधा हुआ है ये क्या बोलेंगे और क्या सुनायेंगे। तब मैंने अपने आपको जैन प्रकट न करते हुए कहा "अरे यार सुनो तो सही, ये क्या कहते हैं।" थोड़ी देर पश्चात् महाराजश्री का प्रवचन प्रारम्भ हुआ। और प्रत्येक पहलू पर आपके अत्यन्त सारगर्भित और युक्तिसंगत विचार सुने तो वे चकित हो गये और बारबार भाषण की प्रशंसा करते हुए रह-रह कर तालियाँ बजा-बजाकर भाषण का स्वागत करने लगे।

लाहौर विद्या का एक बहुत बड़ा केन्द्र था। यहां के विद्यार्थीगण बहुत बड़े उदार हृदय वाले और साथ ही साथ तार्किक मस्तिष्क सम्पन्न थे। छोटे मोटे विद्वानों को तो ये एक क्षण भी अपने सामने नहीं ठहरने देते थे। ये लोग

प्राय: बाल की खाल उतारने के आदी होते हैं। इन लोगों को प्रभावित करना बड़ी टेढ़ी खीर है। पर उस प्रवचन में स्थानीय कालेजों के हजारों छात्रों तथा प्रोफेसरों के हृदयों पर महाराजश्री के प्रवचनों की ऐसी स्थायी छाप लगी कि वे तो पागल से होकर महाराजश्री के आगे-पीछे घूमने लगे।

यहां तक कि पंजाब यूनीवर्सिटी के अधिकारीवर्ग की ओर से भी महाराजश्री से यूनीवर्सिटी में प्रवचन करने की प्रार्थना की गई। किन्तु समयाभाव के कारण महाराजश्री पंजाब यूनिवर्सिटी में प्रवचन करने के लिए न पधार सके।

लाहौर के सैद मिट्ठा बाजार के जैनस्थानक से विहार कर आप लाहौर के दूसरे भाग अनारकली के दिगम्बर जैन हाल में विराजे। यहां पर आपके षट्द्रव्य आदि गूढ़ जैन दार्शनिक सिद्धान्तों पर ऐसे पांडित्यपूर्ण प्रवचन हुए कि प्रवचन में भाग लेने वाले अनेक विद्वान् प्रोफेसर व ग्रेज्यूएट गण आपकी गम्भीर ज्ञान-गरिमा की गुण गाथा गाते गाते अघाते ही न थे। दिगम्बर जैन समाज की ओर से एक अभिनन्दन पत्र भी महाराजश्री की सेवा में समर्पित किया गया।

।। अहिंसा परमो धर्मः ।।

व्याख्यानवाचस्पति

पूज्यवर श्री १००८ बालब्रह्मचारी जैन-भूषण स्वामी

प्रेमचन्द जी महारज

की सेवा में

अभिनन्दन-पत्र

महात्मन्

लाहौर निवासियों का यह सौभाग्य है कि आप ने हमारे नगर में पधारने की कृपा की और अपने ज्ञान के प्रकाश से हजारों प्राणियों के मन और हृदय को पवित्र तथा उज्ज्वल किया। हम दिगम्बर जैन समाज के स्त्री-पुरुष तो आपकी कृपा के विशेष रूप से आभारी हैं कि आपने हमारी प्रार्थना स्वीकार

करके इस दिगम्बर जैन हाल को अपनी चरण-रज से पवित्र किया तथा हमें मनोहर उपदेश देकर धर्म और कर्तव्य का मार्ग सुझाया।

ज्ञान मूर्ति !

हम आप के विशाल ज्ञान, मधुर भाषण, तेजस्वी रूप और उदार हृदय को देख कर हर्ष से फूले नहीं समाते। हमें इस बात का अभिमान है कि भगवान् महावीर के अनुयायियों में आज आप जैसी महान् आत्माएं मौजूद हैं, जो धर्म के गूढ़-से-गूढ़ तत्वों को सरल भाषा में, मनोहर वाणी द्वारा, सुन्दर उदाहरणों के साथ हजारों शिक्षित और अशिक्षित स्त्री-पुरुषों को आसानी से समझा सकते हैं। आज हमारे हृदय में जैन धर्म की पवित्र ज्योति आप ही जैसे ज्ञानी महात्माओं के कृपा व स्नेह से जगमगा रही है।

धर्मोद्धारक !

आपने संसार व कुटुम्ब के अनेक कोमल और कठोर बन्धनों को काट कर बालब्रह्मचारी रह कर अपने आपको धर्म-सेवा और समाज-सेवा के लिए अर्पण कर दिया है। नगर-नगर और गांव-गांव में जाकर हजारों मील की पैदल यात्रा करके आपने देश में धर्म की भावना को जगाया हैं और भगवान महावीर के झंडे को ऊंचा उठाया है। धर्म की महान् सेवा के अतिरिक्त समाज की बिखरी हुई शक्तियों को इकट्ठा करके समाज में प्रेम, त्याग, सेवा और सादगी की भावना का प्रचार किया हैं। आपके उपदेश के प्रभाव से अनेक स्थानों पर स्थानक, जैन हाल और शिक्षालय स्थापित हुए हैं। जिस से जैन धर्म की सच्ची प्रभावना हुई है और समाज का बहुत बड़ा हित हुआ है।

कल्याणकारी !

आप त्यागी विरागी होते हुए भी समाज और देश की अनेक नई समस्याओं से परिचित रहते हैं और आवश्यकता होने पर उनके सुलझाने का प्रयत्न करते हैं, यह आपकी उदारता और कर्मशील होने का प्रमाण है। पिछले दिनों आप ने लाहौर के पब्लिक जलसों में पाकिस्तान योजना के विरुद्ध जो सारगर्भित

व्याख्यान दिया, उसने देश के प्रत्येक विचारवान् आदमी को प्रभावित किया है और उसके हृदय में आपकी विद्वत्ता तथा देशप्रेम की धाक बैठा दी है। आप सदा काल और क्षेत्र के अनुसार हमें हमारे कल्याण का मार्ग सुझाते हैं, यह हमारे लिए बड़े अभिमान की बात है।

वन्दनीय !

हम आपका पुनः विनीतभाव से सहर्ष स्वागत करते हैं और आपने अपनी अमृत भरी वाणी से धर्म का जो सुन्दर उपदेश दिया है तथा हमारी प्रार्थना का मान किया है, उसके लिए आपका हार्दिक आभार मानते हैं।

हम हैं,

आपके चिरकृतज्ञ सेवक
दिगम्बर जैन सोसाइटी,
लाहौर के समस्त सदस्य।

दिगम्बर जैन हाल
लिटन रोड़
लाहौर।
६/१२/४०

: ० :

लाहौर के दिगम्बर जैन हाल से विहार कर महाराज श्री दो तीन रात मार्ग में ठहरते हुए कसूर पधारे, यहां की जैन और जैनेतर जनता ने महाराज श्री का भव्य स्वागत किया। यहाँ पर श्री पन्नालाल जी महाराज तथा श्री चन्दन मुनि जी महाराज ठाना २ पहले ही से विराजमान थे। यहां के स्थानक में दिये गये महाराजश्री के दो तीन प्रवचनों का उपस्थित जनसमूह पर इतना अच्छा प्रभाव पड़ा कि स्थानक में जगह की कमी पड़ने लगी अतः स्थानक के साथ ही महाराजश्री के प्रवचनों के लिए एक सुन्दर सुसज्जित पंडाल का निर्माण किया गया। इस पंडाल में प्रतिदिन दो तीन हजार जनता के समक्ष महाराज श्री के प्रवचनों का प्रारम्भ हुआ जो १४, १५ दिन तक निरन्तर चलता रहा। यहां पर गुजरांवाला, लाहौर, पट्टी, सियालकोट आदि नगरों के सैंकड़ों भाई बाई महाराज श्री के दर्शनार्थ आते रहे।

कसूर से महाराजश्री ने फिरोजपुर की ओर विहार कर दिया। विहार के

समय स्थानीय जनता ने हजारों की संख्या में एकत्रित होकर बहुत दूर तक साथ आते हुए महाराजश्री को बड़ी श्रद्धा के साथ विदाई दी। महाराजश्री जब कसूर की कचहरी के समीप पहुंचे, तो वहाँ के हाकिम व तहसीलदार लोग महाराज के प्रति श्रद्धा भाव प्रकट करने के लिये आपके सामने आये। महाराज व उनके अनुगामी जन-समुदाय ने यहां १५, २० मिनट तक विश्राम किया। कचहरी से आये हुये अधिकारी वर्ग को और साथ में आई हुई जनता को आपने एक संक्षिप्त किंतु सारगर्भित धर्मोपदेश दिया। आपने विदाई के समय के दृश्य को ऐसे हृदयस्पर्शी रूप में चित्रित किया कि जनता का हृदय भर आया।

यहां से विहार कर आप चार पांच मील की दूरी पर एक ग्राम में विराजे यहां तक सैंकड़ों लोग आपके साथ थे। यहां से चलकर एक रात्रि मार्ग में विश्राम कर फिरोजपुर की छावनी जा पहुंचे। यहां पर आप दिगंबर जैन धर्मशाला में ठहरे। यहां पर फरीदकोट व कसूर के भाई महाराजश्री के दर्शनार्थ आये। स्थानीय व बाहर से आई हुई जनता के समक्ष आपका प्रभावशाली प्रवचन हुआ। फरीदकोट के भाइयों ने महाराजश्री से अपना क्षेत्र परसने की विनती की। तदनुसार फिरोजपुर से विहार कर महाराजश्री फरीदकोट पहुंचे। फरीदकोट की जनता ने महाराजश्री का बड़े उत्साह के साथ स्वागत किया। यहाँ की कन्यापाठशाला में महाराजश्री के तीन सार्वजनिक प्रवचन हुए। इन प्रवचनों में दो ढाई हजार जनता भाग लेती रही। शेष व्याख्यान लाला बरकतहाल में होते रहे। जिनमें जैन व जैनेतर जनता बड़ी भारी संख्या में उपस्थित होती रही। यहाँ पर महाराजश्री ने एक कल्प (मास) पूरा किया।

यहाँ से दो तीन रात मार्ग में लगा कर आप जीरे पधारे। यहाँ पर आठ नौ दिन तक विराजे। और चार पांच सार्वजनिक व्याख्यान भी आपके हुए। यहाँ से विहार कर मार्ग में एक रात शतलुज पर बिता मांझा पट्टी पधारे। यहाँ पर भी आपके प्रवचन हुए। एक दिन डी० ए० वी० हाई स्कूल के मुख्याध्यापक-महोदय ने स्कूल के छात्रों को धर्मोपदेश देने के लिए महाराजश्री से

विनती की। तदनुसार आपका एक वचन डी० ए० वी० हाई स्कूल में हुआ। इस व्याख्यान से प्रभावित होकर कईयों ने शराब मांस का त्याग किया।

यहाँ पर अमृतसर के बहुत से भाई महाराजश्री के दर्शनार्थ आये। साथ में प्रसिद्ध कवि कंसराज गौहर भी आये। उन्होंने महाराजश्री के प्रवचन के समय एक सुन्दर कविता सुना कर सब श्रोताओं के चित्त को प्रफुल्लित कर दिया।

महाराजश्री के प्रवचन से प्रभावित होकर हाईस्कूल के जिन छात्रों ने मांसाहार का परित्याग किया था, उनमें एक सुनार जाति का सिक्ख बालक भी था। भोजन के समय जब वह रसोई में भोजन करने के लिए गया तो वहां मांस पका हुआ था, क्योंकि उसके पिता आदि घर के दूसरे लोग मांसाहारी थे। उस लड़के ने भोजन करने से इन्कार कर दिया और कहाकि मैंने जैनमुनि श्री प्रेमचन्द जी महाराज के समक्ष सदा के लिये मांस भक्षण का परित्याग कर दिया है। मैं मांस-युक्त भोजनालय में भोजन करना भी पाप समझता हूँ। यह सुनकर उसके पिता आदि घरवालों ने उसे अनेक प्रकार से समझाने का प्रयत्न किया। पर वह अपनी प्रतिज्ञा पर अटल रहा। उसने अपने पिता से कहा कि यदि आप मेरे सच्चे पिता हैं और मेरे प्रति पुत्र का सच्चा प्रेम रखते हैं तो आप भी मांस भक्षण जैसे महा पाप का त्याग कर दें। बालक के ऐसे सरल सच्चे निष्कपट वचन सुनकर पिता का हृदय भी पिघल गया। फलतः पिता ने एक दिन बालक के साथ महाराजश्री के प्रवचन में आ कर उपस्थित जनसमूह के समक्ष खड़े होकर महाराजश्री से इस महा पाप का परत्याग कर दिया। महाराजश्री का एक प्रवचन आर्यसमाज मन्दिर में भी हुआ था।

पट्टी से विहार कर एक रात रास्ते में लगा महाराजश्री तरणतारण पधारे। यहां पर आप आर्यसमाज मन्दिर में ठहरे। दोपहर के पश्चात् आपका एक प्रवचन हुआ। यहां से विहार कर एक रात रस्ते में लगा आप अमृतसर पधारे। यहां के श्रीसंघ ने आपका बड़े उत्साह के साथ भव्य स्वागत किया। स्थानक में आपके प्रवचन प्रारंभ हुए। कुछ दिनों पश्चात् बाहर से बहुत से जैन

अजैन भाई महाराज के दर्शनार्थ आये। गुजरांवाला के जैनतर भाइयों का भी महाराजश्री के प्रवचनों से इतना प्रेम होगया था कि वे महाराजश्री जहां जहां भी पधारते लगभग वहीं दर्शनार्थ पहुंच जाते।

लाला अमरचन्द जी भमड़ी तो अपने एक नौकर को साथ लेकर महाराज श्री की सेवा में ही प्रायः रहा करते थे।

लाला जी आंखों का अंजन व दांतों का मंजन लोगों को मुफ्त बांटते रहे। इन औषधियों का जब लोगों को लाभ पहुंचने लगा, तो वे लोग उनकी खूब प्रशंसा करने लगे।

कुछ समय पश्चात् सियालकोट से सूचना मिली कि मूर्तिपूजक जैनों ने वहां मन्दिर बनवाने के लिये जमीन खरीद ली है। और श्री वल्लभ विजय जी बड़े आडम्बर के साथ वहां जल्सा करेंगे और मन्दिर की नींव रक्खेंगे। इसके पश्चात् वे जम्मू में जाकर वहां महावीर जयन्ती मनायेंगे।

सियालकोट में ठानापति रूप से विराजित श्री गोकुलचन्द्र जी महाराज का ऐसा विचार है कि आप इस समय सियालकोट पधारें। यहाँ की बिरादरी बहुत बड़ी है। इसे ऐसे आडम्बर के अवसर पर नियंत्रित रखना मेरे वश की बात नहीं।

आप श्री यहां पधार जायेंगे तो वल्लभविजय जी का बिरादरी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। फलतः वल्लभविजय जी का उत्साह ठंडा पड़ जायगा और और अपने भाइयों का साहस बंध जायगा।

लुधियाने से भी उपाध्याय अर्थात् वर्तमान आचार्य श्री आत्माराम जी महाराज की ओर से पत्र आया कि आप इस अवसर पर सियालकोट अवश्य पधारें। महाराजश्री इन सब बातों पर विचार कर ही रहे थे कि इसी समय जम्मू से एक तार आया कि हमारी जैन बिरादरी आपश्री की सेवा में आ रही है। क्योंकि हम जम्मू में महावीरजयन्ती बड़े समारोह के साथ मनाना चाहते हैं। तब महाराजश्री ने विचार किया कि जम्मू कि विनती मानने से मार्ग

में सियालकोट भी आही जायगा। इस से एक पंथ दो काज बन जायेंगे। दूसरे दिन जम्मू का शिष्टमंडल अमृतसर पहुंच गया। उसने विनती की कि श्री वल्लभ विजय जी जम्मू में महावीरजयन्ती मनायेंगे। हम भी महावीर जयन्ती बड़े समारोह के साथ मनाना चाहते हैं।

महाराजश्री ने सुखे समाधे उनकी विनती स्वीकार कर ली। तदनुसार आपने सियालकोट की ओर विहार कर दिया। मार्गवर्ती क्षेत्रों को परसते हुये तीन चार दिन में आप पसरूर जा पहुंचे। यहां पर सियालकोट के सैकड़ों लोग आये और उन्होंने महाराजश्री से निवेदन किया कि आप सियालकोट अवश्य पधारें। उन्होंने यह भी कहा कि सियालकोट के प्रमुख प्रतिष्ठित स्थानकवासी लाला मोतीशाह श्रीवल्लभविजय जी के स्वागत में सम्मिलित होकर उनका स्वागत करना चाहते हैं। बिरादरी ने उनको बहुत समझाया, किन्तु वे अपनी बात पर अड़े हुए हैं। अपने जो लोग उनका सदा साथ दिया करते थे और जो प्रत्येक कार्य में उनके साथ रहते थे, उनमें से भी किसी की उन्होंने एक न सुनी।

साथ ही सियालकोट के भाइयों ने यह भी कहा कि सियालकोट के स्थानकवासी पांच वकीलों ने मिलकर एक इश्तिहार निकाला है कि हमारे नगर में दो महापुरुष पधार रहे हैं, एक तो श्री प्रेमचन्द जी महाराज तथा दूसरे वल्लभविजय जी महाराज। श्री प्रेमचन्द जी की वाणी तो जादू का सा काम करती है जिससे सब लोग भलीभांति परिचित हैं। दूसरे श्री वल्लभ विजय जी महाराज श्वेताम्बर मूर्तिपूजक समाज के आचार्य हैं। उनका भी स्थानकवासी समाज को स्वागत करना चाहिये। स्थानकवासी समाज उन्हें गुरु नहीं मानता तो भी उनके मूर्तिपूजक सम्बन्धी तो उन्हें गुरु मानते हैं।

इस पर लोगों ने उनकी बहुत हंसी उड़ाई और कहा कि धर्मपक्ष में रिश्तेदारी का क्या प्रश्न है। रिश्तेदारी के स्थान पर रिश्तेदारी और धर्म के स्थान पर धर्म ! वास्तव में श्री वल्लभविजय जी सियालकोट की बिरादरी पर

आक्रमणकर्त्ता के रूप में बिरादरी में फूट डाल कर अपना शासन जमाने के लिए आ रहे थे।

महाराज श्री ने सियाल कोट की बिरादरी की विनती स्वीकार कर ली। पसरूर से विहार कर एक रात रास्ते में लगा सियाल कोट पधार गये। यहां की जनता ने हजारों की संख्या में बहुत दूर तक नगर से बाहर आकर महाराज श्री का भव्य स्वागत किया।

यहां पर महाराज श्री के जब सार्वजनिक प्रवचन प्रारम्भ हुए तो उनमें जनता उमड़ पड़ी। चार पांच हजार लोग प्रतिदिन व्याख्यान में उपस्थिन होने लगे। यहां महाराजश्री ने लाला मोतीशाह को समझाने की चेष्टा की और कहा कि आप लोग उनका स्वागत करना चाहते हैं, उन्होंने यह ऐलान कर रक्खा है कि मुझे तीनों कोट तोड़ने हैं—राजकोट, फरीदकोट, और स्यालकोट। यहां पर पहले मन्दिर नहीं था आप लोगों में फूट डाल कर मन्दिरमार्गी बनाने के लिए यहां मन्दिर की स्थापना करना चाहते हैं। इन पर भी आपने कुछ नहीं सोचा। इस प्रकार समझाने पर भी लाला मोतीशाह की समझ में कुछ नहीं आया। वे इतना कह कर चले गए कि मैंने श्वेताम्बर मूर्तिपूजक समाज को स्वागत करने के लिए वचन दे रक्खा है।

कुछ दिनों बाद श्री वल्लभविजय जी ने बड़े आडम्बर बाजे गाजे- के साथ स्यालकोट में प्रवेश किया। लाला मोती शाह के परिवार में ७०-८० व्यक्ति थे। तो भी उनमें से अकेले मोती शाह व उनका एक लड़का ही वल्लभ-विजय जी के स्वागत में गया। उनके अतिरिक्त केवल दो तीन दूसरे स्नातक-वासी लोग गए।

जम्मू में महावीर जयन्ती

कुछ दिनों के पश्चात् जम्मू की बिरादरी स्यालकोट में महाराजश्री की सेवा में उपस्थित हुई। उन्होंने बताया कि जम्मू में स्नातकवासी और श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जमाज दोनों बिरादरियों की संयुक्त मीटिंग हुई। जिसमें विचार किया गया कि दोनों बिरादरियां मिलकर सामूहिक रूप से एक ही स्थान

चलते रहते थे। प्रतिदिन १५ हजार के लगभग जनता इन कार्यक्रमों में भाग लेती रही।

इन दिनों नगर में महावीर-जयन्ती महोत्सव के कारण खूब चहल-पहल रही।

कुछ समय बाद श्री वल्लभविजय जी भी जम्मू पहुंचे, और नगर से बाहर एक मकान में ठहर गए। श्वेताम्बर मूर्तिपूजक समाज की ओर से नगर में कुछ विज्ञापन बांटे तथा दीवारों पर चिपकाए गये थे, जिनमें लिखा था जैनियों के सबसे बड़े गुरु का स्वागत करें।

इस विज्ञापन को पढ़ कर स्थानकवासी नवयुवकों ने दूसरा विज्ञापन निकाला कि हमारे बालब्रह्मचारी पंजाबकेशरी आचार्य श्री काशीराम जी महाराज जो कि पंजाब के सब से बड़े पदाधिकारी आचार्य हैं, आज कल बम्बई प्रान्त में विचर रहे हैं। हम श्री वल्लभविजय जी को सब से बड़ा गुरु तो क्या गुरु ही नहीं मानते। क्योंकि जो जैन साधु बाजे गाजे व आडम्बर के साथ नगर में प्रवेश करते हैं, उन्हें हम जैन साधु की संस्कृति की दृष्टि से साधु नहीं मानते। यह विज्ञापन उस मकान की दीवारों वर भी लगा दिये गये थे जहां मन्दिरमार्गी आचार्य ठहरे थे। उनके नगर प्रवेश के मार्ग में भी ये विज्ञापन लगे हुए थे। जब प्रातः उन्होंने विहार कर नगर में प्रवेश किया तो दीवारों पर लगे हुए उन विज्ञापनों को देख मूर्तिपूजक समाज में बड़े भारी विक्षोभ की भावना और हलचल सी मच गई।

पर कर क्या सकते थे, क्योंकि उनकी ही गलती का यह परिणाम हुआ। नगर में श्री वल्लभविजय जी स्थानकवासी काशीशाह जैन के मकान पर ठहरे। महाराज श्री ने लाला काशीशाह को याद किया और उन्हें कहा कि आपके मकान पर मूर्तिपूजा के मण्डन विषयक व्याख्यान नहीं होने चाहिए, क्योंकि आप स्थानकवासी हैं। श्री वल्लभविजय ने कुछ दिन वहां ठहर कर सन खतरा कस्बे की ओर विहार कर दिया। जम्मू में महाराजश्री ने क्षत्रिय महा-सभा में भी तीन चार व्याख्यान दिये। दो व्याख्यान आपके बाजार में भी

हुए। यहां एक मास के लगभग विराज कर महाराजश्री ने स्याल कोट की ओर विहार किया। दो तीन दिन मार्ग में धर्म प्रचार कर आप स्याल कोट पधारे। उन्हीं दिनों गुजरांवाला में महाराणा प्रताप की जयन्ती मनाई जा रही थी। उस प्रताप-जयन्ती की प्रबन्धक समिति के अधिकारी वर्ग स्यालकोट आये। उन्होंने महाराजश्री से प्रताप-जयन्ती के शुभ अवसर पर गुजरांवाला पधार कर भाषण देने की विनती की। महाराजश्री ने सुखे समाधे उनकी विनती स्वीकार कर ली।

कुछ दिन स्यालकोट विराज कर महाराजश्री वहां से विहार कर डसके पधारे। यहां पर आपके दो तीन सार्वजनिक प्रवचन हुए। यहाँ से एक रात मार्ग में बिता कर आप गुजरांवाला पधारे। स्थानीय जनता ने हजारों की संख्या में महाराजश्री का भव्य स्वागत किया। दूसरे दिन से यहां पर आपके प्रवचनों का क्रम प्रारम्भ हो गया। कुछ समय पश्चात् प्रतापजयन्ती उत्सव का दिवस आ गया।

प्रताप जयन्ती महोत्सव

प्रताप जयन्ती महोत्सव में प्रवचन करते हुए महाराज श्री ने महाराणा प्रताप के जीवन पर प्रभावशाली शब्दों में प्रकाश डालते हुए कहा कि देखो महाराणा प्रताप ने कितने कष्ट सह कर अपने देश की सेवा की। और अपनी आन व शान को बनाये रखा। तभी आज महाराणा प्रताप का नाम बड़े गौरव के साथ लिया जाता है। जो कोई बड़ा बनता है, वह धर्म, राष्ट्र, जाति की रक्षा और सेवा करने से ही बनता है।

आजकल तो बहुत से लोग मजे से गुलछर्रे उड़ाते हुए सबसे बड़ा नेता और सब से बड़ा गुरु बनने का प्रयत्न करते हैं। इन लोगों के जीवन में देश, जाति, धर्म आदि की सेवा की भावना दिखाई नहीं देती। देखो बड़े किस प्रकार बनते हैं ? इस सम्बन्ध में किसी कवि ने कहा है कि—

पहले थे हम मरद, मरद से नार कहाये।
पड़े समुद्र बीच शिला से युद्ध कराये।

जले कढाई बीच घाव बरछी के खाये।
इतने कष्ट जब सहे, तब हम बड़े कहाये।
फिर भी पैसे के दो दो बिकाये।

अर्थात्—उड़द के जो बड़े बनते हैं वे कहते हैं कि हम पहले "मर्द" अर्थात् उड़द थे। फिर हमारी स्त्री वाची 'दाल' संज्ञा हुई। उस दाल को समुद्र यानि पानी के पात्र में डाला गया। रात्री भर पानी में गलती रही। फिर बाहर निकाल कर हाथों से मसल कर छिलका उतार डाला। इतना ही नहीं नीचे शिला तथा ऊपर सिलवट्टा रखकर खूब ही रगड़ा और पिट्ठी बना डाली। और उस पिट्ठी को गर्म-गर्म उबलते हुए कढ़ाई के तेल में डाल कर खूब तला गया, अन्त में तकुएकी तीखी नोंक से बींध कर बाहर निकाले गए, तब जाकर लोग हमें "बड़ा" कहने लगे। यह है बड़े बनने की कहानी।

महाराजश्री के व्याख्यान में श्वेताम्बर मूर्तिपूजक भाई भी बैठे थे। उन को महाराजश्री के प्रवचनों की बढ़ी हुई प्रभावना द्वेष बुद्धि के कारण सह्य नहीं हुई। उनमें से दो भाई उठ कर देवी मन्दिर के पुजारी के पास गये और कहा कि स्वामी प्रेमचन्द जी मूर्ति का खण्डन कर रहे हैं। यह बात सुनकर पूजारी उत्तेजित हो गये। वहीं पर दो महिलाएं खड़ी थीं। उन्होंने पुजारी से कहा कि हम महाराजश्री के प्रवचन में से ही उठ कर आई हैं। वे लोग द्वेष के मारे परस्पर में झगड़ा कराने के लिए मूर्ति-खंडन की झूठी बात कर रहे हैं। इन का भाव है कि किसी न किसी प्रकार महाराजश्री के प्रवचन में गड़बड़ हो जाय। यह सुनकर पुजारी ने उन लोगों को बहुत फटकारा और कहा कि तुम लोग गड़बड़ करना चाहते हो यह उचित नहीं है।

महाराणा प्रताप के जन्म दिन मनाने के लिए जो कमेटी बनी हुई थी, जब उसे भी यह ज्ञात हुआ तो उन्होंने भी श्वेताम्बर मूर्तिपूजक भाई को बहुत लताड़ा और उसे लज्जित करते हुए कहा कि तुम लोग द्वेष में आकर झूठा प्रोपेगन्डा करते हो और इस प्रकार शहर के लोगों में फूट के बीज बोते हो। यहां से महाराज श्री भाषण देकर अपने नियत स्थान पर पधार गये। कुछ दिनों के बाद दूसरे सनातनधर्म मन्दिर में भी महाराजश्री के सार्वजनिक प्रवचन हुए। यहां पर महाराजश्री ने लगभग एक कल्प पूरा किया।

इसी समय स्यालकोट से सूचना मिली कि श्री वल्लभविजय जी स्यालकोट में चातुर्मास करेंगे। उन्होंने नारोवाल से पसरूर की ओर विहार भी कर दिया है। यह सुनकर महाराजश्री ने पसरूर की ओर विहार कर दिया। एक रात मार्ग में लगाकर 'डसके' पधारे। यहां पर दूसरे दिन सार्वजनिक व्याख्यान देकर अगले दिन 'पसरूर' पधार गये। यहां वल्लभविजय जी ने तो अपना प्रवचन सनातन धर्म मन्दिर में प्रारम्भ किया और महाराजश्री के प्रवचन का प्रवन्ध मुसलमानों के हमाम साहव के सामने के मैदान में पंडाल वनाकर किया गया। उसी में महाराजश्री के प्रवचन प्रारम्भ हुए, क्या हिन्दू क्या मुसलमान सभी लोगों ने महाराजश्री के प्रवचनों से पूरा लाभ उठाया। एक दिन श्रीवल्लभविजय जी ने अपने प्रवचन में स्थानकवासियों के विरुद्ध कुछ चर्चा की, जिसके कारण स्थानीय स्थानकवासी समाज की मीटिंग इस विषय पर विचार करने के लिए हुई। उसमें निर्णय किया गया कि दो भाई वल्लभविजय जी के पास जायें। तदनुसार श्री वावू फग्गूमल जी व श्री वावू किशन चन्द जी वल्लभविजय जी के पास गये और उनसे कहा कि आप कोई ऐसी बात न कहें, जिससे आपस में द्वेष वढ़े। यदि आपको किसी विषय पर चर्चा या विचार विनमय करना है तो यहां महाराज श्री विराज रहे हैं उनसे शास्त्रार्थ करलें।

वल्लभ विजय जी ने शास्त्रार्थ के सम्बन्ध में टालमटोल कर दिया और कोई निश्चयात्मक उत्तर नहीं दिया।

पसरूर में स्यालकोट का शिष्टमंडल चातुर्मास की विनती करने के लिये महाराजश्री की सेवा में उपस्थित हुआ। इस शिष्टमंडल के सदस्यों को महाराजश्री ने फरमाया कि चातुर्मास सुखे समाधे पट्टी माना हुआ है। यदि पूज्य श्री काशीराम जी महाराज आज्ञा प्रदान करें और पट्टी की विरादरी सहमत हो तो मैं स्यालकोट चातुर्मास कर सकता हूँ। स्यालकोट के श्रीसंघ ने दोनों स्थानों से अनुमति प्राप्त करली। फलतः महाराजश्री ने सुखे समाधे स्यालकोट चातुर्मास की विनती मान ली।

पसरूर से विहार कर महाराजश्री ने स्यालकोट नगर में प्रवेश किया। हजारों श्रद्धालु लोगों ने वड़े उत्साह के साथ आपका स्वागत किया।

स्यालकोट चातुर्मास

(सं० १९९८)

इस प्रकार वीर संवत् २४६७ विक्रम संवत् १९९८ सन् १९४१ का चातुर्मास स्यालकोट नगर में आरम्भ हुआ। दूसरे दिन महाराजश्री ने अपने प्रवचन प्रारम्भ किये। दिन पर दिन व्याख्यान में जनता इतनी अधिक बढ़ने लगी कि लोगों को स्थानक में बैठने के लिये स्थान मिलना कठिन हो गया। इस लिए शहर की नमक मण्डी में एक विशाल पंडाल बनाया गया। वहीं पर महाराजश्री के व्याख्यान प्रारम्भ हुए। उपस्थित जनसमूह से पंडाल खचाखच भर जाता था। तीन चार हजार के लगभग जनता प्रतिदिन आती रही।

अहरारों के सम्मेलन में

यहां उन दिनों मुसलमानों की अहरार पार्टी का सम्मेलन हो रहा था। अहरार सम्मेलन की स्वागतसमिति के प्रमुख अधिकारी गण कुछ हिन्दू प्रमुखों को साथ लेकर महाराजश्री की सेवा में जैन उपाश्रय में उपस्थित हुए और उन्होंने महाराजश्री से अपने सम्मेलन में भाषण देने की प्रार्थना की। इस पर महाराजश्री ने कहा कि मुझे ज्ञात हुआ है कि आपके सम्मेलन में जो भाग लेते हैं, उन्हें टिकिट लेना पड़ता है। ऐसी अवस्था में मैं वहां भाषण नहीं दे सकता। क्योंकि साधु (दरवेश) की वाणी अमूल्य होती है। उसके सुनने वालों पर टिकिट नहीं लगना चाहिए। इस पर उन्होंने उत्तर दिया कि जिस समय आप भाषण देने पधारेंगे, उस समय हम टिकिट लेना बंद कर देंगे; इस पर महाराजश्री ने उनकी विनती स्वीकार कर ली।

जब महाराजश्री अहरारों के सम्मेलन में प्रवचन करने पधारे तो महाराज

श्री के साथ हजारों जैन व अजैन भाइयों ने उस पंडाल में प्रवेश किया। वहां "संगठन" के विषय पर आपका भाषण हुआ। इस पंडाल में बीस बाइस हजार के लगभग जनसमूह उपस्थित था। उस समय कुछ लोग पंडाल में सिगरेट पी रहे थे। महाराजश्री ने फरमाया कि आप लोग यदि थोड़ी देर के लिए भी इस धूम्र-पान के व्यसन को नहीं छोड़ सकते तो देश की सेवा, जिसमें महान त्याग की आवश्यकता है कैसे कर सकेंगे? इस समय यह दरवेश का प्लेटफार्म है। इसलिए आपको कोई भी ऐसी हरकत नहीं करनी चाहिए, जो दरवेश की शान के खिलाफ हो। इस पर उन लोगों ने सिगरेट पीना बन्द कर दिया और प्रेम से महाराजश्री का प्रवचन सुनने लगे।

महाराजश्री ने संगठन के सम्बन्ध में बड़े प्रभावशाली शब्दों में विचार व्यक्त करते हुए फरमाया कि हिन्दू और मुस्लमान भाई-भाई हैं। भाइयों-भाइयों में कभी छोटी-मोटी बातों को लेकर परस्पर मनमुटाव हो भी सकता है। किन्तु साधारण अवस्था में सदा परस्पर प्रेम से ही रहना चाहिए। महाराजश्री ने हिन्दू-मुस्लिम संगठन पर बल देते हुए जब एक कविता पढ़ी तब तो सम्मेलन में एक समा ही बन्ध गया। सभी लोग तालियाँ बजा-बजाकर तथा 'महाराज श्री की जय' "श्री प्रेमचन्द जी महाराज जिन्दाबाद" 'हिन्दू मुस्लमान एक हैं' "हिन्दू मुस्लिम भाई-भाई' आदि प्रेम भरे पवित्र नारों से सारा सभामंडप गूंज उठा।

हिन्दू और मुसलमान

तुम राम कहो, वो रहीम कहें दोनों की गरज अल्लाह से है।
तुम दीन कहो वह धर्म कहें मनशा तो उसी की राह से है॥
तुम इश्क कहो वह प्रेम कहें, मतलब तो उसी की चाह से है।
वह योगी हो तुम सालिक हो, मकसद दिले आगाह से है॥
क्यों लड़ता है मूरख बन्दे, यह तेरी खाम खयाली है।
है पेड़ की जड़ तो एक वही, हर मजहब एक-एक डाली है॥

बन गया शिवाला या मस्जिद, है ईंट वही चूना है वही।
मेमार वही, मजदूर वही, मट्टी है वही गारा है वही॥

तकबीर का जो कुछ मतलब है, नाकूस का भी मंशा है वही।
तुम जिसको नमाज कहते हो, हिन्दू के लिए पूजा है वही॥

फिर लड़ने से क्या हासिल है, जी फहम हो तुम नादान नहीं।
जो भाई पे दौड़े गुर्रा कर वो हो सकता इंसान नहीं॥

क्या कतल व गारत खू रेजी, तारीफ़ यही ईमान की है।
क्या आपस में लड़कर मरना तालीम यही कुरान की है॥

इन्साफ करो तफ़सीर यही, क्या वेदों के फर्मान की है।
क्या सचमुच यह खू रेजी ही आला खसलत इंसान की है॥

तुम ऐसे बुरे एमाल पे अपने, कुछ तो खुद से शर्म करो।
पत्थर जो बना रखा है "सईद" इस दिल को जरा तो नर्म करो।

महाराजश्री ने जब बुलंन्द स्वर से यह कविता सुनाई और इसकी विशद व्याख्या की तो पंडाल बार-बार तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठने लगा।

इस सम्मेलन के अधिकारीगण ने महाराजश्री का फोटो लेना चाहा तो आपने फरमाया कि आप मेरा जड़ फोटो लेकर क्या करेंगे। मैं आपको हिन्दू मूस्लिम संगठन, देशसेवा, भ्रातृभाव, परोपकार, रहमदिली आदि की जो हिदायतें कर रहा हूँ अपने दिल में उन्हीं का फोटो खींचे अर्थात् जो मैं आप को उपदेश दे रहा हूँ, आप उसपर अमल करें यही सच्चा फोटो है। इसपर वहां के अधिकारी वहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने फ़ोटो लेना बंद कर दिया।

महाराज श्री के जाने के पश्चात् फिर किसी दिन उन्होंने किसी से पंडाल में प्रवेश करने का टिकट नहीं लिया।

श्री वल्लभ विजय जी अपने भाषण में जब-जब जड़वाद-मूर्ति विषय का मंडन करते, महाराजश्री उसका साथ ही साथ युक्तियुक्त निराकरण करते रहे। कुछ समय पश्चात् श्री वल्लभविजय जी ने सनातनधर्मी भाइयों से

कहा कि हम लोग मूर्तिपूजक हैं इसलिए हमारी और आपकी एक ही धारणा है। वास्तव में ऐसा कहकर श्री वल्लभविजय जी सनातनधर्मी भाइयों को अपनी ओर आकर्षित कर अपना पक्ष बलवान करना चाहते थे। वास्तव में तो दोनों मूर्तिपूजक होते हुए भी एक दूसरे की मूर्ति को इष्टदेव के रूप में नहीं मानते। वल्लभ विजयानुयायी राम, कृष्ण, शिव आदि की मूर्तियों को कुदेव के रूप में मिथ्यात्व मानते हैं। यह तो सनातन धर्मी भाइयों को अपने पक्ष में करने के लिए वल्लभविजय जी का कोरा चकमा ही था।

यहां पर महाराज श्री के दो तीन सार्वजनिक प्रवचन तेजासिंह के मन्दिर में हुए। जिनमें पांच छः हजार की उपस्थिति होती रही।

यहां सारे चातुर्मास में बाहर से आये हुए दर्शनार्थियों के लिए प्रातः सायंकाल दूध आदि का प्रबन्ध श्री देवीदयाल जी भगत की ओर से था। यहां पर दीन-दुखियों के लिए एक निःशुल्क औषधालय खोला गया। इस औषधालय से हजारों दीन दुःखी व नगरवासी लाभ उठाने लगे। इस चातुर्मास में महाराज श्री ने मति श्रुत्यादि पांच ज्ञानों का विवेचन किया। और ब्रह्मचर्य-व्रत दृढ़प्रतिज्ञ सेठ सुदर्शन का पवित्र जीवन चरित्र सुनाया।

पर्युषण महापर्व में श्री अन्तगढ़ सूत्र का वाचन किया। संवत्सरी के दिन वहां पर कन्या पाठशाला के लिए बिरादरी ने तीस पैंतीस हजार रुपये इकट्ठे किये। संवत्सरी का प्रवचन समाप्त कर महाराजश्री अपने स्थान पर पधार रहे थे, सैकड़ों की संख्या में पोपेवाले श्रावकगण मुंहपत्तियां लगाये हुए बाजार में महाराजश्री के साथ जा रहे थे दूसरी ओर से श्री वल्लभविजय जी भी अपना प्रवचन समाप्त कर गाजे बाजे व बड़े आडम्बर के साथ आ रहे थे। पास में आने पर वल्लभविजय जी के साथ समारोह में सामने से आने वाले सब लोग अपने गाजे बाजे बन्द कर रास्ता छोड़ सड़क के एक ओर खड़े हो गये। और महाराजश्री व पोशे वाले भाई स्थानक में पहुंचे सायंकाल को संवत्सरी प्रतिक्रमण कर चौरासी लाख जीवयोनियों से क्षमा याचना की गई।

इस प्रकार यह संवत्सरी महापर्व धर्म ध्यान के साथ बड़े आनन्दपूर्वक सम्पन्न हुआ।

कुछ दिनों पश्चात् गुजरांवाले की वेजीटेरियन सोसायटी के कार्यकर्ता और वहां की जैन बिरादरी के बहुत से लोग महाराजश्री के दर्शनार्थ आये।

दूसरे दिन महाराज श्री के प्रवचन में आये हुए कार्यकर्ता श्री सरदार हाकिम सिंह जी और पं० मोहन लाल जी आदि ने मांस-निषेध पर भाषण दिये और जनता से अपील की कि यहां पर भी श्री प्रेमवेजीटेरियन संस्था होनी चाहिये। महाराजश्री ने भी इसी विषय पर बड़ा प्रभावशाली प्रवचन किया। परिणाम स्वरूप सैकड़ों लोग वेजीटेरियन सोसाइटी के फार्म भर कर उसी समय उसके सदस्य बन गये। बहुत से मुसलमान भी इसके सदस्य बने।

फिर इस संस्था के पदाधिकारीगण का निर्वाचन किया गया। इसके अध्यक्ष रायसाहब बिहारी लाल जी खत्री चुने गये। आप दर्भंगा स्टेट के मन्त्री रह चुके थे। उपप्रधान सरदाह श्री भागसिंह जी व प्रधान मन्त्री सरदारी लाल जी जैन चुने गये थे। इन लोगों ने वेजीटेरियन सोसायटी के पांच नियमों के आधार पर अपना प्रचार कार्य आरम्भ कर दिया। रायसाहब बिहारीलाल जी जिन्हें इस सोसायटी का अध्यक्ष चुना गया था, वह पहिले ऐसे मांसाहारी थे कि उनके पड़ोसियों के घरों के आगे अण्डों के छिलके बिखरे रहते थे, जिससे वे निरामिषभोजी लोग बहुत दुखी होते किन्तु इनके आगे किसी का कुछ चारा न चलता था। क्योंकि आप बड़े प्रभावशाली व्यक्ति थे। इनके मांस व अण्डे छोड़ने पर पड़ोसी लोग बहुत प्रसन्न हुए।

कुछ दिन बाद इन्हीं रायसाहब बिहारीलाल जी के पोते का विवाह स्यालकोट छावनी में होने वाला था। इस अवसर पर बरात के लिये बहुत से मुर्गे, तीतर, अण्डे आदि का प्रबन्ध किया गया। जब यह बात रायसाहब को ज्ञात हुई तो उन्होंने अपने समधी को कहला भेजा कि विवाह में मांस अण्डे आदि का प्रयोग नहीं होना चाहिये। इस पर मांस अण्डे आदि का प्रयोग बन्द कर दिया गया। इस प्रकार सैकड़ों निरीह जीवों को जीवन दान मिल गया। यह है इस सोसायटी का सुन्दर प्रचार कार्य।

स्यालकोट का चातुर्मास सुखे समाधे समाप्त कर महाराज श्री स्यालकोट

छावनी पधारे। विहार करते समय स्यालकोट की अनेक संस्थाओं की ओर से महाराज श्री की सेवा में अनेक अभिनन्दन पत्र भेंट किये गये। विहार में हजारों की संख्या में जनसमूह आपके साथ था। छावनी में महाराज श्री के दो तीन सार्वजनिक प्रवचन हुए। यहां से विहार कर एक रात रास्ते में बिता आप नया शहर पधारे। यहां पर जम्मू व स्यालकोट से एक हजार के लगभग लोग महाराजश्री के दर्शनार्थ आये। महाराजश्री ने जम्मु व स्यालकोट से आये हुए भाइयों और वहनों व स्थानीय जनता को धार्मिक प्रवचन से लाभान्वित किया। यहां से एक रात मार्ग में लगा जम्मू पधारे। यहां पर महाराज श्री ने दस, पन्द्रह दिन तक अपने प्रभावशाली प्रवचनों के द्वारा धार्मिक भावना जागृत की। यहां की बिरादरी से यह नियम करवाया कि घर में कोई मर जाये तो तीन दिन से अधिक रोने के लिये तप्पड़ नहीं बिछाना। मृतक की अर्थी के पीछे-पीछे औरतें रोती पीटती जाया करती थीं उस कुप्रथा को भी बन्द करवाया।

यहां से विहार कर महाराजश्री दो तीन दिन तक मार्ग में मार्गवर्ती क्षेत्रों को परसते हुए स्यालकोट पधारे। यहां पर भी तीन दिन से अधिक तप्पड़ बिछा कर न रोने का नियम करवाया और अर्थी के साथ रोती पीटती स्त्रियों के जाने का निषेध भी करवाया। यहां पर महाराजश्री पांच सात दिन तक विराजे। यहां से महाराजश्री ने वजीराबाद की ओर विहार किया। नागो की व समड़याला आदि नगरों में एक-एक दो-दो प्रवचन करते हुए महाराजश्री वजीराबाद पधारे। यह समड़याला नगर स्व० बालब्रह्मचारी घोरतपस्वी आचार्य सम्राट् चारित्रचूड़ामणि श्री पूज्य सोहनलाल जी महाराज की जन्मभूमि है। यहां से वजीराबाद पहुंचे वजीराबाद में महाराज श्री के दो सार्वजनिक प्रवचन हुए। यहां जैनियों के घर नहीं थे, पर यहां क्षत्रीय जाति की बहुलता थी। उन लोगों के सम्बन्ध अर्थात् रिश्तेदारियां स्यालकोट में बहुत थीं। इसीलिये इन्हें स्यालकोट में प्रवचन सुनने का सौभाग्य प्राप्त होता रहा और इसीलिये इनका महाराजश्री व जैनियों के प्रति श्रद्धाभाव व धार्मिक स्नेह था।

यहां से विहार कर महाराजश्री एक रात मार्ग में लगा गुजरात स्टेशन पर पधारे। यहीं पर गुजरात नगर की मण्डी है। यहां पर महाराजश्री ने एक प्रवचन किया। यहां से विहार कर आप लालामूसा नामक नगर पधारे। यहां पर भी महाराजश्री का एक प्रवचन हुआ। यहां से खारियां होते हुए जेहलम पधारे। जेहलम में स्थानीय श्रीसंघ ने महाराजश्री का भव्य स्वागत किया। यहां के स्थानक में महाराजश्री के प्रवचन प्रारम्भ हुए। यहाँ पर आपने तिलक हाल तथा आर्यसमाज मन्दिर के मैदान में तीन सार्वजनिक प्रवचन किये। यहां पर आपके प्रवचनों के परिणाम स्वरूप "श्री प्रेम वेजीटेरियन संस्था" की स्थापना की गई और बहुत से लोग तत्काल सदस्य बन गए। पदाधिकारियों का निर्वाचन किया गया। इसके अध्यक्ष टिम्बर मर्चेण्ट सरदार ज्ञानसिंह जी, उप प्रधान कांग्रेसी नेता सरदार कृपालसिंह जी और प्रधानमंत्री श्री माणक चन्द जी जैन बनाये गये। यहां पर सोसायटी के पांच नियमों का बड़े उत्साह के साथ प्रचार प्रारम्भ हुआ। महाराजश्री नगर में जब आहार के लिए जाते तो जहां तहां गलियों में अण्डों के छिलके पड़े दिखाई देते, किन्तु वेजीटेरियन सोसायटी के स्थापित होने से इस प्रकार अण्डे के छिलके आदि से मार्गों का दूषित रहना बन्द हो गया।

सरदार ज्ञान सिंह जी जिन्हें स्थानीय वेजीटेरियन सोसाइटी का अध्यक्ष चुना गया था एक बड़े भारी सम्पत्तिशाली व्यक्ति हैं। आपका बहुत बड़ा परिवार है। लोगों से ज्ञात हुआ कि आपके घर में अण्डों के टोकरे के टोकरे आया करते थे, किन्तु महाराजश्री के उपदेश का यह प्रभाव हुआ कि आपने मांस अण्डा आदि छोड़कर वेजीटेरियन सोसाइटी की सदस्यता स्वीकार कर ली। साथ ही अपने परिवार को भी आपने अपने विचारों का बनाने का पूरा प्रयत्न किया। एक व्यक्ति के निरामिषभोजी बनते ही हजारों जीवों की रक्षा हो गयी।

यहां के सुप्रसिद्ध डॉक्टर मुलखराज जी खत्री भी बड़े भारी मांसाहारी थे। किन्तु आपकी धर्मपत्नी सुशीला देवी गुजरांवाले की बेटी थी। उसने गुजरांवाले में महाराजश्री के व्याख्यान सुने थे, फलतः उसके हृदय में महाराज

श्री व जैनधर्म के प्रति बड़ी श्रद्धा उत्पन्न हो गई। वह भी अपने पति डॉक्टर मुलखराज जी को समय समय पर मांस छोड़ने की प्रेरणा करती रहती थी। इधर महाराजश्री का भी यहां पधारना हो गया। डॉक्टर साहब ने यहां महाराजश्री के अहिंसा व मांस परित्याग के सम्बन्ध में प्रवचन सुने। इन प्रवचनों से प्रभावित होकर बीस इक्कीस वर्ष से दोनों समय के मांस के अभ्यासी उक्त डाक्टर साहब ने मांसाहार का परित्याग कर दिया। वह जिस दिन महाराजश्री से प्रतिज्ञा लेकर घर गये तो भोजन के समय नौकर ने प्रति दिन की भांति उस समय भी उनकी थाली में मांस परोसा। डाक्टर साहब ने देखते ही नौकर से कहा "बस इसे उठालो मैंने आज से मांस अण्डे आदि का परित्याग कर दिया है। भविष्य में हमारी रसोई में इन वस्तुओं का प्रवेश नहीं होना चाहिए।"

इस प्रकार यहां पर सरदार ज्ञान सिंह जी, डाक्टर मुलखराज जी, लाला गेंडामल जी खत्री, बालक राम जी खत्री, लाला हंसराज जी खत्री आदि अनेक व्यक्तियों ने मांस व अण्डे का सदा के लिए परित्याग कर दिया।

जेहलम में एक "महिला समाज" की स्थापना भी हुई। इसकी अध्यक्षा डाक्टर मुलख राज जी की धर्मपत्नी सुशीलादेवी को बनाया गया। घर घर में जाकर इस बात का पता लगाना कि वहां कौन विधवा, वृद्धा, निराश्रित, दीन हीन, दुखिया, अबला है, और उनकी यथाशक्ति सहायता करना इस सभा का उद्देश्य था। स्त्रीसमाज में उपदेश, व्याख्यान आदि के द्वारा मांस आदि दुर्व्य-सनों का त्याग कराना भी इस सभा का एक उद्देश्य था। ऐसी महिला सभा की स्थापना अत्यन्त आवश्यक और उपयोगी थी। सप्ताह में एक बार महि-लाओं की सभा जैन स्थानक में होने लगी। जिसमें सती चन्दन बाला, हरिश्-चन्द्र व सेठ सुदर्शन आदि के चरित्र सुनाये जाने लगे। कुछ ही दिनों में यह महिला सभा बहुत ही लोकप्रिय हो गई। इस सभा की उत्साही कार्यकर्त्रियों ने कॉलिज की बहुत सी लड़कियों को महाराज के पास लाकर मांस व अंडे का परित्याग करवाया। बड़े बड़े लखपतियों की देवियों ने लोगों के घरों में

जा जाकर सेवा का यह कार्य किया। ठोस रूप से दीन दुखियों की सेवा का कार्य करने के लिए इन देवियों ने अपने पास से तथा दूसरे लोगों से चन्दा एकत्रित किया। इस प्रकार अनेक दीन दुखी महिलाएं इस सभा से लाभ उठाने लगे।

यहां पर गुजरांवाला सियालकोट रावलपिण्डी आदि अनेक स्थानों से बहुत से लोग महाराजश्री के दर्शनार्थ आये और महाराज श्री के प्रवचनों से उन लोगों ने लाभ लिया। गुजरांवाले के सरदार हाकम सिंह जी ने अपने भाषण में सिक्खों के मान्य ग्रन्थ "ग्रन्थ साहब" से उद्धरण देते हुए बताया कि गुरु नानक देव भी 'ग्रन्थ साहब' में मांसाहार का निषेध करते हैं। इसलिए मैं विशेष रूप से सिक्ख भाइयों से अपील करता हूं कि यदि आप गुरु नानक और ग्रन्थ साहब के मानने वाले सच्चे सिक्ख हो तो मांस अण्डे आदि का परित्याग कर दो। सरदार साहब ने उक्त भाषण का उपस्थित जनसमूह पर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा।

जेहलम में इस प्रकार धर्म-प्रचार कर महाराजश्री रोहतास पधारे। यहां पर आपने चार पांच दिन तक धर्म प्रचार किया। यहां से विहार कर महाराज श्री 'सुहावा' पधारे। यहां पर रावलपिंडी के कुछ भाई महाराजश्री के दर्शनार्थ आये। स्थानीय जनता व रावलपिंडी के भाइयों को धर्मोपदेश देकर महाराज ने यहां से विहार कर तीसरे दिन गुज्जरखां में पदार्पण किया। यहां की जनता को धर्म लाभ देते हुए महाराजश्री मंदरा पधारे। मंदरा से महाराज श्री रवात पधारे। यहां पर महाराजश्री ने एक प्रवचन कर दूसरे दिन यहां से विहार कर मार्गवर्ती ग्रामों को परसते हुए रावलपिंडी में पदार्पण किया। यहां की जनता ने महाराजश्री का भव्य स्वागत किया। स्थानक में प्रवेश कर महाराजश्री ने उपस्थित जनता को धर्मोपदेश दिया। धर्मोपदेश के अनन्तर स्थानीय श्रीसंघ की ओर से महाराज जी की सेवा में निम्न अभिनन्दन पत्र समर्पित किया गया—

श्री वीतरागाय नमः

सर्वगुणसम्पन्न, बालब्रह्मचारी, त्यागमूर्ति, शास्त्रार्थ
वारिधि पारगम्य, तत्वान्वेषी, प्राणीमात्र—
हितैषी, उत्कटोज्ज्वल-ललाटाभाशाली
विद्वत् शिरोमणि श्री श्री १००८
श्री स्वामी प्रेम चन्द जी
महाराज की
सेवा में

:०: स्वागत पत्र :०:

जैन कुल कमल दिवाकर !

आप जैसे प्रकाण्ड विद्वान्, प्रतिभाशाली ब्रह्मचर्य तेजजितकंदर्पदर्प, व्याख्यानपरिधिपारंगत, विद्यानुरागी के शुभ आगमन पर हम दीन हीन हर्षोत्फुल्ल हृदय से आप का स्वागत करते हैं। आज हमारा भाग्योदय सराहनीय है, जिस से इस क्षेत्र में आप जैसे महानुभाव के साक्षात् दर्शन हुए। आप की चरण रज के चिराकांक्षित स्पर्श इच्छुक हम आप का किन शब्दों में धन्यवाद करें। हमारे पास इतने शब्द नहीं जिन के द्वारा आप के शुभागमन को प्रकट कर सकें।

जैनधर्म चूड़ामणे !

आप के अमल वैराग्य, अटूट संयम, साधुवृत्ति के कंटकाकीर्णपथ पर सन्तोष तथा सफलतापूर्वक भ्रमण, व्याख्यानशैली की ओजस्विता तथा गाम्भीर्य सराहनीय हैं। आपका धर्मोन्नति तथा देशोन्नति विषयक परिश्रम असाध्य यात्राएं, अथक अटूट कार्यकुशलता, भला कौन विस्मृत कर सकता है। अपनी सर्वप्रियता तथा ज्ञान-भण्डार का पूर्ण सदुपयोग तथा निज कर्तव्य का पूर्णरूपेण पालन करते हुए आपने जैन धर्म के अकाट्य तथा सर्वमान्य सिद्धान्तों का तत्व अनभिज्ञ जनतामें जिस प्रामाणिकता तथा यौक्तिता

से रखा, यह प्रत्यक्ष ही है। जैन रूप निर्मलाकाश में शरदिन्दुवत् आप की अलुप्त कीर्ति स्पर्णाक्षरों में सदा अंकित रहेगी।

साधुशिरोमणे !

कहां तक आप के गुणों तथा उपकारों का वर्णन किया जाय। सहस्र जिह्वाएं तथा लेखनियाँ भी इस के लिए असमर्थ हैं। प्रचण्ड देदीप्यमान मार्त्तण्ड के समक्ष छोटे दीप हास्यास्पद होते हैं।

कुछ समय हुआ, व्याख्यानवाचस्पति, नवयुगोद्धारक श्री स्वामी मदन लाल जी महाराज ने अपने मुखारविन्द से आप की ओजस्विनी वक्तृत्व शक्ति की मुक्तकंठ से प्रशंसा की थी। आप के चरणरज से पुनीत पंजाब के प्रमुख नगरों से अहिंसा सत्य प्रेमात्मक पवित्र ध्वनि हमें प्रभावित कर प्रेरित किए बिना न रह सकी। यही कारण था कि रावलपिण्डी का जैन-जगत् भक्ति के आवेश में आप की सेवा में यहां चातुर्मास करने के लिए अनेक विनतियाँ करता रहा और कई बार चातुर्मास की अस्वीकारिता पर साहसहीन अथवा निराश न हुआ। आज आप को यहां देख कर हमारे हृदय-मानसरोवर से प्रसन्नता के स्रोत वह निकले हैं।

सच्चे प्रयत्न कभी हमारे, व्यर्थ हो सकते नहीं।
संसार भर के विघ्न भी, बल को डुबो सकते नहीं॥

यदि हमारे हृत्सरसरिता में चातुर्मास रूपी वर्षा हो जाय तो हमें पूर्णाशा है कि यह पापाक्रान्त पृथ्वी, जो चिरकाल से हिंसा तथा क्रूरता का केन्द्र बनी हुई है आपकी धर्म-दुंदभी से सजग एवं कर्तव्यपरायण बन जायगी।

भवदीय शुभागमनमलयानिलप्रफुल्लितहृत्पुष्पों की यह तुच्छ माला स्वागतार्थ सादर समर्पित है।

क्या आप इस तुच्छ भेंट को स्वीकार करेंगे ?

चरणाम्बुज चंचरीक :
आबाल वृद्ध, स्त्री पुरुष
जैन बिरादरी,
रावलपिंडी।

स्थानीय श्रीसंघ के मन्त्री श्री बाबू चुन्नी लाल जी ने यह अभिनन्दनपत्र पढ़ कर सुनाया। दूसरे दिन से महाराजश्री ने अपने प्रवचन प्रारम्भ किये। इन प्रवचनों में हजारों श्रद्धालु श्रोतागण प्रतिदिन भाग लेने लगे। उन दिनों व्यापारियों का सरकार के साथ संघर्ष चल रहा था। व्यापार मंडल ने तीस चालीस दिन से हड़ताल की हुई थी। इसलिये व्यापारी वर्ग महाराज श्री के प्रवचनों में बड़े उत्साह के साथ बड़ी भारी संख्या में उपस्थित होता था और महाराजश्री के उपदेशों से पूरा-पूरा लाभ उठाने का प्रयत्न करता था।

यहाँ पर महाराजश्री का सार्वजनिक प्रवचन तिलक हाल में हुआ। जिस में पाँच छः हजार श्रोतागण उपस्थित थे! महाराजश्री के प्रवचन के समय पाँच छः सी० आई० डी गुप्त रूप से रिपोर्ट ले रहे थे। महाराजश्री ने अपने भाषण में आध्यात्मिक व धार्मिक भावनाओं को प्रमुख रखते हुए भी राज-नैतिक विषयों का ऐसे सुन्दर ढंग से प्रतिपादन किया कि बेचारे सी० आई० डी० रिपोर्टरों के हाथ पल्ले कुछ भी न पड़ सका।

महाराजश्री का एक सार्वजनिक प्रवचन खत्री मुहल्ले में हुआ। यहां पर भी लगभग पाँच छः हजार श्रोतागणों ने भाग लिया।

एक दिन महाराजश्री ने मांस-निषेध पर विशेष रूप से प्रभावशाली प्रवचन किया। इस प्रवचन में आपने गुजरांवाले, सियालकोट, जेहलम आदि में स्था-पित की गई वेजीटेरियन सोसाइटियों का उल्लेख करते हुए उनके द्वारा की गई सदाचार शुद्धाहार के प्रचार व दूसरी मानव-सेवाओं का विस्तृत विवेचन किया। इस प्रवचन से प्रभावित व प्रेरित हो कर के सैकड़ों लोग वेजीटेरियन सोसाइटी के फार्म भर उसके सदस्य बन गये।

रावलपिंडी में वेजीटेरियन सोसाइटी के निम्नलिखित पदाधिकारी निर्वाचित हुए :—

अध्यक्ष—नामधारी सिक्ख सम्प्रदाय के नेता सरदार आत्मासिंह जी। उपप्रधान लाल उत्तमशाह जैन। प्रधानमंत्री—दीनानाथ जी खत्री। इस संस्था ने अपने पाँचों नियमों का बड़े उत्साह के साथ प्रचार प्रारम्भ कर दिया। इस

के वाद यहां स्थानीय जैनसभा का नया चुनाव भी हुआ। इसके अध्यक्ष लाला उत्तमाशाह जी और प्रधानमंत्री वाबू चुन्नी लाल जी निर्वाचित हुए।

यहां पर लाला काकूशाह उत्तमाशाह की ओर से वेजीटेरियन संस्था के सदस्यों को एक प्रीतिभोज भी दिया गया। इसमें सभी जातियों के लोगों ने वड़े प्रेम से भाग लिया। इस प्रकार इस प्रीतिभोज के द्वारा पारस्परिक प्रेम व भ्रातृभाव का सुन्दर उदाहरण उपस्थित किया गया।

स्थानीय वेजीटेरियन सोसाइटी के पास वहुत से दीन दुखियों के पत्र आने लगे कि हमारी परिस्थिति वड़ी शोचनीय है, इसलिये हमें यथोचित सहायता प्रदान की जाय। प्रार्थनापत्र इतनी अधिक संख्या में आये कि सहायता के लिये कौन उचित अधिकारी है कौन नहीं इसका निर्णय करना भी कठिन हो गया। इसलिये इस सोसाइटी ने एक उपसमिति वना दी, जो घर घर जाकर इन प्रार्थनापत्रों की वास्तविकता की जांच करने लगी। जांच कमेटी के अध्यक्ष लाला उत्तमाशाह जी वनाये गये। जांच करने का कार्य लाला संतराम जी साहनी खत्री और लाला मनोहर लाल जी जैन को सौंपा गया। अधिकारी व्यक्तियों की सहायता वाटने का कार्य भी इन्हीं के हाथों में दिया गया।

रावलपिण्डी की जनता ने महाराजश्री से निवेदन किया कि इस वर्ष चातुर्मास हमारे यहां रावलपिण्डी में ही करने की कृपा करें। महाराजश्री ने फरमाया कि मैं तो केवल आप का क्षेत्र परसने ही आया हूँ। क्योंकि आपका क्षेत्र पहिले कभी नहीं परसा था। अभी चातुर्मास लगने में भी लगभग चार मास हैं, इसलिये अभी चातुर्मास मानने के भाव नहीं है। यह सुनकर स्थानीय विरादरी वहुत निराश व उदास हुई और कहने लगी कि आप श्री का फिर चातुर्मास कव होगा? हम तो कई वर्षों से आपके चातुर्मास की आशा लगाये वैठे हैं।

यह कहते कहते लाला रूपाशाह व फकीराशाह आदि भाइयों की आँखों में आँसू आ गये। उनके ऐसे अगाध प्रेम व श्रद्धाभाव को देख कर साथ ही उन्हें इस प्रकार निराश होते देख महाराजश्री को सुखे समाधे चातुर्मास की विनती

स्वीकार करनी ही पड़ी।

स्मरण रहे कि लाला रूपाशाह जी एक बड़े उत्साही, उदार, सहृदय, अथक कार्यकर्त्ता, सर्वजन-प्रिय, संघ व समाज के हितैषी और धर्मपरायण व्यक्ति थे। आप बालक, युवक, वृद्ध सभी को सदा प्रसन्न रखते थे। आपका इशारा पाते ही समाज का प्रत्येक व्यक्ति, सदा सहर्ष सब प्रकार की सेवा करने के लिये प्रस्तुत हो जाता था। इसमें कोई अत्युक्ति न होगी कि आप स्थानीय श्रावकसंघ के शिरोमणि और मां बाप के समान अभिभावक थे। आपका जीवन बड़ा ही प्रामाणिक, विशुद्ध व विश्वासपात्र था। सचमुच ऐसे व्यक्तियों का मिलना समाज के लिये बड़े गौरव की बात है।

महाराजश्री लगभग एक मास तक रावलपिंडी में विराजकर एक रात मार्ग में बिता भट्टों के मोड़। नामक ग्राम में पधारे। यह ब्राह्मणों का ग्राम है। आपके यहां दो प्रवचन हुए। यहां से विहार कर आप कल्लर पधारे। यह पर आपने सिक्खों के गुरुद्वारे में मांसनिषेध पर दो व्याख्यान दिये। और यह पर गौरे बेवहा नामक मांसनिषेधसंबंधी एक पुस्तक रावलपिंडी के भाइयों क ओर से वांटी गई। यहां के स्थानक में दो तीन व्याख्यान देकर महाराजश्र सुहावा, दीना आदि क्षेत्रों में धर्मप्रचार करते हुए पुनः जेहलम पधारे। य पर महाराजश्री ने अपने प्रवचनों का क्रम प्रारम्भ किया। इन प्रवचनों स्थानीय जनता दिनों-दिन खूब धार्मिक लाभ उठाने लगी। वेजीटेरि सोसायटी की मीटिंग भी आपकी उपस्थिति में होती रही। यहां पर बाल की भी एक मांसनिषेध बालसभा स्थापित की गई, जिसमें बालकों ने ि दिनों बड़े उत्साह से भाग लेना और कार्य करना आरम्भ कर दिया।

महावीरजयन्ती का पवित्र पर्व भी महाराजश्री के यहीं पर विराजते गया। इसलिये जेहलम में महावीरजयन्ती का पवित्र पर्व बड़े उत्साह से मन गया। इस महोत्सव के अवसर पर अमृतसर के कवि श्री शोरीलाल भ आदि भी आए। महाराजश्री ने श्री भगवान् महावीरस्वामी के जीवन च पर बड़े ही प्रभाव शाली शब्दों में प्रकाश डाला। अमृतसर से आए हुए

भ्रान्ति होती है, इसीप्रकार यह जो संसार भासता है, वास्तव में यह कुछ नहीं है। सीप में चांदी के व रज्जू में सर्प के समान भ्रान्ति ही है, वास्तव में जगत् मिथ्या है।

महाराजश्री ने फरमाया कि जिसने वास्तविक सर्प और चांदी देखी ही नहीं, उसे सीप में चांदी और रज्जू में सर्प की भ्रान्ति हो ही नहीं सकती। चांदी और सर्प का होना तो सत्य है। अर्थात् ये दोनों वस्तुएं तो अनादि और अनन्त रूप से चली आती हैं। उनकी सत्ता तो मिथ्या नहीं है, मिथ्या तो मनुष्य की अल्पज्ञता के कारण इसमें होने वाली भ्रान्ति है।

वेदान्ती भाई ने प्रश्न किया कि जीव के साथ में माया अनादि काल से है तो उसे मोक्ष कैसे हो सकता है।

महाराजश्री ने फरमाया अनादिपन भी चार प्रकार का होता है—

१. अनादि अनंत २. अनादि सान्त ३. सादि सान्त ४. सादि अनंत।

जो जीव कर्म से मुक्त होता है, उसके साथ चले आने वाले कर्म अनादि सांत होते हैं। महाराजश्री ने इस विषय को खूब विस्तृत विवेचन करके समझाया। इस प्रकार अपनी शंकाओं का समाधान होने से वह वेदान्ती भाई बहुत संतुष्ट हुआ।

यहां से विहार कर महाराजश्री गुजरांवाला नगर के बाहर ला० बद्रीशाह सोहनलाल के बाग की कोठी में विराजे, दूसरे दिन यहां से विहार कर नगर में पधारे। यहां अनेक श्रद्धालु भाइयों ने महाराजश्री का भव्य स्वागत किया। महाराजश्री ने स्थानक में प्रवेश कर समागत भाइयों बाइयों को १०-१५ मिनट तक धर्मोपदेश दिया। दूसरे दिन से स्थानक में महाराजश्री के प्रवचन प्रारम्भ हुए।

मौलवियों से शंका-समाधान

कुछ दिनों पश्चात् यहां दो मौलवी व कुछ और मुसलमान भाई महाराजश्री के पास आये, और महाराजश्री को हिन्दी, उर्दू और गुरुमुखी इन तीन भाषाओं में कुरान की प्रतियाँ समर्पित कीं। मौलवी साहब ने महाराजश्री से पुनर्जन्म के सम्बन्ध में चर्चा करते हुए कहा कि आप लोग पुनर्जन्म अर्थात् आवागमन को मानते हैं, पर हम लोग तो नहीं मानते।

महाराजश्री ने फरमाया कि आप लोगों के मत में मनुष्य की मृत्यु के पश्चात् उसकी आत्मा (रूह) कहां जाती है। अर्थात् वे जीव मरकर कहां जाते हैं। मौलवी साहब ने उत्तर दिया कि जब तक कयामत (प्रलय) नहीं आती तब तक वे मरने वाले जीव कब्रिस्तान में ही रहते हैं।

महाराजश्री ने पूछा कि कयामत के बाद जीव कहाँ जाते हैं।

मौलवी साहब ने उत्तर दिया—कयामत के वक्त खुदा कब्रिस्तान में रहने वाले सभी जीवों के नेक व बद एमाल (भले बुरे कार्यों) का हिसाब करता है। जिस रूह ने बद एमाल (बुरे कार्य) किये हैं, वह उसे दोजख में डालता है। जिन रूहों के नेक एमाल (शुभ कर्म) होते हैं उन्हें बहिश्त (स्वर्ग) में भेजा जाता है।

महाराजश्री ने फरमाया कि जिस जीव ने नेक काम तो बहुत किये और बद काम कम किये उसका क्या इन्साफ होता है।

मौलवी साहब ने उत्तर दिया कि जब वह अपने बद एमालों का नतीजा दोजख (नर्क) में भुगत लेता है तो उसे दोजख में से निकाल कर बहिश्त (स्वर्ग) में भेज दिया जाता है।

तब महाराजश्री ने मुस्कराते हुए मौलवी साहब से कहा—इस प्रकार चार जन्म तो आपने अपने सिद्धान्तों के अनुसार ही स्वीकार कर लिये हैं। पहला यहाँ का, दूसरा कब्रिस्तान का, तीसरा दोजख व चौथा बहिश्त का। इसी प्रकार और भी जन्म हो सकते हैं। अपने किये हुए नेक व बद एमाल का

फल भोगने के लिये एक जन्म से दूसरे जन्म में जाने का नाम ही पुनर्जन्म है।

इस प्रकार अपनी शंका समाधान पाकर वे दोनों मौलवी साहब तथा दूसरे मुसलमान भाई बड़े आनन्दित हुए और महाराजश्री के प्रति श्रद्धाभाव प्रकट कर अपने-अपने घरों को गये। यहाँ पर महाराजश्री ने लगभग एक कल्प पूरा किया। फिर यहां से विहार कर दूसरे दिन डसके पधारे। यहाँ पर एक दो प्रवचन देकर जामके नामक ग्राम पधारे। यहाँ पर महाराजश्री का एक प्रवचन हुआ। यहां से विहार कर दूसरे दिन स्याललोट पधारे। यहां पर स्थानीय जनता ने हजारों की संख्या में एकत्रित होकर महाराजश्री का स्वागत किया। यहां पर महाराजश्री के प्रवचन पंडाल में प्रारम्भ हुए। तीन चार हजार श्रोतागण इन प्रवचनों में भाग लेते थे, जिनमें से तीन चार सौ भाई व बाई दो मील दूर छावनी से चलकर आते थे।

यहां पर वेजीटेरियन सोसाइटी के सदस्यों की संख्या प्रतिदिन बढ़ती रही।

चन्द्र व सूर्य

एक दिन आर्य समाज के एक भाई महाराजश्री के पास आये। उन्होंने महाराजश्री से ईश्वरकर्तृत्व विषय पर अनेक प्रश्नोत्तर किये। उन्होंने महाराजश्री से पूछा कि आप किसी को सृष्टिकर्त्ता तो मानते नहीं तो फिर यह चन्द्र और सूर्य किसने बनाये हैं।

महाराजश्री ने फरमाया कि यह चन्द्र व सूर्य जो हमें दिखाई दे रहे हैं वे वास्तव में चन्द्रमा व सूर्य नहीं उनके विमान हैं जो अनादि हैं। जो देव इनमें निवास करते हैं वे अपनी आयु पूरी कर मर जाते हैं। दूसरे जीव उन्हीं विमानों में देव रूप उत्पन्न होते रहते हैं। इस प्रकार यह क्रम हमेशा चलता रहता है। यह चन्द्र, सूर्य किसी के बनाये हुए नहीं।

तब उन्होंने दूसरा प्रश्न यह किया कि यह पृथ्वी किसने बनायी है।

महाराजश्री ने उत्तर दिया कि पृथ्वी अनादि है। अनादि वस्तु का कोई बनाने वाला नहीं होता। यदि पृथ्वी पहले से नहीं होती तो इसके बनाने का

प्रश्न होता। पृथ्वी का अस्तित्व तो भूत आदि तीनों कालों में है। इसलिए पृथ्वी को बनाने का प्रश्न ही नहीं उठता। आर्य महाशय ने फिर प्रश्न किया कि यह इतने बड़े-बड़े पर्वत आदि प्रत्यक्ष दिखायी देते हैं, उन्हें किसने बनाया है, मनुष्य में तो इन्हें बनाने की शक्ति नहीं हैं।

महाराजश्री ने फरमाया कि इन्हें भी बनाने के लिए ईश्वर की आवश्यकता नहीं। मिट्टी पत्थर भी पृथ्वीकायिक स्थावर जीव कहलाते हैं। वे आहार लेकर अपने शरीर का उपचय करते हैं। वे जीव हजार दो हजार लाख करोड़ आदि संख्या रूप नहीं, वे जीव असंख्य हैं जिनकी गिनती नहीं है। जिस प्रकार मनुष्य, पशु, पक्षी आदि आहार लेकर अपने शरीर को स्थूल बनाते हैं, उसी प्रकार पृथ्वी कायिक जीव भी पर्वत आदि के रूप में अपने शरीर का निर्माण करते हैं। जिस भूमि स्थल पर जितने-जितने अधिक जीव उत्पन्न होते हैं, क्रमशः उतने ही पृथ्वीकायिक पर्वत अधिक रूप से ऊंचे होते जाते हैं। जहां पर इन जीवों की उत्पत्ति कम मात्रा में होती है वहां पर पर्वत आदि छोटे होते हैं। यह है पहाड़ या पर्वत के निर्माण की वास्तविक शास्त्रीय दृष्टि।

महाराजश्री ने इस प्रकार आर्य महाशय की शंका का समाधान किया, जिससे वह सन्तुष्ट हुए।

कुछ समय बाद महाराजश्री ने जेहलम की ओर विहार किया। लगभग सात आठ दिन मार्ग में लगा आप जेहलम पधारे। और वहां पर धर्मोपदेश देना प्रारम्भ किया। सैकड़ों की संख्या में जनता प्रतिदिन महाराजश्री के धर्मोपदेश का लाभ उठाने लगी।

यहां पर भी वेजीटेरियन सोसायटी का प्रचार जोर शोर से होता रहा। और सदस्यों की संख्या प्रतिदिन बढ़ने लगी।

एक दिन आर्यसमाज के एक शास्त्री जो वैद्यक का काम करते थे, महाराजश्री के पास आये और कहा कि आप कर्म को कर्त्ता मानते हैं।

महाराजश्री ने फरमाया कि यह गलत है, हम कर्म को कर्त्ता नहीं मानते।

उन्होंने फिर पूछा कि आप कर्ता किसे मानते हैं ?

महाराजश्री ने उत्तर दिया कि हम आत्मा को कर्ता मानते हैं।

उन्होंने फिर प्रश्न किया, आप फलदाता किसे मानते हैं ?

तो महाराज श्री ने फरमाया कि हम फलदाता कर्म को मानते हैं।

पंडित जी ने कहा, कर्म तो जड़ हैं उन्हें तो कर्म और कर्ता का कोई ज्ञान ही नहीं है। जड़ कर्म फिर फल कैसे दे सकते हैं ?

इस पर महाराज श्री ने कहा, यह ठीक है। जड़ कर्म को कर्मकर्त्ता का ज्ञान नहीं है, परन्तु कर्म में सुख दुःख देने की शक्ति है। जैसे जहर को ज्ञान नहीं कि मुझे कौन लाया है, किस मूल्य पर लाया है और कहा से लाया है, कब लाया है, किस लिए लाया है, और मुझे कौन खा रहा है। ऐसा ज्ञान न होने पर भी जहर खाने वाले को प्राणान्त अथवा दुःख से व्यथित कर ही देता है, क्योंकि उसमें दुःख देने की शक्ति विद्यमान है। इसी प्रकार अशुभ कर्म भी दुःख देने में समर्थ है, जैसे किसी ने मुख में मिश्री डाली, वह मिश्री ज्ञान शून्य होने पर भी खाने वाले का मुख मीठा अवश्य करती है। इसी प्रकार शुभ कर्म भी जीव को शुभ फलदाता होते हैं।

एक और उदाहरण लीजिए—छुरी जड़ है, किसी ने अपने पेट में छुरी घोंप ली, उससे या तो वह मर गया, या घायल हो गया किन्तु छुरी को यह ज्ञान नहीं कि मुझे घोंपने वाला कौन है।

आप (आर्यसमाजी) लोग तीन वस्तु मानते हैं, कर्ता, कर्म और कर्म फल। किसी ने छुरी उठाई। छुरी उठाने वाला कर्ता है, छुरी मार लेना कर्म है, छुरी से दुःख हुआ या मर गया, यह उसका फल है। इसी प्रकार किसी ने जहर की पुड़िया उठाई, और अपने मुंह में डाल ली, इससे उसको दुःख हुआ या उसका प्राणान्त हो गया। पुड़िया उठाने वाला कर्ता है, मुंह में डालना यह कर्म है, उससे मर जाना या दुःखी होना यह फल है।

जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है। किन्तु कर्म के उदयकाल में भोग भोगने

में परतन्त्र है, यह बात जैन सिद्धान्त भी मानता है, आर्यसमाज सनातनधर्म आदि भी मानते हैं, अन्तर इतना ही है कि आर्यसमाज सनातन आदि कर्मफल देना परतन्त्र अर्थात् ईश्वराधीन मानते हैं। जैन कर्माधीन मानता है। परतन्त्र का अर्थ है अपने से भिन्न किसी दूसरी शक्ति के अधीन होकर फल भोगना। आप लोग 'पर' का अर्थ 'ईश्वर' लगाते हैं, जैन दृष्टि में 'पर' का अर्थ 'कर्म' है।

वास्तव में कर्मकर्त्ता जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है वह अच्छा या बुरा कर्म करे या न करे, यह उसके हाथ की बात है, किन्तु कर्म करने के बाद वह परतन्त्र है। उसे शुभाशुभ कर्म का फल भोगना ही पड़ेगा। जिस प्रकार जहर खाने वाला या पेट में छुरी घोंपने वाला व्यक्ति इन दोनों क्रियाओं को करने में स्वतन्त्र है, जहर खाये या न खाये, छुरी घोंपे या न घोंपे, जहर स्वयं मुंह में नहीं पड़ जाता, छुरी स्वयं पेट में नहीं लग जाती, यह तो कर्त्ता पर निर्भर है। हाँ, जहर खाने और छुरी घोंपने के पश्चात् कर्त्ता चाहे कि इसका फल मुझे न मिले, यह कैसे हो सकता है, फल तो भोगना ही पड़ेगा।

महाराजश्री ने फरमाया कि जहर किसने खाया और अपने पेट में छुरी किसने घोंपी ?

उत्तर मिला कि उस व्यक्ति ने अपने आप ही। फिर महाराजश्री ने फरमाया कि इसमें ईश्वर का दखल है ?

उत्तर—नहीं।

जहर खाने और छुरी घोंपने का फल किसको हुआ ?

उत्तर—उसी जीव को।

क्या यह दुःख रूप फल ईश्वर ने दिया है ?

उत्तर—नहीं, यह तो उसी जीव की क्रिया का फल है। इस प्रकार जीव कर्मकर्त्ता है और स्वयं उसका फल भोगता है।

फिर महाराजश्री ने पूछा कि ईश्वर को तुम सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी और दयालु मानते हो, एक चोर चोरी करने जाता है ईश्वर जानता है

कि यह चोरी करेगा और मुझे इस चोरी का दंड देना पड़ेगा, फिर उसे ईश्वर क्यों नहीं रोकता ?

उसने उत्तर दिया कि रोकता तो है।

महाराजश्री ने पूछा—कैसे ?

उसने कहा—जब चोर चोरी करने जाता है, तो डरता तथा हिचकिचाता है, ईश्वर के रोकने से ही ऐसा होता है।

इस पर महाराजश्री बोले कि आपके कथनानुसार वह ईश्वर के रोकने पर भी नहीं रुका और उसने चोरी कर ही ली, तो बलवान् चोर हुआ या ईश्वर ?

उसने कहा—जिसका मौका लगे वही बलवान्।

इस पर महाराजश्री को हंसी आ गई और वह भाई निरुत्तर होकर चला गया।

जाते समय वह कह गया कि मैं फिर दर्शन करूँगा। पर फिर आने का उन्हें साहस न हुआ।

यहां से विहार कर महाराजश्री तीन मील दूर काला गांव पधारे। क्योंकि काला गांव के लोग जेहलम में महाराजश्री के कई बार व्याख्यान सुन चुके थे। इसलिए महाराजश्री से वे लोग भली भांति प्रभावित और परिचित थे। यहां पर भी उन्होंने महाराजश्री के दो तीन व्याख्यान करवाये। इन धर्मोपदेशों को सुनकर जनता में धार्मिक भावनाओं की खूब जागृति हुई।

यहां से विहार कर मार्गवर्ती ग्रामों में धर्मोपदेश करते हुए ७-८ दिन में रावलपिण्डी में महाराजश्री ने पदार्पण किया। यहां की जनता ने महाराजश्री का बड़े उत्साह के साथ भव्य स्वागत किया। स्थानक में आई हुई जनता को प्रसंगोचित धर्मोपदेश देकर महाराजश्री ने उनके हृदय में धार्मिक भावना को और भी अधिक विकसित किया।

———

रावलपिण्डी चातुर्मास

(सं० १९९९)

इस प्रकार वीर संवत् २४६८ विक्रमी संवत् १९९९ ईस्वी सन् १९४२ का चातुर्मास रावलपिण्डी में प्रारम्भ हुआ।

यहाँ पर प्रवचन का प्लेटफार्म इस ढंग से बना था कि जहां से प्रवचन करने पर तीनों मंजिलों में बैठे हुए श्रोतागण आराम से प्रवचन सुन सकते थे। यहाँ के दैनिक प्रवचनों में दो ढाई हजार जनता प्रतिदिन उपस्थित होकर लाभ उठाती थी। प्रति सप्ताह रविवार को वेजिटेरियन सोसायटी के साप्ताहिक अधिवेशन होते रहे। जिनमें प्रत्येक समाज के व्यक्ति अपने-अपने विचार व्यक्त करते थे। नये सदस्य भी दिन पर दिन बढ़ने लगे। रावलपिण्डी में लगभग आठ सौ व्यक्ति इस संस्था के सदस्य बन गये।

मुसलमान भाई की निष्ठा—

गुजरांवाला वेजिटेरियन सोसायटी के उपप्रधान अहमददीन बट्ट उन दिनों पेशावर की ओर एक मुसलमानी रियासत में तहसीलदार के पद पर लगे हुए थे। उनका एक पत्र यहां आया, जिसमें उन्होंने महाराजश्री को नमस्कार कर आपश्री के प्रति एहसान (आभार) प्रदर्शित किया था।

आगे पत्र में लिखा था कि—

मैं यहां एक मुसलमानी रियासत में तहसीलदार के पद पर कार्य कर रहा हूं। यहां के लोग बड़े भारी मांसाहारी हैं। वे मुझे भी मांस खिलाने की बहुत कोशिश कर रहे हैं। यहाँ तक कि इन लोगों ने साग भाजी आदि में भी मांस मिलाकर धोखे से मांस खिलाने की कोशिश की। किन्तु मैं बड़ी सावधानी

से काम ले रहा हूं। आखिर मैंने अपनी प्रतिज्ञा को कायम रखने के लिए अपनी रसोई का इन्तजाम अलग कर लिया है। वे लोग मुझे यहां तक कहते हैं कि तुम तो काफिर बन गये हो, जो मुसलमान होकर भी मांस नहीं खाते। उन लोगों ने कहा कि मांस न खाने की हिदायत तुम को कहां से मिली है? मैंने कहा जैन मुनि श्री प्रेमचन्द जी महाराज जो कि जर, जोरू, और जमीन के त्यागी महात्मा हैं, उनसे गुजरांवाले में मैंने यह प्रतिज्ञा ली है। मेरे प्राण भी चले जायं तो भी मैं अपनी प्रतिज्ञा को नहीं तोड़ सकता; क्योंकि प्रतिज्ञा लेकर भंग करना यह यह खुद को व खुदा को धोखा देना है।

यह पत्र सोसायटी की मीटिंग में पढ़कर सुनाया गया। उपस्थित जनता पर इस पत्र का बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा। यहां पर मांस-निषेध का इतना प्रबल प्रचार हुआ कि जिसके परिणामस्वरूप हजारों लाखों जीवों की जान बच गई। प्रत्येक घर से वेजीटेरियन सोसायटी के सदस्य तो एक दो ही बनते थे, पर उनके प्रभाव से प्राय: घर के घर वेजिटेरियन बन जाते थे।

यहां पर सरदार प्रेमसिंह जी नामक एक भाई स्थानक के पास ही रहते थे, वे भी बहुत बड़े मांसाहारी थे। उन्होंने भी वेजीटेरियन सोसायटी की सदस्यता स्वीकार कर ली। उनके परिवार में आठ दस व्यक्ति थे। उन सबने भी मांस खाना छोड़ दिया। एक दिन सरदार जी बीमार हो गये, साथियों ने उन्हें मांस खाने को कहा, किन्तु वे अत्यन्त पीड़ित होकर भी अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहे और मांस नहीं खाया।

यहां सोसायटी की ओर से सैकड़ों दीन-दु:खी लोगों—विधवा और अनाथों को सहायता प्राप्त होती रही।

श्री लाला काकूशाह उत्तमशाह जैन ने जैन बिरादरी की मीटिङ्ग बुला कर बिरादरी से यह निवेदन किया कि इस सारे चातुर्मास में बाहर से आने वाले दर्शनार्थी भाइयों के भोजन व दूध आदि की व्यवस्था अर्थात् उनकी सेवा करने का सौभाग्य मुझे ही प्राप्त करने दिया जाय, तदनुसार दर्शनार्थियों की सेवा चारों महीने आप ही की ओर से होती रही।

कामों में वैलों की आवश्यकता पड़ती थी वहां प्राय: आज ट्रेक्टर काम कर रहे हैं। इसी प्रकार ईख पेलने के लिये जहां पहले वैलों की आवश्यकता पड़ती थी वहां आज शूगर मिल की मशीनरी से काम लिया जाने लगा है। तेल निकालने के लिये घाणी को पहले वैल चलाया करते थे, अब कोल्हू भी विजली से चलने लगे हैं। माल को इधर उधर ढोने तथा मनुष्यों को लाने लेजाने के लिए गड्डे रेड़े व गाड़ियों में वैलों की आवश्यकता पड़ती थी, आज यह कार्य भी प्राय: ट्रक, वस, कार या रेल आदि से लिया जा रहा है, इसलिये गोपालन की उपेक्षा हो रही है। जब रेल मोटर आदि उपर्युक्त वस्तुएँ नहीं थीं तो वैलों की रक्षा के लिये गोपालन और गो रक्षण विशेप रूप से होता था।

१. मांस-भक्षण

जितना अधिक मांस भक्षण किया जाता है उतनी ही अधिक गौ हिंसा होती है। मुसलमान व ईसाई तो गोमांस भक्षक हैं ही, किन्तु जो हिन्दू मांस भक्षण करते है वे भी इससे बचे नहीं रह सकते। क्योंकि प्रायः हिन्दू लोग कसाई की दुकानों से ही मांस लाते हैं। वे कसाई इस प्रकार मिलावट कर देते हैं कि गोमांस व दूसरे मांस का पता ही नहीं लग सकता। रावलपिण्डी में एक भाई ने, जो चुंगी का काम करता था, बतलाया कि बकरी के और गाय के छोटे २ बच्चों के खुर प्रायः एक से ही होते हैं। इसलिये कसाई लोग हिन्दुओं को गौ के छोटे छोटे बच्चों का मांस भी बेच देते हैं। इस प्रकार मांस खाने वाले गौ के मांस से भी नहीं बच सकते।

२. गोभक्षक सरकार

गोभक्षक सरकार भी गोहिंसा का मुख्य कारण है। "यथा राजा तथा प्रजा" यह कहावत प्रसिद्ध ही है। यदि सरकार चाहे तो आज ही गो वध बंद हो सकता है क्योंकि सरकार के हाथ में सब प्रकार की सत्ता है।

३. चमड़े का अधिक प्रयोग

चमड़े की वस्तुओं को अधिक काम में लेने के कारण भी गोहत्या होती है। आज चमड़े का उपयोग इतना बढ़ गया है कि जिधर देखो उधर ही चमड़ा ही चमड़ा दिखाई देता है। बूट, जूता, सूटकेस, हैंडबैग, बैडिंग, हाथ की घड़ी के फीते, व कमर की बेल्ट आदि सभी वस्तुएं चमड़े की बनती हैं। प्रायः यह सभी वस्तुएं सन, प्लास्टिक, रबड़, टीन आदि की भी बनती हैं। यदि आप लोग चमड़े की वस्तु का परित्याग कर दूसरी चीजों से बनी हुई वे ही वस्तुएं अपनाने लग पड़ें तो गोहत्या बहुत कम हो सकती है।

४. मशीनरी का आधिक्य—

दिन पर दिन बढ़ता हुआ मशीनरी का अधिकाधिक प्रयोग भी गोहत्या का एक बड़ा कारण है। पहले जहां खेतीबाड़ी करने के लिये हल चलाने तथा दूसरे

कामों में बैलों की आवश्यकता पड़ती थी वहां प्राय: आज ट्रेक्टर काम कर रहे हैं। इसी प्रकार ईख पेलने के लिये जहाँ पहले बैलों की आवश्यकता पड़ती थी वहां आज शूगर मिल की मशीनरी से काम लिया जाने लगा है। तेल निकालने के लिये घाणी को पहले बैल चलाया करते थे, अब कोल्हू भी बिजली से चलने लगे हैं। माल को इधर उधर ढोने तथा मनुष्यों को लाने लेजाने के लिए गड्डे रेड़े व गाड़ियों में बैलों की आवश्यकता पड़ती थी, आज यह कार्य भी प्राय: ट्रक, बस, कार या रेल आदि से लिया जा रहा है, इसलिये गोपालन की उपेक्षा हो रही है। जब रेल मोटर आदि उपर्युक्त वस्तुएँ नहीं थीं तो बैलों की रक्षा के लिये गोपालन और गो रक्षण विशेष रूप से होता था।

५. बाजार के दुग्ध का सेवन—

बाजार का दूध आदि पीने के कारण भी गोवंश का ह्रास हो रहा है। पुराने जमाने में प्राय: सब लोग अपने-अपने घरों में गौएं रखते थे। जिससे उन्हें शुद्ध दुग्ध घृत आदि मिलता था, और गोपालन भी सहज ही में हो जाता था। उपासक दशांग जैन सूत्र में भगवान महावीर के दस श्रावकों का वर्णन आता है। जिसमें उन श्रावकों के मर्यादित जीवन, आत्मसाधन, सामयिक पोषध आदि आध्यात्मिक साधनों का वर्णन किया गया है।

वहां पर उनकी लौकिक सम्पत्ति का वर्णन करते हुए धन-धान्य, भूमि, गौ आदि की संख्या का भी वर्णन किया गया है। किसी के पास अस्सी हजार किसी के पास चालीस हजार, किसी के पास कम से कम दस हजार गौओं का पालन होता था। दसों श्रावकों की गौआ की संख्या पाँच लाख तीस हजार थी। इससे ज्ञात हो सकता है कि उस समय भारतवर्ष में किस प्रकार घी दूध की नदियां बहती थीं और एक-एक गृहस्थ कितनी बड़ी संख्या में गोपालन करता था।

दूध छोड़ते ही नहीं या बहुत कम मात्रा में छोड़ते हैं, जिससे गोवंश की भावी संतान बचपन में ही रेंग-रेंग कर मर जाती है।

महाराजश्री के गोहत्या के कारणों के सम्बन्ध में ऐसे प्रभावशाली विचारों को सुनकर उपस्थित जन-समूह में से हजारों लोगों ने मांस का परित्याग कर दिया और गोशाला के डेरी फार्म में सत्तर के लगभग अच्छी नस्ल की गौएं देने का वायदा किया।

इस चतुर्मास में एक हजार के लगभग पोपे हुए। इस प्रकार रावलपिण्डी का यह चातुर्मास सानन्द सम्पन्न हुआ।

चातुर्मास समाप्ति के अवसर पर महाराजश्री की विदाई में एक विराट् सभा का आयोजन किया गया। जिसमें महाराजश्री की सेवा में स्थानीय जनता की ओर से एक अभिनन्दन पत्र अर्पित किया गया जिसकी प्रतिलिपि सामने दी जाती है—

श्री वीतरागाय नमः

प्रातःस्मरणीय, सर्वगुण सम्पन्न, जिन वाणी
प्रचारक, त्यागमूर्ति, ब्रह्मचर्य तेज ललाट
शोभाभिशाली, बालब्रह्मचारी,
साधु शिरोमणि, जैन भूषण श्री
श्री १००८ श्री स्वामी प्रेम-
चन्द्र जी महाराज
की सेवा में

अभिनन्दन-पत्र

जैनधर्मनिष्णात !

आपकी प्रचण्ड मार्तंड समान गुणावली के आगे हमारे ये कतिपय श्रद्धा के पुष्प 'अभिनन्दन-स्वरूप' हास्यास्पद तो अवश्य होंगे, किन्तु हमारे मानसिक विचारों का प्रबल प्रवाह कठोर आग्रह करता है कि जब आप

अपनी शिष्यमण्डली सहित ४ मास के आनन्दमय धर्मसम्बन्ध के पश्चात् हम से जुदा होने वाले हैं, हम आपकी सेवा में कुछ तुच्छ शब्द भेंट रूप निवेदन करें।

जैनकुलकमलदिवाकर :

जिस शुभ दिन से आपका यहाँ पधारना हुआ है, हमारे शहर की जनता के धार्मिक जीवन में उसी दिन से एक नया परिवर्तन दृष्टिगोचर होने लगा है। बच्चे से लेकर बूढ़े तक की जिह्वा पर आपके अलौकिक व्याख्यानों का प्रभाव स्पष्ट प्रतीत हो रहा है। कर्मवाद, देश व जाति सुधार, ध्यान, लेश्या आदि ऐसे गूढ़ विषयों पर आपने ऐसी ओजस्विनी विद्वत्तापूर्ण व्याख्याएं कीं कि सुनकर जनता चकित रह गई। केवल शास्त्रों की कठिन बातों को सरल बना कर ही नहीं वरन 'सेठ सुदर्शन' जैसे मनोरंजक कथानकों से जनता के समक्ष सदाचार का जीता जागता चित्र चित्रित कर दिया। क्या बच्चे, क्या स्त्रियां, क्या अनपढ़ सभी आपके विचारों को समझ लेते हैं। यही कारण था कि समय से पूर्व ही सभी सम्प्रदायों के नर नारी हजारों की संख्या में व्याख्यान-स्थान पर एकत्रित हो जाते थे। इतना ही नहीं, रेल की कठिन यात्राओं को सहन करके हजारों की संख्या में अन्य शहरों से दर्शनार्थी आपके सदुपदेशों को श्रवण करने लिए आते रहे हैं।

यहां पर 'श्री प्रेम वेजीटेरियन सोसाइटी' के जन्म से आपका शुभ स्मरण हमें क्षण-क्षण आपकी ओर आकर्षित किया करेगा। हम भी कहेंगे जिस मनुष्य ने आपके दर्शन नहीं किये तथा व्याख्यान नहीं सुने, उस जैसा यहां कोई भाग्यहीन दूसरा नहीं है। हमारा कितना अहोभाग्य है कि हम ने ऐसे महात्मा के दर्शन घर बैठे ही पा लिये। श्री प्रेम वेजीटेरियन सोसाइटी के उपकार कहां तक वर्णन करें, जिसने सैकड़ों मनुष्यों को शुद्धाहारी बना कर उनसे मांस मदिरा आदि का त्याग कराया।

साधु-शिरोमणे !

आपका ही व्यक्तित्व था जिसने यहां जैन बिरादरी

की उच्छृंखलता का स्पष्टीकरण कर एस० एस० जैन सभा का बीजारोपण किया, जिसने कन्या पाठशाला की शोचनीय अवस्था को १० हजार रुपयों की दानवर्षा करा कर चिन्ता-विमुक्त कराया, जिसने विरादरी के अंदर फैली हुई कई कुरीतियों को समूल नाश कर दिया, जिसने विरादरी के नौजवानों को ४ मास तक कठिन सेवा करने को प्रस्तुत किया। कहां तक वर्णन करें, आपके उपकारों को हम सहस्र जिह्वाओं से भी पूर्ण रूप से वर्णन नहीं कर सकते। और फर्म मेसर्ज काकूशाह उत्तमचंद जैन ने लगातार चार मास तक तमाम दर्शनार्थी भाइयों की मेहमाननवाजी, सेवाशुश्रूषा और आवभगत की, जिसके लिए सर्व विरादरी आपकी बहुत-बहुत कृतज्ञ है और आपको इस लासानी सेवा के लिये कोटिशः धन्यवाद देती है।

पूज्य गुरुवर्य !

आपके निष्पक्ष व्याख्यानों का ही प्रभाव था जिससे तमाम सत्संगियों की प्रेरणा से श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी बड़े समारोह से जैन और अजैन जनता ने मिलकर जैन उपाश्रय में मनाई। जिसमें सहस्रों की उपस्थिति थी। आपके व्याख्यानों में राष्ट्रोत्थान के शुभ विचार इतने कूट कट कर भरे हुए थे कि यहां की सिटी कांग्रेस कमेटी ने भी प्रभावित होकर आपका व्याख्यान लोकमान्य तिलक की वरसी पर तिलक नेशनल हाल में करवाया जिसमें भी हजारों की उपस्थिति थी। गोपाष्टमी के वार्षिकोत्सव के समय आपके व्याख्यान ने वह चमत्कृति दिखलाई कि मनुष्यों के हृदय दहल उठे, चित्रलिखित जनता ने आपके विचारों का वह अमृत पान किया, जिसे यहां की जनता भूल नहीं सकेगी। रावल पिण्डी निवासी ही नहीं किन्तु जिले भर की जनता समय २ पर आपके व्याख्यान का लाभ उठाती रही। गोलड़ा निवासी भाइयों ने आपसे ऐसा प्रेमपूर्वक आग्रह किया कि आप इस छोटे से ग्राम में भी जाकर अपनी अमृत वाणी की वर्षा किये विना न रह सके, और वहाँ पर भाइयों को जो धर्मलाभ और जीवन उन्नति का मार्ग प्राप्त हुआ वह अति सराहनीय है। भगवन् ! कहां यहां पर नित्य की अमृतवर्षा और कहां आज का आपका हमारे से वियोग ' संयोग। वियोग संयोग की अवधि है।

अन्त में आपसे क्षमा याचना करते हैं सम्भव है कि चातुर्मास काल में आपकी सेवा पूर्णतया न कर सके हों। फिर भी आपकी कृपादृष्टि की आशा करते हैं और जिनेन्द्र देव से प्रार्थना करते हैं कि आप दीर्घायु होवें और हमें आपके पवित्र दर्शनों का अवसर प्राप्त होता रहे।

हम हैं आपके चरण—
रज सेवक,
सदस्य गण जैन बिरादरी,
रावलपिंडी।

११/१२/४२

मंत्री श्री एस० एस० जैन सभा,
रावलपिंडी।

यहां का चातुर्मास समाप्त कर महाराजश्री रावलपिंडी छावनी पधारे। विहार के समय हजारों श्रद्धालु भक्तगण महाराजश्री के साथ-साथ छावनी तक आये। छावनी में महाराजश्री के चार-पांच व्याख्यान हुए। यहाँ पर रावलपिण्डी के हजारों लोग व्याख्यान सुनने आते रहे।

गोलड़ा शरीफ नामक नगर के भाई रावलपिण्डी चातुर्मास में महाराजश्री का प्रवचन सुनने आया करते थे। उन्होंने महाराजश्री से प्रार्थना की कि आप हमारा क्षेत्र परसने की भी कृपा करें। महाराजश्री ने उनकी विनति स्वीकार कर ली। तदनुसार छावनी से गोलड़ा शरीफ की ओर विहार कर दिया। रावलपिण्डी के बहुत से जैन व जैनेतर भाई बाई गोलड़ा शरीफ तक महाराजश्री के साथ आये। गोलड़ा शरीफ रावलपिण्डी से नौ दस मील दूर है।

यहां पर साठ सत्तर घर खत्रियों के थे। जैनियों का एक भी घर नहीं था तो भी महाराजश्री से बहुत से लोगों ने णमोकार मन्त्र सीखा और इसकी माला फेरने लगे। इन लोगों में जैन धर्म के प्रति बड़ी भारी श्रद्धा उत्पन्न हो गई। इस प्रान्त में मांसाहार का अत्यधिक प्रचार था यहां पर भी महाराजश्री के व्याख्यानों से प्रभावित होकर श्री प्रेम वेजीटेरियन सोसायटी की स्थापना हुई। इसके सत्तर अस्सी सदस्य बन गये। इस सोसाइटी का विधिपूर्वक

निर्वाचन किया गया। इसके अध्यक्ष हरिश्चन्द्र खत्री और मन्त्री श्री भक्त रामचन्द्र जी चुने गये। इस सोसाइटी ने अपना कार्य बड़े उत्साह से आरम्भ किया। यहां पर आपके लगभग बारह दिन तक प्रवचन होते रहे। प्रवचन दिन में तीन समय होते थे।

यह गोलड़ा शरीफ नगर मुसलमानों के हज करने का एक मुख्य स्थान माना जाता है। तुर्किस्तान आदि देशों से भी मुसलमान यहां हज करने के लिए आते हैं। यहां पर मुसलमानों के बहुत बड़े माने हुए पीर साहब हैं। उनका मुसलमानों पर दूर-दूर तक बहुत बड़ा प्रभाव है। इस नगर में अधिकतर मुसलमानों की ही बस्ती है। हिन्दू बहुत कम थे। किन्तु पीर साहब हिन्दुओं के प्रति भी अच्छा वर्ताव करते थे।

यहां सहदपुर के जैनेतर अध्यापक व विद्यार्थीगण महाराजश्री की सेवा में आये और अपने क्षेत्र को पावन करने की विनति करने लगे। महाराजश्री ने उनकी विनति स्वीकार कर यहां से सहदपुर की ओर विहार कर दिया। गोलड़ा शरीफ के भी बहुत से भाई बाई भजन आदि गाते हुए सहदपुर तक महाराजश्री के साथ आये। सहदपुर यहां से ६ सात मील दूर है, यह सनातनधर्मियों का एक तीर्थस्थान है। यहां पर रामकुण्ड लक्ष्मणकुण्ड और सीता कुण्ड नामक तीन कुण्ड हैं। यहां पर बाहर से भी बहुत से सनातनधर्मी लोग आते रहते थे। यहां सनातन धर्म का एक विद्यालय भी था जिसमें संस्कृत आदि का अध्ययन कराया जाता था। यहां पर एक गुप्त गंगा है जोकि पहाड़ से उतर कर मील डेढ़ मील खुले में बहती हुई फिर पहाड़ी भूमि में गुप्त हो जाती है। महाराजश्री ने भी बहुत दूर जाकर इसका अवलोकन किया। वास्तव में इस गुप्त गंगा का दृश्य बड़ा ही सुन्दर व चित्ताकर्षक है।

यहां पर महाराजश्री ने दो-तीन दिन तक विराज कर धर्मोपदेश दिया। और यहां पर भी वेजीटेरियन सोसाइटी स्थापित की गई। यहां रावलपिण्डी के भाई भी महाराजश्री के दर्शनार्थ आये। उन्होंने स्थानीय विद्यालय को दान भी दिया। यहां से विहार कर महाराजश्री पुनः रावलपिण्डी पधारे। सहदपुर व

रावलपिण्डी के बहुत से भाई व बाई महाराजश्री के साथ रावलपिण्डी तक आये। रावलपिण्डी में दो दिन तक प्रवचन कर आप छावनी पधारे। और आठ दिन तक वहां विराजे। यहां पर आपके प्रवचनों में स्थानीय और रावलपिण्डी शहर के तीस हजार के लगभग नर नारी भाग लेते रहे।

यहां से विहार कर गुज्जरखान, सुहावा आदि क्षेत्रों को परसते हुए महाराज रोहतास पधारे। यहां पर चार-पांच दिन तक धर्मोपदेश देकर जेहलम पधारे। यहां आपके प्रवचनों से सैकड़ों लोग लाभ उठाने लगे। वेजीटेरियन सोसाइटी के सदस्य भी यहां दिनों-दिन बढ़ते गये। कुछ अजैन लोगों ने यहां जैन धर्म की गुरुधारणा ली। उन्हें बतलाया गया कि गंगा, यमुना आदि तीर्थों में स्नान करने और जड़ उपासना से आत्म-कल्याण नहीं है, इस बात का आप लोगों को पूरा-पूरा ध्यान रखना होगा।

यहां पर एक आर्यसमाज के विचारों वाले भाई श्री गेंडामल जी ने महाराजश्री से निवेदन किया कि पहले मेरी आर्थिक अवस्था बड़ी कमजोर थी, अब आनन्द में हूं। यदि आपके ध्यान में कोई सहायता का पात्र हो तो मैं सेवा करने के लिए तैयार हूं। उन्होंने यह भी कहा कि दान देने वाले तो फिर भी मिल जाते हैं किन्तु लेने वाले पात्र का मिलना कठिन है ; क्योंकि बहुत से लोग छल-कपट से सहायता लेकर उसका दुरुपयोग करते हैं। इस लिए मैंने आपश्री से निवेदन किया है। महाराजश्री ने सहायता के योग्य दो विधवाओं के नाम बताये जोकि धर्म, ध्यान, तपस्या आदि द्वारा जीवन यापन करती थीं। आप ने उन दोनों को मासिक सहायता देना प्रारम्भ कर दिया।

जेहलम से विहार कर महाराजश्री खारियां पधारे। जेहलम के बहुत से भाई बाई दूर तक सेवा में रहे तथा बालसभा के कई बालक तो महाराजश्री के साथ दस बारह मील चल कर यहां तक आये।

खारियां से विहार कर महाराजश्री लालामूसा और गुजरात, वजीराबाद आदि क्षेत्रों में धर्म-प्रचार करते हुए स्यालकोट पधारे। यहां पर हजारों की संख्या में आई हुई जनता ने महाराजश्री का भव्य स्वागत किया। महाराजश्री

ने दूसरे दिन से अपना प्रवचन पंडाल में प्रारम्भ किया। हजारों श्रद्धालु जन इन प्रवचनों से लाभ उठाने लगे। एक दिन महाराजश्री के प्रवचन में वेजाटेरियन सोसाइटी की ओर से जनता से अपील की गई कि यह संस्था दीन-दुखियों की तन, मन, धन से सहायता करती है। अब इस संस्था का आर्थिक सहयोग की आवश्यकता है। इस अपील पर दस हजार के लगभग रुपये एकत्रित हो गये। दीन-दुखियों को सहायता देने के लिए एक कमेटी बनाई गई जिसके छः-सात सदस्य थे। इस सहायता कमेटी के अध्यक्ष श्री मुन्शीराम जी मजिस्ट्रेट बनाये गये। जांच कमेटी के सदस्यों को अलग अलग मोहल्ले बांट दिये गए। और उन्हें कहा गया कि अपने अपने मोहल्ले के दीन दुखियों की जांच कर उनकी रिपोर्ट कमेटी को दें।

श्री अमीरअली की स्पष्टवादिता—

एक मुसलमान सदस्य शेख अमीरअली को भी कहा गया, कि आप अपनी ओर से मुसलमान दीन दुखियों की जांच कर हमें सूचना दें। जिससे उनकी सहायता की जा सके। शेख साहब ने कहा कि इस सोसाइटी से सहायता लेने का अधिकारी वही हो सकता है जो वेजीटेरियन हो। मुझे अपने भाइयों पर विश्वास नहीं है, जो वेजीटेरियन होने का विश्वास दिलाकर भी अपने वचन पर कायम रह सकें। इसलिए मैं इस कार्य से क्षमा चाहता हूं। वैसे मैं मुसलमान होते हुए भी सोसाइटी की तन, मन, धन से सेवा करता रहूंगा।

यहां पर महाराजश्री का एक सार्वजनिक प्रवचन लाला कर्म चन्द जी अग्रवाल के मकान के चौक में हुआ। जिसमें चार पांच हजार जन समूह ने भाग लिया।

वेजीटेरियन सोसाइटी के प्रचार को व्यापक बनाने और प्रोत्साहन देने के विचार से बाबू मुल्खराज जी जैन बी० ए० ने 'प्रेम संदेश' नामक उर्दू में एक पुस्तक लिखी। जिस में मांस अंडे आदि के निषेध के सम्बन्ध से अनेक मतों व सम्प्रदायों के मान्य ग्रन्थों के प्रमाण देकर यह सिद्ध किया गया था कि मांस

अंडा आदि अभक्ष्य है। यह मनुष्य की खुराक नहीं है। वैज्ञानिक और स्वास्थ्य-चिकित्सा सम्बन्धी सिद्धान्तों की दृष्टि से भी यह ग्राह्य नहीं है।

यह पुस्तक लाला कर्मचन्द जी अग्रवाल के व्यय से प्रकाशित की गई थी। और जनता में निःशुल्क वितरित की गई। 'सत्यासत्य निर्णय नामक एक पुस्तक लाला चुन्नीशाह जैन की ओर से प्रकाशित की गई। यह पुस्तक भी बिना मूल्य बांटी गई।

यहां पर सभी स्थानों की वेजीटेरियन सोसाइटियों की कॉंफ्रेन्स बुलाई गई, जिसमें गुजरांवाले रावलपिन्डी, गोलडा शरीफ, सहदपुर और जेहलम की सोसाइटियों के प्रतिनिधि गणों ने भाग लिया।

इस कान्फ्रेंस के अध्यक्ष रावलपिण्डी निवासी लाला बालक राम जी धौन क्षत्रि बनाये गये। और प्रधान मन्त्री रावलपिण्डी निवासी श्री दीनानाथ जी सूरी चुने गये।

कान्फ्रेंस की बैठकें दो दिन तक होती रहीं। जिनमें उपस्थित प्रतिनिधियों ने सोसायटी की उन्नति के लिए अपनी-अपनी योजनाएं प्रस्तुत कीं। जिनमें से एक यह भी योजना थी कि जिन लोगों के विवाह, शादियों पर मांस अंडे आदि काम में लाये जाते हैं, वेजीटेरियन सोसायटी के सदस्य वहां जाकर उनसे निवेदन करें कि विवाह आदि शुभ अवसरों पर मांस अंडा आदि काम में न लाया जाय। उन्हें यह भी समझाया जाय, कि विवाह एक आनन्द खुशी का मंगलमय अवसर माना जाता है। इसलिए ऐसे मंगलमय और आनन्द के अवसर पर निरपराध निरीह प्राणियों के प्राणों की हत्या करना मंगलमय कार्य में अमंगल करना है। इसलिए ऐसे शुभ अवसर पर तो दीन दुःखी प्राणियों का आशीर्वाद ही लेना चाहिए। जिससे यह मंगलमय कार्य चिरस्थायी बने। इस प्रकार विवाह आदि के अवसरों पर इस सोसायटी के सदस्यों ने मांस निषेध का बड़ा महत्वपूर्ण व उपयोगी कार्य किया। इश कान्फ्रेंस में यह भी निर्णय किया गया कि पंजाब प्रान्त की सभी वेजीटेरियन सोसायटियों का प्रधान कार्यालय अभी रावलपिंडी में ही रक्खा जाय। इस प्रधान कार्यालय के

अध्यक्ष लाला बालकराम जी धौन, उपाध्यक्ष लाला उत्तम शाह जैन, और मन्त्री लाला दीनानाथ जी खत्री बनाये गये। इस प्रकार इस कान्फ्रेंस का कार्य सानन्द सम्पन्न हुआ।

यहाँ से विहार कर महाराजश्री तीन चार दिन में गुजरांवाले पधार गये। यहां के श्रीसंघ ने महाराज श्री का भव्य स्वागत किया। दूसरे दिन से महाराजश्री के प्रवचन प्रारम्भ हुए। जिनमें लोग बड़ी भारी संख्या में उपस्थित होकर लाभ उठाने लगे। वेजीटेरियन सोसायटी के सदस्य भी उत्तरोत्तर बढ़ते जा रहे थे।

एक दिन महाराजश्री के प्रवचन में सरदार हाकिम सिंह जी ने जनता से अपील की कि वेजीटेरियन सोसायटी के पांच नियमों में एक नियम दीन दुखियों की यथाशक्ति सहायता करना भी है। उस नियम को क्रियात्मक रूप देने के लिए सोसायटी को आर्थिक सहयोग की आवश्यकता है, इसलिए आप लोग यथाशक्ति इस सोसायटी को दिल खोल कर बड़ी उदारता के साथ आर्थिक सहयोग प्रदान करें। इस पर बात की बात में अनुमानतः दस हजार रुपया एकत्रित हो गया। यहां पर भी वेजीटेरियन सोसायटी की ओर से सहायता के वास्तविक पात्रों की जांच करके उन्हें सहायता देने के लिए एक जांच कमेटी बनाई गई। इस प्रकार नगर के अनेक दीन दुखियों को सहायता मिलने लगी। इस सोसायटी के ५०००) रुपये अब भी वहां के बैंक में जमा हैं जिसे पाकिस्तान बैंक से निकलवाने का प्रयत्न चल रहा है।

इसी प्रकार स्यालकोट रावलपिंडी आदि नगरों की सोसायटियों के भी कई हजार रुपये बैंक में जमा हैं।

यहां से विहार कर महाराजश्री मार्गवर्ती ग्रामों को परसते व धर्म प्रचार करते हुए लाहौर पधारे। यहां पर दस बारह दिन जैन हाल में प्रवचन कर अनारकली के दिगम्बर जैन हाल में पधारे। यहां पर आपके दो प्रवचन हुए। यहां से महाराजश्री कसूर की ओर विहार करना चाहते थे, किन्तु राधाकिशन कोठी नामक ग्राम के भाई आ पहुंचे। महाराजश्री से उन्होंने राधाकिशन कोठी

पधारने की विनती की। महाराजश्री ने फरमाया कि इस समय तो मेरे कसूर परसने के भाव हैं। फिर उन भाइयों ने निवेदन किया कि दस वारह वर्षों से हमारे यहां किसी स्थानकवासी मुनिराज का पधारना नहीं हुआ। हमारे वालक वालिकाएं प्राय: धर्म गुरुओं से अनभिज्ञ हैं, और गुरु समागम न होने के कारण उन्हें अपने धर्म के प्रति उपेक्षा होती जा रही है। इसलिए आप श्री का हमारे क्षेत्र में पधारना आवश्यक है। इस पर महाराजश्री ने उनकी विनती स्वीकार कर राधाकिशन कोठी की ओर विहार कर दिया।

महाराजश्री इधर के मार्ग से अपरिचित थे। इसलिए राधाकिशन कोठी वाले श्री वैद्य जगन्नाथ जी जैन महाराज श्री के साथ रहे। दूसरे दिन महाराज श्री रायविण्ड पधारे।

यहाँ पर सिक्खों के गुरुद्वारे में ठहरे।

यहाँ पर राधाकिशन कोठी के हैडमास्टर श्री ज्ञानचन्द जी आदि भाई भी पहुंच गये। रायविंड निवासी श्री कर्मचन्द जी महता के साथ श्री ज्ञानचन्द जी हैड मास्टर की मित्रता थी। यहां पर महाराज श्री का प्रवचन हुआ। जिससे श्री लाला कर्मचन्द जी आदि भाइयों ने पर्याप्त लाभ उठाया। इस व्याख्यान में महाराज श्री ने मांसनिषेध पर प्रभावशाली शब्दों में विचार व्यक्त करते हुये वताया कि मांस मनुष्य की खुराक नहीं है। मनुष्य स्वभाव से शाकाहारी व अन्न दुग्धाहारी माना गया है। जो प्राणी मांसाहारी होते हैं उनकी वनावट व गतिविधि मनुष्य से सर्वथा भिन्न होती है। जैसे कि मांसाहारी जीव जीभ से चपर-चपर कर पानी पीते हैं। वे गाय भैंस आदि की भाँति घूंट भर कर पानी नहीं पीते। उन्हें पसीना नहीं आता। रात्रि को अधिक दिखता है। उनके दाढ़ दांत तीखे व नुकीले होते हैं, वे कच्चे ही मांस को हजम कर लेते हैं।

मनुष्य में मांसाहारी जीवों के समान उक्त लक्षण नही पाये जाते। मनुष्य घूंटकर पानी पीता है। उसे पसीना भी आता है। उनके दांत चपटे होते हैं। रात्रि को मांसाहारी जीवों की भांति अधिक नहीं दिखाई देता। मनुष्य कच्चे

मांस को नहीं हजम कर सकता।

उपरोक्त बातों से यह भली प्रकार सिद्ध हो जाता है कि मनुष्य मांसाहारी नहीं है। गौ, भैंस आदि अनेक पशुओं के ये चिन्ह मनुष्य के साथ मिलते हैं। जैसे कि घूंट कर पानी पीना, दांतों का चपटे होना और गर्मी से पसीना आना आदि कितनी ही बातें जिन पशुओं की मनुष्यों के साथ मिलती हैं, वे भी मांस नहीं खाते। गौ भैंस आदि में जो मनुष्यों वाली थोड़ी सी बातें पाई जाती हैं, वे उनकी रक्षार्थ भूखा रहना मंजूर करते हैं और सूखे तिनके चबाकर गुजारा कर लेते हैं, किन्तु भूख से मरणांत कष्ट आने पर भी मांस नहीं खाते।

इससे बढ़कर खेद का विषय और क्या हो सकता है कि मानव को जो सब प्रकार के मानवभावी साधन (लक्षण) मिले हैं, वह उनकी रक्षा का कुछ भी ध्यान नहीं करता और सदा प्रमाद में पड़ा रहता है। ओ मानव तू तो आज इस प्रकार पशु से भी गया गुजरा होता जा रहा है। तेरे से तो वह पशु ही श्रेष्ठ हैं जिन बेचारों को जो थोड़ी सी मानव भावी वस्तुएं या विशेषताएं मिली हैं उनकी वे बड़ी दृढ़ता से रक्षा कर रहे हैं।

ओ, मानव तू आज इस लोलुपता के प्रपंच में फंसकर मानव से दानव बनता जा रहा है। यह तेरे लिए कितनी दुःख व शर्म की बात है।

इस प्रकार के प्रभावशाली मांसनिषेधात्मक प्रवचन से प्रभावित होकर लाला कर्मचन्द जी क्षत्री ने खड़े होकर महाराजश्री से आजीवन के लिए शराब मांस अंडा आदि का त्याग कर दिया।

पाठकों को ज्ञात रहे यह लाला कर्मचन्द क्षत्री डील डौल में बड़े हृष्ट-पुष्ट और लौकिक कार्यों में बड़े साहसी माने जाते थे और आपसे बड़े २ अफसर लोग भी थर्राते थे। आप मांस शराब आदि के बड़े ही आदी थे। इतना ही नहीं आपके कितने ही साथी भी मांस शराब आदि के सेवन के लिए आपके यहां आते थे। लोगों से ज्ञात हुआ कि आपके पास मांस शराब का इतना स्टाक रहता था कि जिनके लिए आपके साथियों को बाहर जाने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी। यह था लाला जी का पूर्व जीवन।

किन्तु जब महाराजश्री के सम्पर्क व प्रवचनों का अवसर प्राप्त हुआ तो आपके जीवन ने इतना मोड़ खाया कि एक दम ही आप मांस आदि दुर्व्यसनों को छोड़ कर धर्म की शरण में आ गए।

यहां से महाराजश्री विहार कर राधाकिशन कोठी पधारे। यहां की जनता ने महाराजश्री का भव्य स्वागत किया, दूसरे दिन आपने प्रवचन प्रारम्भ किया। जिसमें सैंकड़ों की संख्या में जनता उपस्थित होने लगी। महाराजश्री ने यहां पर भी मांसनिषेध पर अपने प्रवचनों में विशेष रूप से बल दिया। और वेजीटेरियन सोसाइटी का वृत्तान्त भी सुनाया जिससे प्रभावित व प्रेरित होकर जनता ने यहां भी वेजीटेरियन सोसाइटी की स्थापना कर दी। देखते ही देखते बहुत से लोग इस सोसाइटी के सदस्य बन गये। हैडमास्टर श्री ज्ञानचन्द जी जैन आदि भाई इसके अधिकारी वर्ग चुने गये। इस सोसाइटी ने बड़े उत्साह और लगन के साथ अपना प्रचार कार्य प्रारम्भ कर दिया।

राधाकिशन कोठी में श्री महावीर जयन्ती

महाराजश्री के यहीं पर विराजते हुए श्री महावीर जयन्ती के पावन पर्व का शुभावसर आ गया। इसलिए भाइयों ने विनती की कि श्री महावीर जयन्ती यहीं मनाई जाय। महाराजश्री ने उसकी विनती स्वीकार कर ली। तदनुसार चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को बड़े उत्साह के साथ समारोह पूर्वक श्री महावीर जयन्ती मनाई गई। जिसमें महाराजश्री ने श्री भगवान महावीर स्वामी के जीवन चरित पर बड़े प्रभावशाली शब्दों में प्रकाश डाला।

अमृतसर के कवि कंसराज गोहर की कविता भी बड़ी सुन्दर रही। राधा किशन कोठी से विहार कर महाराजश्री बधाणा गांव पधारे। यहां पर महाराजश्री ने सात आठ दिन तक धर्मोपदेश दिया। यहां पर भी वेजीटेरियन सोसाइटी की स्थापना की गई। यहां के जैन भाइयों को सामायिक और माला आदि फेरने का नियम भी करवाया गया। यहां पर काक्कासिंह नाम के प्रसिद्ध पहलवान रहते थे। वे भी बड़े मांसाहारी थे। लाला कर्मचन्द जी महता के आप मित्र थे। आपने भी महाराजश्री का प्रवचन सुनकर शराब, मांस, अंडे आदि

का सदा के लिए त्याग कर दिया।

यहां से महाराजश्री पुनः राधाकिशन कोठी होते हुए रायविन्ड पधारे। यहां पर आप का एक प्रवचन हुआ। यहां से विहार कर एक रात मार्ग में लगा कसूर पधारे। यहां जनता ने महाराजश्री का बड़े उत्साह के साथ स्वागत किया। महाराजश्री ने उपस्थित जनता को कुछ धर्मोपदेश देकर मंगलीक सुनाई। यहां के जैन स्थानक के साथ एक पंडाल बनाया गया। महाराजश्री के प्रवचन इस पंडाल में प्रारम्भ हुए। ढाई तीन हजार के लगभग श्रोतागण प्रतिदिन इन प्रवचनों में भाग लेने लगे। यहां पर भी महाराजश्री ने मांस, अंडा, शराब आदि दुर्व्यसनों के सम्बन्ध में प्रभावशाली व्याख्यान दिये तथा वेजीटेयियन सोसाइटी के नियम बताये। फलतः सोसाइटी के सैंकड़ों सदस्य बन गये।

वेजीटेरियन सोसाइटी के पदाधिकारियों का विधिवत् निर्वाचन किया गया। जिसमें लाला लाभाराम जी अरोड़वंशी अध्यक्ष तथा लाभामल जैन बी० ए० प्रधान मन्त्री बनाये गये। इस संस्था के लिए ढाई तीन हजार रुपये भी एकत्रित हो गये। जिससे दीन, दुःखी, विधवा अनाथों को सहायता पहुंचाने का कार्य आरम्भ किया गया। इस संस्था के साप्ताहिक अधिवेशन भी प्रत्येक रविवार को नियमित रूप से होने लगे।

यहां के वयोवृद्ध सज्जन लाला आशाराम जी जैन अर्जीनवीस ने एक सौ रुपया मासिक अपनी सारी आयु तक दीन दुखियों को सहायता देने की प्रतिज्ञा की। यहां महाराजश्री का प्रवचन सनातन धर्म ठाकुर द्वारे के मैदान में भी हुआ।

यहां से विहार कर महाराजश्री पट्टी पधारे। यहां पर भी आपके दूसरे दिन से दैनिक व्याख्यान आरम्भ हुए। जिनमें सैंकड़ों श्रोतागण प्रतिदिन उपस्थित होने लगे। स्थानीय आर्य हाई स्कूल और मुस्लिम हाई स्कूल के छात्रों व अध्यापकों ने भी आकर महाराजश्री के प्रवचनों से पर्याप्त लाभ उठाया। यहां के निवासियों ने महाराजश्री से चातुर्मास की विनती की। इस पर द्रव्य,

क्षेत्र, काल, भाव देखते हुए महाराजश्री ने सुखे समाधे चातुर्मास की स्वीकृति प्रदान कर दी।

यहाँ पर भी वेजीटेरियन सोसाइटी स्थापित की गई, जिसके प्रधान लाला हंसराज जी सूद और मन्त्री लाला ज्ञान चन्द जी जैन निर्वाचित हुए। इस संस्था के लिए हजार डेढ़ हजार रुपया भी एकत्रित हो गया।

तरनतारन में

पट्टी से विहार कर महाराजश्री दूसरे दिन तरनतारन पधारे। यह सिक्खों का एक सुप्रसिद्ध तीर्थ स्थान है। यहाँ पर एक पक्का तालाब है, इस तालाब के साथ एक सिक्खों का बहुत बड़ा गुरुद्वारा है। इसपर सुनहरी रंग का पानी चढ़ा हुआ है, इसलिए यह बड़ा आकर्षक प्रतीत होता है। यहाँ पर दूर-दूर से लाखों सिक्ख आदि यात्रा दर्शन व स्नानादि करने आते हैं।

आर्यसमाज मन्दिर में व्याख्यान

यहाँ आर्य समाज मन्दिर में महाराजश्री का सार्वजनिक प्रवचन हुआ। यहाँ पर अमृतसर का श्रीसंघ महाराजश्री से अमृतसर पधारने के विनती करने आया। तदनुसार महाराजश्री ने विनती स्वीकार कर अमृतसर की ओर विहार कर दिया। एक रात रास्ते में ठहर दूसरे दिन प्रातः अमृतसर पधार गये। यहाँ के श्रीसंघ ने महाराजश्री का बड़े उत्साह से स्वागत किया। यहाँ पर आप लाला चुन्नी लाल जी जैन ओसवाल के मकान में ठहरे। इस मकान के पीछे एक मंजिले मकानों की खुली छतें पड़ी थी, श्रीसंघ ने जनता की सुविधा के लिए इन छतों पर पंडाल बना दिया। महाराजश्री के प्रवचन यहीं पर होने लगे। इन व्याख्यानों में हजारों जैन व जैनेतर लोग प्रतिदिन भाग लेते थे।

पृथ्वी का आधार व भूकम्प आदि के कारण

एक दिन महाराजश्री ने अपने प्रवचनों में बताया कि पृथ्वी किसके आधार पर है और भूकम्प किन-किन कारणों से होता है? महाराजश्री ने फरमाया कि

इस विषय में प्रत्येक सम्प्रदाय की पृथक पृथक मान्यताएं हैं।

कुछ शास्त्र तो ऐसा मानते हैं कि पृथ्वी शेषनाग के सिर पर टिकी हुई है। किसी की मान्यता है कि पृथ्वी नाँदिया बैल के सींगों पर टिकी हुई है। जब वह बैल पृथ्वी को सींग से दूसरे सींग पर लेता है तो भूकम्प होता है।

निष्पक्ष दृष्टि से विचार करने पर उक्त दोनों मान्यताएं निराधार ही प्रमाणित होती हैं। कारण कि शेषनाग और नांदिया बैल दोनों स्थूल शरीरधारी तथा परिमित आयु वाले प्राणी हैं। प्रथम तो इन दोनों स्थूल शरीरधारी प्राणियों को भी ठहरने के लिए किसी अन्य स्थूल आधार की आवश्यकता है। पृथ्वी को तो भला इन के फण व सींगों पर टिकी हुई मान लें किन्तु फिर यह प्रश्न होगा कि यह दोनों किसके आधार पर हैं। यह भी कहा जाय कि इनके नीचे भी पृथ्वी है तो वह पृथ्वी किसके आधार पर है। यदि फिर यह कहा जाय कि उसके नीचे भी शेषनाग व नाँदिया बैल है, तो फिर वही प्रश्न होगा कि वे किसके आश्रित हैं। इस प्रकार पृथ्वी, शेषनाग और नांदिया बैल की संख्या की परम्परा इतनी बढ़ जायेगी कि जिसका अंत ही नहीं आयेगा। इस प्रकार अनन्त पृथ्वियां, शेषनाग बैल मानने पड़ेंगे जो कि शास्त्रसम्मत या बुद्धि ग्राह्य नहीं हैं।

शेषनाग या नांदिया बैल के सींगों पर पृथ्वी को मानने से दूसरा दोष यह आता है कि जब वे परिमित आयु वाले शेषनाग आदि काल कर जाते हैं तो फिर पृथ्वी किसके आधार पर रहती है। शरीरधारी प्राणियों की मृत्यु अवश्यंभावी हैं। अतः इस कारण से भी उक्त सिद्धान्त मान्य नहीं हो सकता।

भूकम्प के विषय में जो लोग कहते हैं कि नांदिया बैल जब एक सींग से दूसरे सींग पर पृथ्वी को बदलता है तो भूकम्प होता है। और इसी प्रकार शेषनाग भी जब एक फण से दूसरे फण पर पृथ्वी को बदलता है तब भूकम्प होता है।

गम्भीर दृष्टि से विचार करने पर यह कथन भी प्रामाणिक व बुद्धिगम्य और शास्त्रीय प्रतीत नहीं होता। कारण कि यदि दूसरे सींग या फण पर पृथ्वी

को बदलने से भूकम्प होता तो सारी पृथ्वी पर ही होना चाहिए। किन्तु प्रत्यक्ष रूप से ऐसा देखने में नहीं आता। क्योंकि कभी किसी देश नगर या प्रान्त में भूकम्प होता है और कभी किसी में पर एक ही साथ सारे देशों में कभी होता। ऐसा क्यों ?

शेष नाग के फण और नांदिया बैल के सींग पर जब सारी पृथ्वी टिकी हुई है, तो उसे बदलने से सारी पृथ्वी हिलनी चाहिए। अत: ये दोनों बातें इस प्रकार से असिद्ध हो जाती हैं, तो फिर विचार उत्पन्न होता है कि वास्तव में पृथ्वी किस पर टिकी हुई है और भूकम्प का कारण क्या है। जैन शास्त्रों में पृथ्वी के आधार की व्याख्या करते हुए बताया गया है कि —

वास्तव में पृथ्वी वायु के आधार पर है। क्योंकि वायु को किसी स्थूल आधार की आवश्यकता नहीं है। उसे तो केवल आकाश की ही आवश्यकता है। आकाश सर्वव्यापी है, ऐसा कोई स्थान नहीं जहां आकाश न हो।

यदि कोई यह प्रश्न करे कि वायु इतनी लम्बी चौड़ी पृथ्वी को कैसे सम्हाल सकती है ? इसके उत्तर में यही कहना है कि वायु में महान् शक्ति है। इसी लिए कई मतों में तो वायु को देवता तक माना गया है। प्रत्यक्ष में भी देखा जाता है कि मोटर आदि के पहियों में जो थोड़ी सी हवा भर दी जाती है, उसके आधार पर सैकड़ों मन बोझ कहीं का कहीं पहुँचा दिया जाता है।

वायु बड़े-बड़े विशाल वृक्षों को तोड़कर फेंक देती है। और हजारों टन बोझ से भरे हुए समुद्र के जहाजों को उलट देती है, वायु की अपार महान शक्ति इस प्रकार प्रत्येक रूप से दिखाई देती है।

जैनशास्त्रों में वायु तीन प्रकार की मानी गई है—

१. सूक्ष्म, २. स्थूल, ३. स्थूलस्थूल

१. सूक्ष्म वायु

यह स्थूल पृथ्वी को धारण नहीं कर सकती।

२. स्थूल वायु

इसमें एक घन नाम की वायु है, वह आकाश के आधार पर रहती है।

३. स्थूल स्थूल वायु

इसमें एक घन नामक वायु है जो बहुत ठोस होती है। वह घन वायु के आधार पर रहती है। एक धनोदाधि नामक जल है, जो बरफ से भी अधिक ठोस और घन रूप है। वह घन वायु के आधार पर रहता है। उसी के ऊपर यह स्थूल पृथ्वी रहती है।

जैन शास्त्रों में पृथ्वी के आधार का क्रम उपर्युक्त बताया गया है।

दूसरी बात रही भूकम्प की। सो जैन शास्त्र में भूकम्प दो प्रकार का माना गया है।

एक देश भूकम्प और दूसरा सर्व भूकम्प।

देश भूकम्प के तीन कारण बताये गये हैं—

१. प्रथम कारण

पृथ्वी के किसी विशेष भाग में प्रकृति का अर्थात् विस्फोटक पुद्गलों का इतनी जोर से स्वाभाविक विस्फोट हो जिससे बड़े २ नगर आदि भूमि में गर्क हो सकते हैं जिससे देश के उस भाग विशेष में भूकम्प होता है।

२. दूसरा कारण

छोटी ऋद्धि के देवताओं का पारस्परिक संग्राम होने पर जब वे जोर-जोर से पृथ्वी पर पांव पटकते, लातें मारते अथवा उछलते-कूदते हैं तो देश भूकम्प होता है।

३. तीसरा कारण

छोटी ऋद्धि के देवता जब मान में आकर पृथ्वी पर जोरों से धमाके के साथ पैर रखते हुए चलते हैं तो देश भूकम्प होता है।

सर्व भूकम्प के भी ये तीन कारण बताये गये हैं—

१. प्रथम कारण

घन नामक वायु में एक गूंजने वाली वायु है, जब वह गूंजती है तो सर्व भूकम्प होता है।

२. दूसरा कारण

वड़ी ऋद्धि के देवताओं का आपस में पारस्परिक संग्राम।

३. तीसरा कारण

जब बड़ी ऋद्धि का कोई देव महान् मुनि-आत्मा को अपनी शक्ति का परिचय देता हुआ भूमि पर पादस्फालन करता है, तब भूमि पर सर्व भूकम्प होता है।

इस प्रकार भूमि के आधार और भूकम्प की जैन शास्त्र के द्वारा की गई बुद्धिगम्य व्याख्या को सुनकर सब लोग बहुत प्रसन्न हुए। भूकम्प का यह सम्पूर्ण वर्णन स्थानांग सूत्र के तीसरे अध्याय में विस्तार से किया गया है।

अमृतसर में महाराजश्री के दस पन्द्रह सार्वजनिक प्रवचन हुए। यहां से विहार कर महाराजश्री गुरू के जंडियाले पधारे। यहां की जनता ने महाराज श्री का भव्य स्वागत किया। दूसरे दिन से महाराजश्री के प्रवचन नगर से बाहर आर्य समाज मन्दिर के मैदान में प्रारम्भ हुए। आपके प्रवचन आध्यात्मिक एवं सदाचार सेवा राष्ट्र उत्थान आदि विषयों पर होते थे। साथ ही महाराजश्री अपने प्रवचनों में आहार शुद्धि पर भी विशेष रूप से बल दिया करते थे क्योंकि आहार शुद्धि ही सब प्रकार की उन्नति का मूल आधार है। आहार शुद्धि के मुख्य दो रूप है—

१. सात्विक आहार

अर्थात् मांस, अंडा, शराब आदि पदार्थों का सेवन न करना।

२. अन्याय से उपार्जित धन के द्वारा प्राप्त आहार का उपयोग न करना।

इस प्रकार आहार-शुद्धि के सम्बन्ध में परम उपादेय विचारों से प्रभावित होकर यहाँ पर भी बहुत से लोग वेजीटेरियन सोसाइटी के सदस्य बन गये। और उक्त सोसाइटी की स्थापना हो गयी। यहां पदाधिकारियों के निर्वाचन में लाला गंडाराम जी जैन को इस सोसाइटी का अध्यक्ष व आर्य समाज

के प्रमुख प्रतिष्ठित महानुभाव श्री जयचन्द हैड मास्टर को प्रधान मन्त्री चुना गया।

यहां की सोसायटी ने भी अपना कार्य बड़े उत्साह से आरम्भ किया। दीन दुखियों की यथाशक्ति सहायता का भी कार्य आरम्भ हो गया। आठ-दस दिन तक यहां धर्मोपदेश होते रहे। फिर नगर में बनाये गये खुले मैदान के पंडाल में व्याख्यानों का क्रम आरम्भ हुआ। जिनमें हजारों श्रोतागण प्रतिदिन भाग लेते थे।

डाकू का उद्धार

यहाँ पर जिन गुरुओं के नाम से गुरू का जंडियाला कहलाता है, उनके वंश में से एक व्यक्ति बड़ा भारी डकैत था। वह शराब मांस का भी बड़ा आदी था। महाराजश्री के प्रवचन सुनकर उसने डाका डालना छोड़ दिया। और शराब मांस आदि के सेवन का भी त्याग कर दिया। उसने भरी सभा में खड़े होकर अपने पूर्वकृत दुष्कर्मों के लिए हृदय से पश्चात्ताप करते हुए भविष्य में सब प्रकार के कुकर्मों के परित्याग की प्रतिज्ञा ली। अंतगढ़ यहां से महाराजश्री ने पट्टी के लिए विहार कर दिया। और तीसरे दिन आप पट्टी पधार गये। स्थानीय श्रीसंघ ने महाराजश्री का भव्य स्वागत किया। स्थानक में प्रवेश कर महाराजश्री ने समागत जनता को मंगली सुनायी।

पट्टी चातुर्मास

(सं० २०००)

इस प्रकार वीर संवत् २४६९ विक्रम संवत् २००० सन् १९४३ ई० का चातुर्मास पट्टी में प्रारम्भ हुआ।

दूसरे दिन से महाराजश्री के प्रवचन प्रारम्भ हुए। इन धर्मोपदेशों से स्थानीय जनता खूब लाभ उठाने लगी। वेजीटेरियन सोसाइटी के सदस्यों की संख्या भी दिन प्रतिदिन बढ़ने लगी। बाहर से आने वाले दर्शनार्थियों का भी तांता लगा रहा। पर्यूषण महापर्व तपस्या धर्म ध्यान आदि क्रियाओं के द्वारा बड़ा आनन्दपूर्वक मनाया गया, जिसमें महाराजश्री ने श्री अन्तगढ़ सूत्र सुनाया।

ऐस. ऐस. जैन सभा पंजाब की कान्फ्रेन्स

संवत्सरी के पश्चात् जंडियाले वाले राय साहब टेकचन्द जी और लाला गण्डामल जी, कपूरथले वाले लाला त्रिभुवन दास जी, और अमृतसर के बाबू हरजस राय जी बी. ए. आदि ऐस. ऐस. जैन सभा पंजाब के प्रमुख कार्यकर्ता महाराज श्री की सेवा में पट्टी आये। उन्होंने महाराजश्री से विनती की कि ऐस. ऐस. जैन सभा पंजाब की कान्फ्रेंस हुए कई वर्ष हो चुके हैं। ऐस. ऐस. जैन सभा पंजाब को शक्तिशाली बनाने के लिए यहाँ इसकी कान्फ्रेंस होनी चाहिए।

इस पर महाराजश्री ने फरमाया कि आप लोग यहां की अपनी जैन बिरादरी से इस विषय में बातचीत कर लें। तब इन लोगों ने स्थानीय श्रीसंघ के प्रमुख व्यक्तियों से इस विषय में विचार विनिमय किया। इस पर स्थानीय भाइयों ने उत्तर दिया कि हम बिरादरी की मीटिंग बुला कर उसमें आपका यह प्रस्ताव रक्खेंगे। उसमें जैसा विचार होगा आपके सामने निवेदन कर दिया

जायगा। तदनुसार स्थानीय बिरादरी की मीटिंग बुलाई गई, और उसमें निश्चय हुआ कि यहां पर एस. एस. जैन सभा पंजाब की कान्फ्रेंस की जाय।

इस निर्णय के अनुसार एस. एस. जैनसभा पंजाब के कार्यकर्त्ताओं को सूचना दे दी गई कि पट्टी में कान्फ्रेन्स बुलाई जाय। इसकी तिथियां भी निश्चित हो गई और बाहर की जैन बिरादरियों को सूचना भेजी जाने लगी।

इस प्रकार कान्फ्रेन्स की तैयारियां बड़े भारी उत्साह के साथ होने लगीं। नियत तिथियों पर कान्फ्रेन्स का अधिवेशन आरम्भ हुआ। इसी शुभ अवसर पर पंजाब-वेजीटेरियन सोसाइटियों की प्रतिनिधि सभा का अधिवेशन भी बुलाया गया। इसकी सूचना सब प्रतिनिधियों को यथासमय दे दी गई। स्थान-स्थान से प्रत्येक नगर ग्राम और कस्बे से प्रतिनिधिगण आने लगे। इस शुभ अवसर पर जनता इस प्रकार उमड़ कर आई कि देखते ही देखते बाहर से छः सात हजार लोग आ पहुंचे। सब लोगों के भोजनादि का प्रबन्ध स्थानीय बिरादरी की ओर से किया गया।

यह कान्फ्रेन्स तीन दिन तक चलती रही। प्रान्त भरके विशिष्ट विद्वानों, व्याख्याताओं, कविगणों, संगीताचार्यों और भजन मंडलियों ने बड़े उत्साह पूर्वक इस कान्फ्रेन्स में भाग लिया। इस प्रकार तीन दिन तक नगर में खूब चहल-पहल रही। एस. एस. जैन सभा पंजाब का नया निर्वाचन किया गया। जिसमें दीवान रोशन लालाजी जैन अग्रवाल पटियाला वाले अध्यक्ष चुने गये। फरीदकोट के लाला रामलाल जी उपप्रधान, किशोरीलाल जी एडवोकेट (फरीदकोट के) मन्त्री तथा लाला मुन्शीलाल जी रोका (फरीदकोट के) कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए। इस सभा का प्रधान कार्यालय फरीदकोट में ही रक्खा गया।

इस अवसर पर वेजीटेरियन सोसाइटी के अधिकारीगण और सदस्य भी बड़ी भारी संख्या में एकत्रित हुए। यहां सोसाइटी के सिद्धान्तों व नियमों के सम्बन्ध में अनेक सज्जनों के महत्वपूर्ण भाषण हुए। इस सोसाइटी ने जन्म लेकर दो तीन वर्ष के स्वल्प काल में ही क्या-क्या कार्य किए और किस प्रकार

मांसाहारी लोगों से मांस आदि पदार्थों का त्याग करवाकर, उन्हें सात्विक आहारी बनाया। और किस प्रकार हजारों दीन दुःखियों की निष्काम सेवा की आदि इसके समग्र कार्य कलापों पर इस अधिवेशन में बड़े विस्तार से प्रकाश डाला गया। स्मरण रहे कि अब तक इस संस्था ने सत्तर अस्सी हजार रुपये जैसी बड़ी रकम के (नकद या जीवनोपयोगी वस्तुओं के रूप में) द्वारा दीन दुःखियों की सहायता की। संस्था की उक्त गतिविधियों को देखते हुए यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि ऐसी संस्थाएं दलित पीड़ित मानवजाति की सेवा के लिए वरदान रूप सिद्ध हुई हैं।

इस लिए जनता से इसकी आर्थिक सहायता के लिए अपील करते हुए कहा गया है कि इस संस्था को अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग देकर आप लोग दृढ़ बनाएं। इस अपील के परिणाम स्वरूप पांच ६ हजार रुपये तत्काल एकत्रित हो गये।

बंगाल के अकाल पीड़ितों की सहायता—

वेजीटेरियन सोसाइटी की ओर से यह प्रस्ताव पास किया गया कि इस समय बंगाल में हजारों लोग अकाल से पीड़ित होकर मौत के मुंह में जा रहे हैं। इसलिए इनकी सहायता करना प्रत्येक व्यक्ति का परमावश्यक प्रथम कर्तव्य है। अतः श्री प्रेम वेजीटेरियन सोसाइटी पंजाब की ओर से बंगाल के अकाल पीड़ितों की सहायता के लिए दस हजार रुपये के चावल भेज कर उनके प्राणों की रक्षा की जाय। इस कार्य का भार गुजरांवाले के बाबू मूलखराज जी जैन बी० ए० को सौंपा गया। उन्होंने यथा शीघ्र बंगाल में चावल पहुँचा दिये और उन अकाल पीड़ित भाइयों की प्राण रक्षा करने का सत्य कार्य किया।

इस अवसर पर पंजाब प्रेम वेजीटेरियन सोसाइटी का भी नया चुनाव किया गया। इसके अध्यक्ष गुरु के जंडियाले वाले लाला गंडा मलजी जैन निर्वाचित हुए। मास्टर जय चन्द जी आर्य इसके प्रधान मन्त्री चुने गये। इस सोसाइटी

इस प्रकार दोनों संस्थाओं की कार्यवाही सानन्द सम्पन्न हुई। पट्टी के इस चातुर्मास काल में उक्त दो ऐतिहासिक अधिवेशन सम्पन्न हुए। जिनके द्वारा धर्म, समाज और राष्ट्र की उन्नति के लिए अनेक रचनात्मक कार्य सम्पन्न हुए। इस प्रकार पट्टी का यह चातुर्मास श्री संघ व समस्त राष्ट्र के लिए वड़े उपयोगी कार्यों का सम्पादन करता हुआ सानन्द समाप्त हुआ।

चातुर्मास समाप्ति के विहार के समय श्री प्रेम वेजीटेरियन सोसायटी और जैन सभा की ओर से महाराजश्री को अभिनन्दन पत्र भेंट किये गये। पट्टी का चातुर्मास समाप्त कर महाराजश्री ने यहां से गुरु के जंडियाले की ओर विहार किया। स्थानीय श्री संघ के बहुत से भाई तथा दूसरे धर्म प्रेमी भाई भी तरन तेरन तक महाराज श्री के साथ आये। यहां से विहार कर महाराजश्री तीसरे दिन गुरु के जंडियाले पधार गये। दूसरे दिन से यहां बड़े भारी पंडाल में महाराजश्री के प्रवचन आरम्भ हुए। इन प्रवचनों का क्रम लगभग एक मास तक चलता रहा।

इस वार के धर्मोपदेश का मुख्य विषय भावना था।

प्रत्येक रविवार को वेजीटेरियन सोसाइटी के साप्ताहिक अधिवेशन भी होते रहे। यहां पर श्री प्रेम वेजीटेरियन सोसाइटी की ओर से एक प्रसूतिगृह खोला गया और उसके एक सुयोग्य मिडवाइफ की देख-रेख में सेवा कार्य आरम्भ हुआ।

मांसाहार विषय पर मौलवियों के साथ चर्चा—

एक दिन यहां पर दो तीन मुसलमान भाइयों के साथ एक मौलवीजी महाराजश्री के पास आये और वे महाराजश्री से मांसाहार के सम्बन्ध में चर्चा करने लगे। बहुत देर तक शंका समाधान और प्रश्नोत्तर होते रहे। इस वार्तालाप में महाराजश्री ने मौलवी जी से पूछा कि आप लोग सूअर के मांस से तो परहेज करते हैं पर बकरी भेड़, गऊ आदि के मांस का परहेज नहीं करते, इस का क्या कारण है।

मौलवी जी ने उत्तर दिया कि सूअर गंदा जानवर हैं क्योंकि यह मनुष्य का

विष्टा भक्षण करता है। इस पर महाराज श्री ने कहा कि भेड़ भी तो मल भक्षण करती है और मुर्गा मनुष्य की बलगम, नाक का मैल तथा विष्टा या गंदी नाली में पड़े हुए कीड़ों को खाता है, तो फिर सूअर और गन्दगी खाने वाले भेड़ आदि दूसरे जानवरों में क्या अन्तर है। मौलवी साहब को कोई इसका उत्तर न सूझ पड़ा।

इधर-उधर बगलें झांकते हुए फिर मौलवी साहब बोले—अजी सूअर में एक और बड़ा दोष यह है कि यह बड़ा होने पर अपनी मां और बहन से जनाकारी करता है, इसलिए इसका मांस नापाक है।

महाराजश्री ने हंसते हुए फरमाया कि भेड़ बकरे मुर्गा आदि दूसरे पशुओं में भी तो यही बात पाई जाती है। तो उनके मांस को पाक कैसे माना जा सकता है। इसपर मौलवी साहब व उनके साथी निरुत्तर हो गये और खिसियाने से होकर चलते बने।

यहां की जनता को एक मास तक अपने मधुर उपदेशामृत का पान करा महाराजश्री ने कपूरथला रियासत की ओर विहार कर दिया। नगर के बाहर लाला गंडामलजी की बगीची की कोठी में विराजे। यहाँ पर बगीची में धर्मोपदेश दिया। फिर यहां से विहार कर एक रात मार्ग में बिता दूसरे दिन कपूरथला पधार गये। यहाँ पर तीन चार दिन तक धर्मोपदेश कर यहां से विहार कर आप सुलतानपुर पधारे। यहां पर सेठ धनीराम भगवान दास की कोठी में विराजे, सुलतानपुर में आप के दो सार्वजनिक प्रवचन हुए। और शेष व्याख्यान कोठी पर ही होते रहे।

यहाँ से वापिस महाराज श्री कपूरथला आदि क्षेत्रों को स्पर्शते हुए चार पांच दिन में जालन्धर पधार गये। स्थानीय जनता ने आपका भव्य स्वागत किया। यहां पर महाराज श्री लाला संतराम अग्रवाल के मकान में विराजे। एक प्रवचन तो लाला जी के मकान पर ही हुआ शेष प्रवचन आर्य समाज के उत्साही कार्यकर्ता ला० भीम सेन जी की कोठी के विशाल मैदान में होते रहे। ढाई तीन हजार के लगभग लोग प्रतिदिन लाभ उठाने लगे। श्रोतागणों की संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती ही गई।

महाराज श्री ने अपना एक प्रवचन वेजीटेरियन सोसाइटी के सम्बन्ध में भी दिया जिसके फलस्वरूप उक्त संस्था के सैंकड़ों सदस्य बन गये। और प्रेम वेजीटेरियन सोसाइटी की स्थापना हो गई। सोसाइटी के सदस्यों ने अपने पदाधिकारियों का विधिवत निर्वाचन किया। इस निर्वाचन में आर्य समाज के प्रधान लाला दौलत राम जी सूद अध्यक्ष, लाला संतराम जी अग्रवाल उप-प्रधान, आर्य समाज के सेक्रेटरी प्रोफेसर अमोलक चन्द जी प्रधान मन्त्री व लाला दीनानाथ जी जैन कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए।

दीन दुखियों की सहायता के लिए इस संस्था ने कुछ ही दिनों में हजारों रुपये एकत्रित कर लिए। और विधवाओं, अनाथों तथा दूसरे दीन दुखियों को सहायता देने का कार्य बड़े उत्साह से चल पड़ा। लाला संतराम जी अग्रवाल के मकान पर इस सोसाइटी की ओर से एक फ्री औषधालय भी खोला गया जिससे सैंकड़ों की संख्या में दीन दुखी जनता प्रतिदिन लाभ उठाने लगी।

पूज्य श्री काशीराम जी महाराज का स्वागत—

जालन्धर में इस समय एस० एस० जैन सभा पंजाब की मीटिंग बुलाई गई। सभा के इस अधिवेशन में एस० एस० जैन सभा पंजाब के कई आवश्यक कार्यों व विषयों पर विचार विनिमय किया गया। जिनमें एक प्रस्ताव यह उपस्थित किया गया कि पंजाब केसरी बालब्रह्मचारी पूज्य श्री १००८ काशीराम जी महाराज बम्बई, काठियावाड़, बरार, खानदेश, मालवा, मेवाड़, मारवाड़, मेरवाड़ा, आदि प्रान्तों में धर्म प्रचार करते हुए आठ वर्ष के बाद पुनः देहली पधार रहे हैं। इस सुअवसर पर दिल्ली में एस० एस० जैन सभा पंजाब की ओर से पूज्य श्री का शानदार स्वागत होना चाहिए। सभी उपस्थित सदस्यों ने बड़े भारी हर्ष और उत्साह के साथ इस प्रस्ताव का समर्थन व अनुमोदन किया तथा सर्व सम्मति से यह प्रस्ताव स्वीकृत हुआ। इस प्रस्ताव को क्रियात्मक रूप देने के लिए एक स्वागत समिति का निर्माण किया गया और कहा गया कि इस कमेटी का कर्त्तव्य होगा कि वह अधिक से अधिक संख्या में पंजाब की सब जैन बिरादरियों को महाराज श्री के स्वागत में दिल्ली पहुंचने के लिए

प्रेरित करे। स्वागत समिति के सदस्य पूज्य श्री के दिल्ली पहुंचने के पूर्व मार्ग में पूज्य श्री की सेवा के पहुंच गये। उन्होंने निवेदन किया कि हम एस० एस० जैन सभा पंजाब को ओर से देहली में आप श्री के प्रवेश के समय बड़े समारोह के साथ आपका प्रवेश करना चाहते हैं। पूज्य श्री ने फरमाया कि यह तो आप लोगों की भावना है, साधु इसके लिए क्या कह सकता है। पूज्य श्री ने फरमाया कि मेरे देहली प्रवेश के अवसर पर व्याख्यान वाचस्पति मुनि श्री मदनलाल जी, और जैन भूषण मुनि श्रीप्रेमचन्दजी आजाएं तो अच्छा है। स्वागत समिति के सदस्यों ने पूज्यश्री का यह सन्देश जालन्धर में आकर बाहर विराजित श्री प्रेमचन्द जी महाराज को सुना दिया। यह सन्देश पाकर महाराज श्री ने देहली की ओर विहार कर दिया।

जालन्धर नगर से विहार कर महाराज श्री जालन्धर छावनी पधारे। यहां पर आपके दो सार्वजनिक प्रवचन हुए, जालन्धर नगर तथा छावनी की जनता ने महाराज श्री के इन प्रवचनों से खूब लाभ उठाया। यहां से विहार कर महाराज श्री फगवारा आदि क्षेत्रों को स्पर्श करते हुए लुधियाने में विराजित उपाध्याय (वर्तमान) श्रमण संघाचार्य श्री आत्माराम जी महाराज की सेवा में उपस्थित हुए। यहां दो सार्वजनिक व्याख्यान खजान्चियों के बाग में हुए। जिनमें उपाध्याय श्री आत्माराम जी महाराज भी पधारे। यहां से विहार कर महराज श्री मार्गवर्ती क्षेत्रों में धर्म प्रचार करते हुए मलेरकोटला पधारे। यहां पर एक रात विराज कर दूसरे दिन प्रातः समागत जनता के समक्ष धर्मोपदेश दिया। फिर दुपहर के पश्चात् विहार कर धुरि मन्डी पधारे। यहां पर एक रात्रि ठहर कर संगरूर शहर पधारे। यहां पर एक रात्रि विराज कर दूसरे दिन विहार कर सुनाम पधारे। यहां से दूसरे दिन प्रातः धर्मोपदेश देकर दोपहर के पश्चात् विहार कर दो तीन दिनमें मूणक पहुँचे। यहां पर ठाणापति रूप से विराजित गणविच्छेदक श्री बनवारी लाल जी महाराज की सेवा में दो रात ठहर कर निर्वाणा मंडी व घर्सों होते हुए दूसरे दिन वड़ोदा नामक ग्राम पधारे।

यहां पर श्री मदनलाल जी महाराज और श्री रामजी लालजी महाराज

आदि मुनिराज पहले ही विराजमान थे। यहां श्री प्रेमचन्द जी महाराज ने श्री मदनलालजी महाराज व श्री रामजी लालजी महाराज से विनति की कि पूज्य श्री के देहली पदार्पण के समय आपको व मुझे पूज्य श्री ने याद किया है, अतः हमें देहली की ओर विहार करना चाहिये। तदनुसार यहां पर आप एक रात विराजे। दूसरे दिन देहली की ओर विहार कर सब मुनिराज जीन्द पधार गये।

यहां पर श्री अमीलाल जी महाराज तथा तपस्वी श्री निहालचन्द जी महाराज आदि मुनिराज विराजमान थे। यहां महाराज श्री दो दिन विराजे। दूसरे दिन यहां से सोलह ठाणा विहार कर जुलाणा मंडी पधारे। दूसरे दिन प्रातः काल प्रवचन कर खरेंटी आदि गाँवों में धर्म प्रचार करते हुए रोहतक पधारे। यहां पर दो दिन तक विराजे। जैन धर्मशाला में यहां आपका सार्वजनिक प्रवचन हुआ।

रोहतक से विहार कर यह मुनि मंडली तीन चार दिन में देहली सदर पहुँची। यहां पर स्थानापति रूप से विराजित गणी श्री उदयचन्द जी महाराज की सेवा में रहने वाले श्री रघुवर दयाल जी महाराज आदि मुनिराज बहुत दूर तक स्वागतार्थ सामने आये। देहली शहर सदर बाजार और सब्जी मण्डी तिनों स्थानों की बिरादरियों ने मिलकर इस मंडली का भव्य स्वागत किया। जय ध्वनि के नारों से बाजारों को गुंजाते हुए श्रावकगणों के साथ यह मुनि मंडली डिप्टी गंज के स्थानक में विराजित श्री गणी उदयचन्द जी महाराज की सेवा में पहुंची। यहां पर महाराजश्री ने समागत भाइयों व बहिनों के समक्ष कुछ धर्मोपदेश देकर सबको मंगलाचरण सुना।

अगले दिन व्याख्यान वाचस्पति श्री मदन लाल जी महाराज और महाराजश्री आदि कुछ मुनिराज बिरला मंदिर में विराजित पूज्य श्री की सेवा में पहुंचे और रात्रि को वहीं पर पूज्य श्री की सेवा में रहे। दूसरे दिन बाहर से आई हुई बिरादरियों के हजारों भाई बाई तथा स्थानीय तीनों बिरादरियों की जनता बड़ी भारी संख्या में बिरला मंदिर में पूज्य श्री की सेवा में पहुंच गई।

प्रातः काल बड़े उत्साह और उल्लासमय वातावरण में बड़ी भारी मुनि

मंडली व स्थानीय और पंजाब से आये हुए विशाल जन समुदाय के साथ पूज्य श्री ने बिरला मन्दिर से सदर बाजर की ओर विहार कर दिया। जय-जय की ध्वनियों से गगन मण्डल को गुंजाते हुए तथा अनेक प्रकार के मंगल गान व भजन गाते हुए श्रावक श्राविकाओं का विशाल समूह महाराजश्री के साथ चलता हुआ ऐसा प्रतीत होता था मानो जनता का समुद्र ही उमड़ पड़ा हो। प्रमुख बाजारों व मार्गों से होता हुआ पूज्य श्री के स्वागत का यह विशाल भव्य जुलूस सदर बाजार की कुम्भकार धर्मशाला में पहुँचा।

यद्यपि धर्मशाला बड़ी विशाल थी फिर भी उसमें कहां सामर्थ्य था कि जनता के इस उमड़ते हुए विशाल प्रवाह को अपने में समा सकें। यहां पर संक्षिप्त रूप से पूज्य श्री के स्वागत सम्बन्धी प्रवचन, भजन, मंगलाचरण आदि हुए। पूज्य श्री ने समागत जन समुदाय को मंगली सुनाई। इस प्रकार हर्ष के पारावार में निमग्न जनता के उत्साह के साथ सभा स्थान से विसर्जित हो गई।

पूज्य श्री तथा दूसरे सब मुनिराज भी सदर बाजार स्थानक में पधार गये। दोपहर के पश्चात् फिर इसी धर्मशाला में स्वागत का कार्यक्रम रक्खा गया।

व्याख्यान वाचस्पति श्री मदन लाल जी महाराज ने पंजाब प्रान्तीया साधु साध्वी संघ की ओर से एक अभिनन्दन पत्र पढ़कर सुनाया और उसे पूज्यश्री की सेवा में समर्पित किया।

निम्न अभिनन्दन पत्र श्री प्रेमचन्द जी महाराज ने पढ़कर सुनाया व पूज्य श्री की सेवा में भेंट किया।

पूज्यवर आचार्य प्रवर !

पंजाव के स्थानकवासी जैन संप्रदाय का यह परम सौभाग्य है कि उसे आप जैसे प्रभाविक धर्मशासक का संयोग प्राप्त हैं। पंजाव के साधु साध्वी वर्ग में आज विद्याभिरुचि और धर्म ध्यान तत्परता की जो विशेषता दिखाई देती है, वह सब आपकी आदर्श शासकता की ही आभारी है। आपके धर्मशासन से साधु समुदाय में शान्ति और संघ के प्रसार के साथ-साथ धर्म प्रभावना के लिए भी अपूर्व जागृति उत्पन्न हो गई है। आप में निवास करने वाले विशिष्टत्याग विशदज्ञान, प्रभावपूर्ण वक्तृत्व, समयदक्षता, और प्रम प्रवलता आदि आचार्यो-चित सद्गुणों को देखकर प्राचीन समय के प्रभाविक जैनाचार्यों की स्मृति प्रत्यक्ष रूप से सामने आ जाती है।

आदर्श धर्मनायक !

अग्रमान सात आठ वर्ष तन पंजाव से वाहर वम्वई, गुजरात, काठियावाड़ मारवाड़, मालवा और राजपुताना आदि प्रान्तों में विचरकर आपने जैन धर्म की जो विजयदुंदुभि वजाई है, उसके लिए हम जितना भी गर्व कर सकें उतना ही कम है। आप श्रीके इस विदेश भ्रमण ने पंजाव के स्थानकवासी साधुसंप्रदाय के महत्व को निस्सन्देह चार चांद लगा दिये हैं। आपका धर्मोपदेश सच-मुच ही आपके अन्दर एक जादू का असर रखता है। उससे प्रवाहित होने वाले प्रेम. शान्त, एकता और उत्साह के निर्मल स्रोत, श्रोताओं के मानसिक सन्ताप मनोमालिन्य, अन्तरविद्वेप और हतोत्साहत आदि मल पूर्ण दोपोंको उनके हृदय से दूर कर देने में बड़े ही निपुण हैं। इसी का यह प्रत्यक्ष फल है कि, वहां की विरादरियों के वर्षों के आपस के टंटे झगड़े जो यत्न करने पर भी किसी से भी दूर न हो सके वह आपके सदुपदेश ने वात की वात में दूर कर दिए। आपके इस महान् धर्मोद्योग के लिए वीरप्रसवा पंजाव भूमि भी फूली नहीं समाती, क्योंकि उसने आप जैसी धर्मवीर पुरुष को जन्म देने का सौभाग्य प्राप्त किया है।

कृपानिधे !

आपका धर्म प्रेम अद्वितीय है। आपकी सेवाएं अनुपम हैं। इस विकट

समय में जैन धर्म की डगमगाती हुई नौका को संभारने और पार लगाने में आपने जिस धीर और गम्भीर मनोबल का परिचय दिया है और दे रहे हैं वह आपके ही आदर्श साधु जीवन का हिस्सा है। अधिक क्या कहें आप अनाथों के नाथ हैं। शासनदेव करें कि आप श्री का साया चिरकाल तन हमारे सिर पर बना रहे और हम सब आपकी छत्रछाया में संयम का भली-भांति अराधन करते हुए आध्यात्मिक विकाश की पराकाष्टा तक पहुँचने में सफलता प्राप्त करें।

'विनीत'
आपकी आज्ञा में चलने वाला
पंजाब का साधु साध्वी समुदाय

तत्पश्चात् मुनिराजों तथा श्रावक वर्ग ने पूज्य श्री के गुनगाण रूप में अनेक भाव विभूषित हृदय हारी कविताएं गीतियों आदि सुयाई। दूसरे दिन प्रातः काल 'एस एस जैन सभा, पंजाब की ओर से राय साहाब टेकचन्द जी ने महाराज श्री की सेवा में अभिनन्दन-पत्र पढ़कर सुनाया और समर्पित किया। आज भी बहुत देर तक श्रावकों के भाषण तथा भजन आदि का क्रम चलता रहा। इस प्रकार पूज्य श्री के ऐतिहासिक स्वागत का भव्य समारोह सानन्द सम्पन्न हुआ।

देहली के सदर बाजार की धर्मशाला में महाराज श्री (श्री प्रेमचन्द जी महाराज) का एक सार्वजनिक प्रवचन हुआ तथा दूसरा सार्वजनिक प्रवचन डिप्टी गंज के मैदान में हुआ। अनेक मुनिराजों के संयुक्त रूप से भी यहां दो प्रवचन हुए।

कुछ दिन पश्चात् गुड़गांवा छावनी के एडवोकेट श्री मेहर चन्द जी व श्री मास्टर दुर्गादास जी बी० ए० सदर बाजार आये और पूज्य श्री से अपने क्षेत्र में साधु भेजने कि विनती की। पूज्य श्री की आज्ञानुसार श्री रघुवर दयाल जी महाराज व श्री प्रेमचन्द जी महाराज आदि मुनिराजों ने महरौली की ओर विहार कर दिया। महरौली की जनता को प्रवचन का लाभ देकर आप गु-

गांव छावनी पधारे। यहां पर पांच सात दिन तक धर्मोपदेश होते रहे। यहां से विहार कर दो मील दूर झाड़सा नामक गांव में पधारे। यहां भी महाराजश्री के दो तीन प्रवचन हुए। यहां से विहार कर फिर गुड़गांवा होते हुए मार्गवर्ती गांवों की जनता को धर्मोपदेश का लाभ देकर यह मुनिमण्डल वापिस सदर पहुंच गया।

उस समय यहां पर गणी श्री उदय चन्दजी महाराज, पूज्य श्री काशीराम जी महाराज, श्री मदन लाल जी महाराज, पं० श्री शुक्लचन्द जी महाराज, पं० श्रीरामजी लाल जी महाराज, श्री प्रेमचन्द जी महाराज, श्री रघुवर दयाल जी महाराज आदि अनेक मुनिराज विराजमान थे। इन दिनों पूज्य श्री वहुत अस्वस्थ और रुग्ण से थे। वीमारी के कारण पूज्य श्री का चालिस पौण्ड वजन कम हो गया था इसलिए पूज्यश्री ने उक्त मुनि मंडली के समक्ष यह भाव प्रकट किये कि "मेरे शरीर का कुछ भरोसा नहीं है क्योंकि रोग के कारण शरीर की अवस्था उत्तरोत्तर क्षीण होती जा रही है। आप लोगों ने मेरे ऊपर आचार्य पद का भार रक्खा है। मैं चाहता हूं कि आप मुनिगण भरी उपस्थिति में हैं। किसी योग्य मुनिराज को युवाचार्य निर्वाचित कर लें, जो कि मेरे पीछे इस भार को सम्भाल सके।

इस पर पूज्य श्री से निवेदन किया गया कि आप श्री की छत्र-छाया में चतुर्विध श्री संघ सब प्रकार खूब फल फूल रहा है, हम तो आप श्री को दीर्घ जीवी देखना चाहते हैं। अभी कोई आवश्यकता युवराज वना के भी प्रतीत नहीं होती।

यहां पर महाराज श्री का एक सार्वजनिक प्रवचन सब्जी मण्डी शोरा कोठी के मैदान में हुआ। चांदनी चौक सदर बाजार व सब्जी मण्डी के लोग इस प्रवचन में वड़ी भारी संख्या में उपस्थित हुए।

सदर बाजार से विहार कर महाराजश्री देहली चाँदनी चौक की वरादरी अर्थात् महावीर भवन में पधारे। यहां पर एक प्रवचन कर दूहरे दन शाहदरा पधारे। यहां पर महाराज श्री दिगम्बर जैन धर्मशाला में विराजे। शाहदरा से

दूसरे दिन विहार कर महाराज श्री 'लूणी, पधारे। यहां पर महाराज श्री ने रात्रि को धर्मोपदेश दिया। लूणी से विहार कर खेवड़ा नामक ग्राम में एक रात ठहर कर तीसरे दिन खट्टा डोहला पधारे। यहां पर महराज श्री के दो प्रवचन हुए। यहां से सराय लुहारा पधारे। यहां पर पांच छः दिन तक महाराज श्री के प्रवचन होते रहे क्योंकि महाराजश्री ने पहले यहां विक्रम संवत् १९९० में अपने गुरु महराज के साथ चातुर्मास किया था इसलिये स्थानीय श्री संघ के अत्यधिक आग्रह करने पर यहाँ कुछ अधिक विराजना पड़ा। यहां से विहार कर विनोली पधारे। यहां पर महाराज श्री के दो तीन प्रवचन हुए। होली चातुर्मास भी यहां पर मनाई गई। यहां से विहार कर महाराज श्री बडौत मण्डी पधारे।

बडौत मण्डी में जितेन्द्र गुरुकुल पंचकूला के अधिष्ठाता पं० कृष्ण चन्द्र जी तथा गुरुकुल के कार्यकर्ता फरीदकोट वाले लाला रूप लाल जी महाराजश्री की सेवा में उपस्थित हुए। उन्होंने चैत शुक्ल पूर्णिमा को गुरुकुल के महोत्सव पर महाराज श्री से पंचकूला पधारने की आग्रह पूर्ण विनती की। महाराजश्री ने फरमाया कि समय बहुत कम रह गया है, तथा मार्गवर्ती क्षेत्रों को छोड़कर जाना मेरे लिए उचित नहीं प्रतीत होता। इस पर भी उन्होंने बड़ी विनय के साथ फिर आग्रह किया और कहा कि इस वर्ष वार्षिकोत्सव के अध्यक्ष जालन्धर छावनी के श्री लाला लेलूराम जी को बनाया जायेगा।

जब हम देहली गये थे तब पूज्य श्री ने फरमाया था कि गुरुकुल के वार्षिकोत्सव पर मुनि श्री प्रेमचन्द जी पधार जाएँ तो अच्छा हो।

देहली में पूज्य श्री के स्वागत के अवसर पर भी आप श्री से प्रार्थना की गई थी, किन्तु उस समय वार्षिकोत्सव की तिथियाँ निश्चित नहीं हो पाई थीं, अब तिथियाँ निश्चित हो जाने पर हम फिर आपकी सेवा में उपस्थित हुए हैं। इस प्रकार उनके प्रेम भरे आग्रह को देख महाराज श्री ने गुरुकुल पंचकूला के वार्षिकोत्सव पर पधारना स्वीकार कर लिया।

रात्रि को बडौत मंडी में महाराजश्री का सार्वजनिक व्याख्यान हुआ। दूसरे दिन बडौत शहर में पधारे। यहाँ पर महराजश्री का एक प्रवचन हुआ।

यहां वामनोली के भाई आये और अपने क्षेत्र परसने की प्रार्थना करने लगे। महाराजश्री का विचार तो सीधे कांवले पधारने का था, किन्तु श्रद्धालु भाइयों के प्रेम भरे आग्रह को महाराजश्री टाल न सके अतः अहां से विहार कर महाराज श्री वामनोली पधारे। यहां पर मध्याह्न काल में महाराजश्री ने एक व्याख्यान दिया। दूसरे दिन प्रातःकाल विहार कर एमल ग्राम पधारे यहां एक प्रवचन दे दूसरे दिन कांवले पहुँचे। यहां पर महाराजश्री के तीन चार भाषण जैन धर्मशाला में हुए। यहां से विहार कर आप अंणधी नामक ग्राम पधारे। कांवले के बहुत से भाई यहां तक महाराजश्री के साथ आये।

यहां जैनों का एक भी घर नहीं है। किन्तु यहां के जमींदार लोगों के हृदय में मुनिराजों के प्रति धर्म प्रेम अच्छा है। यहाँ पर एक सार्वजनिक व्याख्यान दे कर गंगेरू पधारे। यहां पर बाजार में सार्वजनिक प्रवचन हुआ। फिर यहां से दूसरे दिन विहार कर तीतरवाडे पधारे। यहां की जनता को एक दिन प्रवचन लाभ देकर दूसरे दिन यमुना पार कर बड़सत पधारे। यहां पर एक रात ठहर कर करनाल पहुँचे।

करनाल से चलकर तरावड़ी नामक गांव पहुँचे। यह वह नगर है जहां पर भौतिक संसार के लिए हिन्दू मुसलमानों की ऐतिहासिक नरसंहारक लड़ाइयां हुई थी। यहां पर एक प्रवचन कर दूसरे दिन थानेसर पधारे। यहां की जनता को धर्मोपदेश देकर दूसरे दिन शाहबाद पहुंचे।

मार्ग में वर्णाकृत परिषह

शाहबाद से विहार कर महाराजजी दो ढ़ाई मील ही पधारे थे कि बादलों की घटायें उमड़ आईं और जोर से बरसने लगीं। वर्षा से बचाव के लिए मुनिमण्डली एक रेलवे चौकी पर पहुँची। इस रेलवे चौकी में वर्षा के कारण पहिले से ही लोग भरे हुए थे, फिर मुनिराज वापस पक्की सड़क पर ही पधार गये। सड़क के लगभग एक फर्लांग पर एक बगीची थी। उसमें एक मकान दिखाई दिया। वहां पहुँचे तो देखा कि मकान पर छत नहीं है केवल दीवारें ही खड़ी हैं। थोड़ी दूर पर ही एक झोंपड़ी दिखाई दी अतः उसी ओर बढ़

गये। झौंपड़ी के पास पहुंचने पर देखा कि वहां पर एक वृद्ध जमींदार बैठा है। उसने कहा महाराज इस झौंपड़ी में तो पानी चू रहा है, आप सामने बगीची वाली झोंपड़ी में चले जायें, वहां आपको आराम मिलेगा। अब तक इधर-उधर घूमते हुए वर्षा में कपड़े भी भीग गये थे हवा बड़े जोर की चल रही थी और मूसलाधार वर्षा की झड़ी लगी हुई थी। उस झौंपड़ी में भी सामने से बड़ी ठंडी हवा आ रही थी पर नीचे सूखी घास बिछी थी इसलिये रात कट गई।

प्रातःकाल यहां से अम्बाला छावनी की ओर विहार कर दिया। छावनी पहुँचने पर मार्ग में भीग जानेसे और झोंपड़ी में ठंडी हवा लगने से महाराजश्री को ज्वर आ गया। बुखार उतरने पर महाराजश्री दूसरे दिन अम्बाला पधार गये। यहां की बिरादरी ने महाराजश्री का भव्य स्वागत किया। यहां पर स्थानक वासी सम्प्रदाय की ओर से व्याख्यान का खुला स्थान नहीं था अतः श्वेताम्बर मूर्ति पूजकों की धर्मशाला में पधारे। यहाँ पर महाराजश्री के चार प्रवचन हुए। यहां से महाराजश्री लालडू और वहां से डेराबसी पधारे। यहां तक अम्बाला के लोग विहार में महाराजश्री के साथ रहे। डेराबसी में महाराज श्री के दो व्याख्यान हुए। डेराबसी से विहार कर महाराजश्री वार्षिक महोत्सव पर गुरुकुल पंचकूला पधारे। यहां पर महाराजश्री गुरुकुल के सभाभवन में विराजे। गुरुकुल के वार्षिक महोत्सव का कार्यक्रम तीन दिन तक चलता रहा।

दिन में महाराजश्री के बड़े प्रभावशाली प्रवचन होते रहे। प्रातः सायं व रात्रि को बाहर से आये लोगों के भाषण व भजन आदि का कार्यक्रम चलता रहा। गुरुकुल के मंत्री लाला विलायती राम जैन ने गुरुकुल की सहायता के लिये जनता से अपील की।

इस पर इस उत्सव के अध्यक्ष जालन्धर निवासी लाला तेलुराम जी जैन ने दस हजार रुपये और उनकी धर्म पत्नी शान्ति देवी ने एक हजार रुपये दान दिये। अन्य दानी महाशयों ने भी गुरुकुल को बड़ी उदारता से दिलखोल कर दान दिया और इस प्रकार लगभग तीस हजार रुपये एकत्रित हो गये।

यहाँ पर कांधले के श्री संघ की ओर से कुछ भाई महाराजश्री की सेवा में आये और विनती करने लगे कि हम दो तीन बार पूज्य श्री काशी राम जी महाराज की सेवा में गये और हमने निवेदन किया कि आप श्री हमारे क्षेत्र में पधारें या श्री प्रेमचन्द जी महाराज का चातुर्मास कराने की कृपा करें। इसपर पूज्य श्री ने तो अपनी असमर्थता प्रकट की है, अतः आप इस वर्ष हमारे क्षेत्र में चातुर्मास करने की कृपा करें।

इस पर महाराजश्री ने फरमाया कि इस वर्ष तो कुछ परिस्थितियों के कारण मैं आपके यहां चातुर्मास नहीं कर सकता। अन्त में पं० श्री शुक्लचन्द जी महाराज का चातुर्मास कांधले में स्वीकृत हो गया।

यहां बहुत से जैन व जैनेतर भाई जालन्धर से आये और उन्होंने महाराजश्री से चातुर्मास के लिए विनती की। उनका विशेष आग्रह देख महाराजश्री ने सुखे समाधे जालन्धर चातुर्मास करने की स्वकृति प्रदान कर दी क्यों कि उन्हें पहले से महाराजश्री ने कुछ आश्वासन दे रक्खा था और साथ ही जालन्धर में स्थापित वेजीटेरियन सोसाइटी को सुदृढ़ और विशाल रूप देना था इसलिए जालन्धर का चातुर्मास स्वीकृत कर लिया।

वार्षिकोत्सव के पश्चात् पंचकूला से विहार कर महाराजश्री बनूड़, राजपुरा आदि क्षेत्रों में धर्म प्रचार करते हुए दस बारह दिन में पटियाला पधार गये। यहां की जनता ने महाराश्री का भव्य स्वागत किया। यहां पर दूसरे दिन से महाराजश्री के प्रवचन प्रारम्भ हुए। कुछ दिनों पश्चात महाराजश्री ने वेजीटेरियन सोसाइटी के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट किये।

परिणाम स्वरूप यहां पर भी श्री प्रेम वेजीटेरियन सोसायटी की स्थापना हो गई। श्री रोशनलाल जी दीवानअग्रवाल इसके अध्यक्ष और बाबू मुकन्दी-लाल जी जैन इसके प्रधान मंत्री बने। सोसायटी ने अपने उद्देश्यों को क्रियात्मक रूप देना प्रारम्भ कर दिया। यहां पर महाराजश्री के दो सार्वजनिक प्रवचन किले के बाहर खुले मैदान में हुए। इन प्रवचनों में दो तीन हजार जनता की उपस्थिती रोज होती रही। पटियाला से विहार कर महाराजश्री कल्याण होते

हुए नाभा पधारे। यहां पर महाराजश्री के पांच छः सार्वजनिक प्रवचन हुए। यहां मलेरकोटला के पच्चीस तीस भाई महाराज श्री की सेवा में आये और उन्होंने महाराजश्री से अपना क्षेत्र स्पर्शने की प्रार्थना की। उन्होंने यह भी कहा कि हमारे क्षेत्र में अमोलक मुनि व चन्दन मुनि आदि तीन तेरहा पंथी साधु आये हुए हैं।

जो पांच छः अपनी बिरादरी के भाई बिरादरी से मनमुटाव रखते हैं, वे उनके पास जाते रहते हैं। इसलिये अपने भाइयों को संभालने के लिये आप श्री का मलेरकोटला पधारना आवश्यक है। महाराज श्री ने इस विनती को मानकर मलेरकोटला को विहार कर दिया। एक रात मार्ग में बिता कर दूसरे दिन मलेरकोटला पधार गये। स्थानीय जनता ने महाराजश्री का सोत्साह स्वागत किया।

मलेरकोटला में महाराजश्री के प्रवचन अनाजमंडी में प्रारम्भ हुए। तेरापंथी साधु भी जहां महाराजश्री का प्रवचन होता था, वहां पास ही के मकान में ठहरे हुए थे। महाराजश्री ने दान, दया आदि विषयों पर ओजस्वी प्रवचन करते हुए बताया कि जो तेरा पंथी लोग दीन दुःखी अपंगों को दान देने में पाप बतलाते हैं, यह उनकी अपनी कल्पित मान्यता है। भगवान महावीर स्वामी का सिद्धान्त यह नहीं है। जो लोग अपने खाने पीने में तो धर्म और दूसरों को खिलाने पिलाने में पाप मानते हैं, वे लोग स्वोदरपोषी व आपा पंथी हैं। महाराज श्री ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि ऐसी कल्पित मान्यता को मानने वाले जो साधु यहां पर ठहरे हुए हैं, यदि वे इस विषय पर चर्चा करना चाहें तो मैं इसके लिये सहर्ष तय्यार हूं।

इस पर दूसरे ही दिन वे तेरा पंथी साधु वहां से नौ दो ग्यारह हो गये। कुछ दिन पश्चात् तेरा पंथी साध्वियां भी यहां पर आईं। उनके साथ एक तेरा पंथी भाई भी था। वह महाराजश्री के पास आया, और महाराजश्री से कुछ चर्चा करने लगा।

उसने यह बताया कि शास्त्र में असंजति का जीवन वान्छना पाप है।

अर्थात् पंच महाव्रत धारी साधु के सिवा सभी जीव असंजति हैं। उनके जीवित रहने की इच्छा करना पाप है। महाराजश्री ने फरमाया कि यह उल्लेख कौन शास्त्र में है। इस पर उसने अपनी जेब से एक कागज निकाला और उसे पढ़ कर सुनाया, और बोला कि सुयगड़ांग जी सूत्र के अमुक अध्याय और अमुक गाथा में यह उल्लेख है।

महाराजश्री ने कहा तुम सुयगडांग जी सूत्रका स्थल निकाल कर दिखाओं।

वह बोला—शास्त्र लाइये मैं निकाल देता हूं।

महाराजश्री ने फरमाया—हमें शास्त्र लाने की क्या आवश्यकता है।

यह तो आप ही का पक्ष है। आप इसे सिद्ध करें। तब वह भाई अपनी साध्वियों के पास से सुयगडांग जी सूत्र लाया, और एक गाथा निकाल कर बतलाने लगा।

महाराजश्री ने फरमाया कि गाथा को बाँच कर इसका अर्थ बतलाओ।

उसने कहा—कि इस गाथा का अर्थ तो आप ही करदें। अन्त में महाराजश्री ने उस गाथा का वास्तविक सही सही अर्थ करके बतलाया कि इस गाथा का अर्थ 'असंजति जीवों का जीना नहीं बांछना' ऐसा नहीं है। वास्तव में इसका अर्थ असंजति जीवन की इच्छा नहीं करना है।। अर्थात् असंजति भोग विलास इन्द्रिय पोषण रूप जो गृहस्थों का विलासी असंजति जीवन है, अपना ऐसा असाधु जीवन की इच्छा न करें। क्योंकि साधु ने ऐसे असंयम जीवन का साधु व्रत धारण करते समय त्याग कर दिया है।

उस समय अपने कई प्रमुख भाई भी बैठे हुए थे। उन्हें महाराजश्री ने बताया कि ये लोग इस प्रकार अर्थ का अनर्थ कर 'शास्त्र' का 'शस्त्र' बना डालते हैं। वह तेरा पंथी भाई भी महाराजश्री की बात को मान गया, कि इसका यही ठीक अर्थ है कि असंजम जीवन की वाञ्छा करना पाप है।

एक दिन यहां स्थानीय जैन बिरादरी की जनरल मीटिंग हुई। जिन भाइयों का बिरादरी से मन मुटाव था, उन्हें समझाने की चेष्टा की गई। और

महाराजश्री से चातुर्मास की विनती की। महाराजश्री ने फरमाया कि मैंने तो सुखे समाधे जालन्धर का चातुर्मास मान रखा हैं।

भाइयों ने निवेदन किया कि यदि हम जालन्धर की विरादरी से यहाँ के चातुर्मास की स्वीकृत ले लें तब तो आपश्री को यहां चातुर्मास करना स्वीकार है।

महाराजश्री ने कहा कि मुझे तो कोई आपत्ति नहीं।

इस पर स्थानीय विरादरी के तीस पैंतीस लोग मोटर लेकर जालन्धर पहुँचे। और उन लोगों ने वहां की विरादरी से महाराजश्री के चातुर्मास की मांग की। तब जालन्धर के भाइयों ने उत्तर दिया कि हम विरादरी की मीटिंग बुला कर तथा जैनेतर भाइयों से परामर्श कर इसका उत्तर दे सकेंगे। तदनुसार उसी दिन मीटिंग बुलाई गई। जालन्धर की विरादरी और जैनेतर भाइयों ने चातुर्मास देने में असमर्थता प्रकट की जिससे मलेरकोटला के भाइयों को निराश होकर लौटना पड़ा। उन लोगों ने मलेरकोटला आकर सारा वृत्तांत महाराज-श्री को सुना दिया।

महाराजश्री मलेरकोटला से विहार कर अहमद गढ़ मण्डी पधारे, यहाँ महाराजश्री ने एक सार्वजनिक प्रवचन हाई स्कूल में दिया, जिसमें जनता ने तथा हाई स्कूल के विद्यार्थियों ने हजारों की संख्या में उपस्थित होकर महाराज श्री के प्रवचन का लाभ उठाया। महाराजश्री के दो तीन प्रवचन स्थानक के सामने मैदान में हुए जिनमें हाई स्कूल के अध्यापक गण, विद्यार्थी तथा स्थानीय जनता ने हजार डेढ़ हजार की संख्या में भाग लिया। यहां से विहार कर महाराज़श्री दूसरे दिन लुधियाना पधार गये। यहां पर उपाध्याय (वर्तमान आचार्य) श्री आत्माराम जी महाराज पहले ही से विराजमान थे। यहां से विहार कर महाराजश्री तीन दिन में फगवाड़ा पधारे। फगवाड़े में आपके दो तीन प्रवचन हुये। फिर यहां से विहार कर जालंधर छावनी पधारे।

यहां से दूसरे दिन प्रातः विहार कर जालन्धर नगर पधारे। स्थानीय जैन और जैनेतर जनता ने कई हजारों की संख्या में स्वागतार्थ सामने आकर महा-राजश्री का भव्य स्वागत किया।

जालंधर चातुर्मास

(सं० २००१)

इस प्रकार महाराजश्री ने वीर संवत् २४७० विक्रमी संवत् २००१ सन् १९४४ का चातुर्मास करने के लिए जालन्धर नगर में पदार्पण किया। लाला वंशी लाल जी खत्री ने महाराज कपूरथला का एक विशाल महल खरीदा हुआ था। महाराजश्री चातुर्मासार्थ उसी में विराजे। उपस्थित जनता को महाराज श्री ने लगभग आधे घन्टे तक धर्मोपदेश दिया। फिर जनता महाराजश्री से मांगलिक पाठ सुनकर सहर्ष अपने-अपने स्थान को विदा हुई।

दूसरे दिन से इसी महल में महाराजश्री के प्रवचन प्रारम्भ हुये। इन व्याख्यानों में ढाई तीन हजार जनता प्रतिदिन उपस्थित होती थी। इस महल का दर्वाजा एक ही था जिसमें से निकलने में लोगों को आधा पौना घंटा लग जाता था। इससे जनता को बड़ी कठिनाई होती थी। कुछ दिनों बाद महल के मैदान में बहुत से मकोड़े शुरू हो गये। इसपर महाराजश्री ने फरमाया कि मैं यहां पर प्रवचन नहीं करूंगा, जिससे हजारों जीवों का हनन हो। व्याख्यान तो दया के लिए है. इसलिये यहां व्याख्यान नहीं हो सकता।

इसलिये इस महल से आध फर्लांग दूर अजीत पूरा मुहल्ले के खुले मैदान में महाराजश्री के प्रवचनों का प्रबन्ध किया गया। इन प्रवचनों में चार पांच हजार जनता उपस्थित होती थी।

व्याख्यान स्थान के पास ही लकड़ियों की दो टालें थीं। व्याख्यान के समय लकड़ियाँ फाड़ने की खट खट से व्याख्यान में गड़बड़ होती थी, इसलिये लाला वंशी लाल जी खत्री ने टाल वालों से कहा कि आप कृपा करके व्याख्यान के समय लकड़ियाँ फाड़नी बंद कर दें ताकि व्याख्यान में गड़बड़ न

हो । इस पर उन लोगों ने सहर्ष व्याख्यान के समय लकड़ियाँ फाड़नी बंद कर दीं । बाद में इसी स्थान पर विशाल पंडाल की व्यवस्था की गई ।

कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर महाराज ने श्री कृष्ण महाराज के जीवन पर बड़ा प्रभावशाली भाषण दिया । इस प्रवचन में सात आठ हजार जनता उपस्थित थी । इस प्रवचन से जनता अत्यन्त प्रभावित व प्रसन्न हुयी ।

कुछ समय पश्चात् पर्यूषण महापर्व भी आ गये । इस अवसर पर महाराजश्री ने श्री अन्तगढ़ सूत्र का वाचन किया, जिसे जैनेतर लोगों ने भी बड़े उत्साह व प्रेम से सुना और कहा कि ऐसे त्याग और प्रेममय बोधप्रद शास्त्र को सुनने का हमें यह पहला अवसर मिला है ।

पर्यूषण महापर्व में आठ दिनों तक व्याख्यान में उपस्थित जनता ने ब्रह्मचर्यव्रत पालन तथा सिनेमा आदि न देखने का नियम लिया । संवत्सरी के दिन जैन और जैनेतर जनता ने बड़ी भारी संख्या में दया व पोषण किये । दो हजार के लगभग जैनेतर स्त्री पुरुषों ने भी जैन विधि के साथ इस दिन उपवास (व्रत) किये । इस प्रकार संवत्सरी का दिन तपस्यादि क्रियाओं द्वारा बड़े आनन्दपूर्वक सम्पन्न हुआ । श्रोताओं की उपस्थिति बढ़ते बढ़ते दस बारह हजार पर पहुँच गयी ।

महाराजश्री का एक सार्वजनिक प्रवचन आर्यसमाज के कन्या महाविद्यालय में हुआ जिसमें जनता तथा कालिज की छात्राओं ने हजारों की संख्या में भाग लिया ।

यहाँ पर श्री प्रेम वेजीटेरियन सोसाइटी की ओर से विधवा आदि निराश्रित बहिनों की आजीविका के लिए एक दस्तकारी स्कूल खोला गया । इसमें अनेक प्रकार के शिल्प व उद्योग सिखाये जाने लगे । सोसाइटी ने धन देने की अपेक्षा उन्हें शिल्प सिखा कर अपने पैरों पर खड़ा कर देना अधिक उपयोगी समझा क्योंकि धन की सहायता पाकर निरुद्यमी आलसी और उत्साह हीन हो जाते हैं । धन की सहायता स्थायी भी नहीं होती है । इसलिए ऐसी संस्थाओं की बड़ी भारी आवश्यकता व उपयोगिता है ।

यहाँ पर वेजीटेरियन सोसाइटी के साप्ताहिक अधिवेशन प्रति रविवार को होते थे। इन अधिवेशनों में मांस निषेध पर भाषण, कविता, निबन्ध आदि होते थे। इस संस्था के प्रचार का जनता पर इतना अधिक और स्थायी प्रभाव पड़ा कि सुक्खूमल नामक एक खत्री भाई की विस्कुट बनाने की बेकरी थी। उसकी बेकरी में लगभग आधा पौन मन अंडे प्रतिदिन काम में आते थे। इस पर उसने महाराजश्री से यह प्रतिज्ञा की कि यदि मेरा लड़का मान गया तो मैं विस्कुटों में अंडों का प्रयोग बिल्कुल बन्द कर दूँगा अन्यथा आधी कमी तो कर ही दूँगा। वे स्वयं मांस अण्डा शराब आदि का परित्याग कर सोसाइटी के मैम्बर बन गये और इस संस्था को आर्थिक सहायता भी देते रहे।

यहाँ पर दुर्गाराम ओखा नामक एक ब्राह्मण था। वह मांस, अण्डा, शराब आदि का अत्यधिक सेवन करता था। उसकी एक मित्रमंडली भी थी, जो बटेर, मुर्गा, कबूतर आदि जीवों को मार कर उनका भक्षण कर तथा शराब का सेवन कर ऐश किया करते थे। इस पार्टी के प्रमुख श्री दुर्गाराम ओखा ने मांस आदि दुर्व्यसन त्याग दिये और वह सोसाइटी के मैम्बर बन। गये उनके साथियों पर भी इसका प्रभाव पड़ा। एक दिन महाराजश्री के पास एक नवयुवक खत्री आया और कहने लगा कि मैं मांसाहार का बड़ा भारी शौकीन व आदि था। मेरे हृदय पर किसी के व्याख्यान या लैक्चर आदि का प्रभाव नहीं पड़ता था। मेरे मित्र भी मुझे इस सम्बन्ध में बहुत समझाया करते थे। एक दिन तो मेरा एक मित्र मुझे कसाईखाने में ले गया। उसने मुझे वहाँ कत्ल किये जा रहे मैं में शब्दों से करुण क्रन्दन करते व तड़पते हुए प्राणियों का करुण व बीभत्स व भयंकर दृश्य दिखाया और कहा कि तुम जिन प्राणियों का मांस भक्षण करते हो वे किस प्रकार तड़प-तड़प कर चिल्लाते हुए कत्ल किये जा रहे हैं। क्या तुम्हें इस हिंसात्मक कृत्य को देख कर भी मांस छोड़ने का मन नहीं करता। मैंने कहा कि हां ऐसा ही है। यह है मेरे पापमय जीवन की पूर्वक था।

अब मैंने आपके मांस निषेधात्मक कई प्रवचन सुने हैं। उनसे प्रेरित व प्रभावित होकर आज से मांस भक्षण न करने की प्रतिज्ञा करता हूँ।

सज्जनों ! यह है मधुर वाणी का प्रभाव। बड़े बड़े कठोर प्राणी भी सद्-वाणी को सुनकर दयाशील और शुद्ध सात्विक आहारी बन जाते हैं।

यहां पर एक मोटर कार कम्पनी के बड़े व्यापारी सिंधी महाशय ने भी मांस व अंडे का परित्याग कर वेजीटेरियन सोसाइटी की सदस्यता स्वीकार करली।

एक दिन महाराजश्री के पास एक जज साहब आये। उन्होंने बताया कि मैं स्वामी तेजासिंह का अनुयायी हूँ। महाशय तेजासिंह जी कुछ समय पहिले मांसाहार-विरोधी थे और मांसाहार का बड़े जोर शोर से खंडन किया करते थे। वह लोगों से माँस अंडे का परित्याग भी कराया करते थे।

किन्तु कुछ दिनों से उनके विचार बदल गये हैं। पहिले वह जहां मांस का खंडन करते थे अब मांस का मंडन करने लगे हैं। इन्हीं महात्मा ने "विलुप्त धर्म प्रभाकर" नामक एक पुस्तक प्रकाशित की है जिसमें वेद शास्त्र स्मृति आदि के अनेक प्रमाण दे कर मांसाहार का समर्थन किया गया है। उस में यह भी सिद्ध किया गया है कि पहिले प्रायः सभी मनुष्य मांस खाते थे। यह जो मांस छोड़ते जा रहे हैं उसका कारण जैन संस्कृति का ही प्रभाव है। उन्होंने वह पुस्तक भी महाराजश्री की सेवा में अर्पण की।

महाराज श्री ने पुस्तक का अवलोकन किया। इस पुस्तक में लेखक ने कुरान, पुराण, स्मृति आदि के प्रमाण देकर मांस खाने को बड़ी दृढ़ता से समर्थन किया था।

बात तो यह है कि जब मनुष्य के पाप कर्मोदय होता है, तब लोगों की सद्-बुद्धि भी उनका साथ नहीं देती। क्षण भर में मनुष्य के सद्विचार पापपूर्ण विचारों में परिवर्तित हो जाते हैं। कैसे आश्चर्य और दुख की बात है कि जिस तेजासिंह महात्मा ने हजारों मनुष्यों में मांसाहर का परित्याग कराया था, वही महात्मा बुद्धि विभ्रम के कारण मांस खाने का उपदेश देने लगे। जहां

पहिले उसे शास्त्रों में मांस निषेध के अनेक प्रमाण दृष्टिगोचर होते थे अब उसे मांसभक्षण के समर्थन में अनेक प्रमाण दिखाई देने लगे। यह है कर्म विडम्बना।

एक दिन दोपहर को महाराज श्री के पास एक सनातनी संन्यासी महात्मा बैठे हुए थे। वह महात्मा प्रायः प्रतिदिन महाराजश्री का व्याख्यान श्रवण किया करते थे। इनके हृदय में महाराजश्री के प्रति व जैन धर्म के प्रति बड़ी भारी आस्था थी। उन्होंने जैन धर्म को समझने के लिए "नव तत्व" नामक पुस्तक का पठन भी प्रारम्भ कर दिया और समय समय पर जैन धर्म के विविध सिद्धान्तों के संबंध में भी महाराजश्री से पूछते रहते थे।

आप महाराजश्री के व्याख्यान श्रवणार्थ नगर से बहुत दूर अपनी कुटिया से आते थे। आपका जीवन बड़ा सन्तोषी था।

ठग ठगा गया

जहां जिज्ञासु जन-बुद्धि से आत्मकल्याणार्थ साधु संगति और शास्त्र श्रवण करने के लिये आते हैं वहां पर कई लोभी व दंभी (ठग) लोग भी साधुओं के पास अपना उल्लू सीधा करने के विचार से आ जाते हैं। ऐसा एक प्रसंग महाराजश्री के चातुर्मास में भी उपस्थित हुआ। यह घटना इस प्रकार है--

एक दिन उक्त संन्यासी महात्मा जी की उपस्थिति में एक सिक्ख भाई महाराजश्री के पास आया। उसने महाराजश्री को नमस्कार करते हुऐ कहा कि मेरा एक मित्र जैनी था। हम दोनों पेशावर की ओर काम करते थे। मेरे जैनी मित्र के पास पांच सात हजार रुपये थे। वह मरते समय कह गया कि तुम गुजरांवाले चले जाना। वहां पर श्री बा० मुलखराज जी जैन बी०ए० से मिलकर इन रुपयों की सम्मति लेना कि इन रुपयों की क्या व्यवस्था की जाय? इस संबंध में वह जैसा कहें वैसा कर लेना।

अपने उस मित्र के निर्देशानुसार मैं श्री बा० मुलखराज जी के पास गुजरांवाले गया और उनकी इस विषय सम्मति मांगी। इस पर उन्होंने कहा कि श्री प्रेमचन्द जी महाराज का चातुर्मास जालंधर में है। तुम महा-

राजश्री की सेवा में जाओ। इसके संबंध में उनके विचार लो जैसा आदेश देंगे वैसा कर लिया जायगा।

इसलिए अब मैं अपना कारोबार छोड़कर आप श्री की सेवा में उपस्थित हुआ हूँ। मैं हाजिर तो आप श्री के व्याख्यान में ही हो जाता, परन्तु मार्ग में मेरी मोटर खराब हो गई, इसलिए व्याख्यान के समय मैं पहुँच न सका। सौभाग्य से आपके दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हो गया। मेरे पास जो मेरे मित्र के रुपये हैं, अब मैं उन्हें अपने पास रखना नहीं चाहता। आप श्री इस संबंध में जैसी आज्ञा दें वैसा किया जाय।

इस पर महाराजश्री ने फरमाया कि हम तो साधु हैं, इसलिए रुपये आदि के बारे में किसी प्रकार का दखल नहीं दे सकते। यह कार्य तो गृहस्थों का है, आप इस संबंध में स्थानीय लाला दौलतराम जी जैन व लाला दीनानाथ जी से बात-चीत कर सकते हैं, उनको दोपहर के पश्चात् याद कर लिया जायेगा। उसने कहा ठीक है, मैं दोपहर के बाद आऊंगा। इतना कह कर वह चल दिया।

सीढ़ियों से थोड़ा सा नीचे उतरा था कि झट वापस आकर बोला कि मेरी कार बाहर सड़क पर खड़ी है। मुझे आवश्यक कार्य के लिए दस रुपए चाहिए। सो आप कृपा करके दे दीजिए। अभी थोड़ी ही देर में मैं आप को दे दूंगा।

महाराज श्री ने फरमाया कि हम तो जैन साधु हैं। रुपया पैसा आदि की तो बात ही क्या सुई तक भी अपने पास नहीं रखते। इतना सुनते ही वह बोला, खैर कोई बात नहीं और नमस्कार कर चलता बना।

जो संन्यासी महात्मा पास में बैठे थे, उन्होंने कहा, महाराज जी यह तो कोई ठग दिखाई देता है। उसके रंग-ढंग को देखते हुए महाराजश्री को भी ऐसा ही लगा कि वास्तव में वह कोई ठग ही प्रतीत होता है। बस उसका वापिस लौट कर आने का तो काम ही क्या था। वह तो अपना उल्लू सीधा करना चाहता था सो वह न हो सका। हां यदि कोई परिग्रहधारी धन-दौलत

रखने वाला महात्मा होता तो सम्भव था कि वह उसके चंगुल में फंस जाता, किन्तु, यहां तो भगवान महावीर ने साधु का जीवन ही अपरिग्रही वतलाया है, साधु होकर परिग्रह करे वह साधु कैसा, साधु का जीवन तो अकिंचन है।

वास्तव में ऐसा ज्ञात होता है कि उस ठग ने समझा होगा कि इन महात्मा के पास हजारों बड़े-बड़े पूंजीपति नर-नारी व्याख्यान श्रवणार्थ आते हैं। इनके चरणों में बड़ी-बड़ी रकमें भेंट चढ़ाते होंगे। इसलिए इनसे मेरा उल्लू सीधा हो सकता है। किन्तु उसके दुर्भाग्य से ऐसा न हो सका, वेचारे को निराश ही लौटना पड़ा। दूसरे दिन महाराजश्री ने इस घटना का उल्लेख अपने व्याख्यान में किया, तो सुन कर सब लोग उसकी धूर्तता पर बहुत हंसे और चकित हुए। यह धूर्त ठग लोग साधुओं तक को भी ठगने की चेष्टा करते हैं। दूसरे लोगों ने वताया कि यह व्यक्ति वाजार में कई स्थानों पर ऐसी ठगी कर चुका है, इसका तो पेशा ही यही है।

यहां की श्री प्रेम वेजीटेरियन सोसाइटी का प्रधान श्री लाला दौलत राम जी सूद आर्य को नियुक्त किया गया। आप जालंधर के आर्य समाज में एक वड़े प्रतिष्ठित व्यक्ति माने जाते थे। प्रत्येक रविवार को आपके घर पर ही आर्य समाज का सत्संग हुआ करता था। फिर भी आप येन-केन-प्रकारेण समय निकाल कर महाराजश्री के व्याख्यान में उपस्थित हो जाया करते थे। महाराजश्री के प्रति आपको वड़ी श्रद्धा थी। किन्तु उनके कई साथियों को महाराजश्री के प्रति उनकी यह श्रद्धा के भाव भाये नहीं क्योंकि श्री ला० दौलतराम जी आर्यसमाज के भी प्रधान थे, इसलिए उनकी यह वात उन लोगों को खटकती थी। वे समझते थे कि जव आर्य समाज के प्रधान ही श्री प्रेमचन्द जी महाराज की ओर झुकते जा रहे हों, तो आर्यसमाज के दूसरे नर-नारियों पर इसका प्रभाव क्यों न पड़ेगा।

लाला दौलतराम जी ने एक दिन महाराजश्री से कहा कि जव मैं आपके त्यागमय और परोपकारी जीवन के सम्वन्ध में अपने साथियों के साथ चर्चा करता हूं तो उनमें से कइयों को मेरी वातें नहीं जंचती। वे मुझे कहते हैं कि

स्वामी श्री प्रेम चन्द जी के त्यागमय जीवन की जो बातें आप हमें सुनाते हो, आप अभी उसे वास्तविक रूप से नहीं समझे। स्वामी श्री प्रेम चन्द जी अभी अपनी भूमिका तैयार कर रहे हैं। इसीलिए वे आने वाले लोगों से किसी प्रकार की भेंट चढ़ावा आदि नहीं लेते। किन्तु देख लेना कुछ समय बाद जब नगर के नर-नारी इनकी ओर पूरी तरह आकर्षित होकर बड़ी संख्या में इनके प्रति श्रद्धाशील हो जायेंगे, तब वे राधा स्वामी मत के गुरु (जिनका आश्रम व्यास में लाखों करोड़ों की संपत्ति से बना हुआ है) की भांति ये भी जालन्धर में अपना मठ बना कर गद्दीधर गुरु बन बैठेंगे। तब जनता का खूब चढ़ावा चढ़ने लगेगा। और ये बड़े आलोद-प्रमोद के साथ विलाहमय जीवन व्यतीत करने लगेंगे।

इस पर मैंने (ला० दौलत राम जी ने) अपने साथियों से कहा कि आप की यह धारणा सर्वथा मिथ्या है। उनका जीवन वास्तविक रूप से त्यागमय है, उसके प्रति ऐसी भ्रान्ति आप लोगों के हृदय में नहीं होनी चाहिए।

एक दिन यहां के मुख्य-मुख्य जैन भाई मिलकर महाराजश्री के पास आये, और निवेदन करने लगे कि आपके सार्वजनिक प्रवचनों में नगर के हजारों नर नारियों को भाग लेते देख कर यहां के कुछ ब्राह्मणों को बड़ी ईर्ष्या हो रही है। उन्होंने अपनी मीटिंग बुलाई है, उसमें निश्चय किया गया है कि स्वामी जी से प्रश्नोत्तर किये जायें और उन्हें निरुत्तर, हतोत्साह और अपमानित कर दिया जाय जिससे जनता का उनके प्रति आकर्षण अपने आप ठंडा पड़ जायगा।

यह सुनकर महाराजश्री ने उन भाइयों से कहा, आप लोग किसी प्रकार की चिन्ता न करें, जो प्रश्नोत्तर होंगे, उनका उचित रूप से समाधान कर दिया जायगा, यह मेरी जिम्मेदारी है। आप लोग इस सम्बन्ध में सर्वथा निश्चिन्त रहें। जैन सिद्धान्त ऐसा कोई लचर कल्पित और निराधार नहीं है कि जिसके पास किसी के प्रश्न का उत्तर न हो। जैन सिद्धान्त अनेकान्तवाद है, यह सब वस्तुओं का समन्वय और संतुलन ठीक-ठीक रूप से करता है। केवल इसे वास्तविक रूप से समझ लेने और जनता के समक्ष रखने की योग्यता की आवश्यकता है। मैं यूं ही सार्वजनिक व्याख्यान के मैदान में नहीं उतरा हूं,

पहले मैंने व्याख्यानदाता के सामने आने वाली समस्याओं को भली-भांति समझ लिया है। यह सुन कर उन भाइयों को बहुत संतोष और धैर्य प्राप्त हुआ।

कुछ दिन बाद संस्कृत के सुप्रसिद्ध ज्ञाता पं डूंगरमल जी ब्राह्मण सभा की ओर से महाराजश्री के पास आये, और उन्होंने महाराजश्री से कुछ वार्तालाप प्रारम्भ किया। इस वार्तालाप के बीच में उन्होंने महाराजश्री से श्री कृष्ण जी के सम्बन्ध में चर्चा चलाई। वे कहने लगे कि हमने सुना है कि आप जैन लोग भगवान कृष्ण को अवतार नहीं मानते। जैनों की ओर श्री कृष्ण के सम्बन्ध में और भी अनेक भ्रान्तिपूर्ण बातें सुनने में आती हैं।

महाराजश्री ने फरमाया कि हम तो श्री कृष्ण जी को बड़े ही पुण्यशाली मर्यादाशाली पुरुषोतम मानते हैं। जैन शास्त्रों में श्री कृष्ण जी के सम्बन्ध में अनेक स्थानों पर चर्चा आई है, जिनमें इनकी पवित्र गाथाओं का वर्णन आता है। जैन शास्त्रों में त्रेसठश्लाघनीय महापुरुषों का नाम आता है, उनमें से श्री कृष्ण भी एक हैं।

जैन सिद्धान्तानुसार श्री कृष्ण जी बड़े ही गुणवान, आदर्श महापुरुष और मोक्षभावी माने गये हैं। इस प्रकार श्री कृष्ण जी के सम्बन्ध में उत्तर पाकर पंडित जी बहुत सन्तुष्ट हुए। उन्होंने आगे कोई प्रश्न नहीं किया। इतने मात्र से ही सन्तुष्ट होकर पंडित जी वापस चले गये। यहां पर आर्य समाज का वार्षिक महोत्सव मनाया जा रहा था। उस अवसर पर बड़े-बड़े विद्वान भजनीक आदि आर्य समाज की ओर से बुलाये गये थे। इस वार्षिक महोत्सव को सफल बनाने के लिए आर्यसमाज की ओर से अनेक प्रकार के आयोजन किए गये। वार्षिक उत्सव के दिन जब अधिवेशन की कार्यवाही आरम्भ होने वाली थी, उस समय आर्य समाज के प्लेट फार्म पर आर्य समाज के कुछ विद्यार्थी उपदेशक, संगीतज्ञ व नगर के थोड़े से स्त्री पुरुष ही उपस्थित थे।

यह देखकर आर्यसमाज के प्रचारक ने लोगों से पूछा कि आर्य समाज का वार्षिक महोत्सव हो, और उपस्थिति इतनी स्वल्प संख्या में है इसका क्या कारण है। तब वहीं पर बैठे कुछ लोगों ने कहा, यहां पर जैन साधु स्वामी श्री

प्रेमचन्द जी आये हुए हैं, उनके नित्य प्रति सार्वजनिक व्याख्यान होते हैं। जनता वड़ी भारी संख्या में वहां जाती है, इसलिए यहां उपस्थिति कम है।

यह सुनकर आर्य समाज का वह प्रचारक क्रुद्ध हो उठा और वोला कि लोग किसके पास जाते हैं। इन जैनियों से तो मुसलमान ही अच्छे हैं।

सच है जव मनुष्य पक्षपात के कारण अन्धा वन जाता है, तव वह अपनी वुद्धि का संतुलन खो वैठता है। आर्य समाज के प्रचारक की ओर से कही गई यह वात जव महाराजश्री के सुनने में आई तो महाराजश्री को वड़ा विचार हुआ।

आर्य समाज के सेक्रेटरी प्रोफेसर अमोलक राम जी, जो कि स्थानीय प्रेम वेजीटेरियन सोसायटी के भी सेक्रेटरी हैं, सन्ध्या समय महाराजश्री के पास आये। तव महाराजश्री ने उन्हें कहा कि आपके आर्य समाज के प्लेट फार्म पर आपके प्रचारक ने कहा कि जैनियो से तो मुसलमान ही अच्छे हैं। क्या ऐसा कहना उचित है। मैं तो जनता को संगठन और विश्व-प्रेम का संदेश दे रहा हूं, और आपकी ओर से ऐसा विरोधात्मक प्रचार हो रहा है, कहां तक ठीक है।

यह सुनकर प्रोफेसर साहव वहुत लज्जित हुए। मारे शर्म से उनकी गर्दन नीचे झुक गई। उन्होंने वड़े विनम्र शब्दों में इस घटना पर खेद प्रकट किया और महाराजश्री से क्षमा याचना की।

प्रोफेसर साहव का जीवन वड़ा ही भद्र विनम्र, व सदाचारशील है। आप एक उच्चकोटि के प्रोफेसर होते हुए भी वड़ा ही सीधा-सादा जीवन व्यतीत करते हैं।

एक दिन महाराजश्री का प्रवचन समाप्त हो जाने पर एक आर्यसमाजी पंडित खड़े होकर वोले कि जैनियों को शंकराचार्य ने ऐसा पछाड़ा था कि ये लोग सिर नहीं उठा सकते थे। ये लोग अपना प्रवचन मकान के अन्दर ही करते थे, किन्तु अव फिर ये लोग वड़े साहस के साथ सिर उठाने लगे हैं। और अपने सिद्धान्त का खुला प्रचार आम जनता में करने लगे हैं।

उसने व्याख्यान में बोलने के लिए समय मांगा, कि मैं कुछ प्रश्न करना चाहता हूँ। महाराजश्री ने बड़ी गम्भीरता के साथ शान्तिपूर्वक फरमाया कि मैंने आपके विचार सुन लिये हैं, आप या तो नया प्लेटफार्म बनाकर आम जनता के सामने शास्त्रार्थ कर सकते हैं या फिर जहाँ पर मैं ठहरा हुआ हूँ, जितने भी चाहे अपने साथियों के साथ वहाँ पर मुझ से बात चीत कर सकते हैं। इन पंडित महोदय का किन्हीं महत्वपूर्ण विषयों पर प्रश्नोत्तर करने का कोई विचार नहीं था। उन्हें तो महाराजश्री के बढ़ते हुए प्रभाव को देखकर दुःख हुआ था। और सभा में गड़बड़ करनी चाहते थे। वे उक्त दोनों बातों में एक भी बात न मान कर अपना सा मुंह लेकर चले गये।

जालन्धर के इस चातुर्मास में कुछ उपयोगी चुने हुए भजन और श्री प्रेम वेजीटेरियन सोसाइटी के नियमों की एक पुस्तिका प्रकाशित होने वाली थी। इसमें संग्रह किये गये भजनों में एक भजन यह था—

प्रेमी बनकर प्रेम से ईश्वर के गुण गायाकर।
मनमंदिर में गाफिला झाड़ू रोज लगाया कर॥

इस भजन का एक पद यह भी था—

देखो कृपा उस ईश प्रभु की वेदों का प्रचार किया।

रतन चन्द जी जैन जब इस पुस्तिका का प्रूफ लेकर महाराजश्री के पास आये, तो महाराजश्री ने प्रूफ को देख कर इस भजन के उक्त पद को उसमें से निकलवा दिया।

जब इस प्रकार संशोधित प्रूफ में से आर्य समाजी प्रोफेसर अमोलक राज जी को यह पद निकला हुआ दिखाई दिया, तो उन्हें बड़ा विचार हुआ। और उन्होंने रतन चन्द जी जैन से पूछा कि यह पद क्यों निकाल दिया गया, तो उन्होंने कहा कि यह पद महाराजश्री के आदेशानुसार निकाला गया है। इ : पर प्रोफेसर अमोलक राज जी को ऐसा लगा कि महाराजश्री को वेदों के प्रचार की बात नहीं गमी।

इसलिए प्रोफेसर अमोलक राज जी महाराजश्री के पास आये और बोले

कि प्रकाशित होने वाली पुस्तिका के भजन में से जो एक पद आपने निकलवा दिया हैं तो क्या आप वेदों के प्रचार को अच्छा नहीं समझते।

महाराजश्री ने बड़े प्रेम भरे शब्दों में कहा कि इस पद के निकालने का कारण यह नहीं है जो आप समझ रहे हैं। मुझे ज्ञात हुआ है कि इस प्रश्न को लेकर लोगों में कुछ भ्रान्ति उत्पन्न हो गई है। मेरी इस सम्बन्ध में कोई विरुद्ध भावना नहीं है। इस पद के निकालने में विशेष कारण है जिस पर आपको और हमें निष्पक्ष दृष्टि तथा शान्त चित्त से विचार करना चाहिए। बेसमझी से फैली हुई इस भ्रान्ति का कल के व्याख्यान में स्पष्टीकरण करने का विचार है, जिससे आप और जनता को वास्तविक स्थिति का ज्ञान हो जायगा। प्रोफेसर साहब इस प्रकार उत्तर पाकर सन्तुष्ट होकर चले गये।

दूसरे दिन व्याख्यान के समय जब बड़ी भारी संख्या में सब श्रोतागण उपस्थित हो गये। तथा श्री प्रोफेसर अमोलक राज जी व आर्य समाज के प्रधान दौलतराम जी सूद आदि भी बैठे थे, उस समय इस भ्रान्ति जनक समस्या का स्पष्टीकरण करते हुए महाराजश्री ने बड़े प्रभावशाली, जोरदार व स्पष्ट शब्द में कहा कि श्री प्रेम वेजीटेरियन सोसाइटी जालन्धर की ओर से एक पुस्तिका प्रकाशित हो रही है, जिसमें कुछ उपयोगी चुने हुए भजन व सोसाइटी के नियम दिये गये हैं। उसमें प्रकाशित होने वाले भजनों में से एक भजन का यह पद—

'देखो कृपा उस ईश्वर की वेदों का प्रचार किया।'

निकाल दिया गया है। इसको लेकर जनता में एक भ्रान्ति उत्पन्न हो गई है, क्या महाराजश्री को वेदों का प्रचार अच्छा नहीं लगता, जो इस पद को निकलवा दिया।

सज्जनों, इस सम्बन्ध में मैं आपसे यही कहना चाहता हूं कि मैंने जो यह पद निकलवाया है वह ठीक समझ कर निकलवाया है, और मैंने स्वयं ही निकलवाया है। मैं अब भी इसे अस्वीकार नहीं करता। किसी बात को विना विचार या सोचे समझे जनता में भ्रान्ति फैला देना उचित नहीं है। अब

मैं आपको उस पद के निकलवाने का विशेष कारण बतलाता हूं। आप ठंडे दिल और विचार पूर्वक सुनें—सारी स्थिति ठीक ठीक आपके सामने आ जायगी। उस निकाले हुए पद में कहा गया है कि—

देखो कृपा उस ईश्वर की वेदों का प्रचार किया। मैं आप लोगों से ही यह पूछता हूं कि क्या यह पद ठीक है ? जिसमें यह बताया गया है कि ईश्वर ने वेदों का प्रचार किया है। यह बात सुनकर लोग विचार में पड़ गये, जनता की ओर से कोई उत्तर नहीं मिला। तब महाराजश्री ने फरमाया कि वास्तव में ईश्वर वेदों का प्रचारक नहीं है, प्रचारक तो शरीर धारी बोलने वाले ज्ञान-शील मनुष्य ही होते हैं। आर्य समाज की भी यही मान्यता है कि अग्नि आदि चार ऋषियों को ईश्वर ने ऋग्वेद, यजुर्वेद आदि का ज्ञान दिया। इस बात से यह भली भांति सिद्ध हो जाता है कि अग्नि आदि शरीर धारी ऋषियों ने वेदों का प्रचार किया है न कि ईश्वर ने।

सज्जनों मैंने खंडनात्मक दृष्टि से कोई बात नहीं कही है, जो वास्तविक वस्तुस्थिति थी उसको बनाये रखने के लिए ही यह पद निकलवाया गया है।

आप लोगों को ज्ञात रहे कि प्रचार दो प्रकार से होता है। तहरीर या तकरीर से अर्थात् लिखित या मौखिक रूप में। ईश्वर में ये दोनों बातें नहीं हैं। क्योंकि तहरीर अर्थात् लेखन होता है हाथों से, और तकरीर अर्थात् भाषण होता है मुंह से, अर्थात् शब्दों के उच्चारण से और शब्द बनता है अक्षर समूह से। महान् वैयाकरण पाणिनी मुनि ने अपनी अष्टाध्यायी में स्पष्ट बताया है कि किस-किस अक्षर का उच्चारण किस-किस स्थान से होता है। जैसाकि—

इ ई चवर्ग अर्थात् च छ ज झ ञ और श इन अक्षरों का उच्चारण स्थान तालू है। टवर्ग अर्थात् ट ठ ड ढ ण और र ष और ऋ का उच्चारण स्थान मूर्धा है। लृ त वर्ग अर्थात् त थ द ध न और ल तथा स का उच्चारण स्थान दंत है।

इस प्रकार सभी अक्षरों के उच्चारण स्थान भिन्न-भिन्न हैं। तालु जिह्वा

आदि स्थान साकार के हो सकते हैं। अर्थात् शरीरधारी के ही हो सकते हैं। क्योंकि ये सभी पूर्वोक्त स्थान स्थूल शरीर के ही अवयव अर्थात् अंग है।

ईश्वर निराकार है अर्थात् शरीर से रहित है और कंठ आदि यह स्थान शरीर से सम्बन्धित हैं। जब ईश्वर के शरीर ही नहीं है तो पूर्वोक्त अक्षर उच्चारण करने के स्थान भी ईश्वर के नहीं हो सकते। अक्षरोच्चारण-स्थानों के अभाव में शब्द नहीं निकल सकता और शब्द के बिना प्रचार नहीं हो सकता। इससे यह बात भली भांति सिद्ध हो जाती है कि वेदों का प्रचार ईश्वर ने नहीं किया।

वचन द्वारा प्रचार करना यह एक स्थूल क्रिया है। इस प्रकार की स्थूल क्रिया निराकार ईश्वर में नहीं हो सकती। क्रिया साकार देशव्यापी और सकर्मक में हो सकती है। निराकार, सर्वव्यापी, निष्कर्मक में क्रिया नहीं होती। जब महाराजश्री ने इस प्रकार युक्तियुक्त ईश्वर में वेद-प्रचार की घटना घटित नहीं होती है, इसका समाधान किया तो एक आर्य समाजी पंडित ने व्याख्यान में उपस्थित विराट जन समुदाय में खड़े होकर आपत्ति उठाई और कहा कि यदि ईश्वर में क्रिया घटित नहीं होती, तो क्या क्रिया जड़ में होती है।

इस प्रकार के प्रश्न को सुनकर उपस्थित जनता बड़े आश्चर्य में पड़ी और इस बात की बड़ी उत्सुकता पूर्वक प्रतीक्षा करने लगी कि महाराजश्री इस प्रश्न का क्या उत्तर देते हैं।

महाराजश्री ने अविलम्ब बड़ी फुर्ती के साथ प्रश्न का उत्तर देते हुए उक्त पंडित जी को कहा कि उपरोक्त क्रिया न केवल जड़ में होती है और न केवल चेतन में, क्रिया जड़ और चेतन दोनों के मिलने से होती है।

महाराजश्री ने पंडित से कहा कि शरारत शराब में है या शराब पीने वाले व्यक्ति में। पंडित जी इस प्रश्न को सुनकर दुविधा में पड़ गये। यदि शरारत जड़ शराब में कहते हैं तो वह शरारत उस बोतल में होनी चाहिए, जिसमें शराब भरी है। किन्तु शराब की बोतल में नाचने कूदने की कोई शरारत दिखाई नहीं देती। यदि पंडित शरारत का अस्तित्व पीने वाले व्यक्ति में मानते हैं तो इसमें यह आपत्ति आती है कि जब तक शराब नहीं पी थी, तब तक उस

व्यक्ति में अस्त व्यस्त बोलना, नाचना, कूदना आदि की कोई शरारत नहीं थी। इस द्वन्द्व में पंडित जी ऐसे उलझे कि वे निश्चित रूप से कोई निर्णय नहीं कर पाये अर्थात् निरुत्तर हो गये।

अन्त में महाराजश्री ने बुलन्द आवाज से पंडित जी और जनता को सम्बोधित करते हुए फरमाया कि शरारत केवल शराब या शराबी में नहीं होती जड़ शराब और पीने वाला जो चेतन व्यक्ति है दोनों के मिलने से एक तीसरी वस्तु शरारत उत्पन्न होती है।

यह बात प्रत्यक्ष सत्य है। इसमें किसी शास्त्र के पन्ने उलटने या किसी पंडित की सम्मति लेने की कोई आवश्यकता नहीं। प्रत्यक्ष में किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती, इससे उपर्युक्त बात भली-भांति स्वतः सिद्ध हो जाती है कि कृत्रिम रूप स्थूल क्रिया जड़ और चेतन के मिलने से ही होती है।

महाराजश्री ने यह भी फरमाया कि पंखा जो घूमता है वह स्वयं अपनी क्रिया से नहीं घूमता। वह तो इलैक्ट्रिक (बिजली) की शक्ति से घूमता है। पंखे में स्वयं क्रिया नहीं है। यदि पंखे में स्वयं क्रिया होती तो बिना इलेक्ट्रिक करण्ट के भी पंखे में घूमने की क्रिया होनी चाहिए। किन्तु ऐसा देखने में नहीं आता। यदि बिजली के करेन्ट का कनक्शन काट दिया जाय, तो पंखा तत्काल बन्द हो जाता है। पंखे के घूमने की यह सारी क्रिया तो बिजली की पावर से ही हो रही है। यदि बिजली की पावर अधिक मात्रा में पंखे को मिली है तो पंखा अधिक तेज चलता है, यदि बिजली की पावर कम मात्रा में मिलती हैं तो पंखे में घूमने की क्रिया मन्द गति से होती है। बिजली का सम्बन्ध जब बिल्कुल टूट जाता है तो पंखे की घूमने क्रिया बिल्कुल बन्द हो जाती है। आत्मा में इधर उधर संक्रमण की जो क्रिया पाई जाती है, यह क्रिया केवल आत्मा की नहीं है। आत्मा तो वास्तविक दृष्टि से इन क्रियाओं से भिन्न है, ये क्रियाएं तो आत्मा की विभाव दशा रूप हैं। आत्मा की स्वाभाव दशा रूप नहीं, यदि स्थूल क्रियाओं का होना आत्मा का स्वभाव मान लिया जाय, तो उपरोक्त क्रियाएं मुक्त आत्माओं में भी होना चाहिए। किन्तु सैद्धान्तिक दृष्टि से यह बात युक्ति युक्त सिद्ध नहीं होती।

आत्मा में जो क्रिया देखने में आती है, यह क्रिया-स्पन्दन मन, वचन, काया आदि योगों के द्वारा होता है। ज्यों ज्यों मानसिक, वाचिक, और कायिक क्रियाओं के स्पन्दन बलवान होते हैं त्यों त्यों क्रिया-बल भी बढ़ता जाता है। और ज्यों-ज्यों योगों का स्पन्दन मन्द होता है त्यों त्यों क्रिया की गति भी कम होती जाती है। परमात्मा में मानसिक, वाचिक, कायिक आदि कोई भी योग नहीं है, इसलिए उसमें किसी प्रकार की कर्तृत्व क्रिया घटित नहीं हो सकती।

जब महाराजश्री ने पंडित जी के प्रश्न का उपरोक्त प्रमाण से युक्ति युक्त उत्तर दिया तो उपस्थित जनता अत्यन्त प्रसन्न हुई। और पंडित निरुत्तर होकर विवर्णवदन हो गए।

महाराजश्री के प्रवचन के समाप्त होने पर आर्य- समाज की गुरुकुल पार्टी के प्रधान श्री चिमन लाल जी सोंधी ने स्वयं ही उक्त पंडित जी को कहा कि आपने इस प्रकार की चर्चा छेड़ कर अपना पाँडित्य दिखाने की कुचेष्टा की, और सभा में विक्षोभ उत्पन्न किया, यह आप की बुद्धिमत्ता नहीं है। आप इन त्यागी महात्माओं के ज्ञान और दर्शन की समता नहीं कर सकते। इस प्रकार महाराजश्री जय जय की ध्वनि के साथ अपने स्थान पर पधार गये।

चातुर्मास काल में यहाँ पर सैंकड़ों स्त्री पुरुषों ने गुरु धारणा ली। जिस-समय महाराजश्री ने गुरु धारणा दी उस समय गुरु धारणा लेने वाले को मुख्य रूप से तीन बातें बताई गई—देव, गुरु, धर्म, इन तीनों का स्वरूप बताते हुए कहा कि रागद्वेष रहित वीतरागी देव को देव मानना, अहिंसा सत्य चोरी-परित्याग ब्रह्मचर्य और अपरिग्रहधारी अर्थात् जर, जोरू, जमीन के त्यागी को गुरु मानाना और धर्म दयामय मानना।

जहाँ धर्म के नाम पर सूक्ष्म और स्थूल जीवों की हिंसा होती हो, उसे धर्म नहीं मानना क्योंकि हिंसा में धर्म नहीं होता। हिंसा में तो पाप ही होता है। इन तत्वों के बोध के साथ साथ यह भी समझाया कि सुखदुख का प्रदाता। किसी ईश्वर खुदा अथवा जिन्न या देवी देवताओं को नहीं मानना सुख दुख में अपने ही किये हुए शुभाशुभ कर्मों को मानना। मूर्तिपूजा, गंगा, यमुना

आदि तीर्थों के स्नान में आत्म-कल्याण नहीं मानना। इस प्रकार समकित का स्वरूप समझा कर उन्हें गुरु धारणा दी गई।

यहां पर बहुत से नर-नारियों को नवकार मन्त्र व सामयिक आदि के पाठ भी सिखाये गये।

गुरु धारण लेने वाले व्यक्तियों में से एक सज्जन श्री पंडित रघुनाथ जी बी०ए० भी हैं। आपने आर्य समाज की संस्था में बी०ए० तक की शिक्षा प्राप्त की, और आप शिक्षा में उत्तीर्ण होकर आर्य समाज के शिक्षणालय में ही अध्यापक बन गये। महाराजश्री के धर्मोपदेश से प्रेरित होकर आप अपने परिवार सहित जैन धर्मानुयायी बन गये और सामायिक पोषा आदि करने लगे। आप बड़े होशियार तर्कशील व साहसी व्यक्ति हैं।

आपसे एक दिन किसी आर्य समाजी महाशय ने कहा कि मास्टर जी बड़े आश्चर्य की बात है कि आपने ब्राह्मण कुल में जन्म लिया। और आर्य समाज के शिक्षणालय में बी० ए० तक अध्ययन किया, और आज भी आप आर्य समाज के ही एक अध्यापक हैं तो भी आपके जीवन पर आर्य समाज की मान्यताओं का रंग न चढ़कर जैन धर्म का रंग कैसे चढ़ गया।

मास्टर जी ने उत्तर दिया कि इस पर आप स्वयं ही विचार कर लें कि आर्य समाज के साथ इतने वर्षों तक संपर्क रहने पर भी मुझ पर उसका कोई प्रभाव न पड़ सका और जैन धर्म का मेरे हृदय पर इतना शीघ्र प्रभाव क्यों हो गया, इसका तो सीधा अर्थ यह है कि आर्य समाज की अपेक्षा जैन धर्म की सच्चाई और उसकी विशेषताओं ने मुझे अपनी ओर खींच लिया है। मास्टरजी की ओर से इस प्रकार का उत्तर पाकर वे महाशय जी निरुत्तर हो गये। प्रत्यक्ष सत्य के आगे वे और कह भी क्या सकते थे। यह है सत्संग का प्रभाव।

यहां की जनता का महाराज श्री के प्रति इतना धर्मप्रेम बढ़ गया कि वे लोग अपने घर पर आहार पानी की महाराजश्री से आग्रह भरी विनती करने लगे।

महाराजश्री उनकी आग्रह भरी विनती को मान देते हुए कभी-कभी

आहार पानी के लिए पधारे तो वे लोग बड़ी श्रद्धा भक्ति से आहार पानी के लिए अपने-अपने घरों पर ले जाने के लिए पहले ही से अपने घरों के द्वारों पर खड़े हो जाते और अपने घर पर ले जाने की विनती करते तथा आहार पानी वहरा कर बहुत प्रसन्न होते।

इस प्रकार उन लोगों के घरों पर महाराजश्री के आहार पानी को जाने से उन लोगों को जैन साधुओं के आहार पानी की विधि ज्ञात हो गई। और गोचरी इतनी खुली हो गई कि सैकड़ों साधुओं का आहार पानी भी बड़ी सरलता से मिल सकता है।

यहां चातुर्मास में एस० एस० जैन सभा पंजाब की मैनेजिंग कमेटी की मीटिंग भी बुलाई गई, जिसमें पंजाब के स्थानकवासी जैन समाज के सम्बन्ध में अनेक प्रकार के विचार विनिमय किये गये।

इस सारे चातुर्मास में महाराजश्री ने—१. आर्तध्यान, २. रौद्रध्यान ३. धर्मध्यान, ४. शुक्लध्यान ; इन चारों ध्यानों का विस्तृत विवेचन किया। इन व्याख्यानों को बाबू हररामशरणदास जी खत्री सब ओवरसियर ने उर्दू लिपि में लिखा जिसकी चार कापियां बनाई।

बाबू रामशरणदास जी बहुत अच्छे धर्म प्रेमी सज्जन हैं। और आपकी धर्मपत्नी तो बड़ी ही साध-भक्त धर्म शील देवी है। बाबू रामशरणदास जी जालन्धर के कम्पनी बाग में जब सैर करने जाते तो, वहां पर आई हुई जनता को घंटा डेढ़ घंटा तक अपने लिखे हुए यह व्याख्यान सुनाते।

इस प्रकार के ध्यान विषयक व्याख्यानों को सुनकर वे लोग बहुत ही आनन्दित होते। वास्तव में धर्म प्रचार का प्रकार ऐसा ही होना चाहिए। आजकल बहुत से लोग प्रथम तो व्याख्यान श्रवण ही नहीं करते। यदि करते भी हैं तो उसे अपनी स्मृति में भली-भांति याद नहीं रख सकते। यदि कुछ स्मृति में रह भी जाय, तो उसे दूसरों तक पहुँचाने का प्रयास नहीं करते।

धर्मप्रचार के दो ही प्रमुख साधन हैं—तहरीर या तकरीर, अर्थात् लिखित या मौखिक।

मौखिक सुनी हुई बात तो सारी की सारी याद रहनी बड़ी कठिन है। प्रायः लोग सुनी हुई बात को कालान्तर में भूल ही जाते हैं। सुनी हुई बात न सुनी के बराबर हो जाती है। किन्तु वक्ता के जो भाव लिपिबद्ध हो जाते हैं वे जनता के लिए स्थायी रूप से विशेष लाभदायक हो जाते हैं। वक्ता को व्याख्यान के समय जो नये नये अनूठे विचार सूझते हैं वे प्रति समय नहीं सूझ सकते। इसलिए वे विचार लेखबद्ध हो जाने से स्थायी हो जाते हैं। बाबू रामशरण दासजी से महाराजश्री के व्याख्यानों की कापियां मंगाकर कई मुनि-राजों ने स्वयं या दूसरों से उनकी प्रतिलिपियां करवाई। व्याख्यान प्रेमी साधुओं के लिए महाराजश्री के ये लिलित प्रवचन बड़े ही उपयोगी सिद्ध हुए।

बहुत से मुनियों ने तो उन व्याख्यानों के सम्बन्ध में महाराजश्री के प्रति अपनी बड़ी भारी कृतज्ञता व्यक्ति की। महाराजश्री चातुर्मास के अतिरिक्त भी जब कभी जालन्धर पधारते तो बाबू रामशरण दास जी को अवकाश मिलता तो वे जालन्धर में या अन्यत्र भी महाराजश्री के प्रवचनों को नोट करते रहते थे। बाबू जी के पास महाराजश्री के व्याख्यानों की अब आठ कापियां लिखी हुई हैं। इन व्याख्यानों को प्रकाशित करने के लिए बहुत से श्रावक व मुनिराजों की ओर से प्रेरणा होती रही। किन्तु जब तक कोई हिन्दी और उर्दू भाषाओं का ऐसा विशेषज्ञ न मिल जाय, जो वक्ता के भावों को ठीक-ठीक ग्रहण कर व्यक्त कर सके, तब तक महाराजश्री ने इन प्रवचनों को प्रकाशित करवाना उचित नहीं समझा।

क्योंकि जनता के समक्ष जो वस्तु उपस्थित की जाय, वह भाषा भाव आदि सभी दृष्टियों से सर्वाङ्ग सुन्दर और सर्वाङ्ग पूर्ण तथा सर्वथा शुद्ध होनी चाहिए। यूं ही अस्त व्यस्त रूप में प्रकाशित कर देने से वक्ता के पूरे-पूरे भाव तो व्यक्त होते नहीं हैं। साथ ही उसमें वक्ता की योग्यता भी नहीं पाई जाती। अभी तक उन व्याख्यानों के प्रकाशित न होने का यही कारण है।

इस प्रकार धर्म ध्यान आदि क्रियाओं के बड़े भारी ठाठ बाट के साथ जालन्धर का यह चातुर्मास सानन्द सम्पन्न हुआ।

विहार के दिन बुधवार को विदाई समारोह के लिए विशेष रूप से निर्मित पंडाल की एक अत्यन्त नवीन आकर्षक रूप में रचना की गई। उसमें दस बारह हजार नागरिकगण उपस्थित थे। नगर के प्रसिद्ध पंडित डूंगरमल जी ने नागरिक जन समाज की ओर से महाराजश्री की सेवा में निम्न अभिनन्दन पत्र पढ़कर सुनाया। और महाराजश्री की सेवा में समर्पित किया। तत्पश्चात् नगर की मुख्य मुख्य संस्थाओं और सोसाइटियों की ओर से महाराजश्री की सेवा में और भी कई अभिनन्दन पत्र समर्पित किये गये। समयाभाव के कारण वहुत से अभिनन्दन पत्र तो पढ़कर सुनाये भी नहीं जा सके, वैसे ही समर्पित कर दिये गये। अनुमानतः बीस बाईस अभिनन्दन पत्र इस अवसर पर समर्पित किये गये। जैसे

।। अहिंसा परमो धर्मः ।।

परम श्रद्धेय ब्रह्मनिष्ट श्री श्री १००८ बाल
ब्रह्मचारी जैन भूपण पंडितराज मुनि
वर श्री स्वामी प्रेमचन्द जी महाराज
की सेवा में सादर समर्पित

:o: अभिनन्दन पत्र :o:

हे परम निष्णात मुनिवर !

जालन्धर नगर की जनता आज आप के श्री चरणों में उपस्थित हो कर सुदामा के तन्डुल के समान आप के प्रति अपनी महान कृतज्ञता तथा सन्मान प्रकट करती हुई यह तुच्छ भेंट स्मरण चिन्ह के रूप में सविनय अर्पित करती है। आशा है आप इसे स्वीकार करेंगे।

हे सरस्वती के वरद पुत्र !

आप ने हमारी प्रार्थना स्वीकार कर यहां पर अपना परम पुनीत चातुर्मास व्यतीत कर के हम पर जो उपकार किया है उसका वर्णन करना हमारी शक्ति से बाहर है। आप के अमृतमय उपदेशों से जो यहां के प्रत्येक धर्मावलम्बी नर-नारियों को महान् लाभ हुआ है, उसके लिये सब

आमुक्त कंठ से आप की प्रशंसा कर रहे हैं। आप की प्रभावशाली और प्रेममयी वाणी से प्रभावित हो कर सहस्रों नर नारियों ने मांस मदिरा आदि निषिद्ध वस्तुओं का सेवन सदैव के लिए त्याग देने का कठोर व्रत धारण कर लिया है।

आपने प्रतिदिन प्रातः और सायं धर्म और राष्ट्र के आदर्श नेता और वक्ता के रूप में अन्धविश्वास मिथ्यावाद आदि अनेक घृणित कुप्रथाओं का जो हमारे समाज के विनाश का कारण हैं, खंडन करके जिस पुनीत शिक्षा की दीक्षा दी है, उसको हम कभी भी भूल नहीं सकते।

हे धर्म कर्मवीर योगिन् !

आप अवधूत और प्ररम त्यागी होते हुए भी सांसारिक जीवों के कल्याण के लिए कुरूढ़ियो की निवृत्ति का भरसक प्रयत्न करते हैं। आपका जीवन केवल पारलौकिक सुधार के लिये नहीं है, अपितु सांसारिक सुधार की लहरें भी हर समय आपके दिल में ठाठें मारती रहती हैं। फलतः यह प्रत्यक्ष देखने में आ रहा है कि आपने मृतक के पश्चात् महीनों तक स्यापा आदि कुप्रथा का परित्याग करा कर इस महान आर्त ध्यान से बहुत से नारियों व लोगों को बचाकर शान्ति व प्रेम का स्रोत बहा दिया है। आप इतने परिश्रम-शील हैं, कि आपका कोई क्षण भी निरर्थक नहीं जाता है। आलस्य और व्यर्थ विश्राम के तो आप महान शत्रु हैं। आप उन विचारकों में नहीं जो केवल स्वप्न जगत् में ही विचरते हैं, परन्तु आप स्वयं धर्मकार्यरूप कर्म करते हैं, और जनता को भी सदा सुकर्म करने की शिक्षा देते हैं। आपके सदुपदेशों से प्रभावित होकर ही प्रेम वेजिटेरियन सोसाइटी तथा महिला शिल्प विद्यालय व प्रेम होमियोपैथिक औषधालय की स्थापना हमारे नगर में हुई हैं। इन संस्थाओं की स्थापना ही आपकी कार्य-कुशलता का प्रत्यक्ष प्रमाण है !

परम पूज्य यतिवर !

हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि जिन परम पुनीत आप के सदुपदेशों से प्रेरित होकर हमने इन संस्थाओं की स्थापना की है, उनको पूर्णरूप से उन्नति की ओर ले जाने के लिये हम सब सदा कटिबद्ध रहेंगे। इन

उपरोक्त संस्थाओं के कार्य को देखकर हमें प्रतीत होता है कि वह समय समीप ही है जब अहिंसा, सत्य, दयालुता और परस्पर सहानुभूति का प्रचार करने वाली इस प्रकार की शुभ संस्थायें सम्पूर्ण भारतवर्ष में स्थापित हो जायेंगी।

हे परम पुण्यात्मा महात्मन् !

इस घोर कलियुग में आप जैसे सन्त महात्माओं का सत्संग बड़े ही पूर्व संचित पुण्योदय से प्राप्त होता है। आप जैसे ही महान पुरुष वास्तव में पारस पत्थर हैं, जिनके संसर्ग में आकर साधारण लोहा भी स्वर्ण बन जाता है, आप अधर्मियों को धर्मी, दुराचरियों को सदाचारी, पापियों को धर्मात्मा, नास्तिकों को आस्तिक अपनी सत्य प्रियता से सहज में ही बना सकते है।

आप जनता के जनार्दन हैं। उसे धर्म जीवी बना सकते हैं। आप जैसे उदात्त चरित्रवान महान व्यक्तियों से ही भारत का सिर उन्नत है। आप ही इस वृद्ध भारत की महान विभूति सन्मान तथा मर्यादा हैं। आप हमारे धर्म और राष्ट्र के परम तेजस्वी और मेधावी कर्णधार हैं, इसलिये जालन्धर नगर निवासी नर-नारी आप के चरण कमलों में श्रद्धापूर्वक नतमस्तक होकर नमस्कार करते हैं।

आप भारतीय सभ्यता, संस्कृति और धर्म के प्रवल समर्थक तथा व्याख्याता हैं, इसलिये हम आपको अभिवादन करते हैं। आप भगवान अंशुमालि के समान दुर्व्यसनों, कुप्रथाओं, कुरीतियों का नाश करने वाले हैं, इसलिये हम आपकी अर्चना करते हैं।

आप प्राचीन जैनधर्म के वास्तविक सर्वतोमुखी स्वरूप के स्पष्ट वक्ता तथा निर्भीक उपदेष्टा हैं, इसलिए हम सब आपकी आरती उतारते हैं।

हे भगवन् !

अन्त में हम आपके महान उपकारों के लिये आपका सहस्रशः धन्यवाद करते हुए, हे गुरुवर ! आप से प्रार्थना करते हैं कि आप अपने विशाल हृदय में हमारे लिये अवश्य ही कोई न कोई ध्यान रखें। हम आपको कभी

नहीं भूल सकते, परन्तु आप भी अपने इन दासों को कभी न कभी स्मरण करके अवश्य कृतार्थ करते रहें।

अनेक मानवीय दुर्बलताओं और त्रुटियों के होते हुए भी हम जालन्धर-निवासी आपको विश्वास दिलाते हैं कि हमने जो शिक्षा-दीक्षा व्रत और धर्मोपदेश आप से ग्रहण किया है, उस पर सदा चलते हुए अपने जीवन को सफल बनायेंगे। आपके प्रभाविक हृदयस्पर्शी दीन दुःखियों के दुःख का चित्र खैंचने वाले व्याख्यानों से प्रभावित होकर हमारी बहिनों और पुत्रियों को शिल्पकला सिखाने तथा आजीविका उपार्जन के लिये जो विद्यालय स्थापित हुआ है, उसके लिये संपूर्ण नगर की महिलायें आपका धन्यवाद करती हैं।

आपने इतने महान आवश्यक कार्यों के होते हुए भी अनेक कष्ट सह कर परम पवित्र चातुर्मास में अमृतमय उपदेशों के द्वारा जो हम पर परोपकार करके हमारे जीवन को सफल बनाया, उसके लिये हम सदा आपके ऋणी रहेंगे।

हम हैं आपके चरण सेवी,
जालन्धर निवासी।

श्री वीतरागाय नमः

श्री श्री १००८ बालब्रह्मचारी महा तेजस्वी धर्म
धुरेन्द्र, तत्व वेत्ता, प्रसिद्ध वक्ता जैन
भूषण पूजनीय गुरू श्रीस्वामी
प्रेमचन्द जी महाराज के
पवित्र चरणों में

'श्रद्धांजलि'

पूज्य गुरू देव !

ऐसा कौनसा व्यक्ति है कि जो आप के शुभ नाम से परिचित न हो। आपके कार्यक्षेत्र ने आप की यशोकीर्ति को इस प्रकार प्रसारित कर दिया है, जिस तरह वायु पुष्प वाटिका के पुष्पों की सुगन्ध को देश देशान्तरों में फैला देती है।

हे पुण्य ऋषि वर्य !

आप के साधु जीवन के प्रभाव से प्रभावित होकर कठिन से कठिन मनोवृत्तिवाली आत्माएं भी नत मस्तक हो जाती हैं। आपकी व्याख्यान शैली और वाणी की मधुरता पत्थर दिलों को भी पिघला देती है। जिसने भी एक वार आपकी मधुर वाणी को श्रवण कर लिया है, वह व्यक्ति आपका हमेशा के लिये अनन्य भक्त बन जाता है। प्रत्यक्ष प्रमाण को किसी और प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती है। आज हम अपनी आंखों से ऐसे दृश्य को देख रहे हैं।

हे आत्म तत्वज्ञ भव्य मुने !

आप की आत्मशक्ति इतनी आकर्षकणशील है कि ज्यूं ही सूर्होदय होता है सहस्त्रों नर-नारी आपके धर्मोपदेश श्रवणार्थ चारों ओर से आपके दरबार में आ उपस्थित होते हैं। आपका ज्ञानबल इतना प्रौढ़ है कि चार

मास जैसे दीर्घ समय के लिये अखंड रूप से एक सार्वजनिक व्याख्यान धारा प्रवाहित रही है। हमने बड़े-बड़े व्याखानदाता और प्रसिद्ध व्याख्याता देखे हैं किन्तु वे कतिपय दिनों तक ही लगातार सार्वजनिक व्याख्यान दे सकते हैं। यह आप ही की महाशक्ति है कि ४ मास जैसे दिर्घकाल तक ज्ञान की अविच्छन्न धारा बहाते रहे हैं। यहां की जनता इस बात से आश्चर्यान्वित हो रही है कि आपके अन्दर ऐसी कौन सी शक्ति है जो नित्यप्रति नये से नये भाव बोधक विपय को जन्म देती है।

हे त्याग मूर्ति गुरु वर !

आपका त्याग व्रत तो इतना कठिन है कि इसे देखकर जनता अति ही आश्चर्य मानती है। आपके त्याग और तपस्या कि अग्नि में संसार के सब सुखों और भोगों को आहुति देकर अपने जीवन को कुंदन बना लिया है। आपका जीवन एक आदर्शजीवन है। आप के जीवन के प्रत्येक अंग से सादगी और त्याग की भावना टपक रही है।

ऐ जैन धर्म के चमकते सितारे !

आपके पवित्र परोपकारी जीवन पर जैन जाति जितना भी गर्व करे उतना ही थोड़ा है। आपने जैन धर्म के सुनहरी नियमों को इस प्रकार जनता के सामने रखा है कि जिससे विशुद्ध सनातन धर्म पर अनभिज्ञता वश किये गये दोपारोपण, लोगों के दिलों से काफूर की तरह उड़ गये है।

हे पथ प्रदर्शक गुरो !

आप ने जैन जनता की ही नहीं बल्कि मनुष्य मात्र की मिथ्यात्व और अज्ञान से जाग्रत कर सन्मार्ग में स्थापित किया है। जहां आपकी उच्च भावना पर्वतों के शिखरों से टकराती हुई आकाश मण्डल तक पहुँचती है, यहां आप की सूक्ष्म दृष्टि धरा की गहराइयों से गुजरती हुई पाताल तक की खबर लाती है। आप कठिन से कठिन विपय को ऐसी सुगमता से और युक्ति से दर्शाते हैं कि साधारण से साधारण व्यक्ति भी आसानी से समझ सकता है।

आप प्रत्येक विषय को इस प्रकार दर्शाते हैं कि श्रोतागणों को शक और सन्देय की गुजांईश ही नहीं रहती है।

हे पाचांल देश गौरव महान् !

आपने सात आठ वर्ष से पंजाब में जो धर्म उत्क्रान्ति पैदा की है उस से समाज भली प्रकार परिचित है। जगह जगह वेजीटेरियन सोसाइटियां स्थापित कर आप ने मनुष्य जाति के आहार, आचार, विचार, व्यवहार आदि का कितना सुधार किया है। आपने महर्षि महावीर के शुभ सन्देश को देश के कोने-कोने में पहुँचाने का बीड़ा उठाया है। आपका यह प्रयत्न, उदारता अति ही प्रशंसनीय है। इसी महान कार्य के लिये आप चार दिवारी ही में न रह कर जगह-जगह विचरते हैं और पब्लिक व्याख्यान द्वारा आप जनता को लाभ पहुँचाते हैं।

हे स्वामिन् !

आप ने हम पर जो जो असीम उपकार किये है हम उन्हें कभी नहीं भूल सकते।

हे अप्रतिबन्ध विहारी महात्मन् !

हम इस बात को भली प्रकार जानते है कि आप जैन शास्त्रानुसार चतुर्मास के पश्चात नहीं ठहरते हैं। इसलिये हम आपको अधिक ठहराने में असमर्थ हैं, किन्तु हमारी अन्तरात्मा आप की जुदाई के दुःख को सहन नहीं कर सकती। हमारी व्याकुलता को हम या सर्वज्ञ देव ही जान सकते हैं।

हे उदारचेत: गुरो !

अनेक स्थानों से चातुर्मास के लिये निमन्त्रण आने पर भी जो आप ने हमें ही चातुर्मास का सौभाग्य दिया है इस से जन्म जन्मान्तर तक ऋणी रहेंगे।

अन्त में हम सब आप से विनम्र विनय करते है कि जिस उदारता से आपने अब यहां चातुर्मास करके हमें कृतार्थ किया है, इसी प्रकार फिर भी

हमें कृपा दृष्टि से कृतार्थ करते रहें।

अब तो तय्यारी है कुछ दूर चले जाने की।
फिर कृपा करना गुरु देव यहां आने की॥

हम हैं आपके तुच्छ सेवक,
मैम्वरान एस० एस० जैन सभा,
जालन्धर शहर।

११/१/४८

:०:०:०:

सेवा में श्री श्री १००८ महा तेजस्वी वाल
ब्रह्मचारी प्रसिद्धवक्ता धर्मधुरेन्द्र जगत भूषण
श्री स्वामी प्रेमचन्द जी महाराज

जालन्धर में कृष्ण पक्ष ने डेरा आन जमाया था।
धर्म भाव को त्यागा सब ने लिया मार्ग जो भाया था॥

पथ दर्शक जब रहा न कोई प्रेमचन्द का उदय हुआ।
शुक्ल पक्ष की छटा समाई अन्धकार का प्रलय हुआ॥

वंशी कृष्ण की सुन ब्रज नारी दौड़ी दौड़ी आती थी।
काम काज की सुधि कछु नाहीं तपना ताप भुलाती थी॥

यहां विलक्षण लीला देखी नर नारी सब आते हैं।
स्वामी जी के उपदेशों से मंत्र मुग्ध हो जाते हैं॥

पापी हैं पर बनते धर्मी बातें बहुत बनाते हैं।
ऊपर हंस दिलों में कव्वे अपने पाप छिपाते हैं॥

मदिरा मांस के वशीभूत हो गर्दन ऐंठ घुमाते हैं।
हम जैसों को सच्चा मार्ग स्वामी जी बतलाते हैं॥

भारत की है भू वसुन्धरा सच्चे त्यागी रहते हैं।
शीत उष्ण अरु क्षुधा, पिपासा ज्ञान शक्ति से सहते हैं॥

हैं श्वेताम्बर मल नहीं अन्दर, जंगम तीर्थ कहाते हैं।
प्रेम चन्द स्वामी जी हमको मानव धर्म बताते हैं॥

दुराचार के बने पुजारी तड़फ तड़फ कर मरते हैं।
दाव, पेच से शक्ति लगाकर निर्धन का धन हरते हैं॥

शास्त्र तत्व को कुछ न समझें दुर्गुण हर जन में छाये हैं।
प्रेम चन्द स्वामी जी उन को मार्ग बताने आये हैं॥

प्रेरित हो कर प्रेम सभा ने झण्डा हाथ उठाया है।
विधवाश्रम, दीनों कि रक्षा, औषध भवन बनाया है॥

कृपा आपकी है यह सारी प्रेम भेंट यह लाये हैं।
प्रेम सभा के सभी सभ्य हम चरण कमल में आये हैं॥

हम हैं आप के सेवक
मैम्बरान श्री प्रेम वेजीटेरियन सोसाइटी
१-११-४४ जालन्धर शहर।

लाला अमरनाथ जी जैन जालन्धर वाले ने विराट जन समुदाय में सजोड़ खड़े होकर आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया। अपने बड़े पुत्र अभय कुमार जी को महाराजश्री की सेवा में दीक्षित होने के लिए समर्पित किया। यह दृश्य बड़ा ही अलौकिक और हृदय द्रावक था, महाराजश्री की सेवा में समर्पित किये गये अभय कुमार जी ने अपने मधुर कंठ से चातुर्मास की विदायगी में एक कविता पढ़ी। जिसकी प्रथम पंक्तियां इस प्रकार थीं:—

आये भी ये चले चले, खतम चौमासा हो गया।
मेरे लिए तो सीन ये, अजब तमासा हो गया॥
दिल की लगीबुझी न थी, गुरुवर आप चल दिये।
मेरे लिए तो जगत ये, सूना ही सारा हो गया॥

जब अभय कुमार जी ने अपने मधुर स्वर से यह गीत ध्वनि विस्तारक यन्त्र पर गाकर सुनाया तो दस बारह हजार के जन समूह की उपस्थिति वाले उस समारोह में बैठे हुए प्रत्येक व्यक्ति की आंखों में आंसू डबडबा आये। हृदय भर आये, और कंठावरोध हो जाने के कारण वाणी गद्गद् हो गई। वास्तव में यह दृश्य अनुपम था।

नागरिकों की ओर से विदाई के सम्बन्ध में इस प्रकार जब सार्व कार्यवाही समाप्त हो गई, तो महाराजश्री ने एक बड़े ही हृदय स्पर्शी उद्बोधक प्रवचन के रूप में जनता को विदाई संदेश दिया। और चातुर्मास की विदायगी के उपलक्ष्य में एक स्वरचित भजन सुनाया, जिसकी प्रथम पंक्तियां इस प्रकार है :—

ये रूहें उड़ जानी अज ये रूहें उढ़ जानी।
हम आये तुम्हारे शहर में, बहते अन्नजल दरिया लहर में।
चुग चले दाना पानी, अज ये रूहें उड़े जानी ।।

इस भजन के बहुत से पद हैं, यहां तो शीर्षक मात्र दिया गया है। विदायगी के इस भजन को सुन कर लोगों के हृदय भर आये। महाराजश्री ने जनता के द्वारा समर्पित किये गये अभिनन्दन पत्रों का उत्तर देते हुए कहा कि आप लोगों ने मेरे प्रति जो श्रद्धा भक्ति दिखाई है यह आपकी गुरुभक्ति है। मैं तो भगवान् का एक चपरासी हूं, जो नगर नगर, ग्राम ग्राम, घर घर धर्म का संदेश देता हुआ घूमता रहता हूं। यह मेरा कर्त्तव्य है कि भूले भटकों को धर्म का मार्ग बतला कर उन्हें सन्मार्ग पर लगाया जाय, जिससे वे आत्माएं अपना हित साधन कर सकें।

इस चातुर्मास में मैंने आप लोगों को बहुत कुछ धर्मोपदेश दिया। फिर भी आज के अन्तिम प्रवचन में उपस्थित भाइयों बाइयों को यह कहना चाहता हूं कि मैंने खून पसीना एक कर दो दोघंटे परिश्रम उठाकर आपको जो धार्मिक उपदेश दिये हैं, उन्हें आप अपने जीवन में उतारें। और उन शिक्षाओं को आजीवन स्मरण रखें। उपदेश श्रवण करने का यही लाभ है कि हम उसे जीवन में उतारें जिससे आत्म कल्याण हो सके। भोजन करने का यही उद्देश्य है कि क्षुधा की निवृत्ति हो, शरीर में स्फूर्ति और प्रत्येक अंग में शक्ति का संचार हो। वह भोजन ही किस काम का है जिससे क्षुधा की निवृत्त व शरीर में शक्ति व स्फूर्ति का संचार न हो सके।

वह शास्त्र-श्रवण कोई उपयोगी सिद्ध नहीं हो सकता, जिसमें जीवन-निर्माण की भावना संन्निहित न हो। अतः अधिक कुछ न कहता हुआ अपने हृदय की भावनाओं को अभिव्यक्त कर आप लोगों से विदाई लेना चाहता हूं।

सैर की फूल चुने खूब फिरे दिलशाद रहे।
ए बागबां मैं चाहता हूं गुलशन ये सदा आबाद रहे।

इस शेर को सुनकर जनता के हृदय गद्-गद् हो उठे।

जैन विरादरी की ओर से जनता को यह सूचित किया गया कि आज दोपहर को दो वजे के लगभग महाराजश्री का विहार होगा।

दोपहर के वश्चात् विहार से पूर्व दो वजे के लगभग दस पन्द्रह हजार के लगभग जन समूह एकत्रित हो गया। यहां से विहार कर महाराजश्री नगर के मुख्य वाजारों से होते हुए वस्ती गज़ा नामक जान्लधर शहर के एक उपनगर में पधारे। लगभग एक मील लम्वा जनूस महाराजश्री के विहार में साथ चल दिया। लाला वंशीलाल जी खत्री नामक एक वहुत वड़े वयोवृद्ध सज्जन ने कहा कि मैंने अपनी इस लम्वी आयु में जनता का इतना वड़ा समुदाय या तो जव श्री स्वामी दयानन्द जी सरस्वती यहां पधारे थे तव देखा था, या आज देखा है।

वस्ती गजां में स्थानीय जनता ने एक वड़ा विशाल पंडाल वनाया था। महाराजश्री वहां पहुंचे और आने वाली जनता भी शान्ति पूर्वक वहां वैठ गई। उपस्थित श्रद्धालु जनों को प्रसङ्गोचित धर्मोपदेश देकर महाराजश्री ने मन्गली सुनाई। तत्पश्चात् सभा विसर्जित हो गई। दूसरे दिन इसी पंडाल में महाराज श्री का सार्वजनिक प्रवचन हुआ। इस प्रवचन में नगर के और स्थानीय तथा आस पास के उपनगरों के हजारों लोग उपस्थित हुए। यहां पर महाराजश्री के तीन प्रवचन हुए।

फिर वस्ती शेखां की जनता ने महाराजश्री से अपने क्षेत्र में पधारने की विनती की। महाराजश्री ने विनती को मान्यकर वस्ती शेखां की ओर विहार

कर दिया। महाराजश्री को जिस मार्ग से हो कर पधारना था, उस मार्ग में कसाइयों की दुकानें पड़ती थीं। जिस समय महाराजश्री उधर से निकले, उस समय उन कसाइयों ने अपनी दुकानें बन्द कर दीं, ताकि मांस किसी की दृष्टि में न पड़े—कसाई भाइयों का यह कार्य सभ्यता सूचक था।

बस्ती शेखाँ पधार कर महाराजश्री ने एक प्रवचन किया। यहां पर जालन्धर नगर की मण्डी के प्रत्येक जाति के प्रमुख व्यक्तियों का एक शिष्ट मण्डल महाराजश्री की सेवा में उपस्थित हुआ। उसने रविवार को मण्डी में प्रवचन करने की प्रार्थना की। महाराजश्री ने इसे स्वीकार कर लिया। उसी दिन दोपहर के पश्चात् विहार कर महाराजश्री मण्डी की ओर पधार रहे थे, कि मार्ग में महाराजा कपूरथले का महल पड़ा।

महाराज की रानियों की ओर से यह सूचना आई कि हम महाराजश्री के दर्शन करना चाहती हैं। हम बाहर तो जा नहीं सकतीं। यदि महाराजश्री स्वयं महल में पधार कर दर्शन देने का कष्ट करें तो बड़ी कृपा होगी।

तदनुसार महाराजश्री महल में पधारे। आपके साथ की जनता महल के बाहर खड़ी रही, महल में पहुंचने पर रानियों ने महाराजश्री का बड़े विनम्र भाव से अभिवादन किया। महाराजश्री ने खड़े-खड़े ही परिमित शब्दों में उन्हें धर्मोपदेश दिया और मंगलाचरण सुनाया।

जब महाराजश्री वापस लौटने लगे तो वे रानियां डेढ़ सौ रुपया भेंट चढ़ाने लगीं। महाराजश्री ने फरमाया कि हम जैन साधु अपरिग्रही होते हैं, रुपया पैसा आदि धन अपने पास बिल्कुल नहीं रखते। इस पर रानियों ने कहा कि आप कहीं परमार्थ में लगा देना। महाराजश्री ने फरमाया कि हम इस झंझट में नहीं पड़ते। अन्त में रानियों ने वह रकम वेजीटेरियन सोसाएटी को दे दी। इस आदर्श त्याग की घटना से रानियों के हृदय में जैन साधुओं के प्रति और भी अधिक गहरी श्रद्धा उत्पन्न हो गई।

फिर महाराजश्री मंडी में पधारे। दूसरे दिन रविवार को प्रातः मंडी के मैदान में महाराजश्री का सार्वजनिक प्रवचन हुआ। इस प्रवचन में बीस हज़ार

के लगभग श्रोतागणों ने भाग लिया। दूसरे दिन यहां से विहार कर काला वकरा नामक गांव में पधारे। यहां पर रात्रि को महाराजश्री का धर्मोपदेश हुआ, यहां से दूसरे दिन विहार कर टांडा पधारे। यहां पर एक खत्री भाई के नोहरे में पंडाल बनाया गया, दूसरे दिन से इस पंडाल में प्रवचन प्रारम्भ हुए। यहां पर हजारों की संख्या में जनता उपस्थित होने लगी। जालन्धर के पांच सात सौ जैन व जैनेतर लोग भी प्रवचन में आते जाते रहे।

महाराजश्री ने यहां पर एक व्याख्यान श्री प्रेम वेजीटेरियन सोसायटी के सम्बन्ध में दिया। जिससे प्रेरित होकर टाँडा के बहुत से लोग सोसायटी के फार्म भर कर सदस्य बन गये। इस संस्था के पदाधिकारियों का निर्वाचन भी उसी समय सम्पन्न हो गया। और सोसायटी ने अपना प्रचार कार्य बड़े उत्साह से आरम्भ कर दिया।

यहां की ओसवाल विरादरी ने किसी कारण से दो घर अलग कर रखे थे। महाराजश्री ने उपदेश देकर इन दोनों घरों को फिर से विरादरी में मिला दिया। यहां से विहार कर महाराजश्री अइयापुर पधारे। यहां पर गांव से बाहर सिक्खों के गुरुद्वारे में आपके प्रवचन का प्रबन्ध किया गया।

उसी पंडाल में महाराजश्री के प्रवचन प्रारम्भ हुए। टांडा, उर्मर, अईया पुर ये तीनों गांव एक-एक मील के अन्तर पर बसे हुए हैं। इन तीनों कस्बों के लोग तथा पांच-पांच सात-सात कोस दूरी के गांवों की जनता भी व्याख्यान में भाग लेने के लिए आने लगी। महाराजश्री के प्रवचनों में इधर-उधर के गांवों से जन-समुदाय इस प्रकार उमड़ कर आता था, मानो लोग रामलीला देखने के लिए आ रहे हों।

महाराजश्री के प्रवचन प्रारम्भ होने से पूर्व डाक्टर मुन्शीराम जी, गुजरां वाला निवासी लाला अमरचंद जी भमड़ी, कांग्रेसी नेता श्रीरामजी तथा गुरुद्वारा कमेटी के अध्यक्ष आदि कई सज्जनों ने भाषण दिये। इसके पश्चात् महाराजश्री का प्रवचन प्रारम्भ हुआ। आपने प्रवचन में श्री प्रेम वेजीटेरियन सोसाइटी के सम्बन्ध में प्रकाश डालते हुए उपस्थित जन समूह को यह

समझाया कि श्री प्रेम वेजीटेरियन सोसायटी क्या है ? उसके सुनहरी सिद्धान्त क्या हैं और उद्देश्य क्या हैं आदि सब बातें जनता को भली-भांति समझाई। सोसायटी के सम्बन्ध में इस प्रकार पूरी जानकारी प्राप्त हो जाने से उसके महत्व को समझते हुए बहुत से लोग उसके सदस्य बन गये और इस प्रकार यहां भी श्री प्रेम वेजीटेरियन सोसायटी की स्थापना हो गई। उसके पदाधिकारियों का निर्वाचन भी हो गया।

यहां पर सोसायटी की ओर से एक पुत्री पाठशाला स्थापित की गई, लौकिक और धार्मिक शिक्षण दिया जाने लगा।

यहां पर महाराजश्री चार-पांच दिन तक विराजे। दैनिक व्याख्यानों में दो-तीन हजार लोग उपस्थित होते रहे। यहां से विहार कर महाराजश्री दसुवे तहसील पधारे। यहां सनातन धर्म मन्दिर में महाराजश्री का व्याख्यान हुआ। यहां के लाला लधुराम जी जैन प्रमुख व्यक्ति माने जाते थे। आप एक धर्म-परायण गुरुभक्त महानुभाव थे।

यहां से विहार कर महाराजश्री मुकेरियां पधारे। स्थानीय जनता ने महाराजश्री का भव्य स्वागत किया। दूसरे दिन महाराजश्री ने अपना प्रवचन सनातन धर्म सभा के विशाल आंगन में प्रारम्भ किया। अपने व्याख्यान में मांस-निषेध पर बल देते हुए महाराजश्री ने वेजीटेरियन सोसायटी के महत्व पर भी प्रकाश डाला। परिणामस्वरूप यहां पर भी वेजीटेरियन सोसायटी स्थापित हो गई। बहुत से लोग शराब मांस छोड़कर इस सोसायटी के सदस्य बन गए। कार्य संचालन के लिए कुछ द्रव्य भी एकत्रित हो गया, इस द्रव्यराशि के द्वारा दीन दुःखी असहाय लोगों की सहायता की जाने लगी। चार मुसलमान भाई भी यहां इस सोसायटी के मेम्बर बन गये। यहां दस पन्द्रह दिन तक महाराजश्री का धर्मोपदेश होता रहा। आपका एक प्रवचन स्थानीय हाई स्कूल में भी हुआ।

यहां से विहार कर महाराजश्री दसुवा आदि क्षेत्रों को परसते हुए गढ़ दिवाला पधारे। यहां पर भी महाराजश्री ने जनता को धर्मोपदेश दिये।

यहां से विहार कर महाराजश्री हरियाणा गांव पधारे। यहां पर एक वहुत पुराने कांग्रेसी नेता महाराजश्री से मिले। इनको कांग्रेस के आन्दोलनों में कई वार जेल जाना पड़ा था, यहां तक कि ब्रिटिश गवर्नमेंट ने इन्हें किसी कानूनी चक्कर में फंसाकर प्राणदण्ड की सजा भी सुना दी थी। किन्तु अन्त में ये वरी कर दिये गये। उन्होंने महाराजश्री को बताया कि मुझे जेल में बुरी तरह पीड़ित किया गया। नाना प्रकार के कष्ट दिये गये। खाने में कुछ ऐसी वस्तुएं भी दी गई जिनसे मेरा स्वास्थ्य सदा के लिए बिगड़ गया। आज मेरी शारीरिक दशा ऐसी हो गई कि प्रतिदिन एनिमा लेना पड़ता है, शरीर बिल्कुल कृश और जीर्ण-शीर्ण हो गया है।

वास्तव में विदेशियों के चंगुल से मातृ-भूमि को स्वतन्त्र कराने के लिए ऐसे हजारों लोगों को बड़ी-बड़ी कुर्वानियां देनी पड़ीं। और नाना प्रकार के भयंकर कष्ट सहन करने पड़े। इतना ही नहीं अपने देश को स्वतन्त्र कराने के लिए भक्तसिंह जैसे सैंकड़ों हजारों देश-भक्त वीरों को अपने प्राणों तक की आहुति देनी पड़ी है।

अव प्रत्यक भारतवासी का कर्त्तव्य है कि वह न्यायप्रिय उदार और धर्मपरायण रह कर अपने राष्ट्र की स्वतन्त्रता की रक्षा करे। प्रथम तो स्वातंत्र्य प्राप्ति ही बड़ी कठिन, किन्तु उससे भी अधिक कठीन अपनी स्वतंत्रता की रक्षा करना है। भोजन खा लेना तो आसान है, किन्तु उसका पचाना बड़ा कठिन होता है। देश को पराधीनता के पाशों सेछुड़ाने के लिए उक्त भाई की करुणापूर्ण कष्ट-कथा सुनकर महाराजश्री की आंखों के सामने देश की स्वतंन्त्रता के लिए किये गये देशभक्तों के वलिदानों का चित्र अंकित हो गया। इनके साथ महाराजश्री का बहुत देर तक वार्तालाप होता रहा। उन्होंने महाराजश्री से कुछ सिद्धांन्त सम्वन्धी प्रश्नोत्तर भी किये। प्रश्नोत्तरों के सिलसिले मे उन्होंने महराजश्री से पूछा कि कर्त्ता कौन हो सकता है। महाराजश्री ने फरमाया कि जिसके पास करण और योग हो, वहीं कर्ता हो सकता है। उन्होंने फिर पूछा कि करण क्या वस्तु है।

महाराजश्री ने फरमाया कि कर्त्ता के पास कार्य करने के जो साधन होते हैं, उन्हें करण कहते हैं।

उन्होंने फिर पूछा कि योग वस्तु क्या है। महाराज श्री ने फरमाया कि जिनके द्वारा करण काम में लाया जाए, उसे योग कहते हैं।

जिस प्रकार एक बढ़ई वृक्ष काटता है, बढ़ई तो कर्त्ता है उसके पास जो कुल्हाड़ा है, वह करण है। जिसके द्वारा कुल्हड़े से वृक्ष काटा जाता है वह शक्ति योग कहलाती है। यदि बढ़ई के पास कुल्हड़े रूप करण औरपुरुषार्थ रूप शक्ति न हो तो वह वृक्ष नहीं काट सकता। इसलिए कर्त्ता के पास करण और योग साधन का होना आवश्यक है, महाराजश्री ने इस प्रकार उनकी शंका का समाधान किया।

यहां से विहार कर महराजश्री होशियारपुर पधारे। यहां के श्री संघ ने महाराजश्री का भव्य स्वागत किया, यहाँ पर बहुसूत्री श्री नरपत राय जी महाराज अपनी शिष्य मण्डली सहित विराज मान थे। स्थानक में प्रवेश कर महाराजश्री ने साथ में आई हुई जनता को मंगलाचरण सुनाया। यहाँ पर जो नया स्थानक बना था, उसमें महाराजश्री ने अपने प्रवचन प्रारम्भ किये। कुछ दिनों बाद यहां पर गोशाला का वार्षिक उत्सव मनाया गया। इस अवसर पर सनातन धर्म के नेता गोस्वामी गणेशदत्त जी भी आये, किन्तु महोत्सव के समय वर्षा हो गई। वर्षा के कारण गोस्वामी जी का भाषण खुले स्थान में नहीं होसकता था। इसलिए सनातन धर्म के प्रमुख व्यक्तियों ने जैन समाज से स्थानक, जहाँ महाराजश्री का व्याख्यान होता था, गोस्वामी जी के भाषण के लिए मांगा, क्योंकि इस नये स्थानक का भवन विशाल था।

जैन बिरादरी ने कहा, यहाँ हमारे जैनमुनि श्री प्रेमचन्द जी महाराज का नित्य प्रति व्याख्यान होता है। इसलिए हम भवन देने में असमर्थ हैं। आये हुए सज्जनों ने कहा कि दोनों का भाषण यहां इकट्ठा हो जायगा। जैन बिरादरी ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया, गोस्वामी जी ने भी स्वीकृति दे दी। निश्चय किया गया कि ग्यारह बजे तक महाराजश्री का व्याख्यान होगा,

उसके बाद गोस्वामी जी का भाषण होगा। गोस्वामी जी के भाषण की सूचना भीजनता को दे दि गई थी।

दूसरे दिन जैन स्थानक में उनके बैठने के लिए पटिया (चौकी) आदि का प्रबन्ध भी कर दिया गया। स्थानक ऊपर से नीचे तक जनता से खचाखच भरा हुआ था महाराजश्री का प्रवचन ग्यारह बजे तक चालू रहा। पर गोस्वामी गणेश दत्त जी अपने नियत समय पर नहीं आये, तब महाराजश्री ने कहा कि मेरे व्याख्यान का तो समय पूरा हो गया है, गोस्वामी गणेशदत्त जी आने वाले थे, अभी तक नहीं आये। कुछ सनातनधर्मी भाई तत्काल उठ कर उनके पास गये और उन्हें आने के लिए कहा गया। किन्तु उन्होंने आने से इन्कार कर दिया, जिससे उन्हें आमन्त्रित करने वाले सनातनधर्मी लोग बहुत असन्तुष्ट हुऐ और बोले कि एक प्रमाणिक व्यक्ति वचन देकर अपने वचनों से फिर जाय, यह बहुत बुरी बात है।

गोस्वामी गणेश दत्त जी के न आने का और तो कोई कारण प्रतीत नहीं होता है। आप एक बार जालन्धर में प्रवचन देने के लिए गये थे, किन्तु वहां पर उनके प्रवचन में जनता बहुत कम संख्या में आई थी। साथ ही उन्हें जालन्धर में यह ज्ञात हो गया था कि महाराजश्री के व्याख्यान में तो दस बारह हजार की उपस्थिति होती थी। महराजश्री के ओजस्वी भाषण और आपके व्यक्तिगत प्रभाव के सम्बन्ध में भी गोस्वामी जी को सब कुछ ज्ञात हो गया था।

हो सकता है इसी कारण वे यहां पर महाराजश्री के साथ एक स्थान पर भाषण देने से इन्कार कर गये हों। किन्तु महाराजश्री के हृदय में ऐसी कोई भावना नहीं थी, जिससे किसी का अपमान हो। महाराजश्रीतो चाहते थे कि बड़े प्रेम के साथ दोनों व्यक्तियों के भाषण होंगे। मुझे भी गोस्वमी जी का भाषण सुनने का अवसर मिलेगा। किन्तु परिस्थिति वश ऐसा न हो पाया।

होशियारपुर में पंजाबप्रान्तीय वैजिटेरियन सोसाइटी की कान्फ्रेन्स—

यहां पर पंजाबप्रान्त के श्री प्रेम वेजीटेरियन सोसाइटी के प्रतिनिधियों की

कान्फ्रेंस बुलाई गई। कान्फ्रेंस की कार्यवाही नये स्थानक के हाल में आरम्भ हुई' सोसाइटी के प्रतिनिधियों ने इसमें बड़ी संख्या में भाग लिया। यह कार्यवाही दो तीन दिन तक बड़े उत्साह के साथ चलती रही। इस कान्फ्रेन्स में रावलपिन्डी के श्री पिन्डीदास जी स्यालकोट के मास्टर कृष्ण चन्द जी जैन, गुजरांवाला के सरदार हाकिम सिंह जी तथा पंडित मोहन लाल जी, गुरु के जंडियाले के स्कूल के हैडमास्टर जयचन्द्र जी आर्य, जालन्धर के प्रोफेसर अमोलक राजजी एम० ए०, आईयापुर के डाक्टर मुन्शीराम जी जैन, मुकेरिया के श्री अमरनाथ जी वैद्य, गुजरांवाला के लाला अमरचन्द जी भमड़ी आदि सज्जनों के मांस निषेध व वेजीटेरियन सोसाइटी की उन्नति के सम्बन्ध में भाषण हुए।

इस सोसाइटी का नया चुनाव किया गया, जिसके अध्यक्ष श्री ला० गंडा मल जी जैन गुरु के जंडियाले वाले तथा प्रधानमन्त्री हैडमास्टर जयचन्द्र जी चुने गये। इसका हैडआफिस गुरु के जंडियाले में रक्खा गया। इस सोसाइटी के व्यापक प्रचार और उन्नति के लिए गुजरांवाला निवासी महाशय श्रीराम जी (कांग्रेसी कार्यकारी) को सौ रुपये मासिक वेतन पर प्रचारक नियत किया गया।

धर्मवीर बाल हकीकत का जन्म दिन महोत्सव—

महाराजश्री के यहां पर दो व्याख्यान सनातन धर्म सभा के मैदान में हुए, जिसमें हजारों नर-नारियों ने भाग लिया। अमर बाल शहीद श्री हकीकत राय के वार्षिकोत्सव के अवसर पर नगर के बाहर मन्दिर में भी महाराजश्री का एक सार्वजनिक प्रवचन हुआ, जिसमें महाराजश्री ने धर्मवीर बाल शहीद वीर हकीकत राय के अमर बलिदान की उज्जवल यशोगाथा का ऐसी ओजस्वी फरकती भाषा में सजीव चित्र अंकित किया कि जिससे श्रोतागणों के हृदयों में धर्म प्रेम की लहर उद्वेल्लित होने लगी।

वेजीटेरियन सोसाइटी स्थापित की गई। दीन दुखियों की सहायता के लिए लगभग चार हजार रुपये एकत्रित हो गये।

महाराजश्री ने यहां लगभग एक कल्प पूरा करके जेजों की ओर विहार किया। एक रात रास्ते में लगाकर जेजों पधार गये। यहां के भाईयों ने महाराजश्री का भव्य स्वागत किया। स्थानक में प्रवेश कर साथ में आई हुई जनता को मंगली सुनाई। दूसरे दिन बाजार में सार्वजनिक प्रवचन प्रारम्भ हुए। प्रति दिन अधिकाधिक संख्या मे लोग उपस्थित होकर महाराजश्री के प्रवचन का लाभ उठाने लगे।

यहां पर इसी वर्ष तेरा पंथी साधुओं ने चातुर्मास किया था, इस कारण अपने कुछ भाइयों की श्रद्धा में गड़बड़ हो गई थी। लाला मथुरादास जी व लाला हरगोपाल जी तो चातुर्मास में तेरा पंथी पूज्य के दर्शन भी करके आये। यहां के भाई जगन्नाथ जी जैन जोकि बोलने चालने में बहुत होशियार हैं, उन्हें भी इन लोगों ने अपने चंगुल में फंसा कर तेरा पंथी प्रचारक बना लिया।

महाराजश्री अपने प्रवचनों में तया दान आदि विषयों पर प्रकाश डाला करते थे। एक दिन लाला हर गोपाल जी महाराज श्री के पास आये, और बोले कि किसी जीव को किसी ने बचाया, इस प्रकार जिस जीव को बचाया उस पर तो राग आया, और जिससे छुड़वाया उस पर द्वेष आया। राग द्वेष को अट्ठारह पापों में पाप माना है, इसमें धर्म कैसे हुआ।

महाराजश्री ने कहा जिसने जीव को बचाया है, उसने अनुकम्पा भाव से बचाया है, इसलिए उसे धर्म हुआ। और जिस जीव से मरने वाले को छुड़वाया, उसको पाप से बचाया। इसलिए धर्म ही हुआ। तेरा पंथियों का यह जो कहना है कि राग पाप रूप ही होता है, बिल्कुल गलत है क्योंकि राग मुख्य रूप से दो प्रकार का होता है—

१. प्रशस्त राग (धर्म राग) २. अप्रशस्त राग (पाप राग)।

अप्रशस्तराग (पाप राग) भी तीन प्रकार का होता है—

(१)काम राग (२) स्नेह राग (३)दृष्टिराग। कामादि तीनों राग पाप रूप होने से सर्वथा त्याज्य हैं। प्रशस्त राग (धर्मराग) तीन प्रकार का है—

देव राग, गुरु राग और धर्मराग। धर्मराग मोक्ष के साधक के लिए परमा-

वश्यक है। इसके विना साधक मोक्ष साधना में उत्तरोत्तर अग्रसर नहीं हो सकता। देवादि धर्मराग को पापराग कहना देवगुरु, व धर्म की एक प्रकार से अवहेलना करना है।

महाराजश्री ने आगे फरमाया कि भगवान ने दो प्रकार के संयती (साधु) वतलाये हैं। १. सरागी संयती २ वीतरागी संयती। छठे गुण स्थान से दसवें गुण स्थान तक सरागी संयती है ग्यारहवे गुणस्थान से लेकर चौदहवे गुनस्थान तक वीतारागी संयती।

महाराजश्री ने कहा कि जिसका सराग संयम है, क्या उसे पापी मानोगे ?

हर गोपाल जी ने कहा यदि सराग संयम पाप नहीं तो सराग संयमभाव को छोड़कर वीतराग संयम भाव को क्यों ग्रहण किया जाता है। धर्म छोड़ने वाली चीज तो है ही नहीं।

महाराजश्री ने फरमाया कि श्रावक की जो सामयिक है, वह धर्म है या पाप।

उसने कहा—धर्म है।

महाराजश्री ने फिर पूछा कि श्रावकप ने की देश सामयिक को छोड़कर साधु-सामयिक को ग्रहण करता है तो उसने धर्म किया है या पाप।

उसने उत्तर दिया—उसने तो विशेप धर्म कया।

महाराजश्री वोले— इसी प्रकार जिसने सराग धर्म को छोड़कर वीतराग धर्म याने वीतराग संजम को ग्रहण किया, उसने भी सामान्य धर्म को छोड़कर विशेप धर्म को ग्रहण किया। इसका अर्थ यह नहीं कि जो कोई भी वस्तु छोड़ी जाय, वे सव पाप रूप ही होती हैं। वहुत सी वस्तुएं तो पाप समझ कर छोड़ी जाती हैं, और वहुत सी वस्तुएं सामान्य लाभ की अपेक्षा विशेप लाभ के लिए छोड़ी जाती हैं।

महाराज श्री ने इस प्रकार उसे भली-भांति समझाने का प्रयत्न किया। वाद में उसने इस विपय पर कोई चर्चा न की।

यहां पर विरादरी में कुछ पारस्परिक झगड़ा चल रहा था, महाराजश्री

ने समझाकर उस झगड़े का अन्त कर दिया। यहां के जिस जगन्नाथ को तेरापंथियों ने एन केन प्रकारेण अपने चंगुल में फंसाकर तेरापंथी सम्प्रदाय का प्रचारक बना दिया था, वह जब तेरापंथीसम्प्रदाय के प्रचार के लिए, बाहर जाने लगा तो यहां के लोगों से कह गया कि जब स्वामी श्री प्रेमचन्द जी महाराज यहां आयें तो मुझे सूचना दे देना, क्योंकि वह भाई अपने आपको बहुत होशियार और जानकार मानता था ' वह महाराजश्री की उपस्थिति में ही यहां आ गया और महराजश्री के पास पहुंचा।

महाराजश्री ने उसे दया दान के सम्बन्ध में कुछ प्रश्नोत्तर किये। महाराज श्री ने उसे पूज्य श्री जवाहर लाल जी महाराज द्वारा निर्मित 'अनुकम्पा विचार' पुस्तक का एक पृष्ठ दिखा कर कहा कि देखो इसमें तेरापंथियों की मान्यता के सम्बन्ध में वह उल्लेख है कि जो साधु धूप में से किसी मकोड़े को उठाकर छाया में रख दें तो उसके पांचों महाव्रत भंग हो जाते हैं। यह कैसी कपोलकल्पित बात है। धूप में से तड़फते हुए मकोड़े को दया भाव से छाया में रखने से साधु के पांचों महाव्रत कैसे टूट सकते हैं।

पहला महाव्रत अहिंसा है, वह किसी जीव की हिंसा करने से ही टूट सकता है। किन्तु यहां तो मकोड़े की दया की गई है। दूसरा महाव्रत सत्य है, वह झूठ बोलने से टूटता है। मकोड़े को छाया में रखने में यहां पर झूठ बोलने का कोई प्रसंग ही नहीं।

तीसरा महाव्रत अस्तेय है। वह चोरी करने से टूटता है। यहां चोरी का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। मकोड़े के पास ऐसी क्या धनराशि थी जिसके लूटने से साधु का अचौर्य व्रत भंग हो गया। साधु ने तो बल्कि मकोड़े के प्राणरूप धन की रक्षा की है। फिर भला यह महाव्रत भंग कैसे हो गया। ये कैसी कपोलकल्पित, निराधार, निर्दयता भरी मिथ्या मान्यता है।

चौथा महाव्रत ब्रह्मचर्य है। वह मैथुन से भंग होता है, सो यह घटना भी यहां पर घटित नहीं होती है।

पांचवा महाव्रत अपरिग्रह है। वह धन आदि परिग्रह धारण कारण करने

से टूटता है। सो यहां कौन परिग्रह धारण किया गया है, जिससे साधु का महाव्रत भंग हो गया। धूप में दया भाव लाकर मकोड़ा उठाया था, सो उसे भी छाया में छोड़ दिया। तो इसमें महाव्रत भंग होने का कोई कारण ही नहीं। बल्कि महाव्रतों के पालन की पुष्टि हुई है।

महाराजश्री ने इस प्रकार भाई जगन्नाथ जी के समक्ष तेरापंथियों की विपरीत मान्यता का विशद विवेचन किया, तो वह बोले, उन लोगों की यह मान्यता ठीक नहीं है। यह कहकर और मंगली सुनकर वह चले गये। फिर उनका महाराजश्री से बातचीत करने का साहस ही नहीं हुआ।

यहां पर महाराजश्री बीस बाईस दिन तक विराजे। आपके यहाँ विराजने से धर्म का अच्छा प्रचार हुआ। जिनके हृदयों में अपने धर्म के प्रति श्रद्धा में कुछ कमी आने लगी थी, उनके हृदयों में धर्म के प्रति फिर दृढ़ता की भावना आ गई। यहाँ से विहार कर महाराजश्री दड़ियाल नामक ग्राम पधारे। यहाँ महाराजश्री का एक प्रवचन हुआ।

यह दड़ियाल वह ग्राम है, जहाँ पर घोर तपस्वी श्री दूलोराय जी महाराज तप किया करते थे। उनके तप से प्रभावित होकर यहाँ के कितने ही जाट सिक्ख भाई जैन धर्म का पालन करते हैं। इस ग्राम के इलाके में कोई आखेट नहीं कर सकता। ज्ञात हुआ कि एक बार इस इलाके का डिप्टी कमिश्नर इस गांव के पास शिकार खेलने आ गया। जब लोगों के मना करने पर भी वह नहीं हटा तो गांव के लोगों ने उसे मार-मार कर भगा दिया। आज भी इस ग्राम के निवासियों के हृदयों में जैन धर्म के प्रति बड़ी श्रद्धा है। और बहुत से लोग जैन नियमों का पालन कर रहे हैं। इसका श्रेय तपस्वी श्री दूलोराय जी महाराज को ही है। यहां से विहार कर दूसरे दिन बंगा पधारे। यहाँ पर स्थानक से दूरी पर मैदान में एक पंडाल बनाया गया। वहाँ पर महाराजश्री ने धर्मोपदेश देना प्रारम्भ किया। दिन पर दिन बढ़ती हुई श्रोतागणों की संख्या डेढ़ दो हज़ार तक पहुंच गई।

यहाँ पर भी दो तीन साल से तेरा पंथी साधुओं का अड्डा जम्मा हुआ था।

क्योंकि यहां पर अपनी बिरादरी में किसी कारण से पारस्परिक मन मुटाव होकर दो पार्टियां बन गई थीं। परिणाम स्वरूप छः सात घरों की एक पार्टी ने पक्षपात में आकर तेरा पंथी सम्प्रदाय को स्वीकार कर लिया। इसलिए तेरा पंथी साधु प्रायः यहां ठहरे ही रहते थे। एक आता दूसरा चला जाता। इस प्रकार उन्होंने यहां पर अड्डा जमा लिया था।

महाराजश्री ने प्रयत्न करके सारी बिरादरी को एकत्रित किया। और उन्हें संघ के रूप में रहने के लिये उपदेश दिया, किन्तु रामकृष्ण नामक एक भाई जो अपने कुछ सम्बन्धियों के कारण पहले से ही तेरापंथी सम्प्रदाय से अनुराग रखता था वह तेरापंथी पूज्य के पास आता जाता भी रहता था, समाज को एक बनाने में बाधा डाल रहा था, उस दिन उसने समाज को एक नहीं होने दिया। दूसरे दिन फिर बिरादरी महाराजश्री के पास स्थानक में इकट्ठी हुई। उस दिन रामकृष्ण को बिरादरी में नहीं बुलाया गया, क्योंकि वह बिरादरी की एकता में बाधक बनता था।

उस दिन टान्डे के फकीरचन्द जी आदि तीन चार भाई भी महाराजश्री के दर्शनार्थ आये थे। उन्होंने भी इस कार्य के लिए बड़ा प्रयत्न किया। महाराजश्री के उपदेश व इन भाइयों की प्रेरणा से बिरादरी में संप हो गया। और स्थानक में इस खुशी के उपलक्ष्य में मिठाई बांटी गई। यहां पर महाराजश्री के लगभग सत्ताईस प्रवचन हुए। कुछ अजैन भाइयों बाइयों ने भी गुरु धारणा ली। यहा से विहार कर महाराजश्री नया शहर पधारे। दूसरे दिन से आपके व्याख्यान नये बाजार मे प्रारम्भ हुए। यहां पर बंगी से तीन चार सौ बाई भाई महाराजश्री के दर्शनार्थ आये। प्रातःकाल के प्रवचन में भाग लेकर वे लोग दुपहर के पश्चात् फिर महाराजश्री की सेवा में उपस्थित हुए। महाराजश्री ने उन्हें समयोजित धर्मोपदेश दिया जिससे प्रभावित होकर तीस चालीस अजैनी भाइयों बहनों ने गुरु धारणा ली।

यहा पर महाराजश्री चार पांच दिन विराज कर यहां से राहों पधारे। ज्ञात रहे कि यह वही राहो नगर है, जहां के चोपड़ा जाति के क्षत्रीय कुल में

श्री वर्द्धमानश्रमण संघाचार्य जैन धर्म दिवाकर साहित्यरत्न वर्त्तमान आचार्य पूज्य श्री आत्माराम जी महाराज का जन्म हुआ है।

यहां पर खत्रियों के मोहल्ले में महाराजश्री के दो तीन सार्वजनिक व्याख्यान हुए। सैकड़ों लोगों ने व्याख्यानों से लाभ उठाया। अब भी यहां के खत्री लोगों में जैन धर्म और जैन मुनियों के प्रति बड़ी अच्छी श्रद्धा है।

राहों से विहार कर महाराजश्री बलाचोर पधारे। स्थानीय श्रीसंघ ने महाराजश्री का भव्य स्वागत किया। यहां पर जैन स्थानक के पास ही सराय में पंडाल बनाया गया। महाराजश्री के प्रवचन यहीं पर प्रारम्भ हुए। प्रत्येक वर्ग के लोग आपके प्रवचनों से लाभ उठाने लगे। महाराजश्री के व्याख्यानों में हरिजन भी पर्याप्त संख्या में आते थे और ब्राह्मण लोग भी आते थे।

महाराजश्री ने जातिवाद के सम्बन्ध में प्रवचन करते हुए बताया कि जाति की श्रेष्ठता उच्च-चरित्र और पवित्र जीवन पर निर्भर है। मूलतः कोई जाति ऊंच या नीच नहीं है। जाति की ऊंच और नीचता श्रेष्ठ और निकृष्ट कर्म के कारण है। महाराजश्री का यह कथन शास्त्रोक्त व प्रमाणिक ही था, किन्तु कुछ ब्राह्मण भाइयों ने वस्तुस्थिति को सही न समझ कर लोगों में कुछ भ्रान्ति फैला दी।

उन लोगों ने ब्राह्मण जाति की मीटिंग बुला कर महाराजश्री के व्याख्यान में आने का बहिष्कार कर दिया। ब्राह्मण लोगों में तो कुछ भ्रान्ति हो रही थी इतने ही में यहां बाहर से एक पंडित जी आ गये। यहां के एक परमहंस डेरेधारी सनातन धर्मानुयायी गद्दीधर संत भी महाराजश्री के प्रचार से ईर्ष्या रखते थे। इन लोगों ने जिस सराय में महाराजश्री के व्याख्यान का प्लेटफार्म था वहीं पर एक बहुत ऊंचा प्लेटफार्म बनवाया। इस स्टेज पर बाहर से आये हुए पंडित जी परमहंस जी और कुछ स्थानीय लोग बैठे हुए थे। पंडितजी ईर्ष्या बुद्धि के आवेश में आकर ज्योंही भाषण देने के लिए स्टेज पर खड़े हुए कि थोड़ी देर के बाद दैवयोग से अकस्मात् वह स्टेज टूट गई। और पंडितजी व

परमहंस जी आदि नीचे गिर पड़े। सम्भव है कुछ चोट भी आई हो। उस भाषण में उपस्थित लोगों ने उनकी हंसी उड़ाई। वे कहने लगे कि स्वामी प्रेम चन्द जी महाराज के विरोध में ईर्ष्याभाव के कारण यह रचना रची गई थी। उसी का इन्हें यह फल मिला है। पंडित जी खिसियाने से होकर वहां से चले गये। ब्राह्मण लोगों ने भी महाराजश्री से आकर अपनी भूल के लिए क्षमा मांगी। और व्याख्यान सुनने का लाभ उठाने लगे।

यहां पर महाराजश्री ने मांसनिषेध विषय पर अपने प्रवचन प्रारम्भ किये, जिनसे प्रेरित व प्रभावित होकर यहां पर भी श्री प्रेम वेजीटेरियन सोसाइटी स्थापित हो गई। पदाधिकारियों का निर्वाचन व सहायता के लिए चन्दा भी एकत्रित कर लिया गया।

यहां से विहार कर महाराजश्री दूसरे दिन सतलुज दरया पार कर माच्छीवाड़े पधारे। यहां पर श्री रामसिंह जी महाराज आदि मुनिराज विराजमान थे। यहां विराजित मुनिराज तथा स्थानीय बिरादरी महाराजश्री के स्वागतार्थ सामने आई। जयध्वनि के नारों के साथ महाराजश्री मुख्य-मुख्य बाजारों में होते हुए स्थानक में विराजित श्री रामसिंह जी महाराज की सेवा में पहुंचे। समागत जनता को धर्मोपदेश देकर मांगलिक सुनाई।

दूसरे दिन महाराजश्री के प्रवचन प्रारम्भ हुए। आपके दो तीन व्याख्यान तो बाजार में और शेष स्थानक में हुए। महावीर जयन्ती का समय निकट आ जाने से बिरादरी ने महावीर जयन्ती महोत्सव यहीं मनाने की विनती की। महाराजश्री ने सुखे समाधे विनती स्वीकार कर ली।

चैत्र शुक्ल त्रयोदशी को बाजार में श्री भगवान महावीर जयन्ती का महोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। महाराजश्री ने भगवान महावीर स्वामी के जीवन चरित्र, उनके संदेश, आदेश व उपदेशों पर प्रकाश डालते हुए फरमाया कि भगवान महावीर स्वामी के सिद्धान्त और जैनेतर सिद्धान्तों की मान्यताओं में क्या विशेष अन्तर है।

अवतारवाद और उत्तारवाद

अवतारवाद का स्पष्टीकरण करते हुए महाराजश्री ने फरमाया कि जैनेतर सिद्धान्तों में स्वीकार किया गया है कि परमात्मा का अवतार होता है, वह अवतरित होकर दुष्टों का संहार करता अर्थात् मारता है।

जैन सिद्धान्त की मान्यता अवतारवाद की नहीं प्रत्युत उत्तारवाद की है। अवतारवाद का अर्थ है ऊपर से नीचे आना, अर्थात् नारायण से नर या मनुष्य के शरीर में आना और उत्तारवाद का अर्थ है नीचे से उत्थान की ओर जाना, नर से दारायण बनना, भक्त से भगवान बनना, पुजारी से पूज्य, उपासक से उपास्य, चाकर से ठाकर और अल्पज्ञ से सर्वज्ञ बनना। यह है उत्तरवाद।

वास्तव में उत्तरवाद में ही आत्मविकास की चरम सीमा है। जब आत्मा चरम विकास को प्राप्त हो जाता है तो वह फिर नीचे की ओर नहीं आता, सभी आत्माएं प्रत्येक कार्य में नीचे से ऊपर जाना चाहती हैं। और कोई भी ऊपर से नीचे आना पसन्द नहीं करता। एक निर्धन उत्तरोत्तर क्रम से शत सहस्त्र लक्ष व कोटिपति, बनना चाहता है। किन्तु कोइ भी कोटिपती, लक्षपति, सहस्त्रपति, पतपति आदि नहीं बनना चाहता। इसी प्रकार एक विद्यार्थी प्रथम कक्षा से द्वितीय, तृतीय आदि कक्षाओं में उत्तरोत्तर अपने को विद्या क्षेत्र में आगे से आगे ले जाकर उच्च कोटि का विद्वान् बनना चाहता है। किन्तु उपर की ऊंची कक्षाओं में से नीची कक्षाओं में कोई भी विद्यार्थी नहीं आना चाहता, क्योंकि उपर्युक्त क्रम, विकास से ह्रास की ओर, उत्थान से पतन की ओर लाता है इसलिए यह सिद्धान्त उपयोगी नहीं हो सकता।

उत्तारवाद, ह्रास से विकास की ओर पतन से उत्थान की ओर ले आता है। उत्तारवाद बतलाता है कि प्रत्येक आत्मा अपने पुरुषार्थ से आत्मोन्नति के साधनों द्वारा क्रमशः विकास करता हुआ यहां तक उन्नति कर लेता है कि वह आत्मा से परमात्मा पद को प्राप्त कर लेता है जहां जैनेतर पक्ष की मान्यता है कि भगवान अवतार लेकर दुष्टों का संहार करने आता है, वहां जैन

सिद्धान्त की घोषणा है कि जो आत्माएं उत्तारवाद के सिद्धान्तानुसार साधना कर तीर्थंकर अर्थात् ब्रह्मज्ञानी जीवनमुक्त प्रधान धर्म प्रवर्त्तक बन जाती हैं वे तीर्थंकर आत्माएं पापियों का संहार करने नहीं आतीं, प्रत्युत उद्धार करने आती हैं। वे दुष्टों को मारने नहीं आतीं, प्रत्युत इस दुःखमयसंसार महासागर से पापियों को तारने आती हैं। डाक्टर या वैद्यराज की बुद्धिमत्ता बीमार को मारने में नहीं है। बल्कि बीमार की बामारी को मारने में है। रोगी का संहार करने में नहीं है रोग का संहार करने में है। रोगी को मारना पाप है रोग को मारना धर्म है। रोगी को मारना कोई कठिन काम नहीं उसे तो अनाड़ी से अनाड़ी वैद्य या डाक्टर भी जहर का इन्जैक्शन या गोली या कोई विष विशेष देकर मार सकता है, किन्तु परिणमन किये हुए विष को उतारना किसी सफल डाक्टर या वैद्यराज का ही काम है।

अवतारवाद के सिद्धान्तानुसार रोग को न मार कर रोगी को मारना है रोग का संहार न कर रोगी का संहार करना है, इसमें कोई बुद्धिमत्ता की बात नहीं है। भगवान महावीर स्वामी जिनका आज जन्मोत्सव मनाया जा रहा है, वे उत्तारवाद के सिद्धान्तानुसार पापियों को मारने नहीं बल्कि तारने आये थे। पापियों का संहार करने नहीं, अपितु उनका उद्धार करने आये थे। वे आध्यत्मिकता के सफल डाक्टर या वैद्यराज थे, जिन्होंने अर्जुनवाली चंड कौशिक विषधर जैसे पापियों का भी उद्धार किया था। यह उत्तारवाद की विशेषता संसार को भगवान महावीर स्वामी की अनुपम देन है।

इस प्रकार जब महाराजश्री ने अवतारवाद और उत्तारवाद की विस्तृत व्याख्या की तो श्रोतागण बहुत प्रसन्न हुए। उन्हें इससे जैन व जैनेतर सिद्धान्तों का बोध प्राप्त हुआ। इस प्रकार यह महावीर जयन्ती महोत्सव सानन्द सम्पन्न हुआ।

पूज्य श्री कांशीराम जी का स्वर्गवास

यहां से विहार कर महाराजश्री ग्रामों में धर्म प्रचार करते हुए लुधियाने पधारे। यहां पर उपाध्याय (वर्तमान आचार्य) श्री आत्माराम जी महाराज की

सेवा में विराजे, यहां पर अम्वाले से पूज्य श्री कांशीराम जी महाराज की ओर से महाराजश्री के लिए सूचना आई कि आप शीघ्र अम्वाला आवें।

पर महाराजश्री के शरीर में कुछ व्याधि होने से आप अम्वाला की ओर विहार करने में असमर्थ रहे। लगभग एक महीना उपचार करने के लिए लुधियाना ही विराजना पड़ा। शरीर में कुछ शान्ति होने पर महाराजश्री का विचार अम्वाला की ओर विहार करने का था। पर यहां के आर्यसमाजी कार्यकर्त्ताओं ने अपने आर्यसमाजमंदिर में प्रवचन देने के लिए बहुत आग्रह भरी विनती की। अतः महाराजश्री ने विनती मानकर दाल बाजार के आर्यसमाज मंदिर में रविवार को प्रवचन किया। व्याख्यान के पश्चात् आर्यसमाज के मन्त्री जी ने महाराजश्री के प्रति आभार प्रदर्शित किया और अपनी दो तीन पुस्तकें भी समर्पित कीं।

आर्य समाज में व्याख्यान समाप्त कर महाराजश्री स्थानक में पधार गये। दुपहर के वारह बजे के लगभग अम्वाला से तार आया कि पूज्य श्री कांशीराम जी महाराज का अकस्मात् स्वर्गवास हो गया है। यह जानकर स्थानीय श्रीसंघ में सन्नाटा छा गया। अत्रविराजित मुनिमंडल व स्थानकवासी समाज के चेहरे शोक से मुरझा गये। इससे दस पन्द्रह दिन पहले पसरूर में श्री खजानचन्द जी महाराज का भी स्वर्गवास हो गया था।

यह घाव तो अभी भरा ही नहीं था कि अकस्मात् पूज्यश्री के स्वर्गवास के समाचार के रूप में समाज पर एक और वज्रपात हो गया। इससे जैन समाज ही नहीं, प्रत्युत बहुत से जैनधर्म प्रेमी सज्जनों को भी, जो पूज्यश्री के जीवन से परिचित थे, बड़ा भारी धक्का लगा। वास्तव में ऐसे नरपुंगव का उठ जाना समाज के लिए एक अत्यन्त असह्य व दुःखद घटना थी।

महाराजश्री के जीवन पर तो पूज्यश्री के स्वर्गवास के दारुण समाचार का ऐसा प्रबल आघात पहुंचा कि महाराजश्री दो तीन घंटे तक मूर्छित अवस्था में बेहोश रहे और दौरे पर दौरा आता रहा। इस दिन गुजरांवाले के भाई श्री मुलखराज जी० बी० ए० तथा हजारीशाह, मोतीशाह आदि दस पन्द्रह भाई

यहां आये हुए थे। उनका विचार यहां महाराजश्री के दर्शन करके फिर पूज्य श्री के दर्शन के लिए अम्वाला जाने का था। महाराजश्री की जब तक तवियत ठीक न हुई तब तक गुजरांवाले के भाई यहां पर ही रहे।

पूज्यश्री के स्वर्गवास की बात सुनकर लुधियाने की स्थानीय जैन बिरादरी के बहुत से बाई भाई पूज्यश्री के संस्कार समारोह के अवसर पर अम्वाला पहुंचे। इसी प्रकार पंजाब प्रान्त के दूसरे सभी नगरों की जैन बिरादरियां भी बड़ी भारी संख्या में अम्वाला पहुँचीं। इस अवसर पर बाहर से लगभग पच्चीस तीस हजार व्यक्तियों ने अम्बाला पहुंच कर पूज्य श्री के प्रति अपनी अगाध उमड़ती हुई श्रद्धा की भावना का परिचय दिया।

वास्तव में पूज्यश्री का जीवन इतना संयमशील व प्रभावशाली था कि उनके जीवन की छाप अनायास ही लग जाती थी। संस्कार समारोह के दिन स्थानकवासी जैन बिरादरी और श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन बिरादरी ने ही नहीं प्रत्युत सारे नगर ने अपना कारोबार बन्द रखा। प्रत्येक जाति के नर-नारियों ने भारी संख्या में बड़ी श्रद्धा के साथ संस्कार-समारोह में भाग लिया। जैनेतर लोगों ने ग्रीष्म ऋतु होने के कारण जनता की पिपासा-शमन के लिए बाजारों में स्थान-स्थान पर शीतल मधुर जल और शरबत आदि का प्रबन्ध किया।

पूज्यश्री की शवयात्रा अम्वाला के प्रमुख बाजारों में से आगे बढ़ने लगी। भजन मंडलियां और अनेक बैन्ड बाजों की गगनभेदी ध्वनि तथा जय-जयकार के नारों से सारे वातावरण को गुंजाता हुआ, शवयात्रा का यह विशाल जलूस श्री आत्मानन्द जैन कालिज के मैदान में पहुंचा। यहां पर चन्दन की चिता पर महाराज श्री का दाह संस्कार किया गया। उधर चिता की अग्नि ज्वालाओं से पूज्य श्री का मृतक शरीर आलिंगित हो रहा था, तो इधर पूज्य श्री के वियोग में जनता के हृदय शोकाग्नि से संदग्ध हो रहे थे। जनता अपने संतप्त हृदयोंको अपने अश्रुजलकी धारा से शीतल करने का प्रयत्न करती रही। पूज्य श्री के अन्तिम संस्कार के पश्चात् शोकाकुल लोग अपने-अपने घरों को लौट गए।

पूज्य श्री के निधनदिवस पर अम्बाला आई हुई जनता अम्बाला से जब अपने-अपने नगरों को वापस लौट रही थी तो लुधियाने की ओर से जाने वाले चार पांच हजार लोग भी उपाध्याय जी महाराज (वर्तमान श्रमण संघाचार्य श्री आतमाराम जी) व महाराजश्री आदि मुनिगण के दर्शनार्थ लुधियाने उतरे। स्थानीय जैन बिरादरी ने भोजन व्यवस्था आदि से उन हजारों भाईयों बाइयों का यथोचित स्वागत किया। अम्बाला से लौटकर आने वाले भाइयों से और अम्बाला की स्थानीय जनता से ज्ञात हुआ कि पूज्य श्री यही पूछते रहे कि प्रेमचन्द जी आये या नहीं। वास्तव में महाराजश्री पर पूज्य श्री की बहुत ही कृपा थी।

महाराजश्री का विचार भी पहले अम्बाले की ओर पधारने का था। किन्तु पूज्य श्री का स्वर्गवास हो जाने से उधर का विहार स्थगित कर कुछ दिन लुधियाना ही विराजे। उपाध्याय (वर्तमानाचार्य) श्री आतमाराम जी महाराज से महाराज श्री ने भी भगवती सूत्र का वाचन लिया।

कुछ दिनों पश्चात् मलेरकोटला की जैन बिरादरी महाराजश्री के चातुर्मासार्थ विनती करने आई और उपाध्याय (वर्तमान आचार्य) श्री आतमा-राम जी महाराज से महाराजश्री का मलेर कोटला चातुर्मास हो, ऐसी विनती की। उपाध्याय जी महाराज की सम्मति से महाराजश्री ने सुखे समाधे मलेर कोटला चातुर्मास स्वीकार कर लिया।

कुछ दिन पश्चात महाराजश्री ने लुधियाने से मलेर कोटला की ओर विहार कर दिया। आप अहमदगढ़ मंडी आदि क्षेत्रों में धर्म प्रचार करते हुए मलेर कोटला पधारे।

मलेरकोटला चातुर्मास

(संवत् २००२)

इस प्रकार वीर संवत् २४७१ विक्रम २००२ सन् १९४५ के चातुर्मास के लिए महाराजश्री मलेर कोटला पधारे। स्थानीय जनता ने महाराजश्री का भव्य स्वागत किया। मुख्य मुख्य बाजारों से होते हुए हजारों श्रावक श्राविकाओं के साथ आप स्थानक में पधारे। वहां आये हुए भाईयों और बाईयों को थोड़ा सा धर्मोपदेश देकर आप ने मंगली सुनाई।

इस प्रकार संवत् २००२ का चातुर्मास मलेर कोटला में आरम्भ हुआ। दूसरे दिन से आपके प्रवचन प्रारम्भ हुए। व्याख्यानों में श्रोतागण उत्तरोत्तर बढ़ने लगे। स्थानक का विशाल भवन होते हुए भी श्रोताओं को बैठने के लिए स्थान न रहा। फलतः स्थानीय बिरादरी ने दीवान मोहल्ले के राम लीला मैदान में विशाल पंडाल बनाया और उसी पंडाल में महाराजश्री के प्रवचन प्रारम्भ हुए।

श्री कृष्ण जन्म अष्टमी के उत्सव पर महाराजश्री ने श्री कृष्ण महाराज की पवित्र जीवन गाथाओं पर प्रकाश डाला, जिसमें ढाई तीन हजार के लगभग श्रोतागण उपस्थित हुए।

पर्यूषण महापर्व में श्री अन्तगड़ सूत्र का वाचन किया। आठ दिन में यह सूत्रसम्पूर्ण कर सांवत्सरिक पर्व वाले दिन सायंकाल को प्रतिक्रमण कर चौरासी लाख जीवायोनियों से क्षमा याचना की।

महाराजश्री ने अपने प्रवचनों में यहां पर भी श्री प्रेम वेजीटेरियन सोसाइटी की चर्चा की। और उसके सुनहरे सिद्धान्तों परव्यापक प्रकाश

डाला। जिससे प्रेरित होकर यहां की जनता ने भी बड़ी भारी संख्या में इसके सदस्यता पत्र भर दिये। इस प्रकार मलेर कोटला में भी श्री प्रेम वेजीटेरियन सोसाइटी स्थापित हो गई। सोसाइटी के पदाधिकारियों का विधिवत् निर्वाचन किया गया। इस निर्वाचन में श्री हुकमचन्द जी सूद वकील अध्यक्ष तथा बाबू राम जी सूद वकील प्रधान मंत्री और अर्जुनदासजी दीवान खत्री कोषाध्यक्ष चुने गये। दीन दुखियों की सहायता के लिए सोसाइटी की ओर से धनसंग्रह किया गया। और सोसाइटी का प्रचार कार्य बड़े उत्साह से चल पड़ा। प्रत्येक रविवार को इस सोसाइटी के साप्ताहिक अधिवेशन होते रहे। बहुत से लोगों ने मांस आदि का त्याग कर आहार शुद्धि की।

एक सूद जाति के महाशय लगभग पैंतिस साल से मांस भक्षण करते थे। उन्होंने भी महाराजश्री के समक्ष आकर सदा के लिए माँसाहार का परित्याग कर दिया। इसी चातुर्मास में यहां पर विराजित वयोवृद्ध शान्तस्वभावी, क्षमासागर चारित्रचूड़ामणि स्थविर श्री नारायण दास जी महाराज के नाम से एक पुस्तकालय स्थापित किया गया। और कुछ दिनों बाद एस०एस० जैन सभा पंजाब की मीटिंग भी यहां पर बुलाई गई, इसकी कार्यवाही दो दिन तक चलती रही, जिसमें धार्मिक सामाजिक आदि अनेक विषयों पर विचार विनिमय किया गया।

इस प्रकार मलेर कोटले का यह चातुर्मास सुखे समाधे सम्पन्न हुआ। मार्गशीर्ष कृष्ण प्रतिपदा को महाराजश्री का यहां से विहार हुआ। विदाई के समय हजारों की संख्या में जनता एकत्रित हुई, और बहुत दूर तक महाराजश्री के साथ-साथ आती रही। महाराजश्री ने साथ में आते हुए भाइयों और बाइयों को मार्ग में एक स्थान पर दस पन्द्रह मिनट तक धर्मोपदेश देकर मंगली सुना दी। और उसी दिन धूरी मंडी पधार गये। यहां पर आपके दो-तीन सार्वजनिक प्रवचन मंडी के बाजार में हुए। इन प्रवचनों में मलेरकोटला की जनता ने भी सैंकड़ों की संख्या में भाग लिया।

यहां से विहार कर महाराजश्री संगरूर पधारे। यहां पर धर्मशाला में

महाराजश्री के दो-तीन प्रवचन हुए। यहां से विहार कर महाराजश्री सनाम पधारे। यहां सनातन धर्म पाठशाला में आपके सार्वजनिक व्याख्यान हुए।

काली के नाम पर बकरों का बलिदान—

सनाम में महाराजश्री ने कलकत्ते की काली देवी पर चढ़ाये जाने वाले बकरों के बलिदान के सम्बन्ध में विचार व्यक्त किये। आपने कहा कि सुना गया है कि कलकत्ते की काली देवी के मन्दिर में प्रतिदिन ढाई सौ बकरों का बलिदान होता है। यह भी ज्ञात हुआ कि बकरों को कोई कसाई कत्ल नहीं करता! वहां के पंडे ही बकरों को कत्ल करते हैं। कत्ल करने के बाद कोई पंडा उसका सिर तो कोई धड़ उठा ले जाते हैं। बकरों को कत्ल करने से जो खून की नाली बहती है, काली देवी के मन्दिर में दर्शन करने आने वाली औरतें उस खून का चरणामृत लेती हैं। उनके हृदयों में यह अंध विश्वास जमाया हुआ है कि जो इस खून का चरणामृत लेती हैं वे पुत्रवती हो जाती हैं, क्योंकि जिन बकरों की बलि दी गई वे बकरे ही उनकी कोख से पुत्र रूप में उत्पन्न होते हैं।

इंगलैंड से भारत के दौरे पर एक कमीशन आया था। इस कमीशन ने देहली, लाहौर, अमृतसर, आगरा, बम्बई, मद्रास, कलकत्ता, आदि भारतवर्ष के प्रमुख नगरों का भ्रमण किया। उसने भारतवर्ष के रहन,सहन, धर्म, संस्कृति रीति-रिवाज आदि के सम्बन्ध में एक रिपोर्ट प्रकाशित की।

उस रिपोर्ट में लिखा है कि हमने भारतवर्ष की यात्रा में भारतीय संस्कृति की अनेक बातें देखीं। किन्तु कलकत्ते में ऐक बड़ी विचित्र अज्ञान-सूचक घटना देखने में आई।

जब हम कलकत्ते के अनेक दर्शनीय स्थानों का निरीक्षण कर रहे थे, तो काली देवी मंदिर के पंडो ने हमें महाकाली मंदिर के दर्शन करवाये। वहां महाकाली पर दिये जा रहे बहुत से बकरों के बलिदान का दृश्य दिखाई दिया। यह देखकर भारतवासियों की इस जहालत पर हम लोग बड़े चकित हुए, इतना ही नहीं बलि दिये जाने वाले बकरों की जो खून की नाली बहती

है, उसका कितनी ही स्त्रियां चरणामृत लेती हैं। जिन्हें यह झूठा विश्वास दिलाया गया कि जो वलि दिये गये वकरे के खून का चरणामृत लेती है, वे ही वकरे मर कर उनकी कुक्षी में पुत्र रूप में उत्पन्न हो जाते हैं। यह कैसी भयंकर मूर्खता है। वहां के पंडों ने बड़े गौरव और अभिमान के साथ हमें यह भी वताया कि सबसे बड़ी काली देवी का मन्दिर यहीं है। जहां पर प्रतिदिन ढाई सौ वकरों की वलि दी जाती है। वैसे तो काली देवी के वहुत से और भी मन्दिर हैं, किन्तु वहां पर इतनी बड़ी संख्या में वलि नहीं दी जाती। इसलिए सवसे बड़ी काली देवी का धर्म स्थान यही है। भारत वर्ष में आने वाले उक्त कमीशन ने इस पापपूर्ण विचित्र घटना के सम्वन्ध में विचार व्यक्त करते हुए भारतीयों की मूर्खता का बड़ा ही व्यंग्यपूर्ण नग्न चित्र अंकित किया है।

वास्तव में कमीशन का यह कथन ठीक ही है, क्योंकि भारतवर्ष एक प्राचीनतम संस्कृति का अनुयायी देश माना जाता है। इसे आज भी आर्यावर्त के नाम से सम्वोधित किया जाता है। ऐसे आर्य-देश में, धर्म के नाम पर इस प्रकार निरीह, निरपराध, मूक प्राणियों का खून बहाना वास्तव में भारतवासियों की मूर्खता का ही सूचक है।

यहां पर महराजश्री के प्रवचनों में पटियाला राज्य के रिटायर्ड पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट भी व्याख्यान श्रवणार्थ आया करते थे।

उन्होंने वताया कि महाराज पटियाला के गुरु एक वंगाली तान्त्रिक थे। वे कालीदेवी के उपासक थे। उन्होंने महाराजा पटियाला को भी काली देवी की महिमा की बातें सुनाकर काली देवी का उपासक वना दिया। यहां तक कि महाराज पटियाला ने पटियाले में काली देवी का मन्दिर भी वना दिया, जहां पर वकरों की वलि दी जाने लगी। ज्ञात हुआ कि एक वार जव महाराजा पटियाला वहुत वीमार हो गये तो उनके गुरुजी ने सौकड़ों वकरों की देवी पर वलि चढ़ा दी। किन्तु कर्मोदय से प्राप्त रोग वढ़ता ही चला गया। भला निरपराध जीवों की वलि देने से भी कभी रोग शान्त हो सकता था। यदि इस

प्रकार की हिंसाओं से दुःख दमन हो जाय तो दया धर्म का मूल्य ही क्या रह जाय।

शास्त्रकारों का कथन है कि हिंसा से सुख नहीं होता, और दया से दुःख नहीं होता। सांसारिक कार्यों में भी जो पाप किया जाता है वह भी दुःखदायी होता है तो जो पाप धर्म के नाम पर किया जायगा, वह भला अत्यन्त भयंकर दुःखदायी क्यों न होगा। आज भी अनेक स्थानों पर देखने-सुनने में आता है कि जब कोई बीमार हो जाता है तो बकरे या मुर्गे जैसे मूक प्राणी को देवी देवता के नाम पर बलि देकर दुःख से मुक्ति पाने का प्रयत्न किया जाता है। किन्तु यह बात होने वाली नहीं। हिंसा का फल तो दुःखदायी ही होता है।

महाराज पटियाला का रोग दूर करने के लिए सैंकड़ों बेगुनाह बकरे भी मारे गये, किन्तु अन्ततोगत्वा, महाराजा साहब को मृत्यु का ग्रास बनना ही पड़ा। महाराजा पटियाला के काली देवी का भक्त बन जाने से उनके आश्रित कई बड़े-बड़े राज्याधिकारी व कर्मचारियों पर भी काली देवी की मान्यता का प्रभाव हो गया।

उनमें से यहां के रिटायर पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट साहिब भी एक हैं। आप जब रिटायर होकर यहां आये तो आपने यहां पर भी काली देवी का मन्दिर बनाना चाहा। आपको यहां की जैन व जैनेतर जनता ने अत्यन्त आग्रह पूर्वक कहा कि यहां आजतक यह बात नहीं हुई थी।

आप यहां पर काली देवी का मंदिर बना कर पाप का अड्डा क्यों स्थापित कर रहे हैं। किन्तु सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब ने किसी की भी न सुनी क्योंकि उनके पीछे राजकीय बल था। अन्त में काली देवी का मन्दिर बन गया। उसके उद्घाटन के समय सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब ने जैन व जैनेतर जनता को उसमें सम्मिलित होने के लिए निमन्त्रित किया। जनता ने इसमें सम्मिलित होना अस्वीकार कर दिया और कहा कि हम ऐसे पाप कार्य में सम्मिलित नहीं हो सकते। खैर जिस किसी प्रकार मन्दिर का उद्घाटन हो गया, और वहां पर

बकरों की-वलि दी जाने लगी।

सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब ने जब कई दिनों तक महाराजश्री का हिंसा के विरोध में प्रभावशाली प्रवचन सुना तो उनका हृदय भी द्रवित हो उठा। अन्दर ही अन्दर यह पाप उनके हृदय को व्यथित करने लगा। अब उनके मन में वलिदान की वात खटकने लगी। एक दिन आप ने हठपूर्वक काली देवी के मन्दिर-निर्माण की उपर्युक्त सारी घटना महाराजश्री को कह सुनाई। आपने दुःख भरे स्वर में कहा कि इस प्रकार मुझ से पापों का बीजारोपण हो गया। किन्तु अब मैं आपके प्रवचन से समझ पाया हूं कि वास्तव में यह पाप कार्य है, धर्म कार्य नहीं। अब मुझे इस अवस्था में क्या करना चाहिए ?

यह सुन कर महाराजश्री ने फरमाया के जो होना था सो हो गया। अब आपको चाहिये कि इस बलि रूप हिंसात्मक कुःप्रथा को सदा के लिए बन्द कर दें, क्योंकि यह आपका निजी मन्दिर है इसलिए आप ऐसा कर सकते हैं। महाराजश्री ने फरमाया कि मन्दिर पर लिख कर लगा दिया जाय कि आज से इस मन्दिर में पशु बलि नहीं होगी। सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब ने आप श्री के इस सुझाव को स्वीकार कर लिया और कहा कि आगे को ऐसा ही कर लिया जायेगा।

यह है महाराजश्री के प्रभावशाली प्रवचनों का परिणाम। सत्य है महापुरुषों के वचनों को सुन कर बड़े-बड़े पत्थर भी पिघल जाते हैं। वे हिंसा आदि कुप्रथाओं का त्याग कर धर्मात्मा बन जाते हैं। इस सम्बन्ध में जैन और जैनेतर ग्रन्थों में अनेक उदाहरण व दृष्टान्त उपलब्ध होते हैं। इस प्रकार लगभग एक मास तक धर्म प्रचार कर आप मूणक नगर की ओर पधारे।

मार्ग में धर्मोपदेश देते हुए आप तीन चार दिन में मूणक पहुंचे। यहां पर गणावच्छेदक श्री वनवारी लाल जी महाराज, श्री अमी लाल जी महाराज, श्री रामजी लाल जी महाराज, तपस्वी श्री फकीर चन्द्र जी महाराज आदि मुनिराज विराजमान थे। हांसी का चातुर्मास सम्पन्न कर व्याख्यान वाचस्पति श्री मदन लाल जी महाराज व अम्बाला से चातुर्मास पूर्ण कर पंडित श्री शुक्ल

चन्द जी महाराज भी मूणक पधार गए। इस प्रकार यहां पर अनेक मुनि राज एकत्रित हो गये। और नगर में खूब चहल-पहल हो गई, क्योंकि प्रातः मध्यान्ह और रात्री में कोई न कोई मुनिराज जनता को प्रवचनों का लाभ देते रहे। महाराजश्री के भी दो तीन सार्वजनिक प्रवचन हुए।

इस प्रकार नगर में धार्मिक भावनाओं की एक लहर सी उत्पन्न हो गई। अनेक मुनिराजों के एकत्रित हो जाने के कारण बाहर से भी बहुत से लोग दर्शनार्थ आने लगे।

पंजाबकेशरी बालब्रह्मचारी पूज्यश्री काशीराम जी महाराज का अम्बाले में स्वर्गवास हो गया था, इसलिए भावी पूज्य बनाने के लिए मुनिमण्डली में पारस्परिक विचार-विनिमय होता रहा। इस सम्बन्ध में अनेक बातों पर विचार किया गया। कुछ समय पश्चात् महाराजश्री ने पटियाला की ओर विहार किया। तीन चार दिन तक मार्ग में धर्म प्रचार करते हुए आप समाणे पधारे। यहाँ पर महाराज श्री के दूसरे दिन से प्रवचन प्रारम्भ हुए। आपने तीन-चार व्याख्यान स्थानक में तथा तीन सार्वजनिक भाषण मंडी में दिये। यहां से विहार कर एक रात मार्ग में बिता पटियाला पधारे। दूसरे दिन से यहां पर भी प्रवचनों का क्रम आरम्भ हो गया। दिन प्रतिदिन जनता इन प्रवचनों में अधिकाधिक संख्या में भाग लेने लगी।

श्री पंजाब वेजीटेरियन सोसाइटी का चतुर्थ अधिवेशन—

यहां पर श्री पंजाब प्रेम वेजीटेरियन सोसाइटी की कान्फ्रेंस बुलाई गई। अनेक नगरों से प्रतिनिधिगण आने लगे। अमृतसर के सुप्रसिद्ध कवि कंसराज गोहर को भी बुलाया गया। कान्फ्रेंस की कार्यवाही बड़े उत्साहपूर्ण वातावरण में आरम्भ हुई। इस कान्फ्रेंस में सोसाइटी को सुदृढ़ और सुसंगठित बनाने के लिए अनेक सुझाव रखे गये। रात्रि को कवि सम्मेलन का आयोजन भी किया गया। इसमें अमृतसर वाले कवि कंसराज गोहर और पटियाला के प्रसिद्ध कवि गजराज सिंह जी आदि कवियों ने प्रसंगोचित अनेक सुन्दर

कविताएं सुना कर जनता को आल्हादित किया।

दूसरे दिन कसेरा बाजार में महाराजश्री का सार्वजनिक प्रवचन हुआ। इस प्रवचन में चार-पांच हजार की उपस्थिति थी। प्रवचन के पश्चात् कवि कंसराज गोहर ने कविता सुनाई, रात्रि को फिर कविसम्मेलन हुआ। तीसरे दिन किले की दीवार के सहारे पंडाल बनाया गया। इस पंडाल में श्री प्रेम वेजीटेरियन सोसाइटी की कान्फ्रेंस का खुला अधिवेशन आरम्भ हुआ। इसके अध्यक्ष बाबूराम जी वकील मलेर कोटला वाले बनाये गये।

सर्वप्रथम मलेर कोटला के बालकों के भजन हुए। तत्पश्चात् सभापति महोदय ने सोसाइटी के कार्य-कलापों के सम्बन्ध में भाषण दिया। तथा दूसरे प्रतिनिधियों के भाषण हुए।

तत्पश्चात् महाराजश्री का सारगभित भाषण हुआ। इस प्रकार श्री प्रेम वेजीटेरियन सोसाइटी का यह चतुर्थ अधिवेशन सानन्द सम्पन्न हुआ। और इसका हैड आफिस गुरु के जडंयाले में रखा गया। कुछ दिन तक महाराजश्री के प्रवचन इसी पंडाल में होते रहे। जनता हजारों की संख्या में उपस्थित होकर प्रवचनों से लाभ उठाती रही।

पदवी प्रदान महोत्सव—

यहां पर लुधियाना से एक भाई आया, और उसने कहा कि लुधियाना में उपाध्याय श्री आत्माराम जी महाराज ने याद किया है। बहुत से प्रमुख मुनि-राज वहां पधार गये हैं।

इस पर महाराजश्री ने कुछ दिनों पश्चात् पटियाला से विहार कर दिया। नाभा, अमरगढ़ आदि क्षेत्रों में धर्म प्रचार करते हुए आप मलेरकोटला पधारे। यहां विराजित मुनिराजों ने तथा स्थानीय जनता ने महाराजश्री का भव्य स्वागत किया। यहां पर महाराजश्री के दो प्रवचन हुए।

यहां से विहार कर यह मुनिमंडली रामपुरा आदि क्षेत्र परसती हुई लुधियाना पहुंची। यहां पर एकत्रित मुनिमंडल में भावी आचार्य बनाने के लिए

परस्पर विचार विनिमय होता रहा। अन्त में निर्णय किया गया कि श्री १००८ श्री जैन धर्म दिवाकर उपाध्याय श्री आत्माराम जी महाराज को आचार्य बनाया जाय। पंडित श्री शुक्ल चन्द जी महाराज को युवराज बनाया जाय और जैन धर्म भूषण श्री प्रेमचन्द जी महाराज को उपाध्याय की पदवी प्रदान की जाय।

यह पदवी प्रदान महोत्सव महावीर जयन्ती के निकट रखा गया। आचार्य पद महोत्सव के लिए निर्धारित तिथियों तक सब मुनिराज लुधियाना में ही विराजमान रहे। देखते हीं देखते पदवी-प्रदान दिवस भी आ पहुंचा और इस महोत्सव की चर्चा सारे पंजाब प्रान्त तथा अन्य प्रान्तों में फैल गई।

निर्धारित तिथि पर खजान्चियों के बाग में बनाये गये पंडाल में पदवी-प्रदान महोत्सव का अयोजन किया गया। इस शुभ अवसर पर पंजाब प्रांतीय सौ के लगभग साधु साध्वी उपस्थित थे। बीस-पच्चीस हजार के लगभग लोग बाहर से आये। महोत्सव का दृश्य वास्तव में बड़ा ही भव्य, अलौकिक और स्मरणीय था। इस महोत्सव के कारण सारे नगर में जिधर देखो उधर ही बड़ी भारी चहल-पहल दिखाई दे रही थी।

इस विशाल पंडाल में एक सौ साधु साध्वियों तथा बीस-पच्चीस हजार श्रावक श्राविकाओं के चतुर्विध श्रीसंघ के समक्ष जैन वर्ग दिवाकर उपाध्याय श्री आतमाराम जी महाराज को आचार्य-पद प्रदान किया गया। युवराज-पदवी श्री पं० शुक्लचन्द्र जी महाराज को, व उपाध्याय-पदवी जैनधर्मभूषण श्री प्रेम चन्द जी महाराज को प्रदान की गई।

तीनों मुनिराजों को केशर-चर्चित स्वस्तिक आदि शुभ चिन्हों से सुशोभित तथा पदवी के उल्लेख युक्त शुभ्र चादरें ओढ़ाई गई। अनेक मुनिराजों ने इस प्रसंग के लिए उपयुक्त संक्षिप्त किन्तु भावगर्भित विचार व्यक्त किये। इसी सुअवसर पर दो व्यक्तियों को एक वैरागी तथा एक वैरागिन बाई को, दीक्षाएं भी दी गई। इस प्रकार यह पदवी-प्रदान महोत्सव सानन्द सम्पन्न हुआ। 'जैन धर्म की जय', 'आचार्य श्री की जय' आदि के जय घोषों के साथ सब

मुनिराज आचार्य श्री के नियत स्थानक में पधारे।

इसी समय पटियाला की जैन बिरादरी लुधियाने आई। और उन्होंने महाराजश्री के चातुर्मास के लिए आचार्य श्री की सेवा में विनती की। आचार्य श्री की आज्ञा से महाराजश्री ने सुखे समाधे विनती स्वीकार कर ली। कुछ दिन बाद महाराजश्री ने लुधियाना से माच्छीवाड़े की ओर विहार किया। माच्छी-वाड़े पहुंचकर पांच-सात दिन प्रचार कर रोपड़ पधारे। यहां की बिरादरी ने महाराजश्री का बड़े उत्साह के साथ स्वागत किया। यहां पर महाराजश्री जैन भवन में विराजे। यहां के गांधी के चौक में महाराजश्री के प्रवचनों के लिए पंडाल का निर्माण किया गया। दूसरे दिन से इसी पंडाल में आपके प्रवचन प्रारम्भ हुए। हजार डेढ हजार नर नारी आपके प्रवचनों से प्रतिदिन लाभ उठाने लगे। रोपड़ में दस बारह व्याख्यान देकर आपने नालागढ़ की ओर विहार कर दिया। मार्गवर्ती ग्रामों को परसते हुए आप नालागढ़ पधारे। यहां पर दस बारह दिन तक लोगों को धर्मोपदेश देते रहे। एक व्याख्यान सार्वजनिक तथा शेष प्रवचन स्थानक में होते रहे।

यहां से विहार कर भाटिया नामक ग्राम में दो व्याख्यान दे, दभोटा नामक अपने पूर्व सांसारिक ग्राम में पधारे।

यहां पर जैनों का एक भी घर नहीं है, किन्तु यहां के लोगों के हृदयों में जैन मुनियों के प्रति बड़ी श्रद्धा है। कारण यह है कि नालागढ़ नगर में जैन मुनियों का चातुर्मास या शेष काल में आवागमन बना रहता है। यहां के लोगों का जैन मुनियों के प्रति श्रद्धाशील होने का दूसरा कारण यह भी है कि इसी ग्राम के निवासी महाराजश्री और आपके बड़े भ्राता श्री तुलसी मुनि जी दोनों सगे भाइयों ने दीक्षा ली थी। यहां पर आपके प्रवचन मध्याह्न काल और रात्रि को होते रहे।

आस-पास के लोग यह सुनकर कि श्री प्रेमचन्द जी महाराज यहां पधारे हुए हैं, अपना कारोबार छोड़ कर भारी संख्या में सामूहिक रूप से दर्शन और व्याख्यान का लाभ उठाने के लिए आते रहे। महाराजश्री के पधारने से लोगों

में जैन धर्म के प्रति अत्यधिक श्रद्धाभाव उत्पन्न हो गये। बहुत से लोगों ने मांस शराब आदि अभक्ष्य पदार्थों का परित्याग कर दिया। यहां पर दो तीन दिन विराज कर आप भरत गढ़ पधारे।

यहां नगर से बाहर तालाव पर वृक्षों की छाया के नीचे तीन सार्वजनिक प्रवचन हुए। दमोटा आदि निकटवर्ती गांवों के लोग महाराजश्री के धर्मोपदेश सुनने के लिए आते रहे। यहां से वापस आप रोपड़ पधार गये। यहां पर पंडित श्री अमीलाल जी महाराज आदि मुनियों का भी समागम हुआ।

यहां के गांधी चौक में आपके सार्वजनिक प्रवचन हुए। यहां से विहार कर आप कुरालीं पधारे। यहां पर एक व्याख्यान दिया, दूसरे दिन यहां से विहार कर खरड़ पधारे। यहां पर आपके नौ-दस दिन तक प्रवचन होते रहे। आपके कुछ धर्मोपदेश तो बाजार में सार्वजनिक रूप से हुए और शेष स्थानीय स्थानक में हुए, फिर यहां से महाराज श्री बनूड़ पधारे। यहां पर आपके तीन चार प्रवचन हुए।

यहां पर महाराजश्री की सेवा में अम्बाला की बिरादरी आई। और निवेदन कियाकि सती श्री मोहन देई जी महाराज के पास जम्मू निवासी वैरागिन बाई की दीक्षा होने वाली है। अतः हमारी तथा सती जी महाराज की प्रबल भावना है कि दीक्षा के अवसर पर आप श्री अवश्य पधारें। चातुर्मास बैठने में समय बहुत कम शेष रह गया था, फिर भी विशेष आग्रह के कारण महाराज श्री ने विनती को मान्य कर अम्बाला की ओर विहार कर दिया। एक रात रास्ते में लगा, दूसरे दिन अम्बाला पधार गये।

पुलिस से पाला

उन दिनों अम्बाला शहर में किसी झगड़े के कारण शान्ति भंग न हो इसलिए धारा १४४ लगी हुई थी। यहां के श्रीसंघ ने वैरागिन बाई का जलूस निकालने के लिए सरकार से आज्ञा मांगी किन्तु धारा १४४ के कारण जलूस निकालने की आज्ञा नहीं मिली। इधर महाराजश्री के स्वागत के लिए बहुत सी जनता सामने आई। जब महाराजश्री जयनाद करते तथा भजन गाते हुए

जन समूह के साथ नगर में प्रवेश कर पुलिस स्टेशन के पास पहुँचे, तो थानेदार आगे आकर खड़ा हो गया और बोला कि इस जलूस का जो प्रमुख हो वह आगे आ जाय। यह बात सुनकर सब लोग अवाक स्तब्ध हो गए और इधर उधर बगलें झांकने लगे कि आगे आए तो कौन आए।

वास्तव में पुलिस वालों को यह बात इसलिए अटपटी लग रही थी कि जलूस निकालने की आज्ञा न मिलने पर भी जलूस क्यों निकाला गया। अंततः महाराजश्री ने ही उसे समझाया कि यह कोई जलूस नहीं है। यह तो जो मुनिराज नगर में आते हैं तो सदा ही उनके भक्तगण उनका स्वागत करते हैं। जैन साधु कभी किसी क्लेश को बढ़ाने या उत्पन्न करने का कार्य नहीं करते। वे तो क्लेश मिटाने तथा संसार में शान्ति स्थापित करने का उपदेश देते हैं। महाराजश्री के ऐसे वचन सुनकर थानेदार भी आपके साथ-साथ चल पड़ा और जनता भी पीछे हो गई।

यहां पर महाराजश्री श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैनों की धर्मशाला में ठहरे। थानेदार ने कहा कि मुझसे भूल हो गई और इस प्रकार क्षमा मांग कर वह वापिस चला गया।

महाराजश्री ने समागत जनता को मंगली सुनाई, दूसरे दिन आपका धर्मोपदेश हुआ। तीसरे दिन बड़े समारोह के साथ वैरागिन बाई को दीक्षित किया गया। वैरागिन बाई को दीक्षा का पाठ पढ़ाने के पश्चात् महाराजश्री ने दीक्षा के महत्व और दीक्षित आत्मा की कठोर साधना के सम्बन्ध में अत्यन्त प्रभावशाली शब्दों में प्रकाश डाला। इस प्रकार यह दीक्षा महोत्सव बड़े समारोह के साथ सानन्द सम्पन्न हो गया।

पटियाला चातुर्मास

(सं० २००३)

इस प्रकार दीक्षा महोत्सव के समाप्त हो जाने पर अम्बाले से विहार कर राजपुरा, बहादुरगढ़ आदि क्षेत्रों में धर्मप्रचार करते हुए महाराजश्री ने पटियाला नगर में प्रवेश किया। स्थानीय जैन व जैनेतर जनता ने सामूहिक रूप से भव्य स्वागत किया। इस प्रकार वीर संवत् २४७२ विक्रम संवत् २००३ सन् १९४६ ईस्वी का चातुर्मास पटियाला नगर में प्रारम्भ हुआ। पटियाला में पदार्पण कर महाराजश्री सेठ अछरूमल जी की कोठी में विराजे, स्वागत के लिए समागत भाइयों बाइयों को महाराजश्री ने मंगलीक सुनाई। इसी कोठी में आपके दैनिक प्रवचन प्रारम्भ हुए। इस चातुर्मास में आपने जीवादि नौ तत्वों का अनेक प्रकार के उदाहरण आदि देकर विस्तृत विवेचन किया। इन तत्वों की व्याख्या करते हुए आपने स्पष्ट किया कि—तत्व किसे कहते हैं ? किसी वस्तु का सारभूत अंश निष्कर्ष या निचोड़ होता है उसे तत्व कहते हैं, ये तत्व नौ प्रकार के हैं—

१. जीव तत्व २. अजीव तत्व ३. पुण्य तत्व ४. पाप तत्व ५. आश्रव तत्व ६. संवर तत्व ७. निर्जरा तत्व ८. बंध तत्व ९. मोक्ष तत्व।

महाराजश्री ने इन तत्वों की क्रमशः व्याख्या करनी प्रारम्भ की। उपस्थिति दिन पर दिन बढ़ती ही जा रही थी। श्रोतागणों के आधिक्य के कारण पास में पड़े हुए खाली चौक को लकड़ी के तख्तों से छत दिया गया जिससे जनता को बैठने में विशेष सुविधा हो गई।

क्या सृष्टि का रचयिता ईश्वर है—

यहां पर एक पंडित जी आये, उन्होंने महाराजश्री से प्रश्न किया कि आप

ईश्वर को तो सृष्टि कर्ता मानते नहीं। फिर आप किसे सृष्टि कर्ता मानते हैं। इस सृष्टि को कौन बनाता है।

महाराजश्री ने उत्तर दिया कि—हम कर्ता तो मानते हैं, परन्तु जिसने जो जो वस्तु बनाई उसे उसी वस्तु का कर्ता मानते हैं। हम ऐसा नहीं मानते कि किसी वस्तु को बनाया तो किसी ने और उसपर छाप अपनी कोई और लगादे। अर्थात् उसका कर्ता कोई और बन बैठे। यह सिद्धान्त गलत है। किसी के पुरुषार्थ द्वारा बनाई गई वस्तु पर यदि कोई दूसरा दावा करे कि इसका निर्माण मैंने किया और उसपर अपना मार्का लगादे, तो यह एक बड़ा भारी अन्याय है। आज भी यदि कोई मनुष्य रंग आदि किसी वस्तु का निर्माण करता है, तो उसपर उसी के सर्वाधिकार सुरक्षित रहते हैं और उसका निर्माण कर्ता वही कहलाता है। यदि कोई दूसरा उसकी निर्मित वस्तु पर विना परिश्रम या पुरुषार्थ किये ही अपने नाम का मार्का लगा देता है, तो उसका ४२० चार सौ बीस अर्थात् धोखा देही में चालान किया जाता है। और न्यायाधीश उसे इस अपराध में उचित दण्ड देता है। इसलिए जो जिस कार्य का कर्ता है, उसे ही उस कार्य का कर्ता मानना युक्ति युक्त है।

महाराजश्री ने पूछा कि मनुष्य, पशु, पक्षी, वृक्ष, पर्वत, वन, उपवन, झोंपड़ी या भवन आदि ये जो नाना प्रकार के पदार्थ दृष्टि गोचर होते हैं, इसी का नाम सृष्टि है या इसके अतिरिक्त सृष्टि दूसरी कोई भिन्न वस्तु है।

पंडितजी ने कहा कि हाँ सृष्टि इन्हीं पदार्थों के रूप में है। इन्हीं पदार्थों का नाम सृष्टि है।

महाराजश्री ने फरमाया—इस दृश्यमान दृष्टि में ये जो इतने अनन्त पदार्थ दिखाई देते हैं, इनमें से ईश्वर ने कौन सा पदार्थ बनाया है क्योंकि इन सभी पदार्थों के लिए कर्ता तो प्रत्यक्ष में भिन्न रूपों से दिखाई देते हैं, मनुष्य, पशु, पक्षी आदि मैथुनिक सृष्टि के कर्ता इनके जन्मदाता माता पिता हैं, मकान का बनाने वाला कोई कारीगर आदि है। पर्वत समूह के कर्ता पृथ्वीकायिक असंख्य जीव हैं। इन असंख्य शरीरों के एकत्रित होने से पहाड़ों का निर्माण

होता है। जब ऐसा है तो ईश्वर को कर्ता मानने की आवश्यकता क्या रह जाती है।

जैन धर्म तो प्रत्येक सांसारिक आत्मा को अपनी अपनी जीवन सृष्टि रचने वाला कर्ता मानता है। जहां ईश्वर को कर्ता मानने वाले लोग केवल एक ईश्वर को ही कर्ता मानते हैं वहां जैन धर्म संसार की अनन्त आत्माओं को अपनी अपनी जीवन सृष्टि का कर्ता मानता है। यह है जैन धर्म के सिद्धान्त की मौलिकता।

इस प्रकार महाराजश्री ने जैन सिद्धान्त की कर्ता विषयक मौलिकता दिखाने के पश्चात् पंडित जी से पूछा कि ईश्वर को सृष्टि रचने की आवश्यकता क्या पड़ी थी, जिससे सृष्टि रचने का महान् उत्तरदायित्व या बड़ा भारी भार उसे अपने ऊपर लेना पड़ा।

पंडित जी ने कहा कि जब ईश्वर के हृदय में सृष्टि रचने की इच्छा उत्पन्न होती है तब वह सृष्टि रचता है।

महाराजश्री ने फरमाया कि इच्छा तो वासनाओं से उत्पन्न होती है। और वासनाएं राग द्वेष से उत्पन्न होती हैं। राग द्वेष मोहोदय से उत्पन्न होता है। जिसके मोहोदय कर्म होता है उसका संसार में जन्म मरण होता है। जिसका जन्म मरण होता है वह सांसारिक जीव कहलाता है। फिर तो ईश्वर और सांसारिक जीवों में कोई अन्तर नहीं रह जाता है। फिर तो वह सांसारिक जीवों का ही साथी रहा उसमें ईश्वरत्व की कोई विशेषता नहीं रह जाती।

महाराजश्री ने पंडित जी से फिर पूछा कि मुझे आप कोई ऐसी साकार वस्तु बताएं जो निराकार के द्वारा बनाई गई हो।

पंडित जी ने कहा—हम ईश्वर को साकार और निराकार दोनों रूपों में मानते हैं।

महाराज श्री ने फरमाया— आप यह बात किस न्याय से कहते हैं, और यह कैसे सम्भव हो सकता है। एक वस्तु में दो विरोधी धर्म नहीं रह सकते।

आप मुझे कोई ऐसी वस्तु बताएं जिसमें दो विरोधी धर्म रहते हैं। मैं आपको इस बात की छुट्टी देता हूं कि आपको जब भी कोई ऐसी वस्तु दिखाई दे, जिसमें दो विरोधी धर्म हों तो मुझे बतला सकते हैं। मैं फिर दावे के साथ कह सकता हूँ कि एक वस्तु में दो विरोधी धर्म नहीं रह सकते, जो साकार है वह निराकार नहीं, जो निराकार है वह साकार नहीं हो सकता।

महाराजश्री ने जब इस प्रकार पंडित जी को कर्ता के सम्बन्ध में विस्तृत विवेचन करके समझाया तो पंडित जी निरुत्तर होकर चले गये।

इस प्रकार महाराजश्री के प्रवचन निरन्तर होते रहे। और जनता हजारों की संख्या में उपस्थित होकर इनसे लाभ उठाती रही। यहां पर पर्यूषण पर्व में महाराजश्री ने श्री अन्तगढ़ सूत्र सुनाया। संवत्सरी महापर्व धर्म ध्यान क्रियाओं के द्वारा बड़े समारोह के साथ सानन्द मनाया गया।

तेरापंथी साधु कान जी को चुनौती—

एक दिन यहां पर पट्टी नगर के रहने वाले भाई जगन्नाथ जी महाराजश्री के पास आये। आप वैसे तो परम्परा से स्थानकवासी ही हैं। पर कुछ समय से तेरापंथी साधुओं के पास आते जाते और तेरापंथी मान्यताओं पर ही विश्वास रखते थे। उनके साथ महाराजश्री की तेरापंथी मान्यताओं-दयादान आदि के सम्बन्ध में चर्चा हुई। अन्त में उन्होंने कहा कि यहां पर तेरापंथी सम्प्रदाय के सुप्रसिद्ध कानजी मुनि चातुर्मास रूप से विराजमान हैं। आप उन से इस सम्बन्ध में चर्चा करलें। महाराज ने कहा कि मैं तैयार हूं आप उनसे पूछ लें।

दूसरे दिन एक तेरापंथी भाई को साथ लेकर जगन्नाथ जी आये तो महाराज श्री ने पूछा कि—शास्त्रार्थ के लिए आप कल कह गये थे उसका क्या हुआ।

जिस विषय पर वे शास्त्रार्थ करना चाहते हैं लिख दें। और जिस पर हम शास्त्रार्थ करना चाहते हैं वह भी उन्हें लिख देंगे। किन्तु शास्त्रार्थ लेखबद्ध होगा।

तदनुसार जगन्नाथ जी कान जी स्वामी के पास गये। और उन्हें लेखबद्ध शास्त्रार्थ के लिए कहा, उन्होंने कहा ऐसा तो मैं करने को तैयार नहीं।

जगन्नाथ भाई ने वापस आकर महाराजश्री से कहा कि वे लेखबद्ध शास्त्रार्थ के लिए तैयार नहीं। तब महाराजश्री ने कहा कि लेख में आये बिना क्या प्रमाण है कि किसने क्या कहा, इसका निर्णय कौन देगा। जगन्नाथ भाई ने कहा कि—यह बात तो सही है बिना लेख में आये उसका क्या नतीजा निकल सकता है। इतना कहकर वे चले गये।

वे लोग महाराजश्री के साथ खुले मैदान में लेखबद्ध चर्चा तो नहीं कर सके। कुछ दिनों पश्चात् तेरापंथी लोगों की ओर से महाराजश्री के प्रति एक द्वेषभरा गंदा इश्तिहार निकाला गया। उसमें उन लोगों ने महाराजश्री पर अनेक प्रकार के मिथ्या दोषारोपण किये। किन्तु चांद पर थूकने से थूकने वाले के मुंह पर ही पड़ता है। कुछ समय बाद महाराजश्री की ओर से तेरापंथी समाज को शास्त्रार्थ करने के लिए इश्तिहार द्वारा खुला चेलेन्ज दिया गया था।

यह इश्तिहार पटियाला जैन बिरादरी की ओर से तेरापंथी समाज और जहां-जहां उनके मुनियों के चातुर्मास ज्ञात हुए वहां पर भेज दिये गये। और कानजी मुनि को भी इश्तिहार भेज दिया गया। किन्तु कोई भी शास्त्रार्थ करने के लिये तैयार न हुए।

मुस्लिम जैन परिवार—

यहां पर चिराग अली नामक एक मुसलमान भाई का परिवार रहता था। उनका एक परिवार मलेर कोटला में भी था, इस परिवार के सब लोग जैन धर्म को मानते थे। नवकार का मन्त्र भी जपते थे। जैन साधुओं के दर्शन और व्याख्यान श्रवण का लाभ भी प्राप्त करते रहते थे। उन्होंने अपने मकान के द्वार पर नवकार मन्त्र लिख रखा था, इतना ही नहीं, चिराग अली की दो पुत्रियां पढ़ी लिखी ग्रेजुएट थीं।

गनी श्री मथुरा देवी जी महाराज का व्याख्यान सुनकर उनमें से एक

लड़की को वैराग्य उत्पन्न हो गया। उसने सती मथुरा देई जी महाराज के पास दीक्षा लेने के भाव प्रकट किये। किन्तु लोकापवाद के भय से सती जी महाराज उसे दीक्षा न दे सकीं। किन्तु उसकी ओर से दीक्षा लेने के प्रयत्न में कोई कसर नहीं रही।

इनके ये दोनों परिवार जैन धर्म में आना चाहते थे, किन्तु जैन समाज जातिवाद के अहम् भाव के कारण उन्हें अपना न सका। कुज समय पश्चात् अर्थात् एक वर्ष बाद सन् १५४७ में भारत विभाजन के समय जो पंजाब में भीषण नरसंहार हुआ। उस समय महाराजश्री का चातुर्मास जालन्धर नगर में था। पटियाला के सम्बन्ध में सुना गया कि वहां पर सोलह हजार मुसलमान थे। उनमें से बहुत से मारे गये और जो शेष रहे, उन्हें सुरक्षा की दृष्टि से बहादुर गढ़ के किले में पहुंचा दिया था।

यह सुनकर महाराजश्री को ध्यान आया कि चिराग अली भाई के परिवार के लोग जैन धर्म को मानते थे। परन्तु ऐसे समय में कौन किस को पूछे कि तुम किस मजहब को मानते हो। इस समय तो हिन्दू मुसलमान का प्रश्न था। जो कि एक दूसरे के साथ बड़ी निर्दयता पूर्वक मार काट कर रहे थे।

महाराजश्री ने एक पत्र पटियाला की जैन बिरादरी को लिखवाया कि चिराग शली भाई का परिवार मौजूद है या नहीं, यदि मौजूद हो तो आप लोग उनसे मिलें व यथाशक्य उनकी सहायता करें। यदि उन्हें अपना लिया जाय तो बहुत ही अच्छा हो।

कुछ समय पश्चात् पटियाला से पत्र का उत्तर आया कि हम लोग पारस्परिक परामर्श कर उनको अपनाने के लिए बहादुर गढ़ किले में गए। वहां पर उनकी रक्षा के लिए पहरे लगे हुए थे। यहां के कधिकारियों से आज्ञा प्राप्त कर हम लोग चिराग अली भाई आदि से मिले। उनके साथ सब बातों पर विचार किया गया। यह बात सुन कर वे बड़े प्रसन्न हुए, और हमारे साथ चल पड़े। जब वे बहादुर गढ़ किले के बाहर दरवाजे पर आये तो, पहरे पर लगे हुए पुलिस वालों ने रोक दिया। इस पर पुलिस अफसर को बहुत

समझाया गया पर उसने कहा कि मुझे फाटक से बाहर किसी को भी जाने देने की इजाजत नहीं है। इसलिए हमें निराश होकर वापस लौटना पड़ा।

यह समाचार मिलने पर महाराजश्री के मन में विचार आया कि कम से कम जैन धर्म की कृपा से बच तो गए, यही बड़ी खुशी की बात है।

इस प्रकार पटियाले का चातुर्मास सानन्द सम्पन्न हुआ। चातुर्मास समाप्ति के बाद महाराजश्री ने नाभे की ओर विहार कर दिया। वहां नगर से बाहर चरण दास जैन के सिनेमा में ठहरे। यहां पर लुधियाना के एक नए बने हुए तेरापंथी श्रावक लाला नरातामल की ओर से छपा हुआ एक पेम्फलेट मिला। उसमें लिखा था कि हम शास्त्रार्थ करने के लिए तैयार हैं। किन्तु शास्त्रार्थ लुधियाना में हो। महाराजश्री ने इसके उत्तर में लिखवा दिया कि हमने पटियाला से तो शास्त्रार्थ के लिए पहले ही चैलेन्ज दे रक्खा है। शास्त्रार्थ का उत्तरदायित्व किसी एक तेरापंथी व्यक्ति पर नहीं होगा। प्रत्युत तेरापन्थी सम्प्रदाय के उत्तरदायी संघ पर होगा। तेरापंथी सम्प्रदाय की ओर से जो साधु लेखबद्ध शास्त्रार्थ करना चाहे उनका नाम तेरापंथी संघ की ओर से प्रकाशित हो जाना चाहिए। दूसरे दिन यहां से विहार कर बिजली घर में पधारे। फिर यहां से विहार कर कल्याण होते हुए नाभा पधारे। वहां आप श्री के प्रवचन प्रारम्भ हुए। जैन व जैनेतर जनता इन प्रवचनों से पर्याप्त लाभ उठाने लगी।

इंगलैंड में वेजीटेरियन सोसाइटी का प्रचार—

कुछ दिनों पश्चात् जालन्धर की श्री प्रेम वेजीटेरियन सोसाइटी के प्रधान नगर के प्रमुख व्यापारी श्री लाला दौलतराम जी सूद अपने व्यापार सम्बन्धी कार्य से इंगलैंड गये। वहां से वायुयान द्वारा उनका एक पत्र महाराजश्री की सेवा में आया। उस पत्र का आशय यह था कि जब मैं इंगलैंड पहुंचा, तो मैंने देखा कि यहां के लोग प्रायः मांसाहारी हैं। मांस भक्षण के सम्बन्ध में इन लोगों की इतनी दृढ़ धारणा बन गई है कि मानों उनके विचारों में मांस के

बिना मनुष्य जीवित ही नहीं रह सकता। मैंने उन्हें समझाया कि आप लोगों की धारणा सर्वथा मिथ्या है, कि मनुष्य मांस के बिना जीवित नहीं रह सकता। हमारे भारतवर्ष में आज भी करोड़ों मनुष्य ऐसे हैं जो मांस अंडा आदि भक्षण नहीं करते।

हमारे भारतवर्ष के पंजाब प्रान्त में विचरण करने वाले जैन महात्मा श्री प्रेमचन्द जी महाराज ने श्री प्रेम वेजीटेरियन सोसाइटी नामक संस्था कई वर्षों से स्थापित की हुई है। उसके पांच सुनहरी नियम ये हैं—

१. स्वयं वेजीटेरियन बनना व दूसरों को बनाना।

२. स्वयं सदाचारी बनना व दूसरों को बनाना।

३. विश्व में विश्व प्रेम की लहर उत्पन्न करना।

४. बिना किसी मतभेद के अहिंसा परमो धर्म का प्रचार करना।

५. दीन दुःखियों की यथाशक्ति सहायता करना।

इस सोसाइटी के हजारों सदस्य बन चुके है। और यह सोसाइटी बड़ी शीघ्र उन्नति कर रही है। इस सोसाइटी का मुख्य उद्देश्य मांसाहारियों को निरामिष-भोजी व सदाचारी बनाना है और इस सोसायटी की स्थान-स्थान पर शाखाएं हैं। वे खूब जोर शोर से इस सोसाइटी के नियमों का प्रचार कर रही हैं। इस सोसाइटी के द्वारा थोड़े से ही समय में दीन दुःखियों को अनुमान १०००००) जैसी बड़ी रकम से जीवनपयोगी साधन जुटा कर सहायता पहुंचाई गई है।

हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई आदि सभी सम्प्रदायों और जातियों के लोग इस सोसाइटी के सदस्य बन सकते हैं। इस सोसाइटी के द्वारा लाखों जीवों को अभयदान मिला। मैं भी अपने नगर जालन्धर की स्थानीय श्री प्रेम वेजीटेरियन सोसाइटी का अध्यक्ष हूं। और जितना बन पड़ता है अधिक से अधिक इसके प्रचार का प्रयत्न करता हूं।

पत्र में आगे लिखा था कि जब मैंने उन लोगों को यह बताया कि हमारे देश में करोड़ों लोग मांस नहीं खाते, तो वे लोग यह सुनकर बहुत चकित हुए।

मैंने कहा, इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं क्योंकि मनुष्य तो जन्म से ही वेजीटेरियन अर्थात् निरामिषभोजी है। मांस भक्षण की उपाधि तो उसने रसना के वशीभूत हो कर या संगति-दोष से लगा ली है।

पत्र में यह पत्र लिखा था कि महात्मा गांधी के समान इंगलैंड में भी एक सुविख्यात अध्यात्मवादी विचारक हैं। उनका नाम है जार्ज बर्नार्ड शा। वे भी पक्के निरामिष भोजी हैं और मांस का खंडन करते हैं। उन्हें कोई पूछता है कि आप मांस क्यों नहीं खाते तो वह उत्तर देते हैं कि 'मेरा पेट है कब्रिस्तान नहीं।' जार्ज बर्नार्ड शा ने यूरोप में भी वेजीटेरियन सोसाइटी स्थापित की हुई है। धीरे-धीरे इसका प्रचार हो रहा है, यदि यूरोप के लोगों को मांस भक्षण के फलस्वरूप होने वाले हिंसा आदि महा पापों का भली भांति दिग्दर्शन कराया जाय, तो यहां के बहुत से लोग मांस त्याग कर शुद्ध आहारी बन सकते हैं।

मैंने जहां तक इन लोगों को समझा है ये लोग हठी नहीं है।

यदि इन्हें भली भांति मार्ग दर्शन कराया जाय तो ये उसे ग्रहण करने को तैयार रहते हैं। मैं यहां पर अपने सम्पर्क में आने वाले बहुत से लोगों को मांस-निषेध का उपदेश देता हूं। इन लोगों पर इसका बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ रहा है। यह श्री प्रेम वेजीटेरियन सोसाइटी का ही प्रभाव है कि इसका एक सदस्य यूरोप जैसे मांसाहारी देश में भी इसका प्रचार कर रहा है। नाभे में लगभग एक मास तक धर्म प्रचार कर महाराजश्री मलेर कोटला पधारे। यहां पर भी बड़े उत्साह के साथ आप के प्रवचन प्रारम्भ हुए। किन्तु चार-पांच दिन बाद ही महाराजश्री की आंखों में भयंकर पीड़ा हो गई।

स्थानीय डाक्टरों की चिकित्सा चलती रही। फिर भी पीड़ा बढ़ती देख स्थानीय श्रीसंघ ने अमृतसर के प्रसिद्ध डाक्टर तुलसी राम जी को बुलाया। डाक्टर साहब ने महाराजश्री की आंखों का सूक्ष्मता पूर्वक निरीक्षण कर उचित चिकित्सा बताई। जिससे धीरे-धीरे लाभ होने लगा। और कुछ दिन में पीड़ा बिल्कुल जाती रही। शांति होने पर मार्गवर्ती गांवों में विचरते हुए आपश्री

लुधियाना पधारे।

यहां पर पंजाब प्रान्तीय मुनियों को सम्मेलन हुआ जिसमें संयम-उन्नति, धर्म विकास, साधुसमाचारी आदि अनेक विषयों पर विचार किया गया। और भविष्य में बढ़ती हुई शिथिलाचार की प्रवृत्तियों की रोकथाम के लिए कुछ नियम बनाये गये। लुधियाना से विहार कर महाराजश्री फगवाड़ा पधारे। यहां पर आपके चार-पांच व्याख्यान हुए। यहां से जालन्धर छावनी पहुंचे। जालन्धर छावनी में तपस्वी श्री निहाल चन्द जी महाराज आदि मुनिराज पहले से विराजमान थे। यहां पर महाराजश्री के व्याख्यान दो तीन दिन तक होते रहे। यहां पर महाराजश्री से विनती करने के लिए जालन्धर शहर के भाई आये और उन्होंने महाराजश्री से जालन्धर पधारने की विनती की।

महाराजश्री विनती को स्वीकार कर जालन्धर शहर पधारे। हजारों नर नारियों ने महाराजश्री का भव्य स्वागत किया। महाराजश्री अजीतपुरेमें सरदार बलदेव सिंह जी की बिल्डिग में ठहरे। महाराज जी के श्री मुख से मंगली सुनकर समागत जनता अपने-अपने घरों को गई। दूसरे दिन से यहां छः मार्गों के मध्य निर्मित विशाल पंडाल में महाराजश्री के प्रवचनों का क्रम प्रारम्भ हुआ। जनता उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही थी। चार पांच दिन में ही चातुर्मास के जैसा ठाठ लग गया। और श्रोतागणों की उपस्थिति चार पांच हजार तक जा पहुंची।

भारत-विभाजन

बृहस्पति वार के दिन जो हजारों नर-नारी महाराजश्री का प्रवचन सुनने के लिए आये थे, वे सब लोग अपने घरों को वापस पहुंचे ही थे कि इतने ही में ज्ञात हुआ कि पाकिस्तान के मतवाले मुसलमानों ने उन्मत्त होकर कांग्रेस के नेता सरदार लाभसिंह जी को कत्ल कर दिया। दो एक दूसरे लोगों के भी छुरे भोंके गये। बात की बात में सारे शहर में सन्नाटा छा गया, हिन्दू मुसलमानों का प्रश्न देखते ही देखते बड़ा उग्र रूप धारण कर गया। इस सं
बहुत से हिन्दू सिक्ख मुसलमान मारे गये।

जालंधर चातुर्मास (दुबारा)

(संवत् २००४)

इस प्रकार वीर संवत् २४७३ विक्रम संवत् २००४ सन् १९४७ के चातुर्मास के लिए आप जालन्धर शहर के स्थानक में विराजमान हो गये।

महासती श्री प्रवर्तिनी श्री राजमती जी महाराज आदि ठाणा शहर की स्थिति को बहुत विक्षुब्ध देखकर चातुर्मासार्थ जालन्धर छावनी पधार गईं। क्योंकि छावनी में मिल्टरी होने के कारण जालन्धर छावनी विशेष सुरक्षित प्रतीत हुई।

महाराजश्री के प्रवचन स्थानक में ही होते रहे। चातुर्मास के दिन बीतते-बीतते भाद्रपद कृष्ण त्रयोदशी से पर्यूषण महापर्व प्रारम्भ हुए। महाराजश्री ने श्री अन्तगड़ सूत्र का वाचन प्रारम्भ किया। किन्तु शहर में हिन्दू मुस्लिम झगड़े का जोर प्रचण्ड रूप धारण कर रहा था। इसलिए पर्यूषण महापर्व में महाराज श्री के केवल तीन ही प्रवचन हुए। संवत्सरी के दिन कर्फ्यू लगा हुआ था। अतः पोषा करने के लिए संघ के सेक्रेट्री श्री रतन लाल जी और सेठ सुदर्शन जी केवल ये दो ही भाई आ सके।

संवत्सरी की रात्रि को शहर में इतना भयंकर उपद्रव हो रहा था कि मनुष्य का हृदय बार-बार दहल उठता था। टोमी गने, मशीन गने इस प्रकार एक दूसरे पर मार कर रही थीं कि उनसे निकली हुई गोलियां सनसन करती हुई दरों दिवारों को चीर कर इधर से उधर चल रही थीं। जिनसे अनेक मनुष्य हताहत हो रहे थे, गली मोहल्ले घर बाजार आदि जिधर देखो उधर ही कोलाहल और करुणाजनक हाहाकार भरी आवाजें आ रही थीं। यह दृश्य

लगे। उपस्थिति फिर बढ़ते-बढ़ते हजारों तक जा पहुंची।

एक दिन एक आर्यसमाजी पंडित जी ने···जो महाराजश्री के प्रवचन सुना करते थे—व्याख्यान के समय खड़े होकर जालन्धर जैन बिरादरी को सम्बोधित करते हुए कहा कि मैं कितने समय से महाराजश्री के प्रवचन सुन रहा हूं। यह उपदेश वास्तव में अमूल्य और संसार भर की मानव जाति के लिए कल्याण कारक है, यदि ये प्रवचन लेखबद्ध हो जायं तो चिरस्थायी बन कर संसार के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। स्मरण रहे कि यह वही आर्य पंडित हैं, जिन्होंने आज से तीन वर्ष पूर्व महाराजश्री के वहां के चातुर्मास में भरी सभा में जैनधर्म के विरुद्ध विचार व्यक्त किये थे। किन्तु आज श्रद्धा पूर्वक प्रवचन श्रवण करने से जैन सिद्धांत को समझ गये और उसका अधिकाधिक प्रचार करने के लिए उत्सुक थे।

यह महाराजश्री के तत्वबोधी प्रवचनों का ही प्रभाव है कि पंडित जी ने भरी सभा में अपनी पूर्व घटना के लिए क्षमा मांगी और कहा कि मैं पहले जैन सिद्धांत की जानकारी नहीं रखता था इसलिए यह भूल हुई।

पुरुषार्थी भाइयों की सहायता

एक दिन महाराजश्री ने अपने प्रवचन में फरमाया कि पश्चमी पंजाब के बहुत से भाई धन संपत्ति सब कुछ लुटा कर बर्बाद होकर आये हैं, आप लोगों को यथाशक्ति अधिक से अधिक उनकी सेवा व सहायता करनी चाहिए। जिससे वे कुछ आराम की सांस ले सकें।

वास्तव में देखा जाय तो देश की स्वाधीनता का मूल्य तो इन्होंने ही चुकाया है और स्वतन्त्रता का लाभ ले रहे हैं आप लोग। इस प्रकार के ओजस्वी विचार को सुनकर जनता ने पश्चिमी पंजाब से आये हुए इन अपने भाइयों की दिल खोल कर सेवा की। और उन्हें प्रत्येक कार्य में पूरा पूरा सहयोग देना प्रारम्भ किया। व्याख्यान में जब नर नारी आते तो गांठों की गांठें कपड़े की लाते, वे कपड़े दीन दुखियों को वितरण कर दिये जाते।

चातुर्मास समाप्ति पर महाराजश्री की विदायगी में एक विराट् सभा का आयोजन किया गया। जिसमें अनेक अभिनन्दन पत्र महाराजश्री की सेवा में भेंट किए गए। जिनमें से निम्न प्रमुख हैं :—

सत्यमेव जयते नानृतम्।

परोपकाराय सतां विभूतयः ॥
परमश्रद्धेय व्याख्यानवाचस्पति अखंड ब्रह्मचारी
मुनिवर श्री श्री श्री १००८ जैनभूषण
श्री स्वामी प्रेमचन्द जी के
चरणारविंद में समर्पित

॥ अभिनन्दन पत्र ॥

वाक्यपटु मुनिवर !

आपकी कार्य कुशलता तथा ज्ञानामृत से प्रेरित होकर जालन्धर निवासी आपके कमल चरणों में उपस्थित होकर कृतज्ञता तथा प्रेम भावना प्रकट करते हुए द्रौपदी के चीर की भांति आपके शुभाशीर्वाद से आपके चरणों में बैठकर सुदामा के तुच्छ तंदुल की भांति यह भेंट अर्पित करते हैं। आशा है कि आप अपने सेवकों की यह तुच्छ भेंट स्वीकार कर अनुगृहीत करेंगे।

भगवन् !

आपके पवित्र गुणों का गान करना मानो सूर्य को दीपक दिखाना है। परन्तु फिर भी आपकी धर्मज्ञता, धर्मशीलता, सहनशीलता, उदारता, निर्भयता, वाक्यपटुता, परोपकारिता आदि गुणों के आगे प्रत्येक जालन्धर निवासी का अनायास ही सिर झुक जाता है।

श्रद्धेय पूज्यवर !

आपके इन गुणों ने जालन्धर निवासी जनता को तो क्या, दुःख से पीड़ित बाहिर से आने वाले शरणार्थियों को भी अमृतोपदेश से आनन्दित कर दिया है। आप सच्चे त्यागी, बालब्रह्मचारी, वाग्विभूषण व्याख्यान-वाचस्पति धर्म

निवासी जनता ने जो दुखित शरणार्थियों की तन मन धन से भारी सहायता तथा सेवा की है इसका श्रेय भी आपको ही है।

प्रभुवर !

आपका यह कार्य जगत् के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा। यह आपकी सर्वप्रियता का ज्वलन्त उदाहरण है।

भगवन् !

हम आप से अन्तिम यही प्रार्थना करते हैं कि अब जब आपको सुअवसर मिले इसी तरह जालन्धर निवासियों को अपने ज्ञानामृत से तृप्त करते रहें।

अन्तिम प्रार्थना—चत्वारि तव वर्धन्तां आयुर्विद्या यशो बलम्।

हम हैं आपके सेवक
जालन्धर निवासी।

श्री वीतरागाय नमः

प्रातः स्मरणीय, सर्वगुणसम्पन्न, जिनवाणि-
प्रचारक, त्यागमूर्ति, ब्रह्मचर्य्य तेज ललाट-
शोभाभिशाली, बालब्रह्मचारी, साधुशिरोमणि
जैनभूषण उपाध्याय श्री श्री १००८ श्री स्वामी
प्रेमचन्द जी महाराज के चरण
कमलों में

।। अभिनन्दन पत्र ।।

पूज्य गुरुदेव !

ऐसा कौन सा व्यक्ति है, जो आप के शुभ नाम से परिचित न हो। आप के समयानुसार कार्य क्षेत्र ने आप की सुसंस्कृत वाणी द्वारा जनता को मुग्ध करके अपनी कीर्ति को विशाल जगत में विस्तृत कर दिया है।

जैन धर्म निष्णात !

आप की प्रचण्ड मार्तंड समान गुणावली के आगे हमारे ये कतिपय श्रद्धा के पुष्प "अभिनन्दन स्वरूप" हास्यास्पद तो अवश्य होंगे किन्तु हमारे मानसिक विचारों का प्रवल प्रवाह कठोर आग्रह करता है कि आप अपनी शिष्य मण्डली सहित ९ (नौ मास) के आनन्दमय धर्म सम्बन्ध के पश्चात् हम से जुदा होने वाले हैं। हम आपकी सेवा में कुछ तुच्छ शब्द भेंट रूप निवेदन करें।

जैन कुल कमल दिवाकर !

आप ने चातुर्मास की स्थिति के प्रण को नागरिक परिस्थिति विक्षुब्ध होने के कारण ९ (नौ मास) में परिवर्तन कर दिया। इसके फल स्वरूप अन्य नगरों की अपेक्षा जालन्धर का वातावरण हर दृष्टि से शांति मय ही रहा। वह आप के स्थिर निवास का प्रत्यक्ष प्रमाण है। पश्चिमी पंजाब से आए हुए शरणार्थियों के लिए आपके उदार चित्र में कितनी सहानुभूति है, इस का पता, आप के अमृतोपदेशों से ही बुद्धिशील जनता लगा सकती है कि दीन दुखियों के सेवाभावी आपके उपदेश के संकेत मात्र से ही श्रोताओं के हृदय में दुःखियों के लिए सहानुभूति का अपार सागर उमड़ पड़ा, जिसके फल स्वरूप सैकड़ों की संख्या में लेफ (रजाईयां) वा बच्चों के लिए स्वेटर आदि वितरण किए गये, यह आप के करुणा बोधक उपदेश का ज्वलन्त उदाहरण है।

हे पाञ्चाल देश गौरव महात्मन् !

आप ने दूर देशान्तर में भ्रमण कर जनता के हृदय में जो धर्म का शुभ बीजारोपण किया है उस से कोई प्राणी अनभिज्ञ नहीं है। स्थान स्थान पर आप ने वेजीटेरियन सोसाइटियां स्थापित करके मनुष्य जाति के आहार, आचार, विचार, व्यवहार आदि का सुधार करके जो उपकार किया है इस से सभी व्यक्ति भली भांति परिचित हैं। आप ने महर्षि भगवन महा-

वीरजी के आदर्शमय सन्देश को देश के कोने कोने में पहुंचाने का बीड़ा उठाया है, आप का यह यत्न और उदारता अतीव सराहनीय है। उपरोक्त कार्यक्रम के अनुसार आप ने स्थानीय 'प्रेम वेजीटेरियन सोसाइटी' स्थापित की थी जो आप के पद चिह्नों पर चलती हुई अपने भाइयों में आप के सिद्धान्तों का भरसक प्रचार करती हुई आप के इस उपकार की अनन्त आभारी है।

अन्त में हम जिनेन्द्र प्रभु से सविनय प्रार्थना करते हैं कि जिन की अपार कृपा से इस वर्ष में आप के अपूर्व तथा दुर्लभ सत्संग का हमें शुभ अवसर प्राप्त हुआ है, भविष्य में भी आप के पवित्र दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त होता रहे ताकि हमारा यह मनुष्य जन्म सफल हो। यही हमारी हार्दिक कामना है।

हम हैं, आप के तुच्छ सेवक
२८-११-४७ सभासद् एस० एस० जैन सभा
जालन्धर शहर।

सेवा में

श्री श्री १००८ बालब्रह्मचारी

प्रसिद्ध वक्ता जगतभूषण
श्री स्वामी प्रेमचन्द
जी महाराज

पूज्य जहां पर पूजा पाते विपद वहां न आती है।
प्रेमचन्द की गाथा प्रतिदिन शिक्षा यही बताती है॥
नेम, धर्म, कुछ नियम नहीं है पापों से नहीं डरते हैं।
दुराचार के बने पुजारी तड़फ तड़फ कर मरते हैं॥
शास्त्र मार्ग को कुछ न समझें दुर्गुण जिन में छाये हैं।
प्रेमचन्द जी श्रेष्ठ मार्ग अब उन्हें दिखाने आये हैं॥
पापी हैं पर बनते धर्मी बातें बहुत बनाते हैं।
मदिरा मांस के वशीभूत हो गरदन ऐंठ घूमाते हैं॥

चातुर्मास समाप्ति के अनन्तर जालन्धर नगर से विहार कर महाराजश्री एडवोकेट मिस्टर खन्ना साहब की कोठी में विराजे। यहां पर खन्ना साहब तथा इनके भाइयों को शराब मांस का त्याग करवाया। महाराजश्री यहां से विहार कर एक दिन रास्ते में लगा, नकोदर पधारे। यहां के लोगों ने महाराजश्री का भव्य स्वागत किया। दूसरे दिन से महाराजश्री के सार्वजनिक उपदेश आरम्भ हुए। स्थानीय खत्री तथा जैन लोग इन प्रवचनों से बहुत ही प्रभावित व प्रसन्न हुए। प्रवचनों में प्रायः आठ-नौ सौ श्रोतागण उपस्थित होते थे। सात आठ दिन तक यहां धर्मोपदेश देकर यहां से विहार कर दूसरे दिन सुलतान पुर पधारे। यहां की जनता को एक सप्ताह तक अपने धर्मोपदेश से लाभान्वित कर यहां से आपने जीरे की ओर विहार कर दिया।

सांसियों के चक्कर में—

मार्ग में थोड़े से टूटे-फूटे झोपड़ों का एक ग्राम आया। मुनिराज इसमें पानी लेने के लिए गये, किन्तु ये लोग जैन साधुओं से सर्वथा अपरिचित पश्चिमी पंजाब के सांसी लोग थे और मुनिराजों को भी इनके सम्बन्ध में कुछ ज्ञान नहीं था। इसलिए वहां पर पानी का योग न बन सका। थोड़ी दूर चलने पर फिर एक गांव आया। यहां पर कोल्हू से गन्ने का रस लेकर थोड़ी दूर जाकर उसे पान कर आगे चल पड़े कि पीछे से दो काले मुसन्ड कुरूप व्यक्ति आ पहुंचे। उन लोगों ने हाथों में भाले पकड़े हुए थे। उस समय महाराजश्री शौच के लिए अकेले ही पीछे रह गये थे, मुनि मंडली थोड़ी दूर पर जा रही थी।

वे लोग महाराज से बोले—'ठहरो-ठहरो'। महाराज श्री ने पीछे मुड़कर उन आदमभियों को देखा तो वहीं पर ठहर गये। और साथी मुनि मंडली से कहा कि आप लोग यहीं पर ठहर जाएं। बात यह हुई कि जिस गांव में पानी लेने के लिये गये थे, उस गांव की औरतों ने घर आने पर अपने मर्दों से कहा कि यहां पर अजीब किस्म के लोग आये, और पानी पूछने लगे, उनके मुंह बंधे हुए थे, और कन्धों पर ऊन के गुच्छे से पड़े हुए थे। हाथ में भी कुछ

बातें सुनने से शान्त हो गये। और क्षमा मांग कर लौट गये। समीपवर्ती ग्राम में रात्रि भर ठहर कर ये मुनिराज अगले दिन जीरे पधार गये। यहां पर आठ नौ दिन तक आपके प्रवचन होते रहे। यहां पर फरीद कोट से लाला रूपलाल जी और लाला बाबूराम जी महाराजश्री के दर्शन करने के लिए आये। महा-राजश्री का विचार फरीद कोट होते हुए जंगल देश में जाने का था। इसलिए उनसे पूछा कि आजकल आपके उधर कैसी स्थिति है। ज्ञात हुआ है कि काश्मीर में हिन्दुस्तान व पाकिस्तानी फ़ौजों की लड़ाई हो रही है। और यह भी सुना गया है कि इसी कारण जंगल देश में और आपके फरीद कोट में भी कई लोग अपने-अपने घर छोड़ कर इधर-उधर जा रहे हैं।

उन्होंने कहा कि महाराजश्री की स्थिति तो ऐसी ही विक्षुब्ध है। हम लोग चाहते थे कि आपश्री फरीद कोट पधारें, किन्तु परिस्थिति वश विनती करने से लाचार हैं। महाराजश्री ने यह सुनकर जंगल देश में विचरने का विचार स्थगित कर दिया। कारण कि जब लोग ही इधर-उधर भाग रहे हैं तो ऐसी स्थिति में वहां धर्म प्रचार कैसे हो सकेगा।

यहां पर पशुओं के डाक्टर एक सरदार साहब व्याख्यान सुनने आया करते थे। एक दिन डाक्टर साहब ने प्रश्न किया कि जो जानवर दुःख से बहुत तड़फ रहा हो, और जिसके बचने की कोई आशा न हो, यदि उसे मार दिया जाय, तो उसमें क्या हर्ज है वह दुःख से छूट जायगा। उस समय फरीद कोट वाले लाला रूपलाल जी व लाला बाबूराम जी भी बैठे हुए थे। सब लोग बड़े उत्सुक थे कि महाराजश्री इसका क्या उत्तर देते हैं।

महाराजश्री ने फरमाया कि यह बात गलत है। ऐसा करने से वह मरने वाला जीव दुःख से नहीं छूट सकता।

डाक्टर साहब ने कहा कि क्यों नहीं छूट सकता।

महाराजश्री ने पूछा—वह जानवर जो दुःख पा रहा है इसका क्या कारण है?

डाक्टर साहब ने कहा—उसके पिछले किये हुए पाप कर्म हैं।

महाराजश्री ने पूछा—जिन पाप कर्मों से वह दुख पा रहा है, जिस गोली से वह पशु मारा गया क्या उस गोली से उसको दुःख देने वाले पाप कर्म भी साथ ही मारे जाते हैं ?

डाक्टर साहब ने कहा—ऐसा तो नहीं हो सकता, कर्म तो गोली से मारे जाने जाने वाले नहीं हैं।

महाराजश्री ने समझाया—जब गोली से कर्म नहीं मारे जाते तो इस पशु को मारने से क्या लाभ। दुःख देने वाले पाप कर्म तो ज्यों के त्यों बने रहे। गोली से मारे जाने पर भी उसे अगले जन्म के पाप कर्म भोगने पड़ेंगे तो फिर उस मूक प्राणी को मार कर स्वयं पाप का भागी क्यों बना जाय।

इस पर डाक्टर साहब ने कहा कि अब मैं इस विषय को ठीक-ठीक समझ पाया हूं। आप जो फर्माते हैं वह ठीक है। इस सम्बन्ध में पहले मेरे विचार गलत थे।

यहां से विहार कर महाराजश्री अगले दिन मोगा मंडी पधारे। मोगा मंडी में चार-पांच दिन धर्मोपदेश देकर जगरावां पधारे। यहां पर दस बारह दिन विराजे और प्रवचन होते रहे।

महात्मा गांधी का निधन

एक दिन अकस्मात् रेडियो बोला कि महात्मा गांधी को किसी ने गोली से मार दिया है। यह खबर बात की बात में सारे शहर में फैल गई। इस दुखद समाचार को सुनकर सारे शहर में शोक का सन्नाटा सा छा गया। मारे दुःख के लोगों के हृदय फटने लगे। सबके चेहरे मुरझा गये। सब कारोबार तत्काल बन्द हो गया। सब लोग शोक-सागर में डूब गये।

यहां पर इन दिनों विवाह शादियों का बहुत जोर था बाहर से बहुत सी [illegible]तें आई हुई थीं। गली मुहल्ले बाजारों में बाजे बज रहे थे। और जिधर [illegible]ो उधर ही रंगरलियां मनाई जा रही थीं। किन्तु महात्मा गांधी की मृत्यु

का शोक समाचार सुनते ही सब बाजे गाजे बन्द हो गये। लोग जिस किसी प्रकार शादियां निपटाकर अपने-अपने घरों को लौट गये।

कुछ दिनों के लिए सारे देश के प्रत्येक नगर ग्राम गली बाजार घर द्वार से आनन्द और उल्लास की भावना प्रायः लुप्त हो गई। सब लोग अगाध शोक सागर में निमग्न से दिखाई देते थे।

जगरावां से विहार कर महाराज रायकोट पधारे। यहां लाला रोशनलाल जी जैन के मकान में विराजे और यहीं पर प्रवचन होते रहे। जिस मकान में महाराजश्री ठहरे हुए थे उसके पास ही के एक मकान में पाकिस्तान से आये हुए सिक्ख लोग रहते थे। ये लोग रोज बकरे मारकर मांस बेचते थे। और मारे हुए बकरों की ताजा खालें सामने छत पर सुखा देते थे। महाराजश्री ने जैन भाइयों से कहा यहां इस प्रकार ताजी खालें सुखाने से हम स्वाध्याय नहीं कर सकते। तब बकरे मारने वाले सिक्ख को बुलाया गया, महाराजश्री ने उसे कहा कि आप लोग पिछले पाप कर्मों के कारण पाकिस्तान से बरबाद होकर यहां आये हो। फिर तुम प्रतिदिन इतने बकरे मार कर पाप के भागी बन रहे हो। इस पाप का फल भो भोगना ही पड़ेगा। क्या हो अच्छा हो यदि आप लोग इस पाप कार्य को छोड़ दें।

उत्तर मिला कि—हमारे पास आजीविका का कोई साधन नहीं है। अतः विवशता पूर्वक ऐसा करना पड़ता है।

महाराजश्री ने समझाया कि—संसार में आजीविका के अनेक साधन हैं। आप उनसे भी अपनी आजीविका चला सकते हैं। महाराजश्री के इस सदुपदेश से उसने बकरे कत्ल करने का त्याग कर दिया।

यहाँ पर दस बारह दिन तक स्थानीय जनता को प्रवचनों का लाभ देकर महाराजश्री गुज्जरवाल होते हुए लुधियाना पधारे। यहाँ पर आचार्य श्री की सेवा में महिना सवा महिना विराजे। यहीं पर भगवान महावीर स्वामी का जन्मोत्सव बड़े समारोह के साथ मनाया गया कि यहाँ से विहार कर दूसरे दिन अहमदगढ़ मंडी पधारे। यहां पर स्थानक के नीचे खुले बाजार में सार्वजनिक

व्याख्यान होने लगे। यहां के श्री संघ से चातुर्मास की विनती की। महाराजश्री ने सुखे समाधे विनती स्वीकार कर ली।

कुछ दिनों पश्चात् यहां से विहार कर धर्मोपदेश देते हुए मूणक पधारे यहां पर वयोवृद्ध गणावच्छेदक श्री बनवारी लाल जी महाराज की सेवा में ठहर कर थोड़े दिनों के पश्चात् मार्ग में धर्म प्रचार करते हुए मलेरकोटला पधारे। यहां पर धर्मोपदेश का लाभ देकर मार्ग में एक रात बिता चातुर्मासार्थ अहमद मंडी पधारे।

अहमद गढ मंडी चातुर्मास

(सं० २००५)

इस प्रकार वीर संवत् २४७४ विक्रम संवत् २००५ सन् १९४८ ई० का चातुर्मास अहमद गढ़ मंडी में प्रारम्भ हुआ। व्याख्यान वाणी का खूब आनन्द होता रहा। पर्यूषण महापर्व में श्री 'अन्तगड़' सूत्र का वाचन किया गया। संवत्सरी पर्व धर्म ध्यान क्रियाओं के द्वारा सानन्द सम्पन्न हुआ।

चातुर्मास पूर्ण कर कुछ मार्गवर्ती क्षेत्रों में धर्म प्रचार करते हुए आपश्री लुधियाना पधारे। यहां पर जेष्ठ मास में पंजाब प्रान्तीय साधु सम्मेलन हो यह निश्चित किया गया। यहां पर रोपड़ बिरादरी के भाई चातुर्मास की विनती के लिए आये और महाराजश्री से अपने नगर में चातुर्मास करने की आग्रह भरी विनती करने लगे।

महाराजश्री ने सुखे समाधे विनती स्वीकार कर ली। यहां से विहार कर विचरते हुए आपश्री माछीवाड़ा पधारे। यहां पर एक दो दिन ठहर कर जनता को धर्मोपदेश का लाभ दिया। यहां जिनेन्द्र गुरुकुल पंचकूला के अधिष्ठाता लाला रूपलाल जी और भाई इन्द्रराज सिंह जी वार्षिकोत्सव पर पधारने के लिए विनती करने आये, पर महाराजश्री के टांगों में बहुत तकलीफ थी, इसलिए इस अवसर पर पहुंचने में महाराजश्री ने असमर्थता प्रकट की। किन्तु गुरुकुल के शिष्ट मंडल ने अत्यधिक आग्रह किया। उनका बड़ा भारी आग्रह देख महाराजश्री ने फरमाया कि मैं सुखे समाधे गुरुकुल पहुंचने का प्रयत्न करूंगा।

तदनुसार यहां से विहार कर बागांवाला खरड़ आदि क्षेत्रों में धर्म प्रचार

करते हुए गुरुकुल पधारे। गुरुकुल का वार्षिक उत्सव बड़े समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। इस महोत्सव में बाहर से आये हुए हजारों नर नारियों तथा उपदेशक गण व भजन मंडलियों ने भाग लिया।

गुरुकुल पंचकूला से विहार कर विचरते हुए आप पुनः लुधियाना पधारे। यहां पंजाब प्रान्तीय साधु सम्मेलन हुआ। जिसमें अनेक विषयों पर पारस्परिक विचार विनिमय किया गया। सम्मेलन के कुछ दिनों पश्चात् लुधियाना से विहार कर फिलौर होते हुए बंगिया पधारे। यहां पर खुले मैदान में एक सप्ताह तक सार्वजनिक प्रवचन होते रहे। स्थानीय जैन और जैनेतर जनता ने इन प्रवचनों से पर्याप्त लाभ उठाया। यहां से विहार कर नया शहर पधारे। यहाँ पर चार पांच दिन विराज कर जनता को धर्मोपदेश का लाभ दे, बलाचोर पधारे। यहां पर भी लगभग एक सप्ताह प्रवचन होते रहे। यहां से विहार कर गांव के बाहर लाला बनारसी दास जी जैन की धर्मशाला में विराजे। यहां बलाचोर के रहने वाले कई हरिजनों को जैनधर्म का स्वरूप बतला कर गुरु धारणा करवाई। रात्रि में व्याख्यान हुआ जिसमें बहुत से लोगों ने भाग लिया।

यहाँ से रोपड़ की ओर विहार किया। रोपड़ के कई नवयुवक भाई मार्ग में महाराजश्री की सेवा में पहुंच गये। सूर्यास्त का समय हो रहा था, और समीप कोई गांव दिखाई न देता था, इसलिए सब मुनिराज व रोपड़ के भाई जंगल में ही एक वृक्ष के नीचे ठहर गये। यही तो साधु जीवन है। कभी बड़े-बड़े सुन्दर भवन मिलते हैं तो कभी निर्जन जंगलों में ही वृक्ष के नीचे जमीन पर रात काटनी पड़ती है।

दूसरे दिन प्रातः यहां से विहार कर शतलुज पार कर चातुर्मासार्थ रोपड़ पधार गये।

रोपड़ चातुर्मास

(संवत् २००६)

इस प्रकार वीर संवत् २४७५ विक्रम संवत् २००६ सन् १९४९ ई० का चातुर्मास रोपड़ में प्रारम्भ हुआ। नगर में प्रवेश के समय स्थानीय जैन और जैनेतर जनता ने महाराजश्री का भव्य स्वागत किया। आपश्री यहां के जैन बिरादरी के वरात घर में ठहरे। कुछ दिनों तक तो आप श्री के प्रवचन यहीं पर होते रहे, बाद में गांधी चौंक में पंडाल वनाया गया और वहीं पर आपके प्रवचन प्रारम्भ हुए। प्रवचनों में उपस्थिति उत्तरोत्तर बढ़ने लगी। लगभग दो ढाई हजार जनता प्रतिदिन प्रवचनों से लाभ उठाती रही।

श्रावण कृष्ण जन्माष्टमी के दिन श्री कृष्ण जी के जीवन के सम्बन्ध में व्याख्यान हुआ। इस प्रवचन में महाराजश्री ने श्री कृष्ण महाराज के जीवन की मौलिकता, न्यायप्रियता, गुणग्राहकता आदि अनेक विशेपताओं पर बड़े ही प्रभाव शाली रूप में प्रकाश डाला। सनातन धर्मी जनता ने इस प्रवचन में विशेप रूप से बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। श्रोतागणों की उपस्थिति तीन चार हजार के लगभग होगी। पर्यूपण पर्वाधिराज में 'श्री अन्तगड़' सूत्र का वाचन किया गया। जैन व जैनेतर लोगों ने इस अवसर पर वहुत वड़ी संख्या में पोपध किये। संवत्सरी पर्व वड़े आनन्द पूर्वक मनाया गया। दुपहर को 'जीवाभिगम सूत्र' का वाचन किया। इस वाचन के समाप्त हो जाने के पश्चात् श्रीभगवती सूत्र का वाचन प्रारम्भ हुआ। इस वाचन में स्थानीय कांग्रेसी नेता लाल मथुरा लाल जी जैन ने खूब रस लिया, क्योंकि आप कुछ जानकारी भी रखते थे। इस चातुर्मास में महाराजश्री ने कई सिक्ख मोचियों को गुरु धारणा देकर नवकार मन्त्र का पाठ पढ़ाया और मद्य मांस का त्याग करवाया था। वे

लोग भी बड़े प्रेम और श्रद्धा के साथ प्रायः श्री भगवती सूत्र का वाचन सुनते रहे। शास्त्र-श्रवण करने से उन लोगों के हृदयों में जैन धर्म के प्रति श्रद्धा बड़ी दृढ़ हो गई। इस प्रकार यहां का चातुर्मास सानन्द समाप्त हुआ। चातुर्मास की समाप्ति के समय महाराज श्री को विदाई देने के लिए एक विराट् सभा का आयोजन किया गया, जिसमें महाराजश्री की सेवा में निम्न अभिनन्दन पत्र भेंट किया गया—

जय जिनेन्द्र। ० वीतरागाय नमः ० जय जिनेन्द्र।।

श्रद्धाञ्जलि

सत्यवक्ता, ज्ञाननिधान, सन्तशिरोमणि,
त्यागमूर्ति, बालब्रह्मचारी,
पथप्रदर्शक, जैन-
भूषण

उपाध्याय, पूज्यपाद, श्री प्रेम चन्द जी महाराज के चरण कमलों में

आदरणीय श्री उपाध्याय जी महाराज !

वह दिन हमारे जीवन का बड़ा ही भाग्यशाली था, जिस दिन कि आप श्री ने रोपड़ के लिये चातुर्मास स्वीकृत किया था, चातुर्मास में आपने रोपड़ निवासियों को अपने पवित्र मधुर वचनामृत से आत्म सन्मान और आत्मोत्थान की शिक्षा का जो प्रवचन किया है और रोपड़ निवासियों पर अनुग्रह करके चिर अभिलषित मनोकामनाओं को पूर्ण कर दिया है उस के लिये हम आप का हार्दिक धन्यवाद करते हैं।

सर्वमाननीय श्री उपाध्याय जी महाराज !

आपश्री ने हम सांसारिकों और भौतिक संसार के अनुगामियों को आत्मि-कोन्नति का मार्ग दर्शाने का, और हम भूले भटके मनुष्यों को सत्य का प्रकाश ने का, जो प्रयत्न आपने किया है वह कुछ आप ही के योग्य है। हमारे

जैसे आलस्य और प्रमाद के शिकार मनुष्यों को उत्साह, और पुरुषार्थ का पाठ आप ही ने पढ़ाया संसार के माया जाल में फंसे हुए, और अधर्म की निद्रा में तन्द्रितजनों को आपने ही जगाया। धर्म के वास्तविक स्वरूप से अनभिज्ञ मिथ्यात्व में फंसे हुए को, धर्म का मार्ग आप ही ने दिखाया है, और जो कुछ आप ने हमको दिया है, वह संसार की कोई साधारण हस्ती नहीं दे सकती।

पूज्य श्री उपाध्याय जी महाराज !

इस गये गुजरे समय में भी भारत की शान है तो आप ऐसे तेजस्वी आत्मदर्शी, जितेन्द्रिय, और त्यागी ऋषियों के चरणारविन्द की कृपा से ही। समाज के गौरव हैं तो आप, हमको आपकी हस्ति पर मान है, निस्सन्देह कहा जा सकता है कि कठिन समय पर भी आपने अपने व्रत का अंचल नहीं छोड़ा। सांसारिक प्रकृति आपको अपनी तरफ नहीं आकर्षित कर सकती, कोई प्रलोभन सत्य पथ से वंचित नहीं कर सकता, कोई शक्ति या विपत्ति आप के मन को निरुत्साहित नहीं कर सकती, आप का त्याग और संयम अद्वितीय, आप की सत्यता, ब्रह्मचर्य और सन्तोष अवर्णनीय, आप की विद्वत्ता अति सराहनीयय, सूर्य को किस वस्तु से उपमा दी जा सकती है, समुद्र की तुलना किस से की जा सकती है। आप ज्ञान के सूर्य, और त्याग के समुद्र हैं, इस के अतिरिक्त भी आपका सर्दी, गर्मी, और भूख प्यास की यातनाओं को सहकर पदगामी होकर नगर २ में धर्मोपदेश सुनाना, सन्मार्ग दर्शाना, अपने उद्धार के साथ २ प्राणी मात्र के उद्धार की चेष्टा करना, ऐसी आश्चर्योत्पादक करनी है, जो हर व्यक्ति को आप के चरणों में झुका देती है। सहस्त्रों अशान्त हृदय व्यक्ति आपके चरणों में हार्दिक शान्ति प्राप्त कर रहे हैं, आप का जीवन तप और उपदेश संसार के सन्तप्त जीवों के लिये अमृत का काम करता है।

वाक्पटु श्री उपाध्याय जी महाराज !

आप की अमृत वाणी का सब से श्रेष्ठ गुण सादगी और पुरकारी का मेल है। कोई वाक्य वाक्यांश उलझा हुआ नहीं होता है। हर चीज साफ सुथरी रवाँ दवाँ है जैसे कोई गहरी नदी अपने साफ पानी के साथ गम्भीरता से बहती

रोपड़ के बहुत से भाई यहां तक महाराजश्री के साथ आये। यहां पर दो तीन व्याख्यान देकर आप अपने संसार पक्ष के गाव दभोटा पधारे। यहां पर दोनों समय व्याख्यान दिये, फिर यहां से नालागढ़ पधार गये। यहां पर प्रातः काल जनता को प्रवचनों का लाभ देते रहे। और मध्याह्न के समय में श्री भगवती सूत्र का वाचन होता रहा।

यहां पर रोपड़ के बहुत से भाई और गुरु धारणा लेने वाले सिक्ख मोची भाई भी आये। वे मोची भाई अपने साथ एक जाट सिक्ख सरदार को लाये। जो बड़ा भारी शिकारी और मांसाहारी था। महाराजश्री ने उससे भी शिकार और मांस का त्याग कराया। यहां से विहार कर मान पुर, बदी, आदि गांवों में धर्म प्रचार करते हुए कालका पधारे। दूसरे दिन स्थविर मुनि श्री नेकचन्द जी महाराज श्री जगदीश मुनिजी और व्याख्याता श्री विमल मुनि जी आदि ठाणा भी पधार गये। यहां पर अनुमानतः एक सप्ताह विराजे। यहां आपका एक सार्वजनिक प्रवचन हुआ। कालका से विहार कर आप श्री यहां से पंजोर पधारे।

पंजोर बड़ा ही रमणीय स्थान है। यहां कलरव करते हुए अनेक जल प्रात यत्र तत्र प्रवाहित होते रहते हैं। यहां बादशाही जमाने का एक सतमंजिला बाग है। जिसमें संगमरमर के फव्वारे चलते रहते हैं। इस उद्यान में बहुत से सुन्दर सुन्दर वृक्ष लगे हुए हैं। फव्वारों जल प्रवाहों और छोटी छोटी लहरों व सुन्दर फलों फूलों से लदे वृक्षों और मखमल के जैसे हरी घास वाले मैदानों आदि के कारण इस बाग का दृश्य बड़ा हृदय-हारी बन गया है। इस बगीचे में कुछ ऐसे आमके पेड़ देखने में आये, जिनके सम्बन्ध में कहा जाता है कि इन पौधों का सिंचन दूध से किया गया था और इनके फल बड़े स्वादिष्ट और मधुर हैं।

इस उपवन के फव्वारों में जो पानी आता है उसका कुछ पता नहीं लगता कि वह कहां से आ रहा है। पानी लाने वाले इन्जिनियर ने जल स्रोत से फव्वारों का सम्बन्ध ऐसे गुप्त रूप से जोड़ा है कि किसी को कुछ भी समझ

में नहीं आता । इस बाग को देखने के लिए लोग बड़ी दूर दूर से आते हैं । उन दिनों यह बाग महाराज पटियाला के अधिकार में था ।

यहां एक रात्रि ठहर कर आपश्री श्री जिनेन्द्र गुरुकुल पंचकूला पधारे । यह स्थान कालका शिमला रोड़ पर स्थित है । यहां पर दस बारह दिन तक विराजे । गुरुकुल के अध्यापक व अधिकारी वर्ग तथा छात्रगण महाराजश्री के प्रवचनों से खूब लाभ उठाते रहे । मध्याह्न काल में श्री भगवती सूत्र का वाचन होता रहा । क्योंकि श्री भगवती सूत्र के वाचन का दैनिक क्रम चलता आ रहा था । श्रीमान स्वामी धनीराम जी और गुरुकुल के अधिष्ठाता श्री लाला रूप लालजी जिन्हें जैन शास्त्रों का अच्छा बोध है आदि सज्जन भगवती सूत्र के वाचन का लाभ लेते रहे ।

इसी अवसर पर गुरुकुल के प्रधान लाला तेलूराम जी के साथ एक अंग्रेज दम्पति गुरुकुल में आये । इस युरोपियन सज्जन के साथ लाला तेलू रामजी का बहुत दिनों से घनिष्ठ परिचय था । वे ही उन दोनों को साथ लेकर महाराजश्री की सेवा में आये थे । महाराजश्री ने जैन धर्म की मान्यता जैन साधुओं के त्याग, और जैन धर्म की विशेषताओं के सम्बन्ध में संक्षेप में सब बातें उक्त अंग्रेज दम्पति को समझाई । महाराजश्री के भावों को एक मास्टर ने अंग्रेजी में अनुवाद कर उन्हें समझाया । वे दोनों पति पत्नी जैन फिलासफी के सिद्धान्तों को सुनकर बहुत हर्षित हुए । और जैन साधुओं के त्याग से तो अत्यधिक प्रसन्न और प्रभावित हुए ।

अंग्रेज साहब तो अत्यन्त श्रद्धा भाव में विभोर होकर महाराजश्री से बोले कि यदि आप हमारे देश इंगलैंड में पधारें, तो मैं आपको अपने बगीचे में ठहराऊं और मैं आपकी खूब सेवा करूं । साहब की यह बात सुनकर उपस्थित सब सज्जन हंस पड़े ।

महाराजश्री ने अंग्रेज साहब को समझाया कि हमारे लिए आपके देश तक पहुँचना संभव नहीं हो सकता । क्योंकि हम जलयान, वायुयान, मोटर, ट्रेन किसी प्रकार की सवारी में नहीं बैठते । सदा पैदल ही चलते हैं । अन्त

में अंग्रेज दम्पति ने जैन धर्म और जैन साधुओं की महत्ता के सम्बन्ध में एक सम्मति पत्र लिख कर दिया।

यहां से विहार कर आपश्री डेरा वसी पधारे। यहां पर आपके कई सार्वजनिक व्याख्यान हुए जिन से जनता ने बहुत बड़ी संख्या में लाभ उठाया। एक दिन व्याख्यान के पश्चात् गरमाये हुये शरीर को अचानक हवा लग जाने से शरीर अकड़ गया। ज्वर और जुकाम हो गया। तकलीफ बढ़ते बढ़ते उग्र रूप धारण कर गई। जठराग्नि भी इतनी मन्द हो गई कि थोड़े से आहार का पाचन भी ठीक नहीं होता था। दश बारह दिन तक चिकित्सा होती रही। किन्तु विशेष लाभ नहीं हुआ। ऐसी अवस्था में ही विहार कर एक रात मार्ग में बिता अम्बाला शहर आप पधारे। यहां कि जनता ने महाराजश्री का भव्य स्वागत किया। यहा आपके प्रवचन प्रारम्भ हुए और चिकित्सा भी चलती रही। कुछ दिनों में स्वास्थ ठीक हो गया।

प्रवचनों में श्रोतागणों की संख्या प्रतिदिन बढ़ने लगी। इसलिए व्याख्यान का प्रबन्ध लाला हेमराज जी जैन की धर्मशाला में किया गया। यहां पर हजारों भाई और बाई प्रवचन का लाभ उठाने लगे।

आर्य और आर्यत्व—

एक दिन आर्य समाज के प्रधान जी ने अपने आर्य समाज मन्दिर में महाराज जी से प्रवचन करने की विनती की। तदनुसार आपने स्थानीय आर्य समाज मंदिर में एक सार्वजनिक व्याख्यान दिया। इस प्रवचन का प्रमुख विषय आर्यत्व था। महाराजश्री ने फरमाया कि शास्त्रों में दो प्रकार के मनुष्य बतलाये हैं—आर्य और अनार्य। भारतवर्ष आर्य देश कहलाता है। इसमें आर्यत्व का ही अधिक से अधिक विचार और प्रसार होना चाहिये तभी इसका आर्यावर्त नाम सार्थक हो सकता है। जैन शास्त्र में आर्य शब्द को बड़ी प्रधानता दी गई है।

जैन शास्त्रों में भगवान महावीर स्वामी ने अपने शिष्य *सुधर्म स्वामी को*

जहां-जहां सम्बोधित किया है, वहां बार बार यहीं पाठ आता है 'अज्ज सुधम्मे अणगारे' इस सूत्र का अर्थ है "हे आर्य सुधर्म।"

उक्त सूत्र से यह भलीभांति स्पष्ट होता है कि भगवान महावीर स्वामी ने अपने शिष्य सुधर्म के लिए किसी अन्य विशेषण का प्रयोग न कर केवल आर्य शब्द का प्रयोग किया है। अतः आर्य शब्द बड़ा महत्वपूर्ण है। आप लोग यह न समझें कि महाराजश्री आज आर्य समाज मन्दिर में प्रवचन कर रहे हैं, इसलिए आर्य समाज को प्रसन्न करने के लिये आर्यत्व की प्रशंसा कर रहे हैं। वास्तव में जैन सिद्धांतों में आर्यत्व को बहुत ऊंचा स्थान दिया गया है। जैन सूत्र श्री प्रज्ञाप्ना जी में नौ प्रकार के आर्य बतलाये गये हैं।

१. क्षेत्र आर्य, २. कुल आर्य, ३. भाषा आर्य, ४. कला आर्य, ५. शिल्प आर्य, ६. कर्म आर्य, ७. ज्ञान आर्य, ८. दर्शन आर्य, ९. चारित्र आर्य।

(१) **क्षेत्र आर्य**—जिस क्षेत्र में मद्य मांस आदि अभक्ष्य पदार्थों का सेवन नहीं किया जाता, वह क्षेत्रार्य है।

(२) **कुल आर्य**—जिस कुल में अच्छे शुभ कर्म किये जाते हैं वह कुल आर्य है।

(३) **भाषा आर्य**—जिस भाषा के बोलने से या साहित्य पढ़ने से आर्यत्व की प्राप्ति हो, वह भाषा आर्य है।

(४) **कला आर्य**—जिस कला के शिक्षण से आर्यत्व उत्पन्न हो, वह कला आर्य है। जैन शास्त्र में कला बहत्तर प्रकार की बतलाई गई है। यदि कलाएं आर्य रूप हों, तो मनुष्य का जीवन उत्तरोत्तर विकसित होता है, किन्तु आज इन कलाओं का रूप विपरीत हो गया है। आर्यत्व का स्थान अनार्यत्व लेता जा रहा है। यह मानव जाति के पतन का सूचक है।

(५) **शिल्प आर्य**—शिल्प सौ प्रकार के होते हैं। जिन शिल्पों के द्वारा ानव को शुद्ध संस्कृति का लाभ हो, वह शिल्प आर्य।

(६) **कर्म आर्य**—परोपकार सहानुभूति पर रक्षण आदि करना कर्म ार्य कहलाता है।

(७) **ज्ञान आर्य**—वह ज्ञान आर्य कहलाता है जो मानव के लिए सत्पथ का निर्देशक हो, जिससे जड़ और चेतन आदि पदार्थों का भेद ज्ञात हो सके, और क्रमशः आत्मा को सुख की ओर ले जाने वाला ज्ञान सम्यक्ज्ञान ज्ञान आर्य है।

(८) **दर्शन आर्य**—दर्शन का अर्थ है श्रद्धा या विश्वास जो श्रद्धा अर्थात् वास्तविक सत्य वस्तु स्थिति का विश्वास मनुष्य को सही वस्तु स्थिति की ओर ले जाता हो, उसे सम्यग्दर्शन आर्य कहते हैं।

(९) **चारित्र आर्य**—पाप मार्ग का विरोध करने वाली सत्क्रियाओं को चारित्र आर्य कहते है। जिन क्रियाओं के द्वारा आने वाले पाप कर्मों को रोका जाय, वही सम्यक् चारित्र्य या चारित्र आर्य है।

इस प्रकार महाराजश्री ने जब नौ प्रकार के आर्यों की व्याख्या की, तो उसे सुनकर सब श्रोतागण अत्यन्त आनन्दित व प्रभावित हुए।

आत्म-बोध का कारण—

कुछ दिनों के बाद आर्य समाज का एक शिष्ट मंडल महाराजश्री के पास आया; और विनती की कि हम स्वामी दयानन्द सरस्वती का बोध दिवस अर्थात् जिस दिन उनको ज्ञान प्राप्त हुआ था, जिस दिन उनके जीवन का प्रवाह आर्य संस्कृति की ओर प्रवाहित हुआ था, उस दिन की स्मृति में महोत्सव मना रहे हैं। इसलिये आप भी इस अवसर पर पधार कर अपने सद्-विचारों से हम लोगों को लाभान्विद करें। तदनुसार इस विनती को स्वीकार करते हुए महाराजश्री आर्य समाज के समारोह में पधारे। वहां पर आपका बड़ा ही प्रभावशाली प्रवचन हुआ।

यह बात प्रसिद्ध है कि एक मूर्ति पर चढ़ाये हुए चावलों को खाते हु चूहे को देखकर बालक दयानन्द के मन में यह विचार आया कि जब यह अपने ऊपर चढ़े हुए चूहों को ही चावल खाने से नहीं हटा सकती तो यह कल्याण कैसे कर सकती है। बस उसी दिन से स्वामी जी ने जड़ मूर्तिवाद

छोड़कर ईश्वरोपासना को प्रधानता दी। बस यही मूर्तिवाद को छोड़ने का कारण बन गया।

महाराजश्री ने अपने प्रवचन में फरमाया कि बोध जड़ और चेतन दोनों से प्राप्त हो सकता है। वास्तव में आत्मबोध जड़ या चेतन पर ही निर्भर नहीं है। आत्मबोध तो आत्मज्ञान को आच्छादित करने वाले ज्ञानावरणीय कर्म का उपशम, क्षय उपशम और क्षायिकभाव पर निर्भर है। यदि आत्मा में ज्ञानावरणीय कर्म के उपशम आदि भाव जागृत हैं, तो उसे किसी जड़ पदार्थ विशेष के निमित्त से भी बोध हो सकता है। यदि ज्ञानावरणीय कर्म के उपशम आदि भाव आत्मा में जागृत न हो, तो चेतन गुरु आचार्य अथवा किसी धर्म प्रवर्त्तक तीर्थंकर का साक्षात् सहयोग मिल जाने पर भी आत्म बोध प्राप्त नहीं हो सकता। बाह्य साधन तो केवल निमित्तमात्र होते हैं। वास्तव में ज्ञान प्राप्ति का उपादान कारण तो ज्ञानावरणीय कर्म का उपशम आदि भाव ही है।

बाह्य निमित्त को पाकर जो ज्ञान होता है। उसे जैन शास्त्र में प्रत्येक बोध कहते है। ऐसे प्रत्येक बोध भूतकाल में अनन्त जीवों को हो चुके हैं।

जैसे नमी राजा को अपनी रानियों की चूड़ियों की झनझनाहट सुनकर वैराग्य प्राप्त हो गया था। नमी राजा को दाह ज्वर हो गया था, जिससे उसका सारा शरीर प्रति समय जलता रहता था। बड़े-बड़े चिकित्सक बुलाये गये, और उनके द्वारा चिकित्सा करवाई गई, पर दाह-रोग शान्त न हो सका। अन्त में किसी चिकित्सक ने बतलाया कि यह रोग मूल से नष्ट होने वाला नहीं है। इस जलन से कुछ शान्ति पाने के लिए यदि बावना गोशिश चन्दन घिस कर उसका लेप किया जाय, तो इन्हें कुछ शान्ति मिल सकती है। तदनुसार प्रतिदिन रानियां चन्दन घिसतीं और विलेपन किया जाता।

एक दिन जब रानियां चन्दन घिस रही थीं तो उनके हाथ की चूड़ियों का बहुत शोर हुआ जो महराजा के कानों को अच्छा नहीं लगा।

दुःख के कारण महाराजा को चूड़ियों की ध्वनि अच्छी नहीं लगी और सने पूछा यह शोर गुल कैसा हो रहा है।

रानियों ने उत्तर दिया—महाराज, हम आपके ताप की शान्ति के लिए चन्दन घिस रही हैं।

तब रानियों ने सोचा कि हमारे हाथों की चूड़ियों की खनखनाहट की ध्वनि महाराज को अच्छी नहीं लगती। इसलिए उन्होंने एक-एक चूड़ी रख कर बाकी सब उतार डालीं, और चन्दन घिसकर राजा के पास ले आई।

राजा ने पूछा— चन्दन तो घिस लाई पर आज चूड़ियों की आवाज क्यों नहीं आई।

रानियों ने उत्तर दिया—हमने सुहाग चिन्ह के रूप में केवल एक-एक चूड़ी रखकर बाकी सब उतार डालीं। हाथों में केवल एक ही एक चूड़ी होने से चूड़ियों की खनखनाहट की ध्वनि बन्द हो गई। चूड़ियों का आधिक्य ही इस कोलाहल का कारण था।

बस ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय उपशम भाव जागृत हो गया। महाराजा नामीराज समझ गये कि यह राजकीय कुटुम्ब (परिवार), ये रानियाँ, हाथी, घोड़े, माल, मुल्क, खजाने आदि अनेक पदार्थों के संयोग का जो ममत्व है वही दुःख का कारण है। बस इतने ही निमित्त मात्र से आत्मबोध पाकर राजा ने राज-पाट ठुकरा दिया, और निर्वाण प्राप्ति के लिए त्याग मार्ग के पथिक बन गये। इस प्रकार चूड़ियों की खनखनाहट की ध्वनि उनके वैराग्य का निमित्त कारण बनी।

वास्तव में उपादान कारण तो यहाँ पर ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय उपशम भाव ही है। यह कोई निश्चित सिद्धांत नहीं है कि जिसका निमित्त पाकर वैराग्य या ज्ञान हो, वह निमित्त भी पूज्य बन जाय। नमि राजा के वैराग्य का कारण चूड़ियां बनीं, तो क्या चूड़ियों को मत्था टेकते फिरें कि हे चूड़ी माता मुझे तुम्हारे निमित्त कारण से वैराग्य अर्थात आत्मबोध हुआ है इसलिये मैं तुझे वंदना करता हूं। यदि कोई व्यक्ति वैराग्य का कारण चूड़ियों को समझकर जहां तहां चूड़ियों की आवाज सुनकर उन्हें नमस्कार करता फिरे तो उसे लोग बुद्धिमान न कहकर बुद्धिहीन ही समझेंगे। यह तो एक अपवाद है,

कि बाह्य निमित्त से बोध हो जाय, यह कोई सिद्धांत नहीं है ।

इसी प्रकार कलिंग देश के कर्कण्डु राजा को भी एक वृद्ध सांड को देखकर वैराग्य उत्पन्न हो गया था। यह घटना इस प्रकार है :—

कर्कण्डु राजा को गोपालन का बहुत बड़ा शौक था। हजारों गौएं उनकी देख-रेख में पलती थीं। एक गाय ने एक ऐसे बछड़े को जन्म दिया, जो बड़ा बलवान और बहुत सुन्दर था। राजा स्वयं भी गौओं की देख-भाल करने के लिये समय-समय पर गौशाला में जाया करता था। इस नवजात सुन्दर बछड़े को देखकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ और गोपालक को आज्ञा दी कि इसकी माता का दूध न निकाला जाय, सारा का सारा इसको पिला दिया करें। तदनुसार ऐसा ही किया गया।

समय पाकर वह बछड़ा एक बड़ा हृष्ट-पुष्ट विशाल देह वाला बलवान सांड बन गया। राजा ने उसका नाम दुद्धल सांड अर्थात् दूध से पला हुआ सांड रख दिया। वह दुद्धल सांड जवानी के जोश में आकर सब दूसरे पशुओं को अपना पराक्रम दिखाने लगा। कभी-कभी तो क्रोधावेश में आकर वह दूसरे पशुओं को पछाड़ डालता। किंतु यह जवानी सदा रहने वाली तो है नहीं। धीरे-धीरे जवानी के दिन बीतने लगे और बुढ़ापा अपना अधिकार जमाने लगा। अब तो उस दुद्धल को बैठकर उठना भी कठिन हो गया। क्योंकि वृद्धावस्था के कारण सारा शरीर जीर्ण-शीर्ण व बलहीन हो गया था। छोटे छोटे बछड़े या कमजोर पशु भी उसे आकर सींग मारने व सताने लगे। किन्तु अब वह उनका मुकाबला तो कर नहीं सकता था। दूसरे पशुओं के द्वारा दिये गये कष्टों को वह चुप-चाप सहता रहता। एक दिन राजा ज्योंही गौशाला में आया तो उस दुद्धल सांड की ऐसी दशा देखकर मन में विचार करने लगा कि इसका वह बल व पराक्रम आज वृद्धावस्था के कारण कितना क्षीण हो गया है जिससे यह इस प्रकार विडंबना का पात्र बन रहा है। राजा की आत्मा इस घटना को देखकर अनायास ही बोल उठी हे राजा कर्कण्डु तेरी भी यह जवानी [illegible] रहने वाली नहीं है। यदि तेरी आयु लम्बी है तो तुझे भी यह अवस्था [illegible] ही पड़ेगी। इस प्रकार दुद्धल सांड के निमित्त को पाकर उसे वैराग्य हो

गया। वह राजपाट के ममत्व को छोड़कर आत्म कल्याण के मार्ग पर अग्रसर हो गया। इसी प्रकार द्विमुख राजा और नगई राजा स्तम्भ और आम्र वृक्ष का निमित्त पाकर आत्म बोधी बन गये।

जैन सिद्धांत की यह मान्यता है कि ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय उपशम होने से जड़ और चेतन प्रत्येक वस्तु आत्मबोध का कारण बन सकती है, किन्तु पूज्य अर्थात् वंदनीय ज्ञान दर्शन चारित्र युक्त चैतन्य ही हो सकता है। इस प्रकार जब महाराजश्री ने आत्म बोध के सम्बन्ध में जैन सिद्धान्तों का विवेचन किया तो श्रोतागण अत्यंत प्रसन्न व प्रभावित हुए। और महाराजश्री प्रवचन कर अपने स्थान पर पधार गए।

महाराजश्री के यहां विराजते हुये वसंत पंचमी का दिन आ गया। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की ओर से गांधी पार्क में वसंतोत्सव मनाने का आयोजन किया गया। महाराजश्री को भी लोगों ने महोत्सव में पधार कर भाषण देने की प्रार्थना की। महाराजश्री विनती को स्वीकार कर वसंत समारोह में पधारे। इस अवसर पर दस हजार के लगभग श्रोतागणों की उपस्थिति में महाराजश्री ने वसंत के सम्बन्ध में स्वनिर्मित निम्न कविता पढ़कर जब उसकी व्याख्या की तो सब लोग मुक्त-कंठ से महाराजश्री की प्रशंसा करने लगे—

स्तवन

आया ऋतु वसंत, गुण गाओ भगवंत, सुख पाना।
आज मिलके वसंत मनाना ।। टेक ।।

ऋतुराज वसंत है आया, नये युग का सन्देश है लाया।
जीर्ण शीर्ण जो पत्र, झड़ पड़े यत्र तत्र, बोझ घटाया ।। १ ।।

दिल से वैर विरोध हटाओ, दीन दुखिओं को गले लगाओ।
हरो उनके तुम दुःख, जिससे होवे उनको सुख, प्रेम बढ़ाना ।। २ ।। आ०

विदेशी सभ्यता का मैल मिटाओ, अपनी सभ्यता का रंग चढ़ाओ।
ऐसा होवे गूढ़ा रंग, दुनिया देख होवे दंग, मन होवे हुलसाना ।। ३ ।। आ०

तुम हिन्दी हो, हिन्दी पढाओ, हिन्दी भाषा का गौरव बढ़ाओ।
जिससे होवे तुमको ज्ञान, निज पर की पहचान, हो सयाना ॥ ४ ॥ आ०

नई उमगें, नई हो तरंगें, शुभ काम करत नहीं संगे।
कहता ऋतु वसंत, मिल जाय तुमको संत, लाभ उठाना ॥ ५ ॥ आ०

प्रेम प्रेम का दरिया बहाना, गिरे भाइयों को ऊंचे उठाना।
होवे हिन्द जो सिंध, मिल करो जय हिंद, गीत गाना ॥ ६ ॥ आ०

इस प्रकार महाराजश्री वसंत पंचमी के सम्बन्ध में जनता के हृदयों में सात्विक विचारधारा प्रवाहित कर स्थानक पधारे। कुछ दिनों बाद कैथल के भाई महाराजश्री की सेवा में आये, और क्षेत्र परसने की उन्होंने विनती की। महाराजश्री ने सुखे समाधे क्षेत्र परसना स्वीकार कर लिया। कुछ दिनों पश्चात् आपने यहाँ से अम्बाला छावनी की ओर विहार किया। अम्बाला के बहुत से बाई भाई यहाँ तक महाराजश्री के साथ आये। आप यहाँ के स्थानक में विराजे। और समागत जनता को मंगली सुनाकर उनकी मंगल कामना की।

अम्बाला छावनी में दिगम्बर मन्दिर के सामने मैदान में पंडाल बनाया गया। इसी पंडाल में प्रवचन प्रारम्भ हुए, अम्बाला शहर व छावनी की जनता आपके धर्मोपदेशों से खूब लाभ उठाने लगी। यहां पर दिगम्बर जैन समाज के घर अधिक हैं। दिगम्बर भाई भी महाराजश्री के प्रवचनों में अच्छी संख्या में लाभ उठाते रहे। बहुत से निष्पक्ष दिगम्बर भाई जैन धर्म की प्रभावना देखकर बहुत प्रसन्न हुए। महाराजश्री यहां से विहार कर दूसरे दिन शाहाबाद पधारे। यहां पर जैनों का एक ही घर है।

अम्बाला शहर और छावनी से बहुत से जैन व जैनेतर भाई शाहाबाद आये। स्थानीय व बाहर से आई हुई जनता के समक्ष आपका एक प्रवचन हुआ।

यहां से दूसरे दिन विहार कर आप कुरुक्षेत्र पधारे। यहां चार पांच दिन र जनता को धर्मोपदेश देते रहे। यहां से विहार कर तीन दिन में थल पहुँचे। स्थानीय श्री संघ ने महाराजश्री का बड़े उत्साह के साथ स्वागत

किया। स्थानक में प्रवेश कर आपश्री ने साथ में आई हुई जनता को मंगली सुनाई। दूसरे दिन से महाराजश्री के प्रवचन आरम्भ हुए।

यहाँ पर अम्बाले के भाइयों का एक शिष्ट मंडल चातुर्मास की विनती करने के लिए आया।

महाराजश्री ने सुखे समाधे स्वीकृति दे दी। तीन व्याख्यान तो स्थानक में हुए, बाद में अग्रवाल धर्मशाला में सार्वजनिक प्रवचन प्रारम्भ हुए।

इन प्रवचनों से जनता बड़ी संख्या में लाभ उठाने लगी। दोपहर के पश्चात् भगवती सूत्र का वाचन चलता रहा। यहां पर महावीर जयन्ती महोत्सव मनाया गया। लगभग एक मास विराज कर आप श्री ने कैथल से समाणे की ओर विहार कर दिया। मार्गवर्ती गांव में धर्म प्रचार करते हुए चार पाँच दिन में समाणे पधार गये। दूसरे दिन से प्रवचन शुरू कर दिये। इन व्याख्यानों में जनता दिन-प्रति-दिन बढ़ने लगी। यहां दुपहर के पश्चात् श्री प्रज्ञापन सूत्र का वाचन होता रहा। यहां पंचकूला गुरु कुल के अधिष्ठाता लाला रूप लालजी और लाला इन्द्रराज जी मुनीम महाराजश्री के पास आये उन्होंने महाराजश्री से गुरुकुल के वार्षिकोत्सव पर पधारने की विनती की। महाराजश्री ने सुखे समाधे पधारने की स्वीकृति दे दी। समाणे से विहार कर महाराजश्री दूसरे दिन पटियाला पधारे। यहाँ पर आपके दो प्रवचन हुए।

पटियाले के किले में विस्फोट—

यहां से विहार कर महाराजश्री पटियाले से नौ मील दूरी महाराजा नालागढ़ के डेरी फार्म की कोठी में ठहरे। यहाँ पधारने पर पटियाले से टेलीफोन पर सूचना आई कि पटियाले के किले में जो बारूद रखा था, उसमें विस्फोट हो गया है। इस विस्फोट की भयंकरता इतनी तीव्र थी कि किले की बड़ी मजबूत विशाल दीवार उड़ गई। और उसमें लगे हुए ईंट पत्थर आदि बहुत दूर दूर तक जा गिरे। ऐसा ही एक पत्थर बहुत दूर के हलवाई की कड़ाई में जा कर गिरा, जिससे उसकी, कड़ाई की तली निकल गई। इस भयंकर विस्फोट

के परिणाम स्वरूप कई लोग मारे गये बहुत से हताहत हो गये। मरने वालों में एक नौजवान जैन भाई भी था। जब महाराजश्री ने पटियाले से विहार किया था, तब विहार में साथ आने वाले भाइयों ने उसे भी महाराजश्री के साथ डेरी फार्म तक लाने का प्रयत्न किया। किन्तु उसने उत्तर दिया कि मैं अभी दुकान पर जाके आता हूं। पर भावी बड़ी बलवान है। उसे भला कौन टाल सकता है, वह अपनी दुकान के अन्दर ही मलवे से दब कर मर गया।

आप यहां से बहादुर गढ़ होते हुए बनूड़ पधारे। यहां पर आपके दो तीन प्रवचन हुए। यहां से विहार कर एक रात मार्ग में ठहर कर गुरुकुल पंच कूला पहुँचे। यहां पर गुरुकुल का वार्षिकोत्सव बड़े समारोह के साथ मनाया गया।

देश के विभाजन के परिणाम स्वरूप पाकिस्तान से आये हुए बहुत से असहाय बालकों का भरण पोषण व शिक्षण आदि का प्रबन्ध सरकार को करना था। इसके लिए जिनेन्द्र गुरुकुल पंचकूला सरकार को प्रत्येक दृष्टि से उन बालकों के लिए सर्वथा उपयुक्त स्थान प्रतीत हुआ। इसलिये सरकार की ओर से चार पांच सौ लड़के इस गुरुकुल में भरती किये गये। जिनका व्यय तीस रुपये प्रति बालक के हिसाब से सरकार ने दिया।

पश्चिमी पंजाब अर्थात् पाकिस्तान से आने वाले बहुत से बालकों में मांस भक्षण और चोरी आदि की बहुत सी बुरी आदतें पड़ी हुई थीं। वे बुरे संस्कार गुरुकुल के वातावरण व शिक्षण के प्रभाव से दूर हो गये। वार्षिक महोत्सव के पश्चात् महाराजश्री लगभग एक मास तक यहीं विराजे।

प्रातःकाल महाराजश्री का प्रवचन होता रहा। गुरुकुल के अधिकारी व अध्यापक गण तथा विद्यार्थी वृन्द ने महाराजश्री के इन प्रवचनों से यथेष्ठ लाभ उठाया। मध्यान्ह में प्रज्ञापना जी सूत्र का वाचन होता रहा। स्वामी धनीराम जी और गुरुकुल के अधिष्ठाता लाला रूपलाल जी इस वाचना से विशेष लाभ लेते रहे। महाराजश्री ने बहुत से बच्चों को सामयिक का पाठ सिखाया। परिणाम स्वरूप सैकड़ों बच्चों ने सामयिक करनी शुरू कर दी। उनके लिए धोती आसन आदि का यथाशक्य प्रबन्ध किया गया। महाराजश्री के यहाँ

विराजने से छात्रगणों को चरित्र निर्माण में बहुत बड़ी सहायता मिली। कोई छात्रों का रहन-सहन कालेज के लड़कों की तरह अंग्रेजी फैशन का बन गया था। बहुत से अध्यापकों का जीवन भी पाश्चात्य सभ्यता के रंग में रंगा हुआ था। गुरुकुल के अध्यापक और ब्रह्मचारियों के लिये ऐसा जीवन शोभनीय नहीं था।

महाराजश्री ने इसलिये एक दिन अध्यापक गण व छात्रों के समक्ष मधुर शब्दों में उपदेश देते हुए उन लोगों को बड़े प्रेम से समझाया कि गुरुकुल संस्था संन्यासियों के जीवन के समान एकान्त सेवन व संयमी जीवन के विकास का प्रतीक और परिचायक है।

इसके अध्यापक व ब्रह्मचारियों का जीवन गुरुकुल संस्कृति के अनुसार सरल सात्विक और सीधा सादा होना चाहिए। इस प्रकार के सद् उपदेशों से प्रभावित होकर अध्यापक वर्ग तथा छात्रों ने स्वेच्छापूर्वक आपस में ही अंग्रेजी फैशन के एक दूसरे के बाल काट डाले। और शिखा धारी गुरुकुल संस्कृति के जीवन को अपना लिया।

वैरागी ताराचंद की दीक्षा—

यहां पर ताराचंद नामक एक व्यक्ति गुरुकुल में नौकर था। वह लाला इन्द्रराज जी की प्रेरणा से महाराजश्री के पास आने जाने लगा। और साधु का प्रतिक्रमण भी याद करने लगा। महाराजश्री गुरुकुल में एक कल्प पूरा कर मणि माजरे पधार गये। गुरुकुल के बहुत से छात्रगण व अध्यापकगण भी यहां तक आपके साथ आये। यहां पर दो प्रवचन देकर आपने खरड़ की ओर विहार कर दिया। जब महाराज खरड़ की सड़क पर आये, तो लाला इन्द्रराज जी साठ सत्तर विद्यार्थियों के साथ महाराजश्री की सेवा में आ पहुंचे। थोड़ी दूर साथ चलने पर महाराजश्री उन्हें मांगलिक सुनाने लगे, और उन्हें समझाया कि तुम लोग छोटे बच्चे हो, चलने से थक जाओगे, इसलिए अब आप लोग वापिस लौट सकते हो। पर छात्रों ने आग्रह किया कि हम लोग खरड़ तक आपके साथ ही चलेंगे। यह कह कर वे सब लड़के महाराजश्री के साथ चल पड़े। लगभग

बारह मील की यात्रा कर सब लोग सकुशल खरड़ पहुंच गये। यहां पर एक दिन ठहर कर विद्यार्थी वापिस गुरुकुल चले गये। दूसरे दिन से यहां पर आपके धर्मोपदेश आरम्भ हुए। कुछ दिनों के पश्चात् महाराजश्री ने रोपड़ की ओर विहार करने के भाव व्यक्त किये। स्थानीय बिरादरी ने कुछ दिन और ठहरने की विनती की। तब महाराजश्री ने कहा कि रोपड़ में जा कर इस वैरागी भाई को दीक्षा देने का विचार है। इस पर स्थानीय बिरादरी ने आग्रह किया कि इस वैरागी भाई को दीक्षा तो हम यहीं पर दिलाना चाहते हैं।

इस प्रकार महाराजश्री ने बड़े भारी आग्रह को देख खरड़ में ही दीक्षा देने का निश्चिय कर लिया। दीक्षा देने के लिए लुधियाने से आचार्य श्री की अनुमति भी मंगाली गई। दीक्षामहोत्सव का कार्य क्रम खरड़ में बड़े आनन्द के साथ आरम्भ हुआ। लुधियाने से प्रसिद्ध कवि बुलाये गये। पंचकूला गुरुकुल के विद्यार्थी भी अपना अपना प्रोग्राम लेकर आये। रोपड़, अम्बाला, बनूड, आदि स्थानों के बहुत से भाई इस दीक्षा महोत्सव में भाग लेने के लिए आए। दीक्षा के दिन इस उत्सव में स्वामी धनीराम जी के शिष्य पंडित कृष्ण चन्द्र जी भी आकर सम्मिलित हो गए।

रात्रि के आठ बजे से स्थानक के सामने खुले मैदान में विद्यार्थियों के भजन आरम्भ हुए। लुधियाने के संगीत विशारदों ने बड़े सुन्दर गायन के द्वारा जनता को आनन्दित किया। रात्रि का यह कार्य क्रम बड़ा ही आकर्षक और शानदार रहा।

दूसरे दिन प्रातः काल वैरागी जी का जलूस प्रमुख बाजारों व सड़कों पर से निकाला गया। बैंड बाजे छात्रों की भजन मंडली व सुकवियों की कविताओं की ध्वनि से सारा नगर मुखरित हो उठा। हजारों नर-नारियों ने इस जलूस में भाग लेकर इसकी भव्यता को बहुत अधिक बढ़ा दिया था। जिधर देखो उधर ही रंग बिरंगे कपड़े पहने नर नारी बड़े आनन्द में मग्न होकर जय जय कार की ध्वनि से गगन मण्डल को गुंजा रहे थे। प्रत्येक व्यक्ति का मुख मण्डल

हर्ष और उल्लास से विकसित हो रहा था। इस प्रकार यह जलूस बड़ी धूम धाम और गाजे बाजे के साथ आगे बढ़ता हुआ शहर से बाहर तालाब के पास बगीचे में बनाये गए विशाल पंडाल में जा पहुंचा। इस पंडाल में कई हजार व्यक्तियों के बैठने का प्रबन्ध किया गया था।

मंच की सजावट और भव्यता दर्शकों के मनों को अनायास अपनी ओर आकृष्ट कर रही थी। यह विशाल जलूस इस पंडाल में पहुंच कर विराट सभा के रूप में परिवर्तित हो गया। इस प्रकार बड़ी धूम-धाम के साथ दीक्षा महोत्सव समारम्भ का श्रीगणेश हुआ। जलूस के पंडाल में पहुंचते पहुंचते महाराजश्री ने भी मुनि मण्डली के साथ वैरागी जी को दीक्षा देने के लिए पंडाल में पदार्पण किया। महाराजश्री के पंडाल में पधारते ही उपस्थित जन समूह ने जयकारों के गगन भेदी नारों से दिग् दिगन्त को प्रतिध्वनित कर दिया। चारों ओर जंगल में मंगल का दृश्य दिखाई देने लगा।

वैरागी का परिचय—

दीक्षा महोत्सव के प्रारम्भ में सर्व प्रथम लुधियाना के एक कवि ने मंगला-चरण का पाठ किया। फिर वैरागी जी को साधु का वेष पहना कर महाराजश्री के पास लाया गया। वैरागी जी के महाराजश्री के सामने आकर एक चौकी पर खड़े हो जाने पर उपस्थित जन समूह को उनका परिचय दिया गया, कि उनकी जन्म भूमि कहां है, उनका पालन पोषण कहां हुआ और अध्ययन आदि कहां सम्पन्न हुआ, आदि सब बातों के सम्बन्ध में व्यापक प्रकाश डालते हुए महा-राजश्री ने बताया कि उनकी जन्म भूमि शिमला के पास है, माता पिता का वियोग हो जाने के कारण इनका पालन पोषण तथा अध्ययन एक अनाथालय में हुआ। कुछ बड़े हो जाने पर अपनी बहिन के पास रहे। कुछ समय पश्चात् वहां से जिनेन्द्र गुरुकुल पंचकूला में आकर कार्य करने लगे।

जब हम लोग विचरते हुए वार्षिकोत्सव के अवसर पर गुरुकुल पहुंचे उस समय ये वहां सर्विस करते थे। हम लोगों के सम्पर्क में आने पर इनकी धार्मिक भावनाएं प्रबुद्ध हो उठीं और अधिकतर हमारे ही पास रहने लगे।

साधु लोग प्रातः सायं आत्म शुद्धि या आलोचन रूप जो प्रतिक्रमण करते हैं, उसका पाठ भी इन्होंने सीख लिया।

इस प्रकार जब वैराग्य भावनाएं बद्धमूल हो गईं, तो इन्होंने संसार का परित्याग कर साधु बनने के भाव प्रकट किये।

हम लोग जब गुरुकुल से यहाँ आए तो ये भी हमारे साथ यहां आ गए। आज इन्हें इनकी इच्छानुसार दीक्षित किया जाता है। हमारा तो यही कहना है कि जैन फकीरी बड़ी कठोर साधना है इसका पालन करने के लिए बड़े वैराग्य और धैर्य की आवश्यकता है।

किन्तु बार-बार इन्हें खूब सावधान करने तथा साधु नियमों की कठोरता के सम्बन्ध में भली भांति समझाने पर भी इन्हें अपने विचारों पर दृढ़ देख कर आज इन्हें संन्यास व्रत धारण कराया जाता है।

दीक्षार्थी भाई का इस प्रकार परिचय देने के पश्चात् महाराजश्री ने जैन साधुओं के पंच महाव्रत और दूसरे नियम उपनियम आदि पर प्रकाश डालते हुए उनकी संक्षिप्त व्याख्या कर समझाया कि जैन साधुओं को सदा इन पंच महाव्रतों का पालन करना होता है—

(१) अहिंसा—जैन साधु को आजीवन मन वचन और काया से किसी भी सूक्ष्म या स्थूल जीवन की हिंसा नहीं करनी।

(२) सत्य—सारी आयु जान बूझकर किसी प्रकार का भी स्थूल या सूक्ष्म झूठ नहीं बोलना।

(३) अस्तेय—किसी प्रकार की भी चोरी नहीं करनी अर्थात् वस्तु के स्वामी की आज्ञा के बिना, किसी वस्तु का भी उपयोग नहीं करना।

(४) ब्रह्मचर्य—मन, वचन, कर्म से सदा ब्रह्मचर्य का पालन करना।

(५) अपरिग्रह—अर्थात् रुपया, पैसा, सोना, चांदी, धन-धान्य आदि पदार्थों का ग्रहण नहीं करना। कंदमूल आदि का आहार नहीं करना। रात्रि में अपने पास भोजन आदि

न रखना और न उसे काम में लाना। साधु के लिए नियत परिमित वस्त्रों और पात्रों और पुस्तक आदि आवश्यक वस्तुओं के सिवाय अन्य कोई निरर्थक वस्तु अपने पास न रखना, सदा नगे पैर रहना और पैदल चलना, गृहस्थों के यहां से शुद्ध भिक्षा मांग कर लाना आदि साधु जीवन-चर्या के नियमों की व्याख्या करते हुए महाराजश्री ने वैरागी जी को दीक्षा ग्रहण कर लेने के पश्चात् सदा इन नियमों पर दृढ़ रहने के लिए प्रतिज्ञावद्ध होने को प्रस्तुत किया।

तत्पश्चात् वैरागी जी को जैन दीक्षा का पाठ पढ़ाया गया। महाराजश्री ने उस पाठ की व्याख्या भी जनता के समक्ष इतने सुन्दर ढंग से की कि उपस्थित जन समूह साधु की कठोर साधन से भली भांति परिचित हो गया।

नव दीक्षित मुनि जी का नाम धर्म मुनि रखा गया। इस प्रकार बड़े आनन्द, उत्साह, हर्ष और उल्लास के वातावरण में वैरागी जी को दीक्षा देकर और नव दीक्षित मुनि को साथ लेकर महाराजश्री जैन स्थानक में पधार गये। इस प्रकार दीक्षा की सम्पूर्ण विधि सानन्द सम्पन्न हुई।

श्रेयांसि बहु विघ्नानि—

इस समारोह की निर्विघ्न सम्पन्नता के कारण स्थानीय तथा बाहर से आए हुए सभी नर-नारी परम प्रमुदित हो रहे थे, किन्तु यह मंगलमय आनन्द कार्य दैव को नहीं भाया और इसने इस शुभ कार्य में भयंकर विरोधात्मक रूप धारण कर लिया।

कहा भी है कि 'श्रेयांसि बहु विघ्नानि' अर्थात् शुभ कार्यों में अनेक विघ्न आते हैं। किन्तु धर्म परायण आत्माएं आगे आने वाले विघ्नों का बड़े धैर्य के साथ डटकर मुकाबला करती हैं। वे विघ्नों से भयभीत होकर अपने साध्य या लक्ष्य से कभी पीछे नहीं हट सकतीं। आपत्तियों से घबराकर अपने

उद्देश्य को छोड़ बैठना या शुभ कार्य से हाथ खींच लेना कायरों का कार्य है। वीर पुरुष तो आपत्तियों के आक्रमण को अपने जीवन को निखारने की कसौटी समझते हैं। इसलिए वे भयंकर से भयंकर आपत्तियां और विघ्न बाधाओं का बड़े साहस व धैर्य के साथ सामना करते हुये अपने मार्ग पर अग्रसर होते जाते हैं। वह विद्यार्थी ही क्या जिसकी समय समय पर वार्षिक आदि परीक्षा न हो। वह स्वर्ण ही क्या जो कभी कसौटी पर न कसा जाय। परीक्षा से विद्यार्थी की योग्यता का बोध होता है और कसौटी पर कसे जाने से ही खरे खोटे सोने की पहिचान होती है।

धार्मिक पुरुषों पर भी आपत्तियां उन्हें सदा जागरूक करने और साधना-पथ पर दृढ़ रहने के लिए ही आती हैं। इस दीक्षा महोत्सव के अवसर पर जो कुछ अकस्मात् विघ्न प्रकट हुये वे भी इसी प्रकार के थे।

जिस समय वैरागी जी का जुलूस बड़ी धूम-धाम के साथ गली बाजारों में होकर निकल रहा था, उस समय किसी विद्वेषी आर्य समाजी ने कुछ पत्थर आदि फैंके। जिससे जलूस के साथ चल रहे कुछ भाइयों को क्रोध आ गया और आपस में 'तू-तू मैं-मैं' होने लगी। उस समय तो उस मामले को "येन केन प्रकारेण" शान्त कर दिया गया। पर कुछ विघ्न-सन्तोषी आर्यसमाजी भाइयों के हृदयों में जो दुर्भावनाएं उत्पन्न हो गई थीं वे सर्वथा लुप्त न हो पाईं।

इसलिए उन लोगों ने यह गलत प्रचार करना शुरू कर दिया कि साधु बनने वाला वास्तव में अपनी खुशी से साधु नहीं बना है इसको जबरन साधु बनाया गया है। उन लोगों ने इतना ही नहीं, स्थानीय पुलिस स्टेशन पर जा कर रिपोर्ट भी कर दी कि इसे उसकी इच्छा के विरुद्ध दीक्षा दी गई है। जिस थानेदार ने स्थानक में आकर नव दीक्षित धर्म मुनि जी से पूछा कि आप का निवास कहाँ है, आप इनके पास कैसे आये, आप के मन में साधु बनने का र क्यों उत्पन्न हुआ, आप अपनी मर्जी से साधु बन रहे हैं या किसी के चे में आकर जबरन साधु बना लिए गये हैं आदि।

श्री धर्म मुनि जी ने थानेदार के इन सब प्रश्नों का यथोचित ठीक-ठीक उत्तर दिया और कहा कि मैं आत्म-कल्याण के लिए स्वेच्छा से साधु बना हूं। इसमें जबरदस्ती या बहकाने का कोई प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता। परिस्थिति को विकृत होते देख, रोपड़ के राम प्रकाश जी भाई अपने मित्र रोपड़ के आर्य समाज के प्रधान लाला प्राणनाथ जी एडवोकेट को अपने साथ लेकर खरड आये और उन्होंने महाराजश्री के दर्शन किए।

महाराजश्री ने आर्यसमाज की ओर से खड़े किये गये, व्यर्थ के बखेड़े का सारा वृत्तांत लाला प्राणनाथ जी को सुना दिया। लाला प्राणनाथ जी आर्य समाजी होते हुए भी महाराजश्री के प्रति श्रद्धालु हैं। क्योंकि रोपड़ में महाराजश्री के सार्वजनिक प्रवचन आर्य समाज मन्दिर के निकट होते थे। वहां पर आप प्रतिदिन महाराजश्री के प्रवचनों का लाभ लेते रहते थे। जब एडवोकेट साहब ने बखेड़े-बाजी की बातें सुनीं तो, वे बहुत दुःखी हुए।

लाला राम प्रकाश जी और एडवोकेट प्राणनाथ जी विघ्न डालने वालों का विरोध करने वाले आर्य समाजी भाइयों के पास गये और उन्हें समझा दिया कि इस काम में किसी प्रकार का विघ्न नहीं डालना चाहिए। महाराजश्री बड़े ही दूरदर्शी सर्व-जन प्रिय और समाज हितैषी महात्मा हैं। आप के पवित्र और प्रेम भरे सात्विक और निर्मल व्यवहार व आचरण से जैन जैनेतर सभी लोग आपके प्रति श्रद्धालु बन जाते हैं। साम्प्रदायिक या जातीय पक्षपात आदि की भावना तो आपके हृदय को छू भी नहीं गई। ऐसे उदार चेता प्राणी मात्र के कल्याणेच्छु मुनिराज के लोक कल्याणकारी कार्यों में इस प्रकार अड़ंगा लगाना आप लोगों को शोभा नहीं देता। इस प्रकार समझाने बुझाने पर वे लोग मान गए और उन्होंने आश्वासन दिया कि भविष्य में किसी प्रकार की कोई गड़बड़ हमारी तरफ से नहीं होगी।

फिर उक्त दोनों महानुभाव थानेदार के पास गए। थानेदार-साहब ने गड़बड़ करने वाले आर्य समाजियों को भी थाने में बुला भेजा। और उन्हें वहां बुलाकर खूब डांटा कि तुम लोग व्यर्थ में ऐसे पवित्र धार्मिक कार्यों में अड़ंगे बाजी लगाते हो। कहलाते तो आप अपने को आर्य हो और काम ऐसे

करते हो। क्या दूसरे के आत्म कल्याण के मार्ग में रोड़े अटकाने यही आर्यों का कार्य है। थानेदार साहब ने आर्यसमाजियों को थाने में बुलाकर इसलिए समझाया व धमकाया कि भविष्य में वे इस प्रकार की गड़बड़ न करें।

किन्तु होनी बलवान है इसका परिणाम उल्टा ही निकला। थानेदार साहब के इस प्रकार के समझाने बुझाने और डराने धमकाने से वे आर्य-समाजी भाई अपना अपमान समझकर और भी अधिक कुपित हो उठे। फिर वे लोग उस अनाथालय में पहुंचे, जिसमें दीक्षा लेने वाले धर्म मुनि जी पहले रहे थे और जहां पर कुछ अध्ययन किया था। उन लोगों ने अनाथालय के संचालकों को जाकर भड़का दिया कि तुम्हारे अनाथालय के विद्यार्थी को खरड़ में जबरदस्ती जैन साधु बना लिया गया है।

तुमको इस विषय में उचित कार्यवाही करनी चाहिए, जिससे वह वापिस आ सके। जब इस बात की सूचना जैन समाज के पास पहुंची, तो इस संबंध में रोपड़ से लाला वंशी लाल जी को (जो पहले शिमले रह चुके थे) शिमले भेजा गया। और खरड़ से भी कुछ भाई शिमला गये। उन लोगों ने वहां जाकर अनाथालय के अधिकारियों को यह समझाने का बड़ा प्रयत्न किया कि हमने ताराचन्द को जबरदस्ती साधु नहीं बनाया है। उन्होंने स्वेच्छापूर्वक दीक्षा ली है। वे अपनी इच्छा से साधु बने हैं। किन्तु अनाथालय के अधि-कारी खरड़ के आर्य समाजियों के बहकावे में आये हुये थे, इसलिए लाला वंशीलाल जी और खरड़ के भाइयों की उन्होंने एक नहीं सुनी। लाला वंशी लाल जी तो शिमले में ही अचानक बीमार हो गये और वहीं पर उनका देहांत हो गया। खरड़ के भाई वापिस आ गए। इधर महाराज श्री खरड़ से विहार कर मणी-माजरा होते हुए गुरुकुल पंचकूला पधारे।

यहां पर महाराजश्री ने अम्बाला के प्रमुख भाइयों को याद किया। दस बारह भाई अम्बाले से थानेदार की रिपोर्ट लेकर खरड़ से मास्टर पन्नालाल जी महाराजश्री की सेवा में गुरुकुल आ पहुंचे। महाराजश्री ने पूर्व घटित घटना का सारा वृत्तांत अम्बाले के भाइयों को बताते हुए कहा कि यह जैन

समाज की परीक्षा का समय है। इसलिए आप लोगों को इस सम्बन्ध में सर्व प्रकार के जागरूक रहना चाहिए। लाला पन्नालाल जी ने थानेदार की रिपोर्ट की वह नकल अम्बाले वाले सुशील कुमार जी जैन वकील को दिखलाई। सुशील कुमार जी ने उस रिपोर्ट को पढ़कर बताया कि यह तो महाराजश्री के फेवर में (अनुकूल) है। यदि वे लोग कोई नई कार्यवाही करेंगे, तो उसके सम्बन्ध में यथा-समय विचार कर लिया जायेगा। वकील साहब ने कहा कि यदि श्री धर्म-मुनि जी अपने विचारों पर अटल रहेंगे तो उनका कोई दाव नहीं चल सकेगा। जबरदस्ती वे ले जा नहीं सकते। इस प्रकार विचार विनि-मय कर अम्बाला के भाई वापिस चले गये। महाराजश्री भी वहां से विहार कर डेरावशी पधारे। यहां पर आपने पांच-सात दिन विराजकर जनता को अपने धर्मोपदेशों से लाभान्वित किया। यहां पर अम्बाले से लाला रामलाल जी व लाला ताराचन्द जी महाराजश्री की सेवा में आये। और उन्होंने पूछा कि आप श्री चातुर्मासार्थ अम्बाले किस दिन पधारेंगे। महाराजश्री के उन्हें बताया कि आषाढ़ सुदी नौमी शुक्रवार को अम्बाला पहुंचने के भाव हैं।

अम्बाला चातुर्मास

(सं २००७)

डेरा बशी से विहार कर महाराजश्री तीसरे दिन अम्बाला शहर पहुंचे। स्थानीय जनता ने बड़े उत्साह के साथ महाराजश्री का भव्य स्वागत किया। प्रमुख बाजारों व मार्गों से होता हुआ यह स्वागत जलूस श्री हेमराज जैन धर्मशाला में पहुंचा। महाराजश्री ने समागत भाइयों तथा बाइयों को कुछ धर्मोपदेश देकर मंगली सुनाई। एक रात यहां विराज कर फिर चातुर्मासार्थ स्थानक पधारे।

इस प्रकार वीर संवत् २४७६ विक्रम संवत् २००७ ईसवी सन् १९५० का चातुर्मास अम्बाले में प्रारम्भ हुआ। महाराजश्री के दैनिक व्याख्यान उक्त जैन धर्मशाला में होने लगे।

यहां पर महाराजश्री के प्रवचन प्रमुख रूप से चौदह गुण स्थानों के संबंध में हुए। आपने क्रमशः चौदह गुण स्थानों की विस्तृत व्याख्या आरम्भ की। श्रोतागणों की उपस्थिति बढ़ते-बढ़ते दैनिक संख्या डेड़ दो हजार तक जा पहुंची।

कुछ समय बाद शिमले से भगवावेषधारी आर्य समाज का एक बाबा महाराजजी के पास आया और धर्म मुनि जी के सम्बन्ध में बातचीत करते हुए कहने लगा कि ताराचंद नामक जो व्यक्ति आपके पास साधु बना है उसको मेरे साथ वापिस भेज दो। महाराजश्री ने कहा कि यह पंचकूला गुरु कुल से स्वेच्छा पूर्वक मेरे साथ हुए और अपनी खुशी से ही इन्होंने दीक्षा-ग्रहण की। अब रहा प्रश्न भेजने का, सो हम जैन साधु जाने की आज्ञा नहीं

दे सकते। आप स्वयं उनसे इस सम्बन्ध में बातचीत कर सकते हैं। यदि वे खुशी से आपके साथ जाना चाहें तो जा सकते हैं। किन्तु उनकी बिना इच्छा के जबरन कोई उन्हें अपने साथ नहीं ले जा सकता।

तब वह बाबा श्री धर्म-मुनि जी के पास गया और थोड़ी देर तक उनसे बात-चीत करता रहा। श्री धर्म-मुनि जी ने स्पष्ट कह दिया कि मैं साधु बन चुका हूं, अब वापिस नहीं जा सकता। इस प्रकार धर्ममुनि जी से टका-सा उत्तर पाकर अपना-सा मुंह लेकर वह वापिस लौट गया। वहां पर उसने हिमाचल प्रदेश के कोर्ट में दीवानी दावा दायर कर दिया।

कुछ दिनों बाद वही आर्य समाजी बाबा हिमाचल प्रदेश के कोर्ट के सिपाही को साथ लेकर अम्बाले महाराजश्री के पास आ पहुंचा। उस सिपाही के पास महाराजश्री के नाम का सम्मन था। सिपाही ने महाराजश्री से कहा कि आप इस सम्मन पर अपने हस्ताक्षर कर दें। महाराजश्री ने उत्तर दिया कि जैन साधु इस प्रकार के सम्मन आदि पर हस्ताक्षर नहीं कर सकते। यह सुनकर वह वापिस चला गया।

उसके चले जाने के पश्चात् अम्बाले के जैन समाज और महाराजश्री का इस सम्बन्ध में विचार विनिमय हुआ कि अब क्या करना चाहिए। सुशील कुमार जी वकील ने श्री धर्म मुनि जी के साथ बातचीत की और कहा कि यदि आप जाना चाहें तो जा सकते हैं।

धर्म मुनि जी ने उत्तर दिया, मैं नहीं जाना चाहता। इस पर वकील साहब ने कहा, तो आपको अपने विचारों पर दृढ़ रहना होगा। ऐसा न हो कि बाद में आपके विचार परिवर्तित हो जाएं और हमें नीचा देखना पड़े। सुशील कुमार जी ने महाराजश्री को तथा जैन समाज के भाइयों को कहा कि मैंने श्री धर्म मुनि जी को अच्छी तरह से पूछ लिया है। वह अपने विचारों पर दृढ़ हैं। महाराजश्री ने फरमाया कि अपनी इच्छा से तो अच्छे पढ़े-लिखे विद्वान संत भी मुनि धर्म से पृथक हो जाते हैं। किसी जाने वाले को रोका भी नहीं जा सकता, किन्तु इनकी रहने की इच्छा है। जाना नहीं चाहते तो हम

अपनी ओर से ऐसा नहीं कह सकते कि तुम चले जाओ।

लाला अमरनाथ जी अम्बाले से लुधियाने गए। इस सम्बन्ध में पूज्य श्री से विचार परामर्श किया। वापिस अम्बाले आने पर लाला अमरचन्द जी ने बतलाया कि पूज्य श्री ने इस संबंध में फरमाया है कि यह एक सामाजिक मामला है। इसलिए इस संबन्ध में भली भाँति सोच-विचार कर बड़ी सावधानी और दूरदर्शिता से कार्य किया जाय। तब अम्बाले के प्रमुख भाई एकत्रित हुए और इस सम्बन्ध में विचार विमर्श किया गया।

इस विचार विनिमय के सिलसिले में लाला लच्छी राम जी ने कहा कि यदि श्री धर्म मुनि जी अपने मुनि धर्म पर अटल रहने का दावा रखते हैं तो मैं भी विश्वास दिलाता हूं कि इस केस के लड़ने में जो भी व्यय होगा, मैं वह सहर्ष देने को तैयार हूँ। लाला शिव प्रसाद जी ने कहा कि मैं भी इस कार्य के लिए तन, मन, धन से सेवा करने के लिए तैयार हूँ। ये दोनों स्थानीय स्थानकवासी समाज के प्रमुख व प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं तथा आपका व्यापार व्यवसाय भी बहुत अच्छा है। इन दोनों सज्जनों के आश्वासन पर स्थानीय बिरादरी में उत्साह व जोश की लहर सी दौड़ गई।

केस के सुनवाई की तारीख निकट आ पहुँची। लाला पन्नालाल जी जैन अग्रवाल तथा शिव प्रसाद जी के छोटे भाई लाला अमरनाथ जी, लाला लच्छी राम जी के सुपुत्र लाला राम लाल जी, लाला देशराज जी, बाबू दीप चन्द जी वकील आर्य समाजी आदि कई सज्जन तारीख पर शिमला गये।

वहां जा कर इन्होंने अपने पक्ष की पैरवी करने के लिए एक वकील नियत किया। नियत समय पर कोर्ट में मुकदमे की सुनवाई आरम्भ हुई। वादी पक्ष की ओर से आर्य समाजी लोग भी उपस्थित हुए। कोर्ट के जज साहब ने अम्बाला के भाइयों से प्रश्नोत्तर करते हुए इस बात पर रोष प्रकट किया कि कोर्ट के द्वारा अम्बाला जो सम्मन भेजा गया था, उस पर स्वामी जी ने हस्ताक्षर नहीं किए। यह एक प्रकार से सरकार के विधान का उल्लंघन और कोर्ट का अपमान किया गया है। इस पर अपने पक्ष के वकील ने बताया कि जैन

साधु किसी कोर्ट व सरकारी कार्य से सरोकार नहीं रखते। वे दुनियावी किसी भी मामले में अपने हस्ताक्षर नहीं करते हैं। इस पर जज ने कहा कि इस मुकद्मे का प्रतिवादी कौन बनेगा। इस पर अम्वाले के भाइयों ने सुशील कुमार जी वकील का नाम पेश किया। जज साहव ने सुशील कुमार जी वकील का नाम मुद्दई के रूप में लिख लिया। और आगे तारीख पर उपस्थित होने का आदेश दिया।

तीन दिन के बाद ही तारीख दे दी गई। अम्वाला के भाई तो इस कार्य में लगे हुए थे। उधर विरोध पक्ष के आर्य समाजियों ने महाराजश्री के विरुद्ध फौजदारी दावा दायर कर दिया। और महाराजश्री के नाम वारंट निकलवाने का प्रयत्न किया। अम्वाला के भाइयों को शिमला में ही इसकी सूचना मिल गई। यह सुनकर उन लोगों को वड़ी घबराहट हुई और आपस में सलाह करने लगे कि अब क्या किया जाय।

लाहौर के बैरिस्टर वाला मुकुन्द जी पुरी भारत विभाजन के परिणाम स्वरूप लाहौर से शिमले में आ गये थे और प्रैक्टिस करने लगे थे। वे वाबू दीपचन्द जी के मित्र थे। इसलिए पारस्परिक विचार विनिमय और निर्णय के वाद बाबू दीपचन्द जी ने बैरिस्टर श्री वाल मुकुन्द पुरी को टेलीफोन किया कि हम ऐसे मामले में उलझ गये हैं, अतः इस समय आप हमें उचित सम्मति और सहयोग दें।

बैरिस्टर साहव ने बाबू दीपचन्द जी आदि भाइयों को अपने पास बुला लिया। उधर शिमला गये हुए अम्बाला के भाइयों ने शिमले से अम्वाला टेलीफोन कर शिमले की सारी स्थिति वतला दी। अम्वाला में टेलीफोन पर जो सूचना प्राप्त हुई थी, उन लोगों ने वे सब सूचनाएं महाराजश्री को जा कर दे दीं।

इस प्रकार महाराजश्री ने फरमाया कि घवराने की कोई वात नहीं। आपत्ति में धैर्य रखना चाहिए। सत्य की सदा जय होती है।

सत्यमेव जयते—

महाराजश्री के इस प्रकार आश्वासनपूर्ण व धैर्योद्बोधक वचन सुनकर भाइयों को बड़ा धैर्य मिला। उधर शिमले में अम्बाले के भाई और बाबू दीप चन्द जी बैरिस्टर साहब के बंगले पर पहुँचे। वहाँ जाकर उन्होंने उन्हें सारे वृत्तान्त से अवगत कराया। इस पर बैरिस्टर साहब ने कहा, मैं हाईकोर्ट का वकील हूँ। इसलिए जिस लोअर कार्ट में आपका केस चल रहा है उस छोटी कोर्ट में जाना मेरे लिए उचित प्रतीत नहीं होता।

बाबू दीपचन्द जी ने कहा कि आपको अपनी प्रतिष्ठा की हानि का विचार छोड़ कर इस पवित्र कार्य के लिए छोटी कोर्ट में जाना ही होगा। बैरिस्टर साहब बाबू दीपचन्द जी के पुराने मित्र हैं। बाबू दीपचन्द जी जब लाहौर में वकालत करते थे, तभी से बैरिस्टर साहब के साथ आपकी घनिष्ट मित्रता थी। इसके साथ ही दूसरी बात यह भी थी कि बाबू दीपचन्द जी भी पुरी खत्री और आर्य समाजी विचारों के हैं, और उधर बैरिस्टर साहब भी पुरी और आर्य समाजी विचारों के हैं, इसलिए सजातीय तथा सधर्मी होने के कारण दोनों में परस्पर बड़ा ही प्रेम है। फलतः बाबू दीपचन्द जी के आग्रह करने पर बैरिस्टर साहब हिमाचल प्रदेश की छोटी कोर्ट में जाने के लिए तैयार हो गये।

लोअर कोर्ट में जाकर बैरिस्टर साहब ने चालू केस की सारी परिस्थिति का पता लगाया। सारा वृत्तांत सुनकर आपने वहां के जज से कहा कि इस केस के प्रत्येक पहलू को भली भांति समझ कर निर्णय किया जाना चाहिए। यह कोई ऐसा वैसा व्यक्तिगत केस नहीं है। यह एक सामाजिक केस है।

इसके पीछे सत्य और विशाल समाज-बल लगा हुआ है। इसलिए बिना विचारे कार्य करने से लेने के देने पड़ सकते हैं। मैं उस अनाथालय के संचालक को खूब जानता हूँ वह बड़ा शैतान है। उसने स्वयं तो दावा नहीं किया एक मास्टर से दावा करवा दिया। और कुछ रुपयों का लोभ देकर हरिजनों से गवाही दिलवाई। गवाही में हरिजनों ने बयान दिये कि जैन

मुनी श्री प्रेमचन्द जी यहां अनाथालय में आये और ताराराम लड़के को बहका कर ले गये ।

इस पर बैरिस्टर साहब ने जज को कहा कि मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि श्री प्रेमचन्द जी महाराज आज दिन तक कभी शिमले नहीं आये । अपने वक्तव्य को जारी रखते हुए उन्होंने आगे कहा कि मैं स्वयं आर्यसमाजी हूं । आर्य संस्कृति किसी पर झूठा आरोप लगाकर परेशान करने की आज्ञा नहीं देती ।

अनाथालय के संचालक आर्य समाजी महाशय ने जो इस केस का झूठा बवंडर रचा है, और एक त्यागी महात्मा पर किसी लड़के को बहकाने का झूठा आरोप लगाया है उसे मैं अच्छा नहीं समझता । यह आर्य सिद्धान्त के विरुद्ध है । ऐसा झूठा जाल रचने वाला आर्यसमाजी आर्य समाज के सिद्धान्त की प्रतिष्ठा नहीं बढ़ाता बल्कि यह आर्य समाज के सिद्धांतों की अवहेलना करता है । क्योंकि आर्य समाज तो सत्य मार्ग पर चलने का उपदेश देता है न कि झूठे जाल रचने का । मैं जानता हूं कि जिस अनाथालय के संचालक ने यह झूठा जाल रचा है । वह सदा इसी प्रकार के उत्पात करता रहता है । हिमाचल प्रदेश के कोर्ट के जज महोदय ने बैरिस्टर साहब से जब इस केस का सारा सच्चा-सच्चा हाल जान लिया तो उन्होंने जारी किये हुए फौजदारी वारंट को तत्काल वापिस ले लिया । इस प्रकार फौजदारी केस तो समाप्त हो गया ।

अब रहा दीवानी केस । इसकी पैरवी के लिए भी बैरिस्टर साहब को ही नियत किया गया । और हिमाचल प्रदेश के एक और भी वकील की सेवाएं प्राप्त की गईं । यह केस लगभग आठ नौ महीने तक चलता रहा । इसमें अनेक अच्छे अच्छे प्रतिष्ठित सज्जनों की गवाहियां हुईं । अन्त में यह केस भी जीत लिया गया । मुकद्दमे का सारा खर्च आर्यसमाजी अनाथालय के संचालक पर पड़ा । परन्तु जैन समाज ने उससे वसूल नहीं किया । इस प्रकार इस केस के लम्बे समय तक उलझे रहने के पश्चात् अन्त में सत्य की विजय हुई ।

अम्बाले में कृष्ण जन्माष्टमी को महाराजश्री ने श्री कृष्ण जन्म पर अपने

विचार व्यक्त किये। इस दिन मूसलधार वर्षा हो रही थी, फिर भी हजारों लोगों ने इस प्रवचन में भाग लिया।

पर्यूषण महापर्व में श्री अन्तगड़ सूत्र सुनाया गया। पर्यूषणपर्व व संवत्सरी पर्व बड़े उत्साह के साथ मनाए गए तपस्याएं भी खूब हुई।

संवत्सरी के पश्चात् यहाँ हेमराज जैन धर्मशाला में एक कन्या पाठशाला खोली गई। उसका नाम पंजाव केशरी पूज्य काशीराम जी कन्या पाठशाला रखा गया। इस पाठशाला के उद्घाटन का महोत्सव बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया। अम्वाला छावनी के दिगम्वर समाज के प्रमुख रईस श्री महावीर प्रसाद जी जैन ने इस पाठशाला का उद्घाटन किया। थोड़े ही समय में इस पाठशाला ने उन्नति करते करते हाई स्कूल का रूप धारण कर लिया।

स्थानकवासी संवत्सरी पर्व के पश्चात् दिगम्वर जैन दस दिन तक दस लाक्षणी पर्व मनाते हैं। महोत्सव अम्वाला छावनी के दिगम्वर समाज की ओर से मनाया जाने वाला था था। अम्वाला छावनी दिगम्वर जैन सम्प्रदाय के प्रमुख लाला महावीर प्रसाद जी जैन ने महाराजश्री से विनती की कि हमारे इस दस लाक्षणी पर्व पर अम्वाला छावनी पधार कर हमें अपने प्रवचनों का लाभ देने की कृपा करें। छावनी में सनातन धर्म के और आर्य समाज के बड़े अच्छे अच्छे विद्वान् और प्रचारक लोग आते रहते हैं तथा वे अपने अपने धर्म का बड़े उत्साह से प्रचार करते हैं। हम भी चाहते कि आप जैसे विद्वान् मुनिराज का वहां पधारना हो और जैन धर्म की प्रभावना हो। इसलिए आप अवश्य पधारें।

तदनुसार महाराजश्री अम्वाला शहर के व्याख्यान कुछ दिनों के लिए स्थगित कर अम्वाला छावनी के समाज की विनती को मान देते हुए अम्वाला छावनी पधारे। क्योंकि शहर से छावनी कल्प के अन्दर ही थी। वहां आप दिगम्वर जैन मन्दिर के पास ही में वनी हुई दिगम्वर जैन विल्डिंग में विराजमान हुए। जैनमन्दिर के आगे खुले मैदान में वने हुए विशाल पंडाल में आपश्री के छः सात दिन तक प्रभावशाली प्रवचन होते रहे। इन प्रवचनों में महा-

राजश्री ने जैन धर्म के कर्म सिद्धान्त, जैन धर्म की विशेषता, षड्द्रव्य, नवतत्व आदि विषयों का विभिन्न रूपों से विवेचन करने के साथ राष्ट्रोत्थान समाज उन्नति व जाति के उत्कर्ष आदि अनेक आवश्यक सामयिक उपयोगी विषयों पर भी बड़े ही गम्भीर और प्रभावशाली रूप में प्रकाश डाला। उपस्थित जन समूह पर इन प्रवचनों का बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा। यहां महाराजश्री के दर्शनार्थ जो भाई बाहर से आते थे। उनके भोजन आदि की व्यवस्था दिगम्बर भाइयों की ओर से की गई थी।

दस लाक्षणी पर्व के अंतिम दिन एक बड़ा भारी जलूस निकाला गया। यह जलूस मुख्य-मुख्य मार्गों से होता हुआ महावीर प्रसाद जैन बिलडिंग के पास खुले मैदानों में बने हुए विशाल पंडाल में पहुंचा। यहां पर महाराजश्री का सार्वजनिक प्रवचन हुआ। इस प्रवचन के समय पांच छः हजार के लगभग श्रोतागण उपस्थित थे। इस दिन का कार्यक्रम समाप्त होने के पश्चात् महाराजश्री के साथ बहुत से अम्बाला छावनी के दिगम्बर भाई अम्बाला शहर तक आये।

अब चातुर्मास की समाप्ति में थोड़ा ही समय शेष रह गया था। इस समय महाराजश्री ने राजा परदेशी के आत्म विषयक प्रश्नोत्तरों का विवेचन किया। इस विवेचन में श्रोतागण ने खूब रस लिया। इस प्रकार अम्बाला का यह चातुर्मास सुखे समाधे सानन्द सम्पन्न हुआ।

अम्बाले विहार कर महाराजश्री एक रात रास्ते में लगा गनौर पधारे, क्योंकि यहां के अग्रवाल भाई श्री राम जी ने अम्बाला चातुर्मास में अपना गांव परसने के लिए महाराजश्री से कई बार विनती की थी। यहां के लोगों ने महाराजश्री का भव्य स्वागत किया और बड़े आदर सत्कार के साथ आपको यहां की धर्मशाला में ठहरने की व्यवस्था की। यहां पर महाराजश्री के प्रवचन प्रारम्भ हुए।

यहां पर जैनों का एक भी घर नहीं है। किन्तु लाला श्रीराम जी जैन धर्म और जैन मुनियों से कुछ प्रेम रखते हैं। उनकी प्रार्थना से ही महाराजश्री का

यहां पधारना हुआ था। महाराजश्री के यहां पधारने और विराजने में कितनेक भाइयों और बाइयों ने नवकार मन्त्र सीखा और उसकी माला फेरने लगे। यहां के लोगों में खूब धार्मिक भावना जागृत हुई। और कई भाई तो अपने को जैन स्वीकार करने लगे। यहां पर धर्म प्रचार कर मार्ग में गनौर एक रात ठहर कर पटियाला पधारे। गनौर के दस पन्द्रह भाई पटियाला तक महाराज श्री की सेवा में रहे।

यहां महाराजश्री सेठ अछरूमल जी की कोठी में विराजे। दूसरे दिन महाराजश्री का प्रवचन सुनकर गनौर से महाराजश्री के साथ में आये हुए भाई वापिस चले गए। पटियाला में तीन चार व्याख्यान तो सेठ अछरूमल जी की कोठी में और दो सार्वजनिक प्रवचन किले के पीछे बनाए गए पंडाल में हुए। लगभग चार पांच हजार श्रोतागणों ने इन प्रवचनों में भाग लिया। हाईकोर्ट के जज व वकील आदि बहुत से राज कर्मचारियों ने भी इन प्रवचनों से अत्यधिक लाभ प्राप्त किया।

सरदार वल्लभ भाई पटेल का निधन—

इस दिन सूचना मिली कि भारत के लोह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल का बम्बई में स्वर्गवास हो गया। देखते ही देखते यह शोक समाचार बिजली की भांति सर्वत्र फैल गया। क्या राजा और क्या प्रजा सभी ने तत्काल अपने-अपने कारोबार बंद कर स्वर्गीय आत्मा के प्रति हार्दिक श्रद्धांजली समर्पित करने का उपक्रम किया।

भारतीय स्वातन्त्र्य संघर्ष के संचालन में सरदार पटेल का बहुत बड़ा हाथ था। किन्तु उससे भी बड़े कार्य उन्होंने देश के स्वतन्त्र होने के पश्चात् कर दिखाए थे। यही कारण है कि देशवासी लोग उन पर प्राण देते थे। और उनके निधन का समाचार सुनते ही देश के बच्चे-बच्चे को बड़ा भारी धक्का लगा। भारत के अन्य नगरों, कस्बों व ग्रामों के समान आज पटियाले में भी जहां देखो वहीं भारत के इस लोह पुरुष के दुखद निधन की चर्चा हो रही थी

यहां पर डेरावशी के लाला पाती राम जी, बाबू लेखराज जी, लाला मंगल सेन जी आदि भाइयों ने डेरावशी की कन्या पाठशाला के वार्षिक महोत्सव पर पधारने के लिए महाराजश्री से विनती की। महाराजश्री ने सुखे समाधे विनती स्वीकार कर ली। डेरावशी वाले भाइयों ने पटियाले के चौधरी प्यारे लाल जैन को इस उत्सव का प्रधान बनाना स्वीकार करा लिया। यहां से विहार कर महाराज श्री मार्ग में धर्म प्रचार करते हुए डेरावशी पधारे।

स्वामी श्री नेकचन्द जी महाराज, तपस्वी श्री टेकचन्द जी महाराज, मुनि श्री जगदीश चन्द जी महाराज, श्री विमल मुनि जी, श्री पूर्णचन्द जी महाराज आदि मुनिराज यहां पहले से ही विराजमान थे। ये सब मुनिराज महाराजश्री का स्वागत करने के लिए सामने आए तथा स्थानीय जनता ने भी महाराज श्री का भव्य स्वागत किया। यहां महाराजश्री जैन धर्मशाला में विराजे।

यहां पर हजारों की संख्या में लोग इस कन्या पाठशाला के वार्षिक उत्सव पर आए। रोपड़, बनूड़, अम्बाला, पटियाला, मणी माजरा, खरड़ आदि स्थानों की जनता, भजन मण्डलियों और जिनेन्द्र गुरुकुल के विद्यार्थियों ने इस उत्सव में भाग लिया।

कन्या पाठशाला के वार्षिक उत्सव का कार्यक्रम बड़े उल्लास और उत्साह के वातावरण में प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम विद्यार्थियों ने अपने मधुर व सुन्दर भजनों के द्वारा उपस्थित जन मन को आल्हादित किया। तत्पश्चात् उत्सव समारोह के अध्यक्ष श्री प्यारे लाल जी चौधरी का भाषण हुआ। फिर महाराज ने विद्या के महत्व पर सारगर्भित विचार व्यक्त करते हुए उपस्थित जन समूह व छात्र छात्राओं की विद्या अध्ययन के प्रति रुचि जागृत करने के लिए बड़ा ही मनोहर प्रवचन किया। रात्रि में कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें अमृतसर के श्री कंसराज गोहर आदि की कविताएं तथा भजन मंडलियों के भजन हुए।

गांव में जो पंडाल बनाया गया था उसमें श्रोतागणों के बैठने के स्थान की कमी पड़ गई। इसलिए दूसरे दिन प्रातः गांव के बाहर विशाल पंडाल की

व्यवस्था की गई। दूसरे दिन के कार्यक्रम के प्रारम्भ में पहले कुछ भजन और कविताओं का पाठ हुआ। फिर श्री विमल मुनि जी का प्रवचन प्रारंभ हुआ। तत्पश्चात् कवि कंसराज गौहर ने एक बड़ी सुन्दर कविता सुनाई। तदनन्तर महाराजश्री का मधुर धर्मोपदेश हुआ। फिर दोपहर के बाद कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। विद्यार्थियों के भजनों के पश्चात् दान की महत्ता के संबंध में महाराजश्री का एक अत्यन्त ओजस्वी प्रवचन हुआ। अन्त में कवि कंसराज गौहर ने कन्या पाठशाला के लिए चन्दे की अपील की। इस पर उत्सव के सभापति श्री चौधरी प्यारे लाल जी ने ५००) लिखवाए। मलेर कोटला के ला० रामजी लाल जी के सुपुत्र अमृतलाल जी जैन ने कन्या पाठशाला को पुस्तकों के लिए ५००) देने को कहा। दूसरे लोगों के चन्दे से लगभग सात आठ हजार रु० एकत्रित हुए।

यहां कन्या पाठशाला के लिये नये भवन का निर्माण किया गया था। इसका उद्‌घाटन मलेर कोटला वाले ला० रामजी लाल जी के सुपुत्र अमृतलाल जी जैन ने किया। और ५००) दान देने को कहा। इस प्रकार कन्या पाठशाला के वार्षिकोत्सव का यह समारोह सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

यहां से महाराजश्री ने सढ़ोरे की ओर विहार कर दिया। छोटे बड़े क्षेत्रों में धर्म प्रचार करते हुये लगभग पांच छः दिन में सढ़ोरे पधारे गये। यहां पर लगभग दस बारह दिन तक आपश्री के प्रवचन होते रहे।

यहां से महाराजश्री का विचार जगाधरी मुजफ्फरनगर की ओर विहार करने का था। किंतु कसूर वाले ला० लभामल जी बी० ए० तथा गुजरांवाला वाले ला० बाबूराम जी अखिल भारतीय स्थानकवासी जैन कान्फ्रेंस से मन्त्री श्री धीरजलाल भाई तुरखिया पूज्य श्री आत्मारामजी महाराज का आदेश लेकर महाराजश्री के पास आये, उन्होंने महाराजश्री को आचार्य श्री का यह आदेश सुनाया कि पंजाब के मुनिराजों का साधु सम्मेलन लुधियाना में बुलाया जा रहा है अतः आप श्री लुधियाने पधारने की कृपा करें। तदनुसार महाराजश्री ने मुजफ्फर नगर की ओर विहार का विचार बदल कर लुधियाना की ओर विहार कर दिया।

यहां से चलकर एक रात मार्ग में ठहरते हुये आप मलाता पधारे। यहां पर महाराजश्री के दो प्रवचन हुये। फिर यहां से विहार कर दूसरे दिन अम्बाला छावनी पहुंचे। यहां व्याख्यान देकर अम्बाला शहर पधारे। यहां आपके हेमराज जैन धर्मशाला में तीन चार प्रवचन हुए। यहां से राजपुरा गोविंदगढ़ आदि क्षेत्रों में धर्म प्रचार करते हुए खन्ना पधारे। यहां पर श्री स्वर्गीय अमर मुनि जी महाराज आदि मुनिराज अस्वस्था के कारण ठहरे हुए थे। यहां दो सार्वजनिक प्रवचन शहर के बाहर मंडी में हुए। लगभग दो तीन हजार लोगों ने इन प्रवचनों से लाभ उठाया। यहां से विहार कर दो दिन मार्ग में ठहरते हुए साधु सम्मेलन में भाग लेने के लिए महाराजश्री आचार्यश्री की सेवा में लुधियाना पधार गये।

यहाँ पर महाराजश्री के प्रवचन होते रहे। श्री मदनलाल जी महाराज तथा श्री शुक्लचंद जी महाराज के समय पर लुधियाना पधारने में असमर्थता व्यक्त करने के कारण उस समय साधु सम्मेलन न हो सका।

आपश्री लुधियाने में १५-२० दिन विराजे। तत्पश्चात् आप श्री व पं० हेमचन्द्र जी महाराज तथा श्री ज्ञानमुनि जी महाराज आदि मुनिराज लुधियाना से विहार कर फिलौर पधारे। यहां पर यह मुनिमंडली धर्मशाला में विराजी। महाराजश्री ने दो व्याख्यान तो धर्मशाला में ही दिये और आपका एक प्रवचन आर्यसमाज मंदिर में हुआ।

यहां से विहार कर यह मुनिमण्डली फगवाड़े पहुंची। यहां की जैन-जैनेतर जनता ने इस मुनिमण्डली का भव्य स्वागत किया। और दूसरे दिन फगवाड़े की मण्डी में प्रवचन शुरु हुए। दिन पर दिन जनता इन व्याख्यानों से साढ़े तीन हजार की संख्या में लाभ उठाने लगी। यहां पर लगभग दस बारह प्रवचन हुए। यहां पर जंडियाले और जालंधर के शिष्टमंडल ने महाराजश्री से अपने अपने क्षेत्र परसने की विनती की। महाराजश्री ने द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव देखते हुए सुखे समाधे विनती मान ली।

श्री पं० हेमचन्द जी महाराज और श्री ज्ञानचन्द महाराज ठाना तीन ने

तो यहां से वापिस लुधियाना की ओर विहार किया और महाराजश्री यहां से विहार कर जालन्धर छावनी पधारे। यहां पर आपके दो-तीन व्याख्यान हुए जालन्धर छावनी से आप जालन्धर शहर पधारे। हजारों नरनारियों ने आपक बड़े उत्साह के साथ स्वागत किया। महाराजश्री जालन्धर के नये स्थानक मे विराजे। स्थानक के ऊपर की खुली छत पर बनाये गये पंडाल में आपके प्रवचन प्रारम्भ हुए। श्रोतागणों की संख्या दो दिन में इतनी बढ़ी कि स्थान अपर्याप्त हो गया। इसलिए मुहल्ला अजीत पुरे के विशाल मैदान में पंडाल बनाया गया। महाराजश्री के प्रवचन अब इस पंडाल में ही प्रारम्भ हुए। उपस्थिति दिन पर दिन उत्तरोत्तर बढ़ती हुई ५-६ हजार तक जा पहुंची। दर्शनार्थी भाइयों का भी आवागमन बढ़ने लगा। महाराजश्री के व्याख्यान में पधारने के पहले ही हजारों श्रोतागण व्याख्यान स्थान में आ जाते थे और यहां पर महाराजश्री के लगभग सत्ताईस प्रवचन हुए।

इसी समय महाराजश्री अस्वस्थ हो गए। आपको स्वास्थ्य लाभ करने में लगभग डेढ़ मास लग गया।

उन दिनों लुधियाना में तेरापंथियों के आचार्य तुलसी राम जी के आने की चर्चा थी। उन्होंने लुधियाने में अणुव्रत संघ का उत्सव भी मनाने का निश्चय किया था। लुधियाने के स्थानकवासी जैन समाज के प्रमुख भाई महाराजश्री के सेवा में उपस्थित हुए। उन्होंने निवेदन किया कि तेरापंथियों के पूज्य के लुधियाने पहुंचने के समय पर आप श्री भी लुधियाना पधारने की कृपा करें, क्योंकि वे लोग लुधियाने में अणुव्रत संघ का आडम्बर रच रहे हैं। इस समय अपने भाइयों को आपके प्रभावशाली प्रवचनों का लाभ मिलता रहेगा तो बहुत अच्छा होगा। पूज्य श्री आत्माराम जी महाराज की भी यही इच्छा है।

महाराजश्री ने कहा कि यदि मेरा स्वास्थ्य कुछ ठीक हो गया तो मैं लुधियाने शीघ्र आने का प्रयत्न करूंगा। पर महाराजश्री का स्वास्थ्य समय पर ठीक नहीं हो पाया। इसलिए उस समय आप लुधियाने न पधार सके। कुछ

दिनों बाद तेरहपंथी श्रावक जालन्धर आये और उन्होंने स्थानकवासी जैन-समाज से अर्ज की कि तेरहपंथी आचार्य तुलसीराम जी जालन्धर आना चाहते हैं। अतः हमें मकानों की आवश्यकता है। यह सुनकर स्थानीय स्थानकवासी बिरादरी ने उत्तर दिया कि स्थानक में आजकल श्री प्रेमचन्द जी महाराज विराजमान हैं तथा दूसरे स्थानक में महासातियां जी महाराज हैं। इसलिए आजकल हमारे पास कोई स्थान खाली नहीं हैं। इस पर वे लोग शहर में मकान की तलाश करने चले गए।

बाद में तेरहपंथी आचार्य तुलसीरामजी जालन्धर न जाकर जगरांव से रोपड़ की ओर विहार कर गए। एक दिन यहां पर नंगे रहने वाला रामकृष्ण नामक तेरहपंथी भाई महाराजश्री की सेवा में आया। महाराजश्री ने उसे पूछा कि तुम्हारे आचार्य तुलसीराम जी का चातुर्मास कहां पर होगा। उसने उत्तर दिया कि आचार्य तुलसीराम जी ने चातुर्मास पंजाब में फरमा दिया है। लुधियाने के भाई कुछ समय पश्चात फिर जालन्धर आए और महाराजश्री से चातुर्मास की विनती करने लगे। उन्होंने कहा कि तेरहपंथी आचार्य का चातुर्मास लुधियाने में होने की सम्भावना है। अपने आचार्य श्री ने फरमाया है कि आप किसी अन्य क्षेत्र की चातुर्मास की विनती न मान कर सुखे समाधे लुधियाने की ओर विहार करें।

इस पर महाराजश्री ने कहा कि पूज्य श्री के आदेशानुसार आज्ञा पालन किया जायगा। यहां पर मलेरकोटला के भाई भी महाराजश्री से चातुर्मास की विनती के लिए आए। महाराजश्री ने उन्हें फरमाया कि लुधियाने के भाई पूज्य श्री का यह संदेश लेकर आए थे कि पूज्य श्री ने आपके लिए फरमाया है आप लुधियाने आने से पूर्व किसी भी क्षेत्र के चातुर्मास की विनती न मानें, क्योंकि तेरहपंथी पूज्य का चातुर्मास लुधियाने होने की सम्भावना है।

इसलिए मैं लुधियाने जाने से पहले किसी और स्थान की चातुर्मास की विनती स्वीकार नहीं कर सकता।

स्वास्थ्य ठीक होने पर महाराजश्री ने जालन्धर नगर में दो व्याख्यान दे

कर वहां से छावनी की ओर विहार कर दिया । छावनी में कुछ दिन धर्मोपदेश देकर आप फगवाड़ा पधारे ।

यहां महाराजश्री को ज्ञात हुआ कि तेरहपंथियों के पूज्य तुलसीराम जी ने अम्बाले में जाकर देहली चातुर्मास करने की घोषणा कर दी है ।

यहां पर भी वही तेरहपंथी रामकिशन भाई आया । महाराजश्री ने उससे पूछा कि तेरहपंथी आचार्य का चातुर्मास कहां होगा । उसने उत्तर दिया कि देहली में होगा । तव महाराजश्री ने कहा—तुम ने तो जालन्धर में कहा था कि हमारे पूज्य ने पंजाव में चातुर्मास फरमा दिया है । देहली तो पंजाव में नहीं है, वह तो स्वतन्त्र सूवा है ।

तुम्हारे पूज्य की पंजाव में चातुर्मास करने की वात गलत निकली । जव उसे और कोई उत्तर नहीं सूझा तो वोला पूज्य महाराज ने तो ठीक ही फरमाया था, हमारे समझने में ही अंतर रह गया । यह है उन लोगों का अंध विश्वास । भला ऐसी क्या वात थी जो समझ में नहीं आई । वास्तव में उस तेरहपंथी भाई ने अपने पूज्य श्री की गलती को छिपाने के किए ही यह वात अपने ऊपर ले ली ।

फगवाड़े की मंडी में दस वारह दिन तक महाराजश्री के प्रवचन होते रहे । फिर वहां से विहार कर आप तीसरे दिन लुधियाना पधार गये । यहां पर ज्ञात हुआ कि तेरहपंथी लोगों ने अपने पूज्य श्री का चातुर्मास कराने के लिए मकान आदि की व्यवस्था भी कर ली थी । किन्तु न जाने किस कारण से लुधियाने का चातुर्मास स्थगित कर देहली में चातुर्मास की घोषणा करदी ।

यहां की विरादरी ने महाराजश्री से निवेदन किया कि यहां तेरहपंथी लोगों ने वहुत प्रोपेगंडा किया और अणुव्रती संघ का उत्सव भी मनाया । तेरह पंथी आचार्य ने कुछ सार्वजनिक स्थानों पर व्याख्यान भी दिये । इससे कुछ लोगों पर उसका कुछ प्रभाव पड़ गया है ।

इसलिए यहां पर आप श्री के भी सार्वजनिक प्रवचन आरम्भ होने चाहिएं जिस से तेरापंथियों के दया, दान आदि का निषेध और विरोध करने वाले

गलत सिद्धान्तों का जनता पर जो कुछ प्रभाव पड़ गया है, उसका निराकरण हो जाय और जैनों के सही सिद्धान्तों का जनता को पता लग जाय। महाराजश्री ने उनकी यह विनती स्वीकार कर ली।

यहाँ पर महाराजश्री के प्रवचनों का क्रम खजांची के बाग में बनाये गये पंडाल में प्रारम्भ हुआ। उन प्रवचनों में प्रतिदिन जैन और अजैन श्रोतागण हजारों की संख्या में उपस्थित होने लगे। इन प्रवचनों में महाराजश्री ने तेरहपंथियों के सिद्धान्तों की ढोल की पोल खोलते हुए बताया कि तेरहपंथी साधु लोक दिखावे के लिए ऊपर से ऐसी दया धर्म की बातें करते हैं जो सबको अच्छी लगें पर उनके वास्तविक सिद्धान्त कुछ और ही हैं। वे दया, दान, आदि के कट्टर विरोधी हैं। मरते हुए किसी जीवन को बचाने में या तेरहपंथी साधु के सिवा किसी दूसरे को दान देने में बड़ा भारी पाप है, यह उनका मान्य सिद्धान्त है। भला जिन लोगों के सिद्धान्त ऐसे मानवता के विरोधी हैं, वे ऊपर से दया दान और अहिंसा के ढोल पीटते फिरें इससे बड़ी और क्या विडम्बना हो सकती है। ये तेरहपंथी लोग जब यह देख लेते हैं कि किसी व्यक्ति के प्रति हमारे हृदय में पूरी श्रद्धा और विश्वास के भाव उत्पन्न हो गए हैं तो वे अपनी वास्तविक मान्यताएं उन्हें बतलाते हैं और इस प्रकार भोले भाले लोगों को अपने भ्रम जाल में फंसाते हैं। इस पंडाल में महाराजश्री के तीन सार्वजनिक प्रवचन हुए। इन प्रवचनों के परिणाम स्वरूप तेरहपंथियों के व्याख्यानों का जनता पर जो दुष्प्रभाव पड़ गया था, वह जाता रहा। इस प्रकार महाराजश्री के इन हितकारी व्याख्यानों का सुप्रभाव बहुत ही अच्छा और समाज के लिए हितकर हुआ। मलेर कोटला के भाई यहां पर भी महाराजश्री की सेवा में चातुर्मासार्थ आए। उन्होंने महाराजश्री के चातुर्मास के लिए पूज्य श्री से विनती की। आपश्री से परामर्श कर पूज्य श्री ने आप श्री का मलेर कोटला का चातुर्मास मान लिया।

कुछ दिन बाद लुधियाने से विहार कर दूसरे दिन आप गुज्जरवाला पधारे। वहां पर महाराजश्री के दो-तीन व्याख्यान हुए। महाराजश्री के यहां

पधारने से पूर्व तेरहपंथी पूज्य तुलसीराम जी भी आए थे इससे कई स्थानकवासी श्रावकों का तेरहपंथी साधुओं की ओर आकर्षण हो गया था। तेरहपंथी साधु के आने पर उनके व्याख्यान आदि कराने लगे। महाराजश्री ने फरमाया कि उनका व्याख्यान कराना और उन्हें प्रोत्साहन देना आप लोगों के लिए उचित नहीं है। इससे वे लोग धीरे-धीरे आपके क्षेत्र में फूट डाल देंगे जिससे अपने समाज को हानि पहुंचेगी। हो सकता है कि उनके सहयोग देने के कारण कुछ लोग अपने धर्म से भी विचलित हो जाएं।

यहां के भाइयों ने इस सुझाव को सहर्ष स्वीकार किया। यहां से विहार कर महाराजश्री अहमदगढ़ मंडी पधारे। यहां तीन-चार दिन तक विराजे।

मलेरकोटला चातुर्मास

(सं२००८)

अहमदगढ़ मंडी से विहार कर महाराजश्री चातुर्मासार्थ मलेर कोटला पधारे। स्थानीय जनता ने बड़े उत्साह के साथ महाराजश्री का भव्य स्वागत किया। इस प्रकार वीर संवत् २४७७ विक्रम संवत् २००८ सन् १९५१ का चातुर्मास मलेर कोटला में आरम्भ हुआ। यहाँ वयोवृद्ध प्रवर्तक श्री दौलतराम जी महाराज आदि ठाणा चार ठाणापति रूप से विराजमान थे।

दूसरे दिन से महाराजश्री के प्रवचन प्रारम्भ हुए। कई दिनों तक तो आपके प्रवचन स्थानक में होते रहे। वाद में दीवानों के महल्ले में रामलीला मैदान में पंडाल बनाया गया। इसी में प्रवचन आरम्भ हुए। डेढ़ दो हजार श्रोतागण प्रतिदिन उपस्थित होने लगे।

यहाँ पर्यूपण महापर्व बड़े उत्साह के साथ मनाये गये। पर्यूपण पर्व में वादामों अथवा पतासे आदि की प्रभावना बटती थी। संवत्सरी के दिन सैंकड़ों दया पौषे हुए, वहुत सी पंचरंगी व उपवास, वेले, तेले अठाइयों आदि तपस्यायें हुईं।

यहाँ महासती श्री मथुरादेवीजी की शिष्या श्री सत्यवती जी म० ठाणा ५ भी चातुर्मास रूप से विराजमान थे। पं० म० श्री ने सती जी को श्री सामायंग जी सूत्र पढ़ाया। वाद में श्री भगवती सूत्र के वीस श्रावकों का वाचन दिया। वहुत से अजैन लोगों ने जैन धर्म की श्रद्धा थी। इस प्रकार चातुर्मास सानंद सम्पन्न हुआ।

चातुर्मास समाप्ति के पश्चात् मलेर कोटला से विहार कर महाराजश्री

छोटे-छोटे ग्रामों में धर्म प्रचार करते हुए वरनाला पधारे। यहां की जनता ने महाराजश्री का भव्य स्वागत किया। यहां पर श्री पन्नालाल जी महाराज, श्री चन्दन मुनि जी महाराज आदि ठाणा तीन का चातुर्मास समाप्त कर ये मुनिराज यहां से विहार कर सात मील दूर पधार गये थे। किन्तु महाराजश्री से मिलने के लिए श्री पन्नालाल जी महाराज आदि ठाणा तीन वापिस वरनाला पधारे। इस प्रकार इन मुनिराजों का बड़ा मधुर मिलन हुआ। यहां पर महाराजश्री के लगभग एक सप्ताह तक प्रवचन हुए।

उतरते मार्गशीर्ष में लुधियाने में पंजाब प्रान्तीय साधु सम्मेलन होने वाला था। इसलिए महाराजश्री ने और पन्नालाल जी आदि मुनिराजों ने लुधियाने की ओर विहार किया। दूसरे दिन रायकोट पधारे। यहाँ की जनता ने मुनि मंडली का भव्य स्वागत किया। यहां पर श्री नेकचंद जी महाराज, श्री वेलीराम जी महाराज, श्री जगदीश मुनिराज पहले विराजमान थे। यह मुनि-मंडली ला० रोशनलाल जी के मकान में ठहरी। और यहीं पर आपके प्रवचन प्रारम्भ हुए। जैन जैनेतर लोग खूब लाभ लेते रहे। कुछ दिन बाद जगरावां से श्री विमल मुनि जी ठाणा २ भी पधार गये।

यहां से विहार कर महाराजश्री तथा श्री पन्नालाल जी महाराज गुज्जर-वाल पधारे। दूसरे दिन श्री विमल मुनि महाराज ठाणा दो भी पधार गये। तीसरे दिन तपस्वी श्री टेकचंद जी महाराज श्री पूर्ण मुनि जी महाराज वरनाला की ओर से विहार करके यहां पधार गये। यहां पांच छः दिन तक संतों का बड़ा ही सुन्दर सम्मेलन हुआ। यहां से सभी मुनि एक रात रास्ते में लगाकर लुधियाने की नई बस्ती माडल टाऊन में पहुँचे। वहां पर सियाल कोट वाले भगत सावणमल के नवनिर्मित मकान में विराजे। यहां पर दो-तीन दिन तक विराजकर धर्म प्रचार किया। फिर यहाँ से विहार करके लुधियाना शहर पधार गये।

पंजाब प्रान्तीय साधु सम्मेलन लुधियाना—

लधियाना में सादड़ी मारवाड़ में होने वाले बृहद् साधु सम्मेलन के सम्बन्ध

में विचार विनिमय करने के लिए पंजाब प्रान्तीय साधु सम्मेलन का आयोजन किया गया। तदनुसार प्रान्त भर के सभी प्रमुख प्रतिनिधि मुनिराजों के पधार जाने पर लुधियाना में पंजाब प्रान्तीय साधु सम्मेलन का बड़े समारोह के साथ श्री गणेश हुआ। अखिल भारतीय जैन कान्फ्रेंस की ओर से जो साधु समाचारी छपी थी, इस साधु सम्मेलन में सर्व प्रथम उसी के सम्बन्ध में विचार किया गया। इस में दो मुख्य प्रश्न थे :—

पहला विकल्प—सब स्थानक वासी सम्प्रदायों का एकीकरण कर उसे एक सूत्र में बांधा दिया जाय और उसका नियंत्रक एक ही आचार्य हो।

दूसरा विकल्प—भिन्न-भिन्न प्रान्तीय आचार्य बना कर उन पर एक प्रधानाचार्य हो।

प्रकाशित समाचारी में इन दो महत्वपूर्ण प्रश्नों के अतिरिक्त शेष बातें साधु के चरित्र, आचार, व्यवहार आदि के सम्बन्ध में थीं। उन पर भी मुनि मंडल में पर्याप्त विचार-विनिमय हुआ। पंजाब प्रान्तीय साधु सम्मेलन में आचार्य विषयक पहला विकल्प सर्व सम्मति से पास हुआ।

कान्फ्रेंस की ओर से प्रकाशित समाचारी के जिन अंशों का पंजाब में प्रचलित मुनि समाचारी से अविरोध था, उन्हें भी इस साधु सम्मेलन में पास कर दिया गया। शेष समाचारी जो पंजाब समाचारी से मेल नहीं खाती थी वह सादड़ी सम्मेलन में विचारार्थ रख दी गई।

सादड़ी साधु-सम्मेलन के लिए ये चार मुनिराज प्रतिनिधि रूप से चुने गए :—

(१) व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलाल जी महाराज (२) युवराज पं० श्री शुक्लचन्द्र जी महाराज (३) उपाध्याय पं० श्री प्रेमचन्द जी (महाराज) (४) श्री विमल मुनि जी महाराज। तत्पश्चात् इस विषय पर भी विचार किया गया कि सादड़ी साधु सम्मेलन इसी वर्ष होना चाहिए या अगले वर्ष। अधिकतर मुनिराजों का मत सम्मेलन अगले वर्ष हो इस पक्ष में रहा। इस

प्रकार पंजाब प्रान्तीय साधु-सम्मेलन की कार्यवाही पूज्य श्री आत्माराम जी महाराज की छत्र छाया में सानन्द सम्पन्न हुई।

यहां पर लोहा मंडी आगरा की जैन बिरादरी के प्रमुख भाइयों के हस्ताक्षरों से युक्त एक पत्र महाराजश्री को मिला। उस पत्र में महाराजश्री से आगरे पधारने की विनती की गई थी और लिखा था कि पूज्य श्री पृथ्वी चन्द जी महाराज का फर्मान है कि आपसे मिले बहुत समय हो गया है, अतः अब आप आगरा अवश्य पधारें, क्योंकि मैं तो वृद्धावस्था के कारण कहीं जा नहीं सकता इसलिए आप आगरा क्षेत्र जरूर परसें। आगरा के उक्त विनती पत्र को ध्यान में रखते हुए महाराजश्री लुधियाना से विहार कर दो तीन दिन में रामपुरा पधारे। यहां से फिर मलेरकोटला पधारे। यहां कई दिनों तक आपके प्रवचन होते रहे। रायकोट से श्री नेकचन्द जी महाराज व श्री विमल मुनि जी महाराज ठाणा पांच भी यहां पधारे गये। तीन चार दिन तक ये सब मुनिराज साथ साथ रहे फिर महाराजश्री यहां से विहार कर एक रात रास्ते में ठहरकर धूरी पधारे।

उन दिनों सारे भारत में स्वतन्त्र भारत की पार्लियामेन्ट व विधान सभाओं के प्रथम निर्वाचन होने वाले थे। श्री नेहरू जी चुनाव आन्दोलन के सिलसिले में उन्हीं दिनों धूरी आये। वे दस पन्द्रह मिनट तक भाषण देकर वापिस चले गये।

दूसरे तीसरे दिन से ही प्रान्तीय विधान सभा और संसद के चुनाव आरम्भ हो गये। प्रान्तीय विधान सभा के लिए कांग्रेसी उम्मीदवार सरदार तीर्थ सिंह जी का एक अकाली सिक्ख उम्मीदवार से मुकाबला था।

यहां की मंडी में महाराजश्री के सार्वजनिक प्रवचन प्रारम्भ हुए। इन व्याख्यानों में बहुत से स्थानीय कांग्रेसी नेतागण भी भाग लेते रहे। महाराजश्री ने अपने प्रवचनों में धर्म के साथ साथ राजनैतिक समस्याओं का भी समयोचित रूप से विवेचन किया, जिससे लोगों में बड़े उत्साह की भावना जागृत हुई। परिणाम स्वरूप चुनाव में कांग्रेसी उम्मीदवार जीत गये।

यद्यपि महाराजश्री ने साधु भाषा में राष्ट्रीयता के सम्बन्ध में प्रकाश डाला था, किन्तु न्यायोचित होने से जनता पर उसका बड़ा सुन्दर प्रभाव पड़ा, इसीलिए लोग कहने लगे कि पं० जवाहरलाल नेहरू तो केवल दस पन्द्रह मिनट भाषण देकर चले गये। इस चुनाव पर उनके प्रभाव के साथ ही साथ महाराजश्री के प्रवचनों में व्यक्त किये गये राष्ट्रीय विचारों का भी इस चुनाव के परिणामों बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा।

धूरी से विहार कर महाराजश्री संगरूर पधारे। यहां के स्थानक में आपके दो तीन प्रवचन हुए। यहां के लोगों ने सार्वजनिक प्रवचन करानें की विनती की, किन्तु समय की अनुकूलता न देख महाराजश्री वहां से विहार कर सनाम पधार गये।

सनाम में जहाँ कुछ दिनों पूर्व तेरहपंथी आचार्य तुलसीराम जी के व्याख्यान हुए थे, स्थानीय समाज नें वहीं पर पंडाल बना कर महाराजश्री के प्रवचनों की व्यवस्था की। तदनुसार तीन दिन तक उसी पंडाल में प्रवचन होते रहे। इन प्रवचनों को सुनकर यहां के लोगों ने कहा कि यहां तुलसी आचार्य का वैसा प्रभाव नहीं पड़ा जैसा आप श्री के प्रवचनों का। आप श्री के मधुर व समाजोपयोगी धर्मोपदेश सुनकर यहां के लोगों को बहुत प्रसन्नता हुई। यहां से विहार कर महाराजश्री छाजली लहरा मंडी होते हुए मूणक पधारे।

मूणक में श्री फकीर चन्द जी महाराज ठाणा चार से विराजमान थे। यहां के नये स्थानक में महाराजश्री के चार पांच व्याख्यान हुए। यहां लुधियाने से पूज्य श्री की ओर से पत्र आया कि जैन कान्फ्रेंस के तार व पत्र आ रहे हैं। उनमें वे लोग लिखते हैं कि सम्मेलन इसी वर्ष होना चाहिए। तदर्थ आप श्री अपने प्रतिनिधि भेजें। इसलिए यदि आप इस वर्ष सम्मेलन में पधार जायें तो अच्छा है।

महाराजश्री ने इस पर पूज्य श्री को सूचना लिख दी कि अभी मैं इस सम्बन्ध में विचार कर रहा हूं। यदि आप सम्मेलन में ज्ञान मुनि जी को भी भेजें तो अच्छा है। यहां जीन्द से लाला मनसारामजी सेठ महाराजश्री की

सेवा में आये। उन्होंने महाराजश्री से अपना क्षेत्र परसने की विनती की। महाराजश्री ने फरमाया कि इस समय तो मैं टोहाना की ओर विहार कर रहा हूं। यदि मेरा देहली की ओर जाने का विचार हुआ तो जीन्द रास्ते में पड़ती ही है, किन्तु यदि साधु-सम्मेलन की ओर सीधा जाना हुआ तो फिर क्षेत्र परसना असम्भव है।

महाराजश्री दूसरे दिन यहाँ से विहार कर टोहाना पधारे। यहाँ आपके दो तीन सार्वजनिक प्रवचन हुए। फिर यहाँ से विहार कर विट्टमड़े पधारे। यहाँ की चोपाल में आपने दो तीन धर्मोपदेश दिये। रात्रि को व्याख्यान जहाँ ठहरे थे वहीं होता था। महाराजश्री ने यहाँ पर सुखे समाधे साधु-सम्मेलन में पहुँचने का निश्चय कर हाँसी की ओर विहार कर दिया। यहाँ से विहार कर खरक गांव पधारे। यहाँ पर महाराजश्री के दो तीन व्याख्यान हुए। फिर यहां से हाँसी पधारे। दूसरे दिन से महाराजश्री ने स्थानक में धर्मोपदेश प्रारम्भ किये।

यहां हांसी में महाराजश्री को ऐसा ज्ञात हुआ कि साधु सम्मेलन सादड़ी की बजाय जयपुर में होने वाला है। उस समय कवि उपाध्याय श्री अमरचन्द जी महाराज जयपुर में विराजमान थे। इसलिए इस सम्बन्ध में कवि जी से पत्र व्यवहार किया गया। कवि जी महाराज की ओर से समाचार मिले कि साधु सम्मेलन तो सादड़ी में ही होता दीखता है।

यहाँ पर धीरज भाई तुरखिया महाराजश्री से साधु-सम्मेलन में पधारने की विनती करने आये। उन्होंने महाराजश्री को सम्मेलन की सब गति विधियों से परिचित करवाया। महाराजश्री ने फरमाया कि मैं सम्मेलन में सम्मिलित होने के विचार से ही विहार कर इस ओर आया हूँ। यहाँ लगभग आठ नौ व्याख्यान देकर एक रात विवानी खेड़ा में ठहर कर दूसरे दिन भिवानी पधारे। यहां पर महाराजश्री के दो तीन दिन तक प्रवचन होते रहे। यहाँ से विहार कर दूसरे दिन चरखी दादरी पधारे। यहाँ पर महाराजश्री के दो प्रवचन हुए। [illegible] से विहार कर महाराजश्री महेन्द्रगढ़ पधारे। यहाँ पर एक रात ठहर

कर नारनौल पधारे। नारनौल में तीन चार सार्वजनिक प्रवचन हुए। यहां पर पंजाब की सीमा समाप्त हो जाती है।

यहाँ से आगे महाराजश्री ने शेखावाटी की सीमा में प्रवेश किया। और नीम का थाणा, माधोपुर, रींगस, फुलैरा, नारायणगढ़ आदि छोटे बड़े क्षेत्रों में धर्म प्रचार करते हुए किशनगढ़ के पास हरमाड़ा ग्राम जा पहुँचे। यहां मदन गंज से श्री विजय मुनिजी साहित्य रत्न और श्री कीर्ति मुनिजी दोनों महाराजश्री के स्वागतार्थ आये। जयपुर की ओर से विचरते हुए श्री सुमेर मुनि जी महाराज व श्री इन्द्रपाल जी महाराज ठाणा तीन भी हरमाड़ा ग्राम पधार गये। यह हरमाड़ा कस्वा मदनगंज किशनगढ़ से आठ मील उरली तरफ है।

दूसरे दिन सभी मुनिराज विहार कर मदनगंज पधारे। यहाँ कवि उपाध्याय श्री अमरचन्द जी महाराज विराजमान थे। उसी दिन यहाँ पूज्य श्रीगणेशी लाल जी महाराज आदि ठाणा भी पधार गये। यहां बहुत साधु सम्मेलन के सम्बन्ध में मुनिराजों में पारस्परिक विचार विमर्श होता रहा।

पूज्य श्रीगणेशी लाल जी महाराज ने महाराजश्री से पूछा कि आपने पंजाब प्रान्तीय साधु-सम्मेलन में क्या प्रस्ताव पा किये।

महाराजश्री ने उत्तर दिया कि विशेष रूप से एक ही प्रस्ताव स्वीकृत हुआ है। वह यह है कि श्रमण संघ का संचालन एक आचार्य श्री के नेतृत्व में होना चाहिए। पंजाब प्रान्तीय साधु समाचारी के सम्बन्ध में जो अन्य प्रस्ताव पास किये गये हैं वे एस० एस० जैन सभा पंजाब की ओर से प्रकाशित हो चुके हैं। उसका अवलोकन करने से आप श्री को पूरी पूरी जानकारी प्राप्त हो सकती है।

दूसरे दिन यहाँ पर सामूहिक रूप से मुनिराजों के प्रवचन हुए। किशन गढ़, मदनगंज, अजमेर, ब्यावर, जयपुर आदि नगरों के भाइयों व बाइयों ने इन प्रवचनों में बड़ी भारी संख्या में भाग लिया। पहले पंडित मुनि श्री सिरे मल जी महाराज ने व्याख्यान दिया। फिर कवि उपाध्याय श्री अमरचन्द जी महाराज व पूज्य श्रीगणेशी लाल जी महाराज के व्याख्यान हुए। ८८५२८

पंजाब केसरी उपाध्याय श्री प्रेमचन्द जी महाराज का प्रवचन हुआ ।

भावी साधु सम्मेलन के उद्देश्य व लक्ष्य तथा संगठन के महत्व का प्रतिपादन करते हुए महाराजश्री ने कहा कि हम मुनि लोगों द्वारा ही सम्प्रदाय की दीवारें खड़ी की गई थीं और हमने ही सम्प्रदाय की वाड़ों को मजबूत वना दिया । यदि हम मुनिगण सम्प्रदाय की इन दीवारों को तोड़ना चाहें, तो तोड़ भी सकते हैं । और इस प्रकार एक विशाल स्थानक वासी समाज का एकीकरण कर जैन धर्म को उन्नत वना सकते हैं । आपने अपने वक्तृत्व के क्रम को चालू रखते हुए आगे कहा कि जिस ताली से ताला वन्द किया जाता है, उसी चावी से उस ताले को खोला भी जा सकता है । अर्थात् गुरु वर्ग ने ही परस्पर में मेल, जोल, प्रेमभाव और वात्सल्य के ताले को वन्द किया है, वे ही अपनी पवित्र प्रेमपूर्ण भावना रूपी चावी से उस बन्द हुए ताले को खोल भी सकते हैं । महाराजश्री के इस प्रवचन का उपस्थित मुनि मंडली तथा श्रावक वर्ग पर वहुत ही अच्छा प्रभाव पड़ा ।

इन मुनिराजों के यहाँ पर दो तीन दिन तक प्रवचन होते रहे । यहाँ से विहार कर यह मुनि मंडली यहाँ से दो मील दूर किशनगढ़ शहर पधारी । यहाँ पर एक दिन तो सभी प्रमुख मुनिराजों के सामूहिक रूप से प्रवचन हुए, दूसरे दिन महाराजश्री का धर्मोपदेश हुआ । पूज्य श्री गणेशी लाल जी महाराज ने तो अगले ही दिन अजमेर की ओर विहार कर दिया ।

महाराजश्री और कवि श्री जी वापिस मदनगंज में एक दो दिन विराज कर अजमेर की ओर चल पड़े । और एक रात रास्ते में विता दूसरे दिन अजमेर पधार गये । यहाँ विराजित मुनि मंडली और स्थानीय श्रावक संघ ने आने वाले मुनिराजों का वड़े उत्साह के साथ भव्य स्वागत किया ।

महारजश्री व कवि जी महाराज तो लोढा जी की धर्मशाला में ठहरे । पूज्य श्री गणेशीलाल जी महाराज लाखन कोठरी की कचहरी में ठहरे हुए थे । इसलिये यहां सर्व मुनिराजों के प्रवचन कुछ दिन तक कचहरी में ही होते रहे ।

उसी समय मरुधर केशरी श्री पन्नालाल जी महाराज पूज्य श्री हस्तीमल

जी महाराज व वयोवृद्ध वावा श्री पूर्णचन्द जी महाराज आदि मुनिराज भी अजमेर पधार गये। श्री जैन दिवाकर जी महाराज के प्रधान शिष्य उपाध्याय श्री प्यारचंद जी महाराज पहले ही अपनी मुनि मंडली सहित केशरीचंद जी की हवेली में विराजमान थे। इस अवसर पर कितनी ही साध्वियां भी इधर-उधर से अजमेर पधार गई। मुनि मंडल के एकत्रित हो जाने के कारण वाहर से भी वहुत वड़ी संख्या में लोग दर्शनार्थ आने लगे। स्थानीय श्रोतागणों की उपस्थिति भी उत्तरोत्तर वढ़ने लगी। इसलिये एक विशाल पंडाल का निर्माणकर उसमें प्रवचनों की व्यावस्था की गई। यहां पर मुनिराजों के सामूहिक प्रवचन प्रारंभ हुये। अजमेर में साधु-साध्वी और वाहर से श्रावक वर्ग इतनी वड़ी संख्या में पहुंचे कि यहीं पर एक छोटे से सम्मेलन का भव्य दृश्य उपस्थित हो गया। कुछ दिनों तक अजमेर में धार्मिक भावनाओं, उपदेशों व व्याख्यानों आदि के कारण खूव चहल-पहल होती रही।

यहां पर भी मुनिमंडली में सादड़ी साधु-सम्मेलन के सम्वन्ध में विचार विनिमय होता रहा।

यहां से विहार कर महाराज श्री पुष्कार पधारे। यहां पर दो तीन दिन विराजे। दैनिक प्रवचन स्थानक में तथा रात्रि में सार्वजनिक प्रवचन स्थानक के वाहर खुले मैदान में होते थे। यहां से विहार कर आप दूसरे दिन गोविन्द गढ़ पधारे। यहां पर स्थानीय राजा के रावले के दिवान खाने में आपका सार्वजनिक प्रवचन हुआ। क्योंकि यहाँ के राजा साहव ने स्वयं महाराजश्री से धर्मोपदेश देने की विनती की थी। यहाँ के राजा साहव जैन मुनियों के वड़े भक्त हैं। इनका जीवन वड़ा सीधा-साधा है। आपको मद्य, मांस आदि कोई दुर्व्यसन नहीं है। यहां से दूसरे दिन विहार कर पीसांगण पधारे। यहाँ रात्रि को वाजार में सार्वजनिक प्रवचन हुआ। दूसरे दिन यहां से विहार कर नागेलावे पधारे। यहाँ पर एक व्याख्यान दिन में और एक रात्रि में हुआ। यहां पर खरवे के दो भाई आए। उन्होंने अपना क्षेत्र परसने की विनती की इस पर महाराजश्री को दूसरे दिन प्रातः विहार कर खरवा पधारना पड़ा।

यहां उसी दिन श्री पूर्ण बाबा जी महाराज भी पधारे थे। यहां पर भी महाराजश्री का एक सार्वजनिक प्रवचन हुआ।

खरवे से तीसरे पहर विहार कर आप वहां से चार मील दूर मोहनपुरा स्टेशन पधारे। यहां पर ब्यावर के दो भाइयों ने आकर महाराजश्री को सूचना दी कि पूज्य श्रीगणेशी लाल जी महाराज ब्यावर शहर के बाहर बगीची में ठहरे हुए हैं। श्री कवि जी महाराज ने आप से विनती की है कि आप ब्यावर सीधे न पधार कर जूनी (पुरानी ब्यावर) पधारें। महाराजश्री दूसरे दिन यहां से विहार कर पुरानी ब्यावर पधार गए।

कवि जी महाराज तथा बहुत से स्थानीय भाई महाराजश्री का स्वागत करने के लिए आए। कवि जी महाराज ने महाराजश्री को ब्यावर के समाज की सामयिक परिस्थिति का परिचय दिया। उसी दिन थोड़ी देर के बाद उपाध्याय पं० प्यारचंद जी महाराज भी पधार गए। कवि श्री जी ने कहा कि यहां पर विराजित मुनियों ने निर्णय किया है कि जब तक ब्यावर संघ के आपस में चल रहे वैमनस्य का समझौता व ऐक्य न हो जाये, तब तक ब्यावर पधारने वाले कोई भी मुनिराज व्याख्यान न दें। उपस्थित मुनियों ने इस निर्णय को स्वीकार कर लिया। यहां पर ब्यावर से सैंकड़ों भाई दर्शनार्थ आए। महाराजश्री ने उनके समक्ष थोड़ी देर तक धर्मोपदेश दिया।

अगले दिन ब्यावर के भाइयों ने मुनि मंडल से नगर में पधारने की विनती की। तदनुसार सब मुनिराजों ने वहां से विहार कर ब्यावर नगर में प्रवेश किया। प्रवेश के समय स्थानीय श्री संघ ने बड़े हर्ष और उल्लास के साथ इस मुनिमंडली का हार्दिक स्वागत किया। पहले सब मुनिराज एक बड़े नौहरे में पधारे। वहां प्रमुख मुनिराजों ने उपस्थित जन-समूह को सामूहिक रूप से थोड़ा-थोड़ा धर्मोपदेश दिया। अंत में समागत भाइयों तथा बाइयों को मंगली सुनाकर सब मुनिराज कुन्दन-भवन में जाकर विराजे।

यहां लोगों ने मुनिराजों से व्याख्यान के लिए आग्रह किया। किन्तु उपर्युक्त निर्णय के कारण किसी भी मुनिराज ने व्याख्यान देना स्वीकार नहीं

किया। इस समय पारस्परिक मतभेद को मिटाने के लिए दो भाइयों ने अनशन व्रत भी धारण कर लिया। अंत में यहां की दोनों पार्टियों ने अपनी-अपनी ओर से पूज्य श्री गणेशीलाल जी महाराज को लिखकर दिया कि आप जो निर्णय दें वह दोनों पार्टियों को मान्य होगा। पूज्य श्री गणेशीलाल जी महाराज ने निर्णय देते हुए साधु शब्दों में फरमाया कि आप दोनों पार्टियां पिछली बातों को भूल जाएं। किसने क्या किया है इस डिटेल में जाने की कोई आवश्यकता नहीं। आप लोग नया संविधान बनाकर उसके अनुसार कार्य कर सकते हैं। महाराजश्री के इस आदेश को दोनों पार्टियों ने स्वीकार कर लिया। इस पर पूज्य श्री गणेशीलाल जी महाराज भी बगीची से शहर में पधार गए।

ब्यावर में स्थानकवासी जैन समाज की जनरल मीटिंग हुई। उसमें यह पास हुआ कि जो बृहत साधु सम्मेलन सादड़ी में हो रहा है, वह सादड़ी की बजाय ब्यावर में होना चाहिए। यह प्रस्ताव पास कराने के लिए श्री धीरज भाई और श्री टी० जी० शाह दोनों ने बहुत प्रयत्न किया। टी० जी० शाह ने यह भी कहा कि मैं कुछ दिन सादड़ी में रहकर वहां की स्थानीय मीटिंग में जाता रहा। वहां पर कई विचारों से संघ में एकमत्य नहीं हो पाया। वहां के संघ का आपस में सम्मेलन विषयक मत भेद होने से एकीकरण नहीं हुआ है। इसलिए सम्मेलन यहीं हो जाये, तो अच्छा है।

इसके बाद मुनिराजों की एक मीटिंग कुंदन भवन में हुई। उसमें सर्व-सम्मति से निश्चय किया गया कि भावी साधु-सम्मेलन सादड़ी में ही होना चाहिए। इस विचार के पश्चात् सादड़ी के भाई आए और उन्होंने आग्रह किया कि साधु सम्मेलन सादड़ी में ही हो। मुनिमंडल की ओर से उन्हें यह आश्वासन दिया गया कि हमने सम्मेलन सादड़ी में ही करने का निश्चय किया है। इस पर वे लोग बहुत संतुष्ट हुए।

यहां पर बाजार में मुनिराजों का एक सामूहिक सार्वजनिक व्याख्यान हुआ।

महाराजश्री यहां से विहार कर सैंदड़ा पधारे। यहां पर उपाध्याय श्री प्यारचंद जी महाराज आदि मुनिराज विराजमान थे। यहा से सभी मुनिराज वर पधारे। यहां पर महावीर जयन्ती मनाई गई। महाराजश्री ने भगवान महावीर स्वामी के जीवन-चरित्र पर बड़े सुन्दर ढंग से प्रकाश डाला। दूसरे दिन यहां से झूठे गांव होते हुए पीपलिया पधारे।

यहां से दूसरे दिन विहार कर चंडावल होते हुए सोजत पधारे। यहां पर मरुधर केशरी श्री मिश्रीमल जी महाराज आदि मुनिराज और स्थानीय स्थानकवासी समाज ने इस मुनि मंडली का स्वागत किया। यहां पर एक व्याख्यान देकर दो तीन दिन में आप पाली पधार गए। स्थानीय समाज ने मुनिराजों का भव्य स्वागत किया। वहां पर विराजित श्री जैन दिवाकर महाराज के शिष्य श्री मूल मुनि जी महाराज आदि ठाणा तीन भी महाराजश्री के स्वागतार्थ सामने आए। यहां महाराजश्री शान्ति-भवन में विराजे। श्री मूल मुनि जी महाराज ने महाराजश्री के स्वागत में एक सुन्दर कविता पढ़ सुनाई। तथा स्थानीय गायक हस्तीमल जी व ताराचंद जी ने भी स्वागत गान गाया! फिर महाराजश्री ने समागत भाइयों तथा बाइयों को कुछ धर्मोपदेश देकर मंगली सुनाई।

दूसरे दिन से कांढेड कपड़ा मार्केट में महाराजश्री के प्रवचन प्रारम्भ हुए। लगभग एक सप्ताह तक महाराजश्री के यहां प्रवचन होते रहे। फिर यहां से महाराजश्री तथा मूल मुनि जी आदि मुनिराज विहार कर बूसी, जवाली आदि छोटे-छोटे क्षेत्रों में धर्म प्रचार करते हुए नाडोल पधारे।

यहाँ श्री श्वेताम्बर जैन धर्मशाला में ठहरे। उपाध्याय प्यारचन्द जी महाराज भी नाडोल पधार गए। यहाँ पर कुछ सादड़ी के भाई पहुंच गए। रात्रि में महाराजश्री का एक प्रवचन जैन धर्म के मौलिक सिद्धान्तों के सम्बन्ध में हुआ। इस प्रवचन से स्थानीय जैन समाज बहुत प्रसन्न और प्रभावित हुआ।

बृहत् साधु सम्मेलन सादड़ी—

यहां से विहार कर सर्व मुनिराज ढलोप पधारे। यहां स्थानकवासी जैनों

का कोई घर नहीं। यहां से तीसरे पहर विहार कर मांगलिया का गूड़ा पधारे। यहां रात्रि को महाराजश्री ने धर्मोपदेश दिया। दूसरे दिन प्रातः विहार कर साधु-सम्मेलन के लिए इस मुनि मंडली ने सादड़ी नगर में प्रवेश किया। प्रवेश के समय यहां पर विराजित मुनिराजों ने तथा स्थानीय व बाहर के श्रावक संघ ने इस मुनि-मंडली का भव्य स्वागत किया। जन-समूह ने जय ध्वनि के नारों से सारे नगर को प्रतिध्वनित कर दिया। प्रमुख दरवाजों और मार्गों से होते हुए ये मुनिराज न्यातियों के नोहरे में पधारे। तदनुसार पहले पूज्य श्री गणेशीलाल जी महाराज का प्रवचन हुआ।

फिर महाराजश्री ने धर्मोपदेश देते हुए बाहर से आने वाले भाइयों को सम्बोधित कर कहा कि आप ऐसा न समझें कि आप कोई मेंहमान बनकर आए हैं। प्रत्युत अपने मन में सदा यह भाव रखें कि आप यहाँ संघ के सेवक बनकर आए हैं। हो सकता है कि यहां पर आप लोगों के निवास के लिए अनुकूल मकान आदि की व्यवस्था संतोपजनक न हो सके। दूसरे प्रकार के प्रबंधों की त्रुटियों के कारण भी, सम्भव है आप को असुविधाओं का सामना करना पडे। किन्तु आपको इन असुविधाओं की ओर ध्यान न देकर आप जिस महान ऐतिहासिक कार्य के सम्पादन के लिए यहां आए है, उसकी सफलता के लिए पूरा-पूरा सहयोग दें। जो जिस प्रकार की सेवा कर सकता है, वह उसी प्रकार की सेवा के द्वारा सहयोग दे सकता है। आपकी सुविधा में किसी प्रकार की त्रुटि रह जाय तो भी आपकी ओर से स्थानीय बिरादरी आदि प्रबन्धकों को किसी प्रकार की शिकायत या उपालम्भ नहीं मिलना चाहिए।

तत्पश्चात् प्रायः सभी प्रमुख प्रतिनिधि मुनिराज श्री लोकाशाह जैन गुरुकुल में पधार गए। गुरुकुल का स्थान नगर से बाहर और बड़ा ही रमणीय है। लक्षण तृतीया को गुरुकुल के विशाल हाल में वृहत साधु सम्मेलन की कार्यवाही प्रारम्भ हुई। प्रातः, दोपहर बाद और रात्रि प्रतिक्रमण के पश्चात् तीनों समय साधु-सम्मेलन की सफलता के लिये मीटिंगें होती रहीं। कुछ दिनों तक गम्भीर विचार विनिमय के पश्चात् समग्र संघ का आचार्य एक हो, इस

सम्बन्ध में एक प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास किया। और इस भावी संघ का नाम **श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ** रखा गया।

फिर प्रश्न उपस्थित हुआ कि आचार्य पद पर किस को नियुक्त किया जाय। इस विषय में मुनियों के मत लिये जाने लगे। पूज्य श्री हस्तिमल जी ने अपना मत देते हुए पूज्य श्री गणेशीलाल जी महाराज का नाम पेश किया। तत्पश्चात् प्रसिद्ध वक्ता पंडित श्री सौभाग्यमल जी ने अपना मत देते हुए कहाकि आचार्य शब्द रहना चाहिए श्री आत्मारामजी महाराज को वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ का आचार्य बनाया जाय और पूज्य श्री गणेशीलालजी को उपाचार्य। सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव पास हुआ फिर मन्त्री मण्डल का चुनाव हुआ। यद्यपि मंत्रि पद और उपाचार्य पद शास्त्र-सम्मत नहीं है, किन्तु समय को परखते हुए संघ-संचालन के लिए ऐसा किया गया। जिन-जिन मुनिराजों को जिस-जिस पद पर नियुक्त किया गया था उन्हें कार्य संचालन के लिए उचित अधिकार दिए गए।

उपाचार्य श्री का कर्त्तव्य होगा कि वह आचार्य श्री को पूरा-पूरा सहयोग दें। आचार्य श्री उपाचार्यश्री को जो-जो अधिकार दें, वे उनके द्वारा संघ का संचालन करें। इस सम्मेलन की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि जितने भी प्रस्ताव पास हुए, वे सर्वसम्मति से पास हुए। सम्मेलन की कार्यवाही बड़ी ही शानदार और प्रभावपूर्ण रही। जनता को मुनिराजों के धर्मोपदेश का लाभ भी खूब मिला।

यहां पर आए हुए रतलाम के श्री संघ ने महाराजश्री से रतलाम चातुर्मास के लिए बड़ी आग्रहपूर्ण विनती की। इस पर द्रव्य क्षेत्र, काल व भाव को ध्यान में रखते हुए रतलाम चातुर्मास की विनती स्वीकार कर ली।

सम्मेलन की प्रमुख कार्यवाही सफलतापूर्वक सम्पन्न हो जाने के पश्चात् महाराजश्री का प्रवचन पंडाल में हुआ। इस प्रवचन में उपस्थित जन समूह को सम्बोधित करते हुए महाराजश्री ने कहा कि यह बिखरी हुई कड़ियां बड़ी कठिनता से इस सम्मेलन में जोड़ी गई हैं। आप लोगों को इस संगठन को

सुदृढ़ बनाने के लिए साधु समाज को प्रत्येक प्रकार का सहयोग देते रहना चाहिए। इस प्रेम सूत्र को सुदृढ़ बनाना, कहीं इसमें शिथिलता न आ जाय, इस विषय में पूरा.पूरा ध्यान रखना।

दूसरे दिन प्रमुख मुनिराजों के सामूहिक प्रवचन हुए। इस प्रकार वृहत् साधु-सम्मेलन की कार्यवाही सानन्द सम्पन्न हुई।

वीर भूमि मेवाड़ में—

महाराजश्री आदि कई मुनिराज सादड़ी से विहार कर राणक पुर पधारे। यह सादड़ी से लगभग ६ मील की दूरी पर श्वेताम्बर मूर्ति पूजक जैनों का पंच तीर्थों में से सबसे बड़ा तीर्थ माना जाता है। यह स्थान अरावली पर्वत के नीचे स्थित है। लोगों का कहना है कि इस मन्दिर के बनाने में अठारह करोड़ रुपये व्यय हुए थे।

और यह भी लोगों का कहना है कि इस मन्दिर के खम्भे गिने नहीं जा सकते। यह कथन अत्युक्ति मात्र है, क्योंकि खम्बे वास्तव में इनमें असंख्य तो नहीं हो सकते, जो गिने न जायं। हां खम्बों की अधिकता के कारण साधारण मनुष्य को गिनने में उलझन हो सकती है जो कोई बड़ी बात नहीं। यहां से तीसरे पहर विहार कर तीन-चार मील पर्वत की तलहटी में स्थित एक चौकी में जाकर ठहरे। यहां से प्रातः काल विहार कर विकाल घाटा पार कर ग्यारह बजे के लगभग सायरा तहसील पहुँचे। यहां पर पंडित रत्न श्री प्यार-चन्द जी महाराज विराजमान थे। रात्रि को बाजार में आप श्री का सार्वजनिक प्रवचन हुआ।

यहां से विहार कर ढोल कमोल आदि क्षेत्रों में एक-एक दो-दो धर्मोपदेश देते हुए तिरावड़ी गढ़ पधारे। यहां नगर के बाहर दरवाजे के पास ही एक छोटे से मकान में ठहरे। यहां पर एक नया स्थानक बन रहा था। यहां के भाई महाराजश्री को किले में ले गए। और कई स्थानों का निरीक्षण कराया। इस किले के चारों ओर कोट है। किले के अन्दर छोटा सा नगर बसता है। इसका

एक ही दरवाजा है। किले के अन्दर घूमते-घूमते महाराजश्री जब एक कोट के ऊपर बनी हुई छत्री में पहुंचे तो आपने देखा कि छत्री में एक मूर्ति रखी है, और उसके इर्द-गिर्द कई छोटी-छोटी मूर्तियां हैं।। उनपर केसर तिलक आदि लगे हुए थे। पूछने पर साथ वाले भाइयों ने उत्तर दिया कि ये जैन मूर्तियां किसी किसान को यहाँ से थोड़ी दूर पर जमीन में गड़ी हुई मिली थीं। और हमने यहां लाकर स्थापित कर दिया।

महाराजश्री ने पूछा कि यहां पर कोई मूर्तिपूजक जैनों का घर भी है?

उत्तर मिला कि 'नहीं।'

महाराजश्री ने फरमाया कि फिर तुम्हें इन्हें यहां लाने कि क्या आवश्यकता थी। स्थानक वासी समाज की मूर्ति पूजा की मान्यता ही नहीं है तो इन्हें यहां लाकर करना ही क्या था।

एक भाई ने कहा कि जिस समय ये मूर्तियां यहां लाई गई थीं उस समय यहां पर विराजित श्री आनन्द ऋषि जी महाराज ने लोगों को इस सम्बन्ध में बहुत समझाया था, किन्तु लोगों ने उनका कहना न मान कर इन मूर्तियों को यहाँ लाकर स्थापित कर ही दिया।

दोपहर को महाराजश्री ने अपने प्रवचन में जड़ और चेतन तत्वों की विवेचना करते हुए समझाया कि आप लोगों ने चेतन उपासक होते हुए भी यहां पर जड़-मूर्तियों की जो स्थापना की है यह आप की धर्म-संस्कृति के अनुकूल नहीं है। जड़ पूजा मिथ्वात्व है। इससे कल्याण होने वाला नहीं।

महाराजश्री के ऐसे प्रभावशाली प्रवचन से प्रभावित होकर यहां के बहुत से जैन भाइयों ने मूर्ति के दर्शन पूजा आदि रूप मिथ्यात्व का त्याग कर दिया। यहां पर एक समय एक उदयपुर का राजकर्मचारी आया हुआ था जो स्थानक वासी जैन भाई था। उसने भी महाराज श्री का प्रवचन सुना और किले में मूतिस्थापना की घटना का जब उसे पता लगा तो उसने तिरावली गढ़ के भाइयों से कहा कि आपने तो गढ़ की गुमटी में सरकार की आज्ञा के बिना मूति स्थापित की है वह गैर कानूनी कार्य किया है। सरकार की आज्ञा प्राप्त

किए विना सरकारी विल्डिग में या उसके किसी भाग में मूर्ति को स्थापित करना एक सरकारी अपराध है। साथ ही उसने यह भी विश्वास दिलाया कि सरकारी आदेश के द्वारा यह मूर्ति शीघ्र ही हटा दी जायगी। कुछ समय पश्चात् महाराजश्री को ज्ञात हुआ कि वे मूर्तियां किले की छत्री में से हटा दी गईं और किसी अन्य जगह पहुंचा दी गईं।

यहाँ से विहार कर महाराज श्री गोगुन्दा पधारे। और शास्त्रज्ञ पंडितश्री कस्तूर चन्द जी महाराज सा० ठाणा तीन भी यहां पधार गए। दोपहर को महाराज श्री ने व रात्रि को श्री कस्तूर चन्द जी महाराज ने एक प्रवचन किया। दूसरे दिन प्रातः पं० श्री कस्तूर चन्द जी महाराज ने विहार कर दिया और महाराज श्री दोपहर को धर्मोपदेश देकर तीसरे पहर विहार कर मार्ग में एक गांव में ठहरते हुए दूसरे दिन मंदार पधार गए।

उदयपुर में—

मंदार में एक व्याख्यान देकर श्री कस्तू चन्द जी महाराज तथा आपश्री आदि सब मुनिराज मन्दार से विहार कर एक रात रास्ते में ठहरते हुएदूसरे दिन प्रातः उदयपुर पधारे। स्थानीय श्री संघ ने इस मुनि मण्डली का बड़े उत्साह के साथ भव्य स्वागत किया। सभी मुनिराज पंचायती नोहरे में पधार गए। नोहरे में आये हुए भाइयों और वाइयों को प्रसंगोचित धर्मोपदेश देकर मंगली सुनाई। फिर महाराजश्री श्री जवाहर पोषधशाला में पधार गए। यहां पर लगभग एक सप्ताह तक पंचायती नोहरे में पहले पं श्री कस्तूर चन्द जी महाराज का प्रवचन होता वाद में महाराजश्री अनेक सुन्दर समयोपयोगी तथा मानव चरित्र-निर्माण में सहायक महत्वपूर्ण विषयों पर विचार व्यक्त करते रहे। जनता महाराजश्री के प्रवचनों से वहुत प्रभावित हुई और श्रद्धालु जनसमूह ने महा-राजश्री से वहुत आग्रह किया कि आप उदयपुर में कुछ दिन और विराजे। किन्तु महाराजश्री को चातुर्मास रतमाल करना था, इसलिए महाराजश्री वहां अधिक दिन नहीं ठहर सके।

उदयपुर से विहार कर उस रमणीय एकान्त स्थान पर आकर ठहरे, जहां महाराणा प्रताप व भामाशाह आदि की छत्रियां (समाधियाँ) बनी हुई हैं। महाराणा प्रताप की छत्री बड़ी भव्य और विशाल है। दूसरे दिन यहीं पर महाराजश्री का प्रवचन हुआ। उदयपुर के भाई और बाई यहाँ बहुत बड़ी संख्या में व्याख्यान श्रवणार्थ आये।

एकान्त स्थान में निर्मित यह अत्यन्त रमणीय स्थान साधु (साधक आत्मा की साधना) के लिए अत्यन्त उपयुक्त प्रतीत हुआ। पं० मुनिश्री घासीलाल जी महाराज ने शास्त्र-लेखन संबधी बहुत सा कार्य यहीं पर ठहर कर किया था।

यहां से विहार कर कानोड़, भिंड, कुन्थुवास आदि क्षेत्रों में धर्म प्रचार करते हुए, बड़ी सादड़ी पधारे। यहां पर स्थानकवासी समाज के अनुमान ड़ेढ़ सौ घर हैं। लोगों में धर्म-जागृति अच्छी देखने में आई। यहां के बहुत से जैन भाई बाहर संस्थाओं में शिक्षण आदि का कार्य कर रहे हैं। यहां महाराजश्री के तीन प्रवचन हुए। रात्रि के समय में भी चर्चा विचार में पर्याप्त संख्या में भाई शामिल होकर लाभ लेते रहे।

यहां से विहार कर मार्ग के कई छोटे-बड़े क्षेत्रों को धर्म लाभ तेदे हुए छोटी सादड़ी पधारे। यहाँ पर महाराजश्री के बाजार में दो प्रवचन हुए, जिनमें जैन जैनेतर और मुसलमान भाइयों ने भी भारी संख्या में भाग लिया।

यहां पर श्री गोदावत जैन गुरुकुल संस्था चल रही है। महाराजश्री ने भी इस संस्था का निरीक्षण किया। संस्था का स्थान रमरणीय और विशाल है। इस संस्था में शिक्षा पाने के लिए दूर-दूर से विद्यार्थी आते हैं। और यहां से शिक्षा प्राप्त करके आज कितने ही शिक्षक जहां तहां संस्थाओं में या व्यक्तिगत रूप से कार्य कर रहे हैं। यहां पर स्थानकवासी समाज के थोड़े घर होते हुए भी समाज में जागृति व संगठन और धर्म-प्रेम खूब पाया गया। यहां से विहार कर मार्ग में धर्म प्रचार करते हुए चार-पांच दिन में नीमच सिटी पधारे। यहां पर बाजार में महाराजश्री का एक सार्वजनिक व्याख्यान हुआ।

यह नीमच वह भाग्यशालिनी भूमि है जिसमें जैन धर्म के चमकते हुए सितारे जैन दिवाकर प्रसिद्ध वक्ता श्री चौथमल जी महाराज का जन्म हुआ था। वास्तव में इस भूमि ने ऐसे नर-पुंग को जन्म देकर अपने गौरव को चार चांद लगा दिये। ऐसे-ऐसे नर रत्नों को जन्म देने का सौभाग्य किसी किसी भूमि को ही प्राप्त होता है। यहां पर श्री दिवाकर जी महाराज की एक वृद्धा बड़ी बहिन थी, जिसने कहा कि श्री चौथ मल जी मेरे सांसारिक सगे भाई थे।

नीमच से विहार जर तीन-चार दिन में मार्गवर्ती ग्रामों में धर्मोपदेश देते हुए आप मंदसौर पधारे। मंदसौर के स्थानकवासी जैन समाज ने बड़े हर्ष के साथ महाराजश्री का भव्य स्वागत किया। महाराजश्री यहां पर झमकुपुरा के स्थानक में विराजे। यहां पर दो प्रवचन स्थानक में व एक सार्वजनिक प्रवचन बाजार में हुआ। फिर यहां से मंदसौर शहर के नवनिर्मित स्थानक में पधारे। यहां पर चार-पांच व्याख्यान इसी विशाल स्थानज में हुए।

यहाँ से महाराजश्री विहार कर मार्गवर्ती दो तीन गावों में धर्म-प्रचार करते हुए जावरा पधारे। जावरा की जनता चार-पांच मील तक महाराजश्री के स्वागतार्थ आई। महाराजश्री ने स्थानक में प्रवेश कर साथ आई हुई जनता को कुछ प्रसंगोचित धर्मोपदेश देकर मंगलिक सुनाई। यहां महाराजश्रीं के व्याख्यानों का प्रबन्ध खुले चौक में विशाल पंडाल बना कर किया गया। यहाँ की जनता में उत्साह, नई उमंग और धर्म जागृति अच्छी देखने में आई।

यहां पर चार-पांच व्याख्यान देकर मार्ग के गांवों में धर्मोपदेश देते हुए लगभग तीन दिन में रतलाम स्टेशन की नई बस्ती पधारे। यहां पर गुजराती भाइयों के पांच-सात घर हैं, जिन्हें धर्म की लगन अच्छी है। यहां पर महाराजश्री का सार्वजनिक प्रवचन बाज़ार में हुआ जिसमें रतलाम के भाइयों ने व बाइयों ने सैंकड़ों की संख्या में भाग लिया।

रतलाम चातुर्मास

संवत् २००६

दूसरे दिन वीर संवत् २४७८ विक्रम संवत् २००६ सन् १९५२ के चातुर्मास के लिए महाराजश्री का रतलाम नगर में प्रवेश हुआ। प्रवेश के समय महाराजश्री के स्वागत में जन-मानस में जो उत्साह और उमंग की लहर उमड़ पड़ी थी, वह रतलाम श्रीसंघ के इतिहास में एक ऐतिहासिक एवं स्मरणीय घटना के रूप में सदा स्मरण रहेगी। स्वागतार्थ आये हुए हजारों भाइयों और बाइयों के हृदय में धर्म प्रेम की भावनाएँ उमड़ रही थीं। श्रद्धालु नर-नारियों में श्रद्धा भक्ति और पवित्र प्रेम की भावनाएं मानों साकार हो उठी थीं। महाराजश्री के स्वागत में स्त्रियां पुरुषों से बढ़कर और पुरुष स्त्रियों से अधिक उत्साह प्रदर्शित कर रहे थे। स्कूलों के बालक बालिकाओं तथा उनको साथ लेकर आये हुए, शिक्षक वर्ग का भी उत्साह अत्यन्त प्रशंसनीय था। संक्षेप में कह सकते हैं कि क्या बालक, क्या बालिका, क्या युवक, क्या युवती, क्या स्त्री, क्या पुरुष, क्या वृद्ध, क्या प्रौढ़ आज सभी महाराजश्री के पधारने की खुशी में झूम रहे थे। स्थानीय श्रीसंघ के सदस्यों, शिक्षण संस्थाओं के अध्यापक, अध्यापिकाओं आदि ने बड़ी भारी संख्या में नगर के बाहर बहुत दूर पर आकर महाराजश्री का बड़े उत्साह के साथ हार्दिक स्वागत किया।

'जो बोले सो अभय। जैन धर्म की जय।' 'भगवान् महावीर स्वामी की जय' पंजाब केसरी श्री प्रेमचन्द जी महाराज की जय, आदि जय घोषों से समस्त वातावरण को प्रतिध्वनित करते हुए श्रद्धा भक्ति से भरे हुए श्रावकगण तथा आध्यात्मिक व धार्मिक भावनाओं से परिपूर्ण अत्यन्त सुन्दर व मनोहर गीत गाती हुई रंग बिरंगे वस्त्रों से अलंकृत कुल-ललनाओं के समूह शुभ वस्त्रा-

न्वित दिव्योत्तुंग और देहधारी बालब्रह्मचारी पंजाबकेसरी श्री महाराजश्री के पीछे चलते हुए, ऐसे सुशोभित हो रहे थे मानो निर्मलता शुभ्रता और पवित्रता के सजीव प्रतीम स्वरूप राजहंसों के पीछे२ तोता मैना मयूर आदि हजारों पक्षियों के समूह बड़े सम्मान और आदर के साथ कलरव करते हुए चले आ रहे हों। मुख्य-मुख्य मार्गों से होते हुए जय ध्वनि के नाद के साथ महाराज श्री रतलाम के नीम चौक स्थानक में पधारे। यहां पर स्थिवर श्री शोभा लाल जी महाराज आदि मुनि स्थानापन्न रूप से विराजमान थे। स्वागतार्थ आई हुए जनता को महाराजश्री ने संक्षेप में सारगर्भित और प्रभावशाली धर्मोपदेश दिया। कई भाईयों ने भी भजन गायन किए और महाराजश्री के स्वागत विषयक भाषण दिये। तत्पश्चात् मांगलिक सुनकर जनता अपने अपने स्थानों को गई।

महाराजश्री इसी स्थानक में विराजे। आहार पानी के पश्चात् मध्यान्ह में श्री धर्मदास जैन मित्र मंडल द्वारा नवनिर्मित विशाल स्थानक में पधारे।

भूतपूर्व श्री धर्मदास जी महाराज की सम्प्रदाय का स्थानक व स्वर्गीय पूज्य जवाहर लाल जी महाराज की सम्प्रदाय का स्थानक, इन दोनों स्थानकों की दीवारें एक दूसरे से मिलती थीं। वर्द्धमान स्थानक वासी जैन श्रमण संघ बनने के पूर्व दोनों सम्प्रदायों के लोग अपने-अपने स्थानक में ही धर्म ध्यान किया करते थे।

किन्तु श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण-संघ बन जाने के पश्चात् लोगों के हृदयों में व्याप्त सम्प्रदायवाद की संकीर्णता की मनोवृत्तियां ज्ञान-भानु के उदित हो जाने पर तिमिरराशि के समान सहसा छिन्न-भिन्न हो गई। परिणाम-स्वरूप संगठन और ऐक्य की पुनीत भावना से प्रेरित व प्रभावित होकर स्थानय श्री संघ के सदस्यों ने दोनों स्थानकों के बीच की दीवार को निकाल दिया और इस प्रकार दोनों स्थानकों को एक नया रूप दे दिया

दोनों स्थानकों के मिल जाने से स्थानक की विशालता बहुत बढ़ इसी विशाल स्थानक में महाराजश्री के दैनिक प्रवचनामृत का प्रवाह

होने लगा। आत्मवाद, लोकवाद, क्रियावाद और कर्मवाद की आपने ऐसे सुसज्जित हृदयग्राही ढंग से व्याख्या प्रारम्भ की कि श्रोतागण मन्त्र-मुग्ध हो उठे। ये चारों वाद जैन दर्शन और सिद्धान्त की रीढ़ की हड्डी के समान है। जैन विचारधारा का भव्य भवन इन्हीं चार प्रमुख आधार स्तम्भों पर खड़ा है। महाराजश्री ने इन चारों प्रमुख तत्वों की युक्ति युक्त शास्त्र सम्मत व्याख्या सरल, सुन्दर, प्रभावशाली भाषा में करते हुए इस चातुर्मास में प्रत्येक तत्व को भली भांति जनता को हृदयभंग करा दिया।

१. **आत्मवाद**—सर्व प्रथम आत्मवाद की व्याख्या करते हुए महाराजश्री ने जड़ और चेतन के स्वरूप का सम्यक्तया विवेचन किया। और बतलाया आत्म तत्व वीर्य और उपयोग से युक्त है। आत्मा अपने ज्ञानोपयोग और दर्शनोपयोग के द्वारा अपने हिताहित, हानि लाभ व सुख दुख को जान सकता है।

यह शक्ति जड़ में नहीं है, क्योंकि जड़ ज्ञानोपयोग तथा दर्शनोपयोग से रहित है। इसीलिए उसको अपना और पर का किसी प्रकार का भी बोध नहीं हैं। आत्मा जहां अपने चेतन उपयोग के द्वारा सुख दुख का ध्यान कर सकता है, वहां पर वह अपने चेतन वीर्य (शक्ति) के द्वारा उत्तरोत्तर ज्ञान, दर्शन व चारित्र की आराधना करता हुआ तपश्चर्या के द्वारा कर्मबंध का क्षय कर चेतन विकास के चरमोत्कर्ष रूप केवल ज्ञान और केवल दर्शन को प्राप्त कर मोक्ष के अजरामर पद को प्राप्त कर सकता है। चेत नभावी कार्य चेतन से ही हो सकता है, जड़ से नहीं। जो पुद्गलरूप जड़ (पार्थिव अथवा धन या तरल पदार्थ) ज्ञान चेतना से स्वयं ही वंचित हैं, वे दूसरों को आत्म-चेतना कैसे दे सकते हैं।

जो जलाशय स्वयं पानी से रहित शुष्क एवं संतप्त है, उससे भला दूसरों को पानी कैसे मिल सकता है। अतः सदा यह स्मरण रखना चाहिए कि नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्त जीव या आत्मतत्व को संसार के जड़वाद के पीछे नहीं पड़ना चाहिए। चेतन को सदा चेतन का ही उपासक बनना चाहिए। जड़त्व की

उपासना से चेतन में भी जड़ता आ सकती है। इसलिए आप लोगों को सदा जड़ की उपासना का परित्याग कर चेतन आत्म तत्व के उपासक बनने का प्रयत्न करना चाहिए, क्योंकि यह निश्चित है कि आत्म कल्याण चेतन की उपासना से ही होगा, जड़ की उपासना से कदापि नहीं हो सकता।

२. लोकवाद—दूसरे लोकवाद का वर्णन करते हुए महाराजश्री ने फरमाया कि इस आत्मा का विचरण अर्थात् आवागमन या जन्ममरण रूप भ्रमण, चौदह रज्जु-आत्मक, लोक में ही होता है। लोक से बाहर इसका अस्तित्व नहीं। क्योंकि आत्म द्रव्य के सहायक धर्मास्तिकाय आदि द्रव्य की व्यापकता लोकमात्र ही है।

३. क्रियावाद—तीसरे क्रियावाद की व्याख्या करते हुए महाराजश्री ने समझाया कि जब तक मन-वचन काया आदि की क्रियाओं का आत्मा के साथ सम्बन्ध है, तभी तक यह आत्मा चौदह रज्जु-आत्मक लोक में परिभ्रमण करता है। इसके परिभ्रकण का मुख्य कारण मन आदि योगों का व्यापार है। जब आत्मा मन आदि योगों की क्रियाओं से पूर्णतया विमुक्त हो जाता है तब वह अ, इ, उ, ऋ, लृ इन ५ ह्रस्व अक्षरों के उच्चारण काल से भी स्वल्प समय में हीं चौदहवें गुणस्थान का स्पर्श कर इस शरीर से विमुक्त हो एक समय मात्र काल में निर्वाण पद को प्राप्त कर लेता है।

४. कर्मवाद—चौथे कर्मवाद का विवरण करते हुए आपने अपने प्रवचनों में जनता को बतलाया कि जहां क्रिया होती है वहीं पर कर्मबन्ध होता है। क्रिया के बिना कर्म वर्गणाओं का आकर्षण नहीं होता।

वास्तव में कर्म की जननी क्रिया ही है। क्रिया के द्वारा ही कर्म बंधते हैं। वे कर्म फिर यथासमय अपना शुभाशुभ विपाक या फल दिखाते हैं। यदि क्रिया द्वारा उपार्जित पूर्व कर्म नष्ट कर दिये जायें और नवीन क्रियाओं के द्वारा नवीन कर्म उपार्जित न किए जायें तो जीव निष्क्रिय होकर जन्ममरण आदि दुखों से छूटकर मोक्षपद का अधिकारी बन जाता है।

यद्यपि उपर्युक्त चारों वादों का विवेचन- विस्तार अनन्त है, क्योंकि उक्त

चारों तत्व ही सृष्टिचक्र के प्रवर्तक हैं। इसलिए इनका जितना विवेचन विस्तार किया जाये उतना ही यह विषय रोचक व आकर्षक बनता जाता है, फिर भी चातुर्मास काल में ही महाराजश्री ने इन चारों तत्वों का सम्यक विवेचन कर ऐसा स्पष्टीकरण किया कि श्रोतागणों को मिथ्यात्व का त्याग और सम्यक्त्व की ओर बढ़ने में बड़ी सरलता प्रतीत होने लगी।

प्रतिदिन मध्यान्ह् काल में साधु साध्वियां तथा श्रावक श्री भगवती सूत्र का वाचन लेते रहे। भगवती सूत्र का वाचन लेने वाले श्रावकों में इन तीन प्रमुख श्रावकों के नाम उल्लेखनीय हैं—

(१) **श्री श्रीमाल श्रावक बालचन्द जी**—आपको जैन शास्त्रों व थोकड़े व बोल-विचारों का अच्छा बोध है। विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में आपके जैन-सिद्धान्त सम्बन्धी लेख भी समय-समय पर प्रकाशित होते रहते हैं।

(२) **श्री नानालालजी श्रावक**—आप भी थोकड़े व बोल-विचार के अच्छे अनुभवी हैं। सैंकड़ों थोकड़े आपको याद हैं। आप प्रकृति के बहुत भद्र व सुकोमल हैं। प्रायः आपका समय धर्म स्थान में ही धर्म ध्यान द्वारा व्यतीत होता है। संसारिक झंझटों से आप अधिक से अधिक दूर रहने का प्रयत्न करते हैं। और अत्यावश्यक लौकिक कार्यों में ही दखल देते हैं। रात्रि को भी स्थानक में ही संवर करते हैं। समकित या प्रमुख लक्षण अनुकम्पा आपके जीवन में दूध और मिश्री की भांति घुल मिल गया है।

असहाय दीन दुखी क्षुधा से पीड़ित मूक और निरीह कुत्तों को आप प्रतिदिन प्रातःकाल बहुत सी रोटियां डालते हैं। रतलाम नगर की ओर से दीन दुखी, लूले, लंगड़े, पशु पक्षियों का जो बड़ा भारी पिंजरा पोल है, उसके भी आप मान्य संरक्षक हैं।

यह पिंजरा पोल बड़े उच्च स्तर पर सुन्दर सुव्यवस्थित ढंग से चल रहा है। तालाब पर कोई मछली आदि जीवों को न पकड़ सके, इसलिए पिंजरा पोल की ओर से एक चौकीदार रखा हुआ है। ऐसे शुभ कर्मों में आपका जीवन सुफल हो रहा है।

(३) **मास्टर समरथ मल जी**— आप भी अच्छे तार्किक व जैन शास्त्रों-में रस लेने वाले श्रावक हैं। इन तीनों श्रावकों ने श्री भगवती सूत्र आद्यन्त रूप से पढ़ा।

इस चातुर्मास में ज्ञान-ध्यान की खूब वृद्धि हुई। महाराज अपने प्रातः काल के प्रवचन में पूर्वोक्त चारों वादों की व्याख्या के साथ-साथ जैन धर्म के मूलाधार रूप दर्शन की विशुद्धि पर भी खूब बल देते रहे। दर्शन विशुद्धि संबधी प्रवचनों से प्रभावित होकर बहुत से भाइयों बाइयों व नवयुवकों ने जड़ोपासनारूप मिथ्यात्व का परित्याग किया और भविष्य में अपने सम्यक्त्व पर दृढ़ रहने का निश्चय किया।

श्वेताम्बर मूर्ति पूजक जैन समाज की ओर से जड़ मूर्तिवाद और तीर्थंकरों की प्रतिमा व चित्रों की पूजा आदि का बड़े आकर्षक व नित्य नये ढ़ंगों से प्रचार किया जाता है। वे लोग अपने इस प्रचार के लिए रुपया पानी की तरह बहाते हैं। अपनी मान्यताओं के प्रचार के लिए उन लोगों ने नेत्रों के लिए परम तृप्तिदायक तीर्थंकरों के बड़े ही सुन्दर रंग बिरंगे चित्रों की सीरीज प्रकाशित की हुई है। मूर्तिपूजकों की ओर से दर्शन चौबीसी नामक तीर्थंकरों के अत्यन्त कलात्मक चित्रों की एक छोटी सी पुस्तिका भी प्रकाशित की गई है। इस पुस्तिका में एक पृष्ठ पर नवकार मंत्र की आनुपूर्वी भी प्रकाशित की गई है। इस पुस्तिका की लगभग अस्सी हजार प्रतियां प्रकाशित हो चुकी हैं। यह पुस्तिका चित्रों से सुसज्जित होने के कारण स्थानकवासी भाइयों और बाइयों के पास भी बहुत अधिक संख्या में दिखाई देती थी। भोले भाले स्थानकवासी श्रावक-श्राविकागण इस पुस्तक में आनुपूर्वी पढ़ते थे। साथ ही चित्रों के दर्शन और उन्हें नमस्कार भी करते थे।

भगवान महावीर की शुद्ध चेतन उपासक सम्प्रदाय के अनुयाइयों के लिए चित्रों के दर्शन और पूज्य बुद्धि से उन्हें नमस्कार आदि करना एक तरह से जड़ोपासना रूप मिथ्यात्व ही है। इस प्रकार मनुष्य के संस्कार धीरे-धीरे सम्यक् दर्शन से ढीले पड़ जाते हैं और अन्त में वह व्यक्ति मिथ्यात्वोदय से जड रूप-

हम से विवाह आदि अवसरों पर मंदिरों के लिए रुपया लेना चाहते हैं, तो आप भी हमें इसी प्रकार स्थानक में दें।

यह कैसे हो सकता है कि आप तो हमसे ले रहे हैं, पर हमें न दें।

इस पर मूर्तिपूजक समाज ने स्थानक में देने से इन्कार कर दिया। अतः स्थानकवासी समाज ने भी भविष्य में देना बन्द कर दिया। महाराजश्री ने अपने प्रवचन के प्रसंग में जातिवाद की कल्पित सीमा रेखाओं की हदबंदियों या बाड़ों को तोड़ कर एकता के सूत्र में आबद्ध हो जाने पर विशेष बल दिया, क्योंकि जैन सिद्धान्त जातिवाद को प्रधानता नहीं देता। इसकी मौलिकता तो कर्म पर निर्भर है। उच्च अर्थात् श्रेष्ठ कर्म करने से नीच भी उच्च हो जाता है। और निकृष्ट अथवा मद्य, मांस, जूआ, चोरी, परस्त्री, वेश्यागमन, घूस, कन्या विक्रय आदि निन्दनीन कार्य करने से उच्च भी नीच हो जाता है। वैश्य, ब्राह्मण, क्षत्रिय, शूद्र व खंडेलवाल, ओसवाल, पोरवाल, पालीवाल, बीसे, दसे, पांचे, ढाइये आदि जो जातियां हैं ये सब जातिया कल्पित हैं। इनके पीछे कोई शास्त्रीय आधार नहीं है। शास्त्रीय-दृष्टि से तो कर्मोदय से प्राप्त होने वाली जातियां केवल पांच ही हैं :—

जैसे:—एकेन्द्रिय जाति, बेइन्द्रिय जाति, तेइ इन्द्रिय जाति, चतुरेन्द्रिय जाति, पंचेन्द्रिय जाति।

जाति शब्द की व्याख्या है कि जो जीव जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त एक ही शारीरिक अवस्था में रहे, जिसका परिवर्तन जन्मान्तर के बिना न हो सके, उसे जाति कहते हैं। किन्तु आज की जातियों में यह बात नहीं पाई जाती है।

आज जो हिन्दू है वह कल को मुस्लमान या इसाई बन जाता है। जो मुस्लमान, इसाई है, वो हिन्दू बन जाता है।

कर्म सिद्धान्त को स्वीकार किए बिना कार्य चल नहीं सकता। जो सनातन धर्म अनुयायी पहले मुस्लमान और ईसाई आदि को हिन्दू बनाने का विरोध किया करते थे, आज समय के प्रहार व प्रभाव के कारण उन्हें भी कर्म सिद्धान्त के वास्तविक रूप को मानने के लिए बाध्य होना पड़ गया है, क्योंकि सच्चाई

श्री के प्रवचन दीर्घजीवी बनकर मानव जाति को स्थायी रूप से लाभ देते रहें।

इसके उत्तर में महाराजश्री ने फरमाया कि मेरा कर्तव्य तो केवल प्रवचन के द्वारा आप लोगों को लाभ देने का है। लेखन-प्रकाशन आदि का प्रबन्ध कार्य तो आप गृहस्थों का काम है। तब श्री नाथूलाल जी सेठिया ने पंडित वसंती लाल जी नलवाया को प्रतिदिन महाराजश्री के व्याख्यान लेखन का कार्य सौंप दिया। पंडित वसंतीलाल जी जैन शास्त्र के एक अच्छे ज्ञाता और सुलेखक हैं। इन्होंने बहुत सी पुस्तकों का लेखन व सम्पादन किया है। पंडित वसंती लाल जी ने महाराजश्री के व्याख्यानों को लेखबद्ध किया और उन्होंने उन व्याख्यानों का सम्पादन भी किया।

श्री नाथूलाल जी सेठिया के निजी द्रव्य से ये व्याख्यान पंडित वसंतीलाल जी की देख-रेख में 'प्रेम सुधा' प्रथम भाग के नाम से पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुए। रतलाम की ओर से इस प्रकार यह समाज के लिए एक अत्यन्त उपयोगी स्थायी हित का कार्य सम्पन्न हुआ। 'प्रेम सुधा' के इस प्रथम भाग के प्रकाशित होते ही इसे साधु-समाज व गृहस्थ वर्ग ने बड़े उत्साह के साथ अपनाया और चारों ओर से इस परमोपयोगी ग्रन्थ की मांग आने लगी।

रतलाम के कुछ शेष व्याख्यान और उसके बाद के व्याख्यानों का संकलन 'प्रेम सुधा द्वितीय भाग' के नाम से जोधपुर चातुर्मास काल में प्रकाशित हुआ। यह द्वितीय भाग अमूल्य ही रखा गया। आज की मंहगाई के युग में इस पुस्तक की लागत छः रुपये के लगभग पड़ती है। किन्तु पुस्तक प्रकाशन में आर्थिक सहयोग देने वाले दानी महानुभावों की यह भावना थी कि यह ग्रन्थ श्रद्धालु जनों को अमूल्य ही भेंट किया जाए। जिससे गरीब अमीर सभी लोग समान रूप से लाभ उठा सकें और जिन वाणी का अधिक से अधिक प्रचार हो।

रतलाम की जैन व जैनेतर जनता की ओर से महाराजश्री की सेवा में यह विनती की गई कि आप श्री के सार्वजनिक प्रवचन बाजार में हों, जिससे स जाति के लोग लाभ उठा सकें।

किन्तु बिना किसी विरोध के सर्व सम्मति से पास हुआ कि ऐसे अवसर पर ध्वनि विस्तारक (लाऊडस्पीकर) का प्रयोग किया जाय।

महाराजश्री ने उसी समय स्पष्ट शब्दों में यह कहा कि आप अपनी आवश्यकता के लिए ऐसा कर रहे हैं। इसमें मेरी कोई प्रेरणा नहीं है। वास्तव में यह आवश्यकता गृहस्थों को है। साधु को इसकी कोई आवश्यकता नहीं। साधु को तो व्याख्यान स्थान से अपनी भाषण शक्ति के अनुसार प्रवचन करना है। बहुतों को सुने या थोड़ों को सुने, इसकी जिम्मेवारी वक्ता पर नहीं।

इस प्रकार सात दिन तक तीनों मंजिलों में बैठे हुए लोग ध्वनि वर्द्धक यन्त्र के द्वारा बड़े आनन्द और शान्ति के साथ व्याख्यान का लाभ लेते रहे और वह कोलाहल भी शान्त हो गया।

वास्तव में जब सुनने वालों को कुछ पल्ले नहीं पड़ता, तभी कोलाहल का वातावरण उत्पन्न होता है। जो जीमने या भोजन करने के लिए आये हैं उन तक यदि परोसकारी ठीक ढंग से न पहुंचे, तो लोग भोजय पदार्थों की मांग करेंगे ही। जब मांग पूरी न होगी तो लोग कोलाहल नहीं करेंगे तो और क्या होगा।

संवत्सरी के दूसरे दिन स्थानीय श्वेताम्बर मूर्तिपूजक भाई ज्ञान पंचमी मनाते हैं, इसी दिन भगवान महावीर स्वामी के जन्म दिन की बांचनी भी बांचते हैं और मिठाईयां आदि बांटते हैं। साथ ही वस्त्रों पर केसर के छापे आदि लगाते हैं।

रतलाम स्थानकवासी श्रीसंघ के बहुत से श्रावक श्राविकाएं भी इस महोत्सव पर मंदिर में जाया करते व छापे लगवाया करते थे। कई लोग मन्दिर में प्रतिमा के दर्शन और वन्दन भी किया करते थे। किन्तु इस वर्ष स्थानकवासी समाज ने स्थानक में ही अपने ढंग से इस महोत्सव की योजना की।

इस अवसर पर महाराजश्री ने भगवान महावीर स्वामी के पवित्र जीवन पर बड़े सुन्दर रूप में प्रकाश डाला। इस प्रकार स्थानीय स्थानकवासी समाज ने ज्ञान पंचमी के दिन इधर उधर कहीं न जाकर स्थानक में ही महाराजश्री

के प्रवचनों का लाभ लिया और लोगों ने भविष्य में भी ऐसा ही करने का निश्चय किया। इस योजना से बहुत से लोगों को मिथ्यात्व पोषण से छुटकारा मिला।

भाद्रपद सुदी द्वादशी को श्रमण संघ के आचार्य श्री १००८ आत्माराम जी महाराज का जन्म दिन धर्म क्रियाओं के द्वारा बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया। इस दिन मास भी के लगभग दया पौषे आयम्बिल आदि हुए। आचार्य श्री के जीवन के सम्बन्ध में महाराजश्री का एक अत्यन्त प्रभावशाली प्रवचन हुआ। महाराजश्री ने आचार्य श्री के शुद्ध निर्मल चरित्र, अपूर्व शान्ति, अगाध विद्वत्ता, अनुपम सहनशीलता, प्रसन्नचित्तता, और लोक-प्रियता आदि गुणों का बड़े सुन्दर ढंग से प्रतिपादन किया। इस अवसर पर महाराजश्री ने आचार्य श्री के गुणों के वर्णन में निम्नलिखित स्वनिर्मित कविता सुना कर आचार्य श्री के प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धा भावना व्यक्त की—

गीत

पूज्य आत्मा राम जी स्वामी, तुमको लाखों प्रणाम ॥ टेक !
आत्मा राम है नाम आपका-नाशक है यह तीनों ताप का।
पिता है मनसाराम तुमको लाखों ० ॥ १ ॥

धन्य धन्य माता जिसने जाया, निज कुक्षि को सफल बनाया।
पुत्र गुणों की खान तुमको लाखों ॥ २ ॥

राहों नगर में जन्म है पाया, सखियों ने मिल मंगल गया।
उदय हुआ है भान तुमको लाखों ० ॥ ३ ॥

रामेश्वरी देवी तव माता, जग में अति हुई विख्यात।
पतिव्रता गुण धाम तुमको लाखों ० ॥ ४ ॥

हुआ वैराग संसार को छोड़ा, मोह ममता से नाता तोड़ा।
चाहते हैं निर्वाण, तुमको लाखों ० ॥ ५ ॥

वाल पने में दिक्षा धारी, आप हैं पूर्ण वाल ब्रह्मचारी।
सबका चाहते हैं कल्याण तुमको लाखों ० ॥ ६ ॥

ज्ञानध्यान में चित्त लगाया, उपाध्याय श्री का था पद पाया।
संस्कृत प्राकृत के विद्वान् तुमको लाखो ० ॥ ७ ॥

वृहद् सम्मेलन जव था भराया, आप श्री को आचार्य वनाया।
हम करते हैं गुण गान तुमको लाखों ० ॥ ८ ॥

"प्रेम मुनि" तुमरे गुण गाता, संघोन्नति, तुम से है चाहता।
यहीं दो वरदान तुमको लाखों ० ॥९॥

भगवान महावीर स्वामी की जय, आचार्य श्री आत्मा राम जी महाराज की जय, जैनधर्म की जय, आदि जय ध्वनियों से समस्त सभा-भवन प्रतिध्वनित हो उठा और इस प्रकार श्रमणसंघाचार्य श्री आत्मा राम जी महाराज का जन्मोत्सव वड़े समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। इस प्रकार यह चातुर्मास प्रत्येक दृष्टि से अत्यन्त सार्थक और सफल सिद्ध हुआ। जातिवाद के विरोध में महाराज श्री ने जो प्रभावपूर्ण विचार व्यक्त किए थे, उनसे प्रभावित होकर स्थानिय समाज के प्रमुखों ने निश्चय किया कि धार्मिक मामलों में तो जातिवाद की दीवार को सर्वथा हटा दिया जाय। इसी विचार से चातुर्मास समाप्ति के अनन्तर स्थानक वासी मात्र का एक प्रीतिभोज किया गया।

रतमाल के विहार से लेकर जोधपुर चातुर्मास तक से विहार व प्रचार का परिचय प्रेम सुधा द्वितीय भाग के प्रारम्भ में प्रकाशित हो चुका है।

इस अवधि में महाराज श्री ने रतमाल से वम्बई, वम्बई से समस्त गुजरात काठियावाड़ तथा मेवाड़, मारवाड़ आदि प्रांतों की हजारों मील लम्बी पद यात्रा करते हुए इन प्रान्तों में आध्यात्मिक भावना तथा सम्यक्त्व की ज्योति को सर्वत्र प्रज्वलित करने का अत्यन्त स्तुत्य कार्य किया है। इसका विस्तृत विवरण प्रेमसुधा द्वितीय भाग में भी देखें। यहां भी अगले पृष्ठों में दिया जा रहा है।

बम्बई और राजकोट

(सं २०१०—२०११)

विक्रम संवत् २००६ और वीर संवत् २४७६ रतलाम का आदर्श चातुर्मास पूर्णकर सैलाना से आये हुए श्री मान् रतनलाल डोसी आदि शिष्ट मण्डल की विनती को मान देकर आप सैलाना पधारे। वहां बाजार में सात सार्वजनिक व्याख्यान हुए। हिन्दू, मुसलमान जनता ने भारी संख्या में आपके प्रवचनों का लाभ लिया। वहां के दरबार ने भी आपश्री के प्रवचन सुनकर प्रसन्नता प्रकट की और वहां पर पंजाब के सहजरामजी भाई को बड़ी धूमधाम से दीक्षा दी गई। यहां से पीपलोदा आदि क्षेत्रों में सार्वजनिक एक एक, दो दो, व्याख्यान देते हुए आप जावरा पधारे। कुछ दिन वहाँ ठहर, धर्म प्रचार कर सोजत सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए प्रस्थान किया।

मंदसौर होते हुए मुनि श्री नारायणगढ़ पधारे। वहां आपके सार्वजनिक व्याख्यान हुए, जिसमें नगर की जनता और स्थानीय मैजिस्ट्रेट साहब आदि उच्चाधिकारियों ने भारी संख्या में धर्मोपदेश का लाभ लिया। यहां से आप महागढ़ पधारे। वहां नारायणगढ़ के मैजिस्ट्रेट साहब और जैनसंघ महाराजश्री के दर्शनार्थ आया। उसी दिन रामपुरा से भी अनुमानता १४-१५ भाई रामपुरा पधारने की विनती करने आये।

महाराजश्री का वहाँ सार्वजनिक व्याख्यान हुआ। स्थानीय और बाहर से आने वाले भाइयों ने महाराज श्री के प्रवचनों का लाभ लिया। समयाभाव के कारण महाराजश्री रामपुरा नहीं जा सके। यहां से मानसा पधारे। वहां पर बाजार में १ सार्वजनिक व्याख्यान हुआ। यहां से विहार कर रास्ते में

छोटे मोटे क्षेत्रों को धर्मोपदेश का लाभ देते हुए जावद पधारे। यहाँ पर भी सार्वजनिक ५-६ व्याख्यान हुए। जनता में धर्म जागृति खूव हुई।

यहां से विहार रास्ते में आने वाले छोटे २ क्षेत्रों में अपने प्रवचनों का लाभ देते हुए निम्वाहेड़ा पधारे। वहां पर २-३ सार्वजनिक व्याख्यान हुए और श्री वर्द्धमान श्रावक संघ की स्थापना हुई।

वहां से आप चित्तौड़ पधारे। यहां पर धर्मशाला में २-३ सार्वजनिक व्याख्यान हुए। फिर आप विहार कर चित्तौड़ के किले पर जैन वृद्धाश्रम में विराजमान हुए। वहां आपने दर्शन विशुद्धि आदि विषयों पर कई प्रभावपूर्ण प्रवचन किये। जिससे स्थानीय संघ ने प्रेरित होकर जड़ोपासनारूप मिथ्वात्व का परित्याग कर दर्शन विशुद्धि की।

पुनः विहार कर रास्ते में अनेक छोटे मोटे गांवों के लोगों को जिनवाणी का उद्वोधन देते हुए आप गंगापुर पधारे। यहाँ पर ३-४ सार्वजनिक व्याख्यान हुए। यहां से देवरिया होते हुए कोशिथल पधारे। वहां पर भी आपके कई व्याख्यान हुए। यहां से रायपुर पधारे। २ सार्वजनिक व्याख्यान हुए और श्री वर्द्धमान श्रावक संघ की स्थापना हुई। यहां से आप देवगढ़ पधारे वहां पर आपके वाजार में ३-४ सार्वजनिक व्याख्यान हुए। यहां से "पिपलिया का घाटा" उतर का सरयाली आदि गाँवों में धर्म प्रचार करते हुए सहवाज पहुंचे। यहां पर उपाचार्यश्री के दर्शन हुए। यहां से सोजत रोड में २-३ दिन धर्मोपदेश देकर सोजत सम्मेलन में सम्मिलित हुए। वहाँ पर वहुत साधु साध्वियों के समागम का पावन लाभ हुआ। साधु सम्मेलन की कार्यवाही समाप्त होने के पश्चात जो कई वर्षों से वम्वई काँदावाड़ी संघ की ओर से चातुर्मास की विनती की जा रही थी, उसे मान देकर वम्वई की ओर पुनः विहार किया। वगड़ी, सहवाज, सरयाली आदि क्षेत्रों को परसते हुए पिपलिया का घाटा चढ़कर देवगढ़, रायपुर, कोशिथल गंगापुर आदि रास्ते में पड़ने वाले क्षेत्रों में धर्म प्रचार करते हुए पुनः चित्तौड़ पधारे। यहां पर धर्मशाला में सार्वजनिक व्याख्यान हुए। फिर किले पर कुछ रोज विराजकर विचरते हुए

लाख जनसंख्या थी, जो आज कुल ५-६ घर ही शेष हैं। यहां से सतपुड़ा पहाड़ का महाविषम घाटा उत्तर लम्बा २ विहार कर "सैंधवा" पहुँचे। रास्ते में कोई अपना क्षेत्र नहीं आता है। आहार-पानी का बहुत परिषह सहन करना पड़ता है। यहाँ पर गुजराती और मारवाड़ी भाइयों के अनुमानतः १५-२० घर हैं।

महाराज श्री के यहाँ पर धर्मशाला में २-३ सार्वजनिक व्याख्यान हुए, फिर यहां से विहार कर सिरपुर पधारे। यहां पर भी आपके २-३ सार्वजनिक व्याख्यान सिनेमा हाल में हुए।

यहां से महाराजश्री ने धूलिया की ओर विहार किया। मुनि श्री के धूलिया पहुँचने की सूचना पाकर कितने ही साधु साध्वीजी आपके पहुँचने से पहले ही धूलिये में एकत्रित हो गये। स्थानापन्न वयोवृद्ध श्री माणक ऋषि जी महाराज और मन्त्री श्री किशनलालजी महाराज तथा हरिऋषि जी महाराज आदि मुनिसमुदाय तथा कितनी ही साध्वियें विराजमान थीं और नवठाणे से आप भी पधार गये। बहुत ही परस्पर में धर्म प्रेम रहा। ऐसा प्रतीत होता था मानो छोटा-सा साधु सम्मेलन हो रहा है। यहाँ पर बम्बई अहमदनगर आदि अनेक क्षेत्रों के श्रावक लोग दर्शन, प्रवचन-श्रवण का लाभ और चातुर्मास की विनती के लिए आये। महाराजश्री बम्बई का चातुर्मास मना ही चुके थे इस-लिए चातुर्मास की विनती को आए हुए लोगों को निराश ही जाना पड़ा। यहां पर गुजराती हाई स्कूल में बनाए गए विशाल पंडाल में आपके सार्वजनिक व्याख्यानों का प्रबन्ध किया गया। यहाँ पर खूब ही जैन धर्म की प्रभावना तथा प्रचार हुआ।

यहां से आप विचरते हुए माले गांव पधारे। वहाँ पर धर्मशाला में एक सप्ताह के करीब सार्वजनिक व्याख्यान हुए। जनता ने उमड़-२ कर भारी संख्या में प्रवचनों का लाभ उठाया। यहां से विहार कर बाहरूलोड़ा भवन में ठहरे, एक सार्वजनिक व्याख्यान हुआ, फिर नासिक की ओर विहार किया। रास्ते में छोटे-मोटे क्षेत्रों में प्रचार करते हुए आप नासिक पहुँचे। यहां

चित्रित आनुपूर्वियें एकत्रित कर सील लगाकर दफ्तर में रख दीं और विश्वास दिलाया कि भविष्य में ऐसा मिथ्यावर्धक साहित्य न खरीदेंगे और न ही उसकी यहां पर बिक्री होगी। यहां जैन-धर्म दिवाकर साहित्य रत्न श्री वर्धमान श्रमण संघाचार्य श्री आत्मारामजी महाराज का जन्म दिन बड़े समारोह के साथ मनाया। यहां के संघ ने १२०० सौ रुपये की १०-११ गौवें छुड़ाईं।

चातुर्मास में धर्म ध्यान तपस्यादि प्रचुरमात्रा में हुई। अनुमानतः ३०० अठाई, २ मास खमण के थोक, १ छतीस का थोक, वेला, तेला आदि छोटी तपस्या की तो गिनती ही क्या थी? वि० सं० २०१० का सफल चातुर्मास पूर्ण कर आप कोट पधारे। यहां पर एक सप्ताह विराजकर श्री वर्धमान श्रावकसंघ की स्थापना की। चिंचपोकली, माटुंगा; खार होते हुए शान्ताक्रुज पधारे। यहां पर अनुमानतः स्थानकवासी समाज के १५०-२०० घर हैं। आपका स्कूल में एक सार्वजनिक भाषण हुआ। सौराष्ट्र, राजकोट का एक शिष्टमण्डल आपकी सेवा में उपस्थित हुआ। शिष्टमण्डल के सज्जन श्री जगजीवन कोठारी, श्री मणिलाल भाई विराणी, श्री केशवलाल भाई विराणी, श्री सौभाग्यचन्द भाई मोदी, श्री मगन लालजी उदाणी, श्री भाईलाल भाई दड़िया, और सेठ चुन्नीलाल जी वोहरा आदि थे।

इन्होंने आग्रह पूर्वक सौराष्ट्र पधारने की तथा राजकोट में चातुर्मास करने की विनती की तथा कहा कि हमारे सौराष्ट्र में प्रचारक साधुओं की बहुत ही आवश्यकता है। क्योंकि सोवनगढ़ी कानजीभाई ने बहुत गड़बड़ कर रखी है और तेरापंथी साधु-साध्वियों का गलत प्रचार भी बढ़ रहा है। तथा तेरापंथी पूज्य तुलसीराम जी का भी सौराष्ट्र में विचरने का विचार पाया जाता है। अतः आपका सौराष्ट्र में पधारना जरूरी है। महाराजश्री ने शिष्टमण्डल की बात को गौर से सुना और कहा कि मैं विरलापारले पहुँचने पर इस विषय में कुछ कह सकूंगा। शिष्टमण्डल फिर सं० २०१० मार्गशीर्ष वदी त्रयोदशी बुध वार को विरलापारले महाराजश्री की सेवा में उपस्थित हुआ। बहुत आग्रह भरी विनती की। उपाचार्यश्री का प्रेरणा-पत्र भी दिखलाया। पत्र का

लोगों को लाभ दिया। फिर रास्ते में एक २ दो २ व्याख्यान करते हुए "सूरत" पधारे। वहां कुछ दिन ठहर कर धर्म प्रचार किया। यहां पर स्थानकवासियों के पहले सैकड़ों घर थे, अब प्रायः श्वेताम्बर मूर्तिपूजक बन गये हैं। केवल ४०-५० घर भावसार जाति के लोगों के हैं जो धर्मध्यान में अच्छी श्रद्धा रखते हैं। यहां पर ३-४ धर्म स्थान है। यहां पर बम्बई से पंजाबी भाई और सौराष्ट्री भाइयों का शिष्टमण्डल तथा राजकोट का शिष्टमण्डल महाराज श्री के दर्शनार्थ आया। यहां मूर्तिपूजक जैनों का जैनागम मंदिर ताम्र पत्र लिखित देखने में आया जो बड़े ही सुन्दर ढंग से व्यवस्थित है। मालूम हुआ है कि इस शास्त्र लेखन में १०००००० रुपये का व्यय हुआ है। यहां से विहार कर कठोर ग्राम में पधारे। यहां पर भी स्थानकवासी जैन भावसार लोग ही हैं। यहां पर धर्मोपदेश देकर आप विचरते हुए मियांगाम पहुँचे। वहां पर दरियापुरी सम्प्रदाय की महासती तारावाईजी मिलीं, जो बड़ी ही विनयशील और विदुषी सती हैं। फिर विचरते हुए आप श्री बड़ौदा पधारे। वहां पर १०० घर स्थानकवासियों के हैं। यहां पर सेक्रेट्री जगजीवनभाई, वाघजीभाई, मोतीलालभाई आदि भाइयों का शिष्टमण्डल राजकोट से महाराजश्री के दर्शनार्थ आया। यहां पर ६-७ रोज धर्मोपदेश का लाभ देकर अहमदाबाद की ओर विहार किया। रास्ते में विचरते हुए आप अहमदाबाद के उपनगर मणिनगर पहुंचे। २ दिन धर्मोपदेश का लाभ देकर अहमदाबाद के दौलतपुरा के उपाश्रय में विराजमान हुए। यहां एक सप्ताह विराजे और आपके दो सार्वजनिक व्याख्यान हुए। यहां से विहार कर शाहपुरा के उपाश्रय में जहां पर वयोवृद्ध दरियापुर सम्प्रदाय के पूज्य श्री ईश्वरलालजी महाराज विराजमान थे; वहीं पर ठहरे। ३-४ दिन ठहर कर जनता को धर्मोपदेश का लाभ दिया और पूज्यश्री से कई बातों पर चर्चा हुई। परस्पर में वात्सल्य भाव अतिप्रशंसनीय रहा।

फिर वहां से विहार कर आप गिरधर नगर पधारे। राजकोट के सेठ केशवलालजी भाई पारक जो अहमदाबाद में कपड़े की मिल चला रहे हैं, उनकी तरफ से सार्वजनिक व्याख्यान का प्रबन्ध किया गया और वे ही

प्रति व्याख्यान के पश्चात् प्रभावना बांटते रहे। फिर यहां से आप विहार कर साबरमती पधारे। यहां पर ही महात्मा गांधी ने सर्वप्रथम भारतवर्ष को मुक्त कराने का आंदोलन प्रारंभ किया था। यहाँ भी आपके ५-६ व्याख्यान हुए। सेठ केशवलालजी पारक की तरफ से व्याख्यान के पश्चात् प्रभावना होती रही।

यहाँ से सेठ केशवलालजी पारक के बंगले पधारे। वहां २ दिन तक विराजे, लोगों को धर्मोपदेश का लाभ दिया। फिर विहार कर "सानंद" पधारे। इस जगह आपके ३-४ सार्वजनिक व्याख्यान हुए। छोटे-मोटे गाँवों में प्रचार करते हुए आप विरम गांव पधारे। यहां पर दरियापुरी सम्प्रदाय की विदुषी महासती वसुमतीजी आदि साध्वियें मिलीं। उनका विनय और गुरुभक्ति का भाव बहुत प्रशंसनीय रहा। विरमगांव में ५-६ रोज व्याख्यान फरमाकर आप लखतर पधारे। रास्ते में खम्भात सम्प्रदाय की महासती शारदा बाईजी मिलीं। आप गुजरात तथा सौराष्ट्र प्रांत में अच्छी विख्यात हैं। लखतर में ४-५ व्याख्यान फरमाकर रास्ते में धर्म-बोध देते हुए वढ़वाण पधारे; यहां के संघ ने आपका बड़ा ही भव्य स्वागत किया। यहां पर अनुमानतः स्थानकवासी जैनों के ५०० घर हैं। लोगों में गुरुभक्ति और धर्म श्रद्धा विशेष देखने में आई। यहां पर महाराजश्री के एक सप्ताह तक भोजन शाला में व्याख्यान हुए, और श्रीमहावीर जयन्ती भी यहीं मनाई गई। महाराजश्री के प्रवचनों से प्रभावित होकर यहां के संघ ने जड़ोपासनारूप बनावटी चरण तथा पाटिया आदि पूजने का परित्याग किया। मुनि पुनमचन्दजी भी ठाणे २ वढ़वाण महाराजश्री की उपस्थिति में ही पहुँच गये। यहां से विहार कर आप जोरावर नगर पधारे। वहां वयोवृद्ध कविश्री स्वामी नानकचन्दजी महाराज ठाणे ३ विराजमान थे। यहां पर राजकोट से एक शिष्टमण्डल १०-१५ भाइयों का दर्शनार्थ आपकी सेवा में उपस्थित हुआ। यहां ४-५ रोज व्याख्यान वाणी का लाभ दे सुरेन्द्रनगर पधारे। यहां पर महासती विदुषी लीलाबाईजी आदि सतियों के मिलने का समागम हुआ। महासती लीलाबाईजी की विनय और योग्यता सराहनीय है। इस प्रांत में आप बहुत विख्यात हैं। यहां पर बोटाद

सम्प्रदाय के वयोवृद्ध पूज्य श्री माणकचन्दजी महाराज का संदेश आया कि आपसे मिलने का मेरा मन बहुत चाहता है। आप हमें मिलकर राजकोट पधारें। एक शिष्टमण्डल लीम्बड़ी का भी लीम्बड़ी पधारने की विनती करने आया। महाराजश्री रास्ते में धर्म देशना देते हुए लीम्बड़ी पधारे। वहां पूज्य धनजी स्वामी तथा कवि श्री नानकचन्दजी महाराज ठाणे ५ पहले ही विराजित थे। भोजनशाल में व्याख्यान प्रारंभ हुए। यहां पर एक विचित्र बात देखने में आई। स्वर्गीय पूज्यश्री अजरामरजी महाराज की गद्दी के नाम से उपाश्रय में एक पाटिया बिछा हुआ है जिसके ऊपर एक गदेला रूप विस्तर बिछा रखा है। उसके ऊपर तकिया लगा हुआ है। गद्दी के ऊपर मालायें पड़ी हुई हैं। उपाश्रय में आने वाले लोग इस गद्दीरूप पाटिये को नमस्कार करते हैं और यथाशक्य पैसा आदि द्रव्य भी चढ़ाते हैं। महाराजश्री ने अपने प्रवचनों में इस मिथ्यात्वरूप क्रिया का विरोध किया। सुनकर जनता इतनी प्रभावित हुई कि इस प्रथा का त्याग करने के लिए तैयार हो गई। किन्तु कुछ व्यक्तियों की ओर से यह कहा गया कि अभी नगर में शादियों का बहुत जोर है। इस प्रथा का बाद में सामूहिक रूप से मीटिंग बुलाकर निराकरण कर दिया जायगा। फिर एक रोज सहज में ही महाराजश्री ने इस विषय में यहां के संघपति सेठ को कहा तो सेठजी बोले इस गद्दी की मान्यता से तो २००० रुपये की वार्षिक आमदनी होती है। इस वैश्यपन की बात को सुनकर महाराजश्री को बड़ा ही आश्चर्य हुआ। यहां से विहार कर रास्ते में धर्म प्रचार करते हुए आप राणपुर पहुँचे। यहां पर पं० श्री घासीलालजी महाराज के शिष्य मुनिश्री कन्हैयालालजी ठाणे २ और बोटाद सम्प्रदाय के मुनि अमीचन्दजी ठाणे २ विराजमान थे। सोनगढ़ी कानजी भाई भी आये हुए थे, जो कि जैन धर्म के विशुद्ध सनातन सिद्धान्तों के प्रतिकूल प्रचार करते हैं। उनका कहना है कि तप, जप, इन्द्रिय दमन रूप ये सब जड़ क्रियायें हैं। और यहां तक उनकी मान्यता है कि पांच महाव्रत भी शुभ आश्रव रूप ही हैं। महाराज श्री की तरफ से एक व्यक्ति द्वारा कानजी भाई को सैद्धान्तिक विषयों पर चर्चा करने के लिए चेलैंज दिया गया किन्तु उधर से कोई उत्तर नहीं

मिला। यहां पर खूब जोर शोर से जिनवाणी भगवती का प्रचार हुआ। जैन समाज में जागृति की एक लहर उत्पन्न हो गई।

यहां से विहार कर आप बोटाद सम्प्रदाय के पूज्य श्री माणकचन्दजी महाराज की सेवा में पहुँचे। यहां के जैन समाज ने आपका बहुत भव्य स्वागत किया। सोनगढ़ी कानजी भाई भी यहां पर मंदिर की प्रतिष्ठा कराने के लिए पहुँच गये और अपने सिद्धान्तों का प्रचार करने लगे। महाराजश्री के व्याख्यानों का प्रबंध भी एक विशाल पंडाल में कानजी भाई के समीप ही किया गया। कानजी भाई जो शास्त्र विरुद्ध गलत प्रचार कर रहे थे। महाराजश्री ने अपने प्रवचनों द्वारा जनता को बतला दिया कि कानजी भाई के इस अकर्मण्यता के सिद्धान्त पर चलकर इहलौकिक और पारलौकिक कोई भी साधना नहीं की जा सकती। यहां पर १५ रोज सार्वजनिक व्याख्यान बड़े प्रभावशाली रूप में होते रहे। हजारों स्त्री पुरुषों ने व्याख्यानों का लाभ उठाया। व्याख्यान के पश्चात् प्रभावना भी होती रही। यहां पर भी राजकोट का शिष्टमण्डल महाराज श्री के दर्शनार्थ आया और उसकी तरफ से व्याख्यान के पश्चात् प्रभावना बांटी गई। यहां से विहार कर आप पालीयाद पधारे। यहां पर बोटाद सम्प्रदाय के श्री शिवदयालजी महाराज और नवीनमुनिजी आदि ३ ठांणे का मिलन हुआ। यहां पर अनुमानतः १३-१४ व्याख्यान हुए। यहां के जैनसंघ में धर्म-श्रद्धा और जागृति अच्छी है।

यहां से विहार कर आप विछिया पधारे। यहां पर आपके दरबार के कहचरी हाल में २ सार्वजनिक व्याख्यान हुए। ५-६ दिन विराजकर राजकोट की ओर विहार किया रास्ते में दो दो, तीन तीन व्याख्यान देते हुए राजकोट से अनुमानतः १५-१६ मील के अन्तर पर एक गांव है उसमें ठहरे। यहां पर राजकोट के मुख्य २ ४०-५० व्यक्तियों का श्रावक समूह महाराजश्री के दर्शन और प्रवचन का लाभ लेने आया। यहां से विहार करके आप गोविंद काका की पोषधशाला में विराजे। राजकोट संघ ने आपका बड़े समारोह के साथ स्वागत किया। यहां २ रोज विराजकर आप चातुर्मासार्थ राजकोट पधारे।

जहां पर गोंडल सम्प्रदाय के स्वामी देवराजजी ठांणे २ विराजमान थे। आप भी उसी उपाश्रय में ठहरे। यहां पर जो विराणी पौषधशाला तीन चार लाख रुपये लगाकर बनाई गई है, उसका उद्घाटन था। महाराज श्री से उस अवसर पर वहां पधारने के लिए विनती की गई। महाराज श्री ने फरमाया कि साधु मकान बनाने की आरंभ-समारम्भ रूप क्रिया का अनुमोदन नहीं कर सकता। इसलिए इस अवसर पर मेरा वहां जाना उचित नहीं है। जूनागढ के वकील जेठालाल भाई के द्वारा पौषधशाला का वड़े समारोह के साथ हजारों नर नारियों में उद्घाटन किया गया। फिर महाराज श्री कुछ दिन के वाद पौषधशाला में पधार गये और सिलसिलेवार व्याख्यान आरम्भ हुए। यहां के व्याख्यान पं० पूर्णचन्द्रजी दक ने लिखित वद्ध किये जो अभी कच्चे रूप में हैं। महाराज श्री के नित्य प्रति प्रभावशाली दर्शन विशुद्धि आत्मक प्रवचनों को श्रवण कर यहां के हजारों स्त्री पुरुषों ने जड़ोपासनारूप मिथ्यात्व का परित्याग कर समकित शुद्ध की।

मध्याह्नकाल में गोंडल सम्प्रदाय के मुनि अमरचन्दजी और समरथवाई आदि महासतियों ने महाराज श्री से भगवती सूत्र के वीस शतकों का वाचन लिया। राजकोट की म्युनिसिपल्टी कमेटी की तरफ से राजकोट में रहने वाले हजारों कुत्तों की जाति को मारने की आज्ञा जारी की गई। इस वात को सुनकर महाराज श्री को वहुत ही खेद हुआ। आप श्री ने इसके विरोध में अपने प्रवचनों द्वारा और समाचार पत्रों में प्रवचनों के प्रकाशन द्वारा जवरदस्त आन्दोलन प्रारम्भ किया। जनता को वतलाया कि कुत्ता ऐसा प्राणी है जो मानव जाति के साथ ही साथ रहता आया है। ये कोई जंगली जानवर नहीं हैं। यह स्वामी भक्त और वफादार प्राणी है। उधर जनता की तरफ से भी इस विषय में भारी आन्दोलन हुआ। कमेटी की तरफ से भंगियों को (हरिजनों को) कुत्ते मारने के लिए कहा गया। उन्होंने भी इस महापाप को करने से इन्कार कर दिया। इस आन्दोलन में गोविन्द काका जैन का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। फलतः कमेटी को यह आज्ञा वापस लेनी पड़ी। उन मूक

को विशेष रूप से कोई जानना चाहे तो राजकोट संघ की तरफ से जो प्रेम वाणी विषयक स्पष्टीकरण छपा है, उसे देखने का कष्ट करें जिसमें मूर्तिपूजक साधुओं और पण्डितों के उल्लेख हैं जिनमें स्पष्टतया सिद्ध किया गया है कि देव-द्रव्य कोई शास्त्र-सिद्ध अनादि चीज नहीं है। यह तो पीछे से चालू किया गया है। आनन्द पूर्वक सं० २०११ राजकोट का चातुर्मास पूर्ण कर बड़े समारोह के साथ आप वाहर जैन वोडिंग में पधारे। दो व्याख्यान देकर फिर गोविन्द काका के व्याख्यान भवन में पधारे। यहाँ पर आपके पैर में चोट आने के कारण एक सप्ताह रुकना पड़ा। व्याख्यान वाणी की खूब रौनक रही। पं० श्री घासीलालजी महाराज का पत्र आया कि मैं आपसे मिलना चाहता हूँ। महाराज श्री पैर की तकलीफ पूर्ण रूप से ठीक न होते हुए भी २४-२५ मील का विहार कर गोंड़ल पधारे। यहाँ पर विराजित वयोवृद्ध गोंड़ल सम्प्रदाय के पूज्य श्री पुरुषोत्तमदासजी महाराज के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अनुमानतः ६० मील का लम्बा सफर कर पं० श्री घासीलालजी महाराज भी ठाणे ३ से पधार गये। तीनों मुनियों के तेले किये हुए थे। हर एक पखी को आपके साधु सब प्रायः तेले का तप किया करते हैं। परस्पर में बड़ा प्रेमभाव रहा। श्रमण संघ विषयक कई प्रकार की चर्चाएँ चलीं। महाराज श्री के शुद्ध हृदय से निकले हुए विचारों को सुनकर पं० श्री घासीलालजी महाराज वहुत सी बातों के लिए सहमत हुए। राजकोट में दो वहिनों की दीक्षा होने वाली थी। पूज्य श्री पुरुषोत्तमदासजी महाराज ने आपको आग्रह भरे शब्दों में कहा कि आपको दीक्षा के समय राजकोट जरूर पधारना होगा। महाराज श्री पुनः दीक्षा के अवसर पर राजकोट पधारे। वड़े समारोह के साथ दोनों दीक्षा हुईं। यहाँ पर दरियापुर सम्प्रदाय के मुनि श्री सायचन्दजी महाराज व ठाणे २ और लीम्बड़ी सम्प्रदाय के पं० श्री केशवलालजी महाराज ठाणे ३ और मुनि श्री देवराजजी ठाणे २ पूज्य श्री पुरुषोत्तमदासजी महाराज आदि मुनिमण्डल में खूब धर्म प्रेम और परस्पर में ज्ञान चार्चा आदि होती रही खूब ही आमोद प्रमोद रहा। यहाँ से विहार कर विचरते हुए आप वां पधारे। वहाँ पर लीम्बडी सम्प्रदाय के वयोवृद्ध श्री शामजी स्वामी और

मुनि रूपचन्दजी स्वामी ठाणे ५ का समागम हुआ। यहां पर महाराज श्री के प्रति ओजस्वी और प्रभावशाली ३ प्रवचन हुए, जिससे जनता बहुत ही प्रभावित हुई।

यहां से विहार कर आप भावनगर पहुंचे। यहां पर आपके २-३ प्रवचन हुए। फिर विहार कर सुरेन्द्रनगर पधारे। वहां एक व्याख्यान देकर वढवाण नगर पधारे। यहां पर २-३ व्याख्यान देकर लखतर होते हुए विरम गाम पधारे। वहां पर ५-६ व्याख्यान देकर लम्बा मार्ग तय करते हुए आप सिद्धपुर पहुंचे। यहाँ पर २ व्याख्यान देकर पालनपुर पधारे। वहां पर ४-५ प्रवचन हुए। फिर लम्बे विहार करते हुए घानेराव सादड़ी पधारे। आपका हाईस्कूल में १ सार्वजनिक व्याख्यान हुआ। ५-६ रोज धर्मोपदेश देकर आप जवाली, वूसी आदि गांवों मे धर्मोपदेश देते हुए पाली पधारे। वयोवृद्ध मुनि श्री शार्दूलसिंहजी महाराज ठाणे ५, पं० श्री कस्तूरचन्दजी महाराज ठाणे ४ पहिले ही विराजमान थे मुनि मूलचन्दजी और तपस्वी मोहन-मुनिजी भी ठाणे ५ पधार गये। आपके धानमंडी में २ सार्वजनिक व्याख्यान हुए। यहां पर आपके चातुर्मास की विनती के लिए अलवर और जोधपुर के शिष्टमण्डल आये। और चातुर्मास की विनती की। आपने फरमाया कि जोधपुर फरसने के भाव हैं। वहाँ जाने पर चातुर्मास का निर्णय किया जा सकेगा। पाली से विहार कर रास्ते में धर्म प्रचार करते हुए आप जोधपुर पधारे।

घानेराव सादड़ी का संग भी यहाँ पर चातुर्मास की विनती के लिए आया, किन्तु जोधपुर संघ का अति आग्रह और द्रव्य क्षेत्र काल भाव को देखते हुए सुखे समाधे जोधपुर का चातुर्मास स्वीकार कर लिया। जोधपुर में अनुमानतः १ मासपर्यंत धर्म प्रचार किया और आर्यकन्या पाठशाला में जैनों के सभी सम्प्रदायों की तरफ से बड़े समारोह के साथ सामूहिक रूप से श्री महावीर जयन्ती मनाई गई जिसमें आपका भगवान् महावीर जीवन विषयक एक विशेष प्रभावशाली व्याख्यान हुआ।

यहाँ से विहार कर आप सरदारपुर पधारे। वहाँ पर श्री पूर्णबाबाजी

महाराज भी ठाणे ३ पधार गये। सरदारपुरा में अनुमानतः ९-१० व्याख्यान फरमाकर आप महामन्दिर पधारे। वहाँ पर आपके १ सप्ताह तक सार्वजनिक व्याख्यान धर्मशाला में हुए। विहार कर विचरते हुए आप पीपाड़ पहुँचे। २२-२३ रोज विराजकर धर्मोपदेश दिया। फिर रास्ते में धर्म प्रचार करते हुए भोपालगढ (वड़लू) पधारे। वहाँ २४-२५ रोज विराजे। वाजार में ३ सार्वजनिक व्याख्यान हुए। यहाँ पर लोगों में अच्छी श्रद्धा है। दर्श-विशुद्धि विषयक प्रवचनों से प्रभावित होकर कितने ही लोगों ने मिथ्यात्व का परित्याग किया। यहाँ पर एक जैन विद्यालय चलता है, जिसके विद्यार्थी सामायिकादि अच्छे रूप में करते हैं।

यहाँ से विहार कर आप पुनः महा मन्दिर पधारे। ५-६ दिन महामन्दिर विराज कर, फिर चातुर्मासार्थ जोधपुर पधारे। यहाँ पर आपके सिलसिलेवार प्रवचन प्रारम्भ हुए। जनता भारी संख्या में आपके प्रवचनों का लाभ उठाने लगी। जनता पर आपके प्रवचनों का इस प्रकार प्रभाव पड़ा कि व्याख्यान में किसी प्रकार का कोलाहल और विक्षुब्ध वातावरण नहीं हो पाता था। आपने प्रातः काल के व्याख्यान में श्री प्रश्न व्याकरणजी सूत्र की व्याख्या इस प्रकार गुत्थियें खोल २ कर की जिसे साधारण से साधारण व्यक्ति भी सहज में ही समझ सकता था। प्रवचन करते हुए जनता को वतलाया कि इस शास्त्र के पहले प्राणातिपात नामक आश्रवद्वार में भगवान् श्री महावीर ने स्पष्टतया फरमाया है कि धर्म हेतु या चैत्य हेतु जो लोग पृथ्वी कायादि छः कायिक जीवों की हिंसा करते हैं उन्हें भविष्य में उसका अहित और अबोधरूप महान् कटुफल मिलता है।

मुनि रूपचन्दजी स्वामी ठाणे ५ का समागम हुआ। यहां पर महाराज श्री के अति ओजस्वी और प्रभावशाली ३ प्रवचन हुए, जिससे जनता बहुत ही प्रभावित हुई।

यहां से विहार कर आप थानगढ़ पहुंचे। यहां पर आपके २-३ प्रवचन हुए। फिर विहार कर सुरेन्द्रनगर पधारे। वहां एक व्याख्यान देकर वढवाण नगर पधारे। यहां पर २-३ व्याख्यान देकर लखतर होते हुए विरम गाम पधारे। वहां पर ५-६ व्याख्यान देकर लम्बा मार्ग तय करते हुए आप सिद्धपुर पहुंचे। यहां पर २ व्याख्यान देकर पालनपुर पधारे। वहां पर ४-५ प्रवचन हुए। फिर लम्बे विहार करते हुए घानेराव सादड़ी पधारे। आपका हाईस्कूल में १ सार्वजनिक व्याख्यान हुआ। ५-६ रोज धर्मोपदेश देकर आप जवाली, बूसी आदि गांवों में धर्मोपदेश देते हुए पाली पधारे। वयोवृद्ध मुनि श्री शार्दूलसिंहजी महाराज ठाणे ५, पं० श्री कस्तूरचन्दजी महाराज ठाणे ४ पहिले ही विराजमान थे मुनि मूलचन्दजी और तपस्वी मोहन-मुनिजी भी ठाणे ५ पधार गये। आपके धानमंडी मे २ सार्वजनिक व्याख्यान हुए। यहां पर आपके चातुर्मास की विनती के लिए अलवर और जोधपुर के शिष्टमण्डल आये। और चातुर्मास की विनती की। आपने फरमाया कि जोधपुर फरसने के भाव हैं। वहाँ जाने पर चातुर्मास का निर्णय किया जा सकेगा। पाली से विहार कर रास्ते में धर्म प्रचार करते हुए आप जोधपुर पधारे।

घानेराव सादड़ी का संघ भी यहाँ पर चातुर्मास की विनती के लिए आया, किन्तु जोधपुर संघ का अति आग्रह और द्रव्य क्षेत्र काल भाव को देखते हुए सुखे समाधे जोधपुर का चातुर्मास स्वीकार कर लिया। जोधपुर में अनुमानतः १ मासपर्यंत धर्म, प्रचार किया और आर्यकन्या पाठशाला में जैनों के सभी सम्प्रदायों की तरफ से बड़े समारोह के साथ सामूहिक रूप से श्री महावीर जयन्ती मनाई गई जिसमें आपका भगवान् महावीर जीवन विषयक एक विशेष प्रभावशाली व्याख्यान हुआ।

यहाँ से विहार कर आप सरदारपुर पधारे। वहाँ पर श्री पूर्णबाबाजी

महाराज भी ठाणे ३ पधार गये। सरदारपुरा में अनुमानतः ९-१० व्याख्यान फरमाकर आप महामन्दिर पधारे। वहाँ पर आपके १ सप्ताह तक सार्वजनिक व्याख्यान धर्मशाला में हुए। विहार कर विचरते हुए आप पीपाड़ पहुँचे। २२-२३ रोज विराजकर धर्मोपदेश दिया। फिर रास्ते में धर्म प्रचार करते हुए भोपालगढ (वड़लू) पधारे। वहाँ २४-२५ रोज विराजे। बाजार में ३ सार्वजनिक व्याख्यान हुए। यहाँ पर लोगों में अच्छी श्रद्धा है। दर्श-विशुद्धि विषयक प्रवचनों से प्रभावित होकर कितने ही लोगों ने मिथ्यात्व का परित्याग किया। यहाँ पर एक जैन विद्यालय चलता है, जिसके विद्यार्थी सामायिकादि अच्छे रूप में करते हैं।

यहाँ से विहार कर आप पुनः महा मन्दिर पधारे। ५-६ दिन महामन्दिर विराज कर, फिर चातुर्मासार्थ जोधपुर पधारे। यहाँ पर आपके सिलसिलेवार प्रवचन प्रारम्भ हुए। जनता भारी संख्या में आपके प्रवचनों का लाभ उठाने लगी। जनता पर आपके प्रवचनों का इस प्रकार प्रभाव पड़ा कि व्याख्यान में किसी प्रकार का कोलाहल और विक्षुब्ध वातावरण नहीं हो पाता था। आपने प्रातः काल के व्याख्यान में श्री प्रश्न व्याकरणजी सूत्र की व्याख्या इस प्रकार गुत्थियें खोल २ कर की जिसे साधारण से साधारण व्यक्ति भी सहज में ही समझ सकता था। प्रवचन करते हुए जनता को बतलाया कि इस शास्त्र के पहले प्राणातिपात नामक आश्रवद्वार में भगवान् श्री महावीर ने स्पष्टतया फरमाया है कि धर्म हेतु या चैत्य हेतु जो लोग पृथ्वी कायादि छः कायिक जीवों की हिंसा करते हैं उन्हें भविष्य में उसका अहित और अबोधरूप महान् कटुफल मिलता है।

जनता ने इस प्रकार के हृदय-स्पर्शी प्रवचनों को सुन कर भारी संख्या में मिथ्यात्व का त्याग किया और समकित की शुद्धि की। मध्याह्नकाल में आप श्री से कई श्रावक श्राविकाओं ने पूर्ण भगवती सूत्र का वाचन लिया। मेरवाड़ा, मारवाड़, मेवाड़, मालवा, खानदेश, महाराष्ट्र गुजरात, सौराष्ट्र, आदि देशों में चार वर्ष के काल में विचर कर जिन वाणी का खूब प्रचार किया और जिन शासन की उन्नति की।

जोधपुर चातुर्मास

(सं २०१२)

इस प्रकार वीर सं० २४८१ विक्रम सं० २०१२ सन् १९५५ का चातुर्मास जोधपुर नगर में सानन्द प्रारम्भ हुआ। पर्यूषण पर्व में श्री अन्तगड़ सूत्र का वाचन व धर्म ध्यान तपस्या आदि खूब हुए। प्रेमसुधा द्वितीय भाग का प्रकाशन भी इसी चातुर्मास में हुआ।

भीनासर साधुसम्मेलन—

विक्रम संवत् २०१२ वीर संवत् २४८२ के जोधपुर चातुर्मास की समाप्ति से कुछ दिन पूर्व भीनासर से एक शिष्ट मण्डल महाराजश्री की सेवा में आया। इस शिष्ट मण्डल ने महाराजश्री से भीनासर साधुसम्मेलन में पधारने की विनती की। महाराजश्री ने इस शिष्ट मण्डल से सम्मेलन की नियत तिथि आदि के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने के विचार से पूछा कि सम्मेलन के लिए तिथियां कौन सी निश्चित की गई हैं।

इसपर शिष्ट मण्डल ने बताया कि माघ सुदी पंचमी को श्रमण संघ के मन्त्री मण्डल, उपाचार्य श्री तथा श्रमण संघ के मुख्य-मुख्य प्रतिनिधि मुनिवरों का एक सम्मेलन श्रमण संघ के नियमोपनियम तथा भावी कार्य क्रम की रूपरेखा निर्माण आदि के सम्बन्ध में विचारार्थ नोखा मण्डी में आयोजित किया गया है और मुख्य साधु सम्मेलन चैत वदी पंचमी को भीनासर में सम्पन्न होगा।

यह सुनकर महाराजश्री ने फरमाया कि सम्मेलन के इस समय तक तो खूब गर्मी हो जायगी और आपका प्रान्त बीकानेर तो इन दिनों में और भी अधिक तप जाता है। इधर मुझे हृदय की बीमारी है। अत्यधिक उष्णता के

कारण मुझे दौरा पड़ जाता है। अतः उस समय तो मैं साधु सम्मेलन में सम्मिलित होने में असमर्थ हूं।

जोधपुर का चातुर्मास सानन्द समाप्त कर महाराजश्री हजारों नर नारियों के जयनादों के साथ विहार कर जोधपुर के उपनगर सरदारपुरा में विराजित महान् योगी वयोवृद्ध बावा पूर्ण चन्द जी महाराज की सेवा में आ पहुंचे। यहां पर महाराजश्री ने काकरिया बिल्डिंग के खुले मैदान में पांच ६ बड़े प्रभावशाली व्याख्यान दिये। पीपाड़ वाले (वर्त्तमान सरदार पुरा निवासी) सेठ हरकचन्द जी के बड़े भारी आग्रह से उनके धर्मार्थ दिये हुये धर्म स्थान में भी आपश्री ने दो व्याख्यान दिये। सरदार पुरा से विहार कर महामंदिर पधारे। यहां दो तीन प्रवचन कर डांगिया वास, बीसल पुर, भावों आदि ग्रामों में धर्म प्रचार करते हुए बिलाड़ा पधारे।

कुछ समय पश्चात् मरुधरकेसरी मन्त्री मुनि श्री मिश्री मल जी महाराज भी ठाणा दो पधार गये। यहां पर आपश्री का मरुधरकेसरी के साथ भीनासर में होने वाले साधु सम्मेलन के सम्बन्ध में पारस्परिक विचारों का आदान-प्रदान होता रहा। यहां पर श्री लाला बाबू राम जी और लाल लक्ष्मण दासजी लुधियाना से महाराजश्री की सेवा में पूज्यश्री का संदेश लेकर उपस्थित हुए। उन्होंने कहा कि पूज्यश्री फरमाते हैं कि आपका सम्मेलन में सम्मिलित होना परमावश्यक है। इसके उत्तर में महाराजश्री ने फरमाया कि यदि फाल्गुन सुदी पंचमी तक सम्मेलन की तिथि रखी जाय, तो मैं सम्मेलन में जाने का प्रयत्न ंर सकता हूँ अन्यथा मेरा जाने का विचार नहीं है। यहां से विहार कर एक ंन खरिया ग्राम में प्रवचन कर दूसरे दिन जेतारन पहुंचे। यहां पर आपके ांच प्रवचन हुए। श्री चिमन लालजी लोढ़ा, पन्ना लालजी कांकरिया, देवराज जी सुराणा, गुलाबचन्द जी मुथा, आदि सज्जनों का ब्यावर से एक शिष्ट मंडल आया। उन्होंने महाराजश्री से ब्यावर पधारने की आग्रह भरी विनती की।

तदनुसार ब्यावर की विनती को मान देते हुए महाराजश्री ने यहां से

ब्यावर की ओर विहार कर दिया। बर आदि मार्गवर्ती ग्रामों में धर्म प्रचार करते हुए सेंदरा पधारे। यहां पर ब्यावर के तीस चालीस भाई महाराजश्री की सेवा में उपस्थित हुए। वे महाराजश्री के विहार का कार्यक्रम लेकर वापिस चले गये। महाराजश्री यहां से विहार कर उसी दिन तीन मील की दूरी पर एक छोटे से गांव में जा विराजे। यहां पर ब्यावर के बहुत से बाई भाई महाराजश्री के दर्शनार्थ आये। यहां पर अजमेर से सेठ गणेशमल जी आदि सज्जन का एक डेपुटेशन भी महाराजश्री की सेवा में आया और उसने महाराजश्री से अजमेर पधारने की आग्रह भरी विनती की। महाराजश्री ने फरमाया कि यदि मैं ब्यावर से दिल्ली की ओर गया तो अजमेर स्पर्शने का ध्यान रखूंगा। इस छोटे से ग्राम में महराजश्री के विहार से पूर्व ही ब्यावर के श्रीसंघ के भाइयों और बाइयों के आवागमन का तांता सा लग गया।

महाराजश्री ज्यों-ज्यों ब्यावर की ओर बढ़ते जाते थे, त्यों त्यों जनता का प्रभाव वैसे ही अधिकाधिक बढ़ रहा था जैसेकि समुद्र की ओर नदियों का प्रवाह बढ़ रहा हो। इस प्रकार जब महाराजश्री बड़े भारी जन-समुदाय के साथ ब्यावर से डेढ मील की दूरी पर पहुंच गये तो ब्यावर में विराजित प्रधान मन्त्री श्री आनन्द ऋषि जी महाराज के शिष्य तथा अन्य मुनिराज महाराजश्री के स्वागतार्थ सेवा में पहुंच गये। मुनिमन्डल के साथ हजारों लोगों का यह बड़ा भारी समुदाय जयनाद से आकाश मण्डल को गुंजाता हुआ नगर में प्रविष्ट हुआ। इतने में प्रधान मंत्री श्री आनन्द ऋषिजी महाराज भी स्वागतार्थ पधार गये। यह मुनिमण्डल और विराट जनसमुदाय प्रमुख मार्गों से होता हुआ मुख्य मारवाड़ी बाजार में पहुंचा। यहां पर पहले से ही व्याख्यान के लिए प्रबन्ध किया हुआ था। श्री प्रधानमन्त्री आनन्द ऋषि जी महाराज ने आपके परिचय रूप तथा कुछ सम्बोचित प्रसंग को लेकर परिमित किन्तु भावपूर्ण शब्दों में प्रवचन किया। तत्पश्चात् आपश्री ने बड़े गम्भीर प्रभावशाली मनोहर शब्दों में लगभग आधा घंटा तक धर्मोपदेश दिया। तदनन्तर जहां प्रधानमन्त्री श्री आनन्द ऋषिजी महाराज विराजमान थे वहीं पर आप श्री भी विराज गये। यहां के कपड़ा बाजार में आपके सार्वजनिक व्याख्यान का प्रबन्ध

किया गया। लगभग तीन चार हजार की संख्या में जैन जैनेतर जनता आपके प्रवचनों से लाभ उठाती रही। आपके व्याख्यानों के प्रभाव व परिणाम स्वरूप जनता में धार्मिक भावना की लहर सी पैदा हो गई। यहां की जैन बिरादरी में कई वर्षों से आपस में झगड़ा चला आता था, इस झगड़े ने यहां इतना उग्र रूप धारण कर लिया कि प्रायः साधु मुनिराजों का आना भी बन्द हो गया तथा दोनों पार्टियों के आपस में रिश्ते नाते व बहन बेटियों का एक दूसरे का इधर उधर आना जाना भी बन्द हो गया।

महाराजश्री अपने प्रवचनों में इस क्लेश को शान्त करने के लिए बहुत जोर देते रहे जिससे लोगों के हृदयों में यह भावना जागृत हो गई कि यह झगड़ा शान्त होना ही चाहिए। एक दिन आपश्री ने बड़े ही मार्मिक शब्दों में प्रवचन करते हुए कहा कि क्लेश सर्वनाशक होता है। आप लोगों के इस झगड़े से तुम्हारी लौकिक व धार्मिक कितनी हानि हो रही है। जो-जो व्यक्ति इस क्लेश को सिंचन कर रहे हैं वे महान् कर्म का बन्ध कर रहे हैं। हे महावीरानुयायियों! महावीर का नाम लेने वालों उस महान् शान्ति समुद्र भगवान महावीर के सपूतों क्या तुम्हें इस प्रकार का महान् कर्म बन्ध रूप क्लेप करना और आपस में वैर विरोध बढ़ाना शोभा देता है? यह आप लोगों के लिए बड़ी ही लज्जा की बात है। ऐसा शांति-प्रदाता विशुद्ध जैन धर्म पाकर फिर तुम कापायाग्नि में संदग्ध हो रहे हो, अतः बड़े खेद और आश्चर्य के साथ कहना पड़ता है कि यह तो वही बात हुई—

जैन धर्म शुद्ध पाये पाथ के व्यापी विषय कषाय।
यह अचम्भा हो रहा, जल में लागी लाय॥

जब महाराजश्री ने क्लेश के कारण दुःखित हृदय से प्रभावशाली शब्दों में अपने हृदय के उद्गार इस प्रकार जनता के सामने प्रकट किये तो जनता का हृदय द्रवित हो उठा। और उसी समय दोनों पार्टियों की ओर से दो व्यक्ति चुने गये। एक ओर से श्रीमान चिमनलाल जी लोढ़ा और दूसरी ओर से सेठ कन्हैयालाल जी मुथा। दोनों पार्टियों की ओर से इन दोनों सज्जनों को पूर्ण

अधिकार दिया गया कि ये दोनों सज्जन मिलकर जो निर्णय करें, वह सब को मान्य होगा। दोनों सज्जनों ने मिलकर बिरादरी का नया विधान बनाया और फैसला लिखकर बाजार में व्याख्यान के समय हजारों की संख्या में जनता के सम्मुख सुना दिया। जैन बिरादरी की दोनों पार्टियों ने उस फैसले को मान लिया। उस फैसले को पंच फैसले के रूप में छपवाकर जनता में बांट दिया। और नया चुनाव कर लिया गया। इस प्रकार इस झगड़े का अन्त हो जाने से जैन समाज में अपार हर्ष की लहर छागई।

यहां पर ब्यावर में प्रधानमन्त्री श्री आनन्द ऋषि जी महाराज, मन्त्री श्री प्यारचन्द जी महाराज, मन्त्री श्री मिश्रीलाल जी महाराज तथा सूर्य मुनि जी महाराज आदि बहुत से मुनिराजों का शुभ सम्मिलन हुआ। भावी साधु सम्मेलन के सम्बन्ध में इन मुनिराजों में पारस्परिक विचारों का आदान-प्रदान होता रहा। महाराजश्री का भीनासर साधुसम्मेलन में जाने का विचार नहीं था, क्योंकि आपश्री को हृदय की तकलीफ गर्मी में अधिक हो जाती है। किन्तु प्रधानमन्त्री श्री आनन्द ऋषि जी महाराज, मन्त्री श्री प्यारचन्द जी महाराज तथा मन्त्री श्री मिश्रीमल जी महाराज आदि मुनिराजों ने महाराजश्री से भीनासर जाने के लिए अत्यधिक आग्रह किया। इसी समय भीनासर का शिष्ट मण्डल भी यहां पर आ पहुँचा। उसने भी आपश्री से भीनासर पधारने की आग्रह भरी विनती की। अन्ततः महाराजश्री ने नोखामण्डी तक पधारने की विनती मान ली। महाराजश्री ने भीनासर के शिष्टमंडल से कहा कि मालूम हुआ है कि भीनासार में साधु सम्मेलन के समय आप लोग उपाचार्य श्री गणेशी लाल जी महाराज की दिक्षास्वर्ण जयन्ती मना रहे हैं।

उत्तर मिला कि हाँ।

महाराजश्री ने कहा कि यह बड़ी प्रसन्नता की बात है किन्तु जो श्रमण संघ के सर्वोपरि आचार्य श्री आत्माराम जी महाराज हैं, जिनकी अनुमानतः ६२—६३ वर्ष की दीक्षा है, और ७४—७५ वर्ष की दीर्घ आयु है, जो शास्त्रों

में पारगामी एवं चतुर्विध संघ के मालिक हैं, उनकी दीक्षा स्वर्ण जयन्ती भी इस साधु सम्मेलन के शुभ अवसर पर रखनी चाहिए थी।

शिष्टमंडल ने कहा, हमें इसका ध्यान नहीं रहा।

महाराजश्री—यह भूलने जैसी बात नहीं थी।

इस पर शिष्टमंडल ने भूल मानते हुए कहा कि अब इस जयन्ती के मनाने का भी प्रबन्ध किया जायगा। अर्थात् आचार्यश्री की जयन्ती भी मनाई जायगी।

महाराजश्री ने कुछ दिनों के पश्चात् व्यावर से विहार कर दिया। हजारों स्त्री-पुरुषों ने महाराजश्री को विदाई दी। विराट् जन-समुदाय विहार के समय महाराजश्री के साथ चल रहा था। जयनाद से आकाशमंडल प्रतिध्वनित हो रहा था। महाराजश्री शहर से बाहर दिगम्बर जैन भाइयों की नसिया में ठहरे। महाराज श्री ने समागत जनसमुदाय को समयोचित शान्तिप्रद प्रेमवर्द्धक, कषायोपशमन रूप थोड़ा सा उपदेश दिया जिसे श्रवण कर उपस्थित जनता अत्यन्त आल्हादित हुई। अगले दिन यहाँ से विहार कर जूनी (पुरानी) व्यावर, नागला आदि ग्रामों में धर्म प्रचार करते हुए विसांगन पधारे।

यहां के कुछ अपने भाई अपनी चेतनोपासनीं की शुद्ध श्रद्धा से विमुख हो जैन मंदिर में जाकर जैनमूर्ति के दर्शन पूजा आदि करने लग गये थे।

महाराजश्री ने उन्हें जब बतलाया कि शुद्ध जैन दृष्टि में जड़ मूर्तिपूजा का कोई महत्व नहीं है। सनातन जैनदृष्टि जो अनन्त काल से चली आती है उसने तो मानव जाति को यही संदेश दिया है कि सम्यक् ज्ञान, दर्शन और चारित्र ही मोक्ष-प्रदाता है। यह सुनकर इन सज्जनों ने जड़ोपासना रूप मिथ्यात्व का त्याग कर दिया। यहां पर मन्दिरमार्गी एक जैन पंडित महाराजश्री की सेवा में आया और उसने प्रश्न किया कि आप केवली को आहार करना मानते हैं। हमारे तो आहार करना नहीं माना है। केवली भगवान १८ दोषों से रहित होते हैं। केवली का आहार करना हमारे यहां १८ दोषों में से एक दोष है।

महाराजश्री ने फरमाया कि हमारे जो केवली को १८ दोषों से रहित माना गया है, उन १८ दोषों में आहार करना कोई दोष नहीं माना गया। श्वेताम्बर जैनों की मान्यता के अनुसार वे दोष ये हैं—

१. अज्ञान २. क्रोध ३. मद ४. मान ५. माया ६. लोभ ७. रति ८. अरति ९. निद्रा १०. शोक ११. असत्य १२. चोरी १३. भय १४. प्राणीवध १५. मत्सर १६. राग १७. क्रीड़ा प्रसंग और १८. हास्य।

महाराजश्री ने फरमाया कि जब केवली के वेदनीय कर्म हैं तब आहार का होना भी आवश्यक है। क्योंकि क्षुधा वेदनीय कर्मोदय से ही भूख लगती है, सो वह केवली के है ही। जब कारण है तो कार्य का होना आवश्यक है। अग्निरूप कारण का अस्तित्व तो हो और ताप या जलन रूप कार्य न हो ऐसा नहीं हो सकता। हाँ इतना अन्तर तो अवश्य है कि अधिक अग्नि में दाहशक्ति अधिक होती है और थोड़ी में कम। किन्तु अग्नि में दाहशक्ति का होना अनिवार्य है। दूसरी बात यह है कि आहार के बिना शरीर वृद्धि नहीं होती। जिस लघु कर्मी जीव को अष्ट वर्षाधिक आयुकाल में ही केवल ज्ञान हो गया, तो उस केवली का शरीर बिना आहार किये शरीर की पूरी अवगाहना को कैसे प्राप्त कर सकेगा।

तीसरी बात यह है कि केवली की उत्कृष्ट देशोन क्रोड़ पूर्व की आयु है। इतना लम्बा काल आहार के बिना कैसे बीत सकेगा। इस प्रकार महाराजश्री से अपनी शंका का समाधान पाकर वह पंडित सन्तुष्ट होकर चला गया।

यहां से महाराजश्री शीघ्र ही विहार करने वाले थे। इतने में खबर आई कि ब्यावर का श्रीसंघ महाराज के दर्शनों के लिए आनेवाला है। तदनुसार रविवार को अनुमानतः ४० स्त्री पुरुष यहां महाराजश्री के दर्शनार्थ आये, और व्याख्यान का लाभ लेकर वापस चले गये।

दूसरे दिन यहाँ से विहार कर गोविन्द गढ़, आलणीयावास, रीयां आदि —मों में जनता को धर्म लाभ देते हुए मेड़ता पहुंचे। यहां पर आपके बाजार में

दो सार्वजनिक व्याख्यान हुए जिनमें जनता ने भारी संख्या में भाग लिया। यहां से विहार कर मेड़ता रोड, रूण, खिजवाणा, आदि क्षेत्रों में जिन वाणी का सिंहनाद करते हुए आप नागौर पहुँचे। यहाँ पर बहुत से मुनि एकत्रित हो गये। यहां पर आपके दो सार्वजनिक व्याख्यान हुए। यहाँ से विहार कर गोगेलाव पधारे। यहां पर दो तीन प्रवचन देकर अलाया आदि क्षेत्रों के लोगों को धर्मोपदेश का लाभ देते हुए आप नौखा मण्डी पधारे।

आप से पूर्व विराजित यहां के मुनिमंडल में, स्थानीय जनता, से तथा बाहर के नगरों से आये हुए विराट जन समुदाय ने आपका बड़े भारी हर्षोल्लास के साथ स्वागत किया। यह दृश्य दर्शकों के नेत्रों को बड़ा भव्य प्रतीत होता था। यहां पर उपाचार्य श्री, प्रधान मंत्री श्री आनन्द ऋषि जी, मंत्री श्री मुनि प्यार चन्द जी, मंत्री मुनि मिश्री मलजी, सह मंत्री श्री हस्तीमलजी, वयोवृद्ध मुनि श्री छोगा लाल जी, मन्त्री मुनिश्री पन्नालाल जी महाराज के शिष्य मुनि सोहन लालजी, मेवाड़ प्रांतीय मन्त्री मुनि मोतीलाल जी के शिष्य शान्ति मुनि जी, पं० श्री सामर्थमल जी महाराज तथा मन्त्रीश्री शुक्लचन्द जी महाराज आदि अनुमानतः ६०-७० साधु तथा बहुत सी साध्वियां एकत्रित हो गई। यहाँ पर एक विशाल पंडाल बनाया गया, उसमें व्याख्यान दाता मुनिराजों के प्रवचन होते रहे। बाहर के ग्रामों व बीकानेर आदि नगरों के दर्शनार्थी भाइयों बाइयों का तांता सा लग गया। नगर में जिधर देखो उधर ही बड़ी भारी चहल पहल दिखाई देने लगी। यहां पर दोपहर के बाद प्रमुख मुनियों की बैठक होती रही, जिसमें प्रायश्चित्त विषयक चर्चा चलती रही। क्योंकि पहले भिन्न-भिन्न सम्प्रदाय होने से प्रायश्चित्त विधि विधान में भी प्रायः पारस्परिक अन्तर था। जिस मुनि के पास जो भी प्रायश्चित्त विषयक सामग्री मिली, बैठक में उसको रखकर विचार विनिमय के उपरांत सबका समन्वय कर प्रायश्चित्त का एक निश्चित रूप स्थिर कर दिया गया।

भावी सम्मेलन के सम्बन्ध में अन्य अनेक विषयों की चर्चा भी चलती रही। अनुमानतः इस कार्यवाही का क्रम दस बारह दिन तक चलता रहा।

यद्यपि महाराजश्री का विचार यहीं तक आने का था, और यहीं तक आने की विनती स्वीकार की थी। किन्तु रविवार को अलग-अलग मुनिराजों के सामूहिक प्रवचन हुए तो आपश्री ने भी साधु सम्मेलन की सार्थकता के सम्बन्ध में एक बड़ा प्रभावशाली प्रवचन किया। यह प्रवचन समयोचित और साधु-सम्मेलन की सफलता का सूचक था। व्याख्यान में ही भीनासर और बीकानेर के लोगों ने आग्रह पूर्वक विनती की कि आप श्री को भी सम्मेलन में पधारना ही होगा। आपश्री के यहां से वापस लौट जाने पर हम लोगों के लिए बड़े दुःख की बात होगी। अतः सारी परिस्थिति को देखते हुए आपने भीनासर सम्मेलन में जाने की विनती मान ली।

यहां से सभी साधु एक दो दिन के अन्तर से विहार कर देशनोक पहुंच गये। यहां पर सोभागमलजी महाराज भी पहुंच गये। यहां पर एक विशाल भवन में सब मुनिराज विराजे। यहां पर भी सम्मेलन सम्बन्धी चर्चा चलती रही। यहां की चर्चा का मुख्य विषय साधु-प्रतिक्रमण था। पूर्ववर्ती भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों के साधु प्रतिक्रमण मे कहीं-कहीं कुछ अन्तर था। इसका समन्वय कर प्रतिक्रमण की एक धारा निश्चित की। यहां पर आप श्री का एक सार्वजनिक प्रवचन हुआ। यहां से विहार कर आप गंगासर पहुंचे। यहां पर भी दो तीन दिन तक मीटिङ्ग होती रही। आपश्री के दो सार्वजनिक व्याख्यान भी हुए। यहां से सभी संत मुनिराज आगे पीछे दो चार दिन में ही बीकानेर पधार गये। मन्त्री श्री फूलचन्द जी तथा श्री हजारी मलजी महाराज, व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलाल जी महाराज, कविसम्राट् श्री अमर मुनि जी, श्री सुशील कुमार जी, ज्ञान मुनि जी आदि जो मुनी अभी तक नहीं पहुँचे थे, वे भी पहुंच गये। यहां पर श्रावक प्रतिक्रमण तथा तिथिनिर्णय के सम्बन्ध में वार्ता चलती रही।

फिर यहां से सभी मुनिराज इकट्ठे हो हजारों की संख्या में बाहर से आये हुए तथा स्थानीय विशाल जन समुदाय के साथ भीनासर सम्मेलन के लिए विहार कर भीनासर में नवनिर्मित विशाल पंडाल में पहुंचे।

साधु सम्मेलन का प्रारम्भ—

पंडाल में पहुंच कर मंगलाचरण सुनाकर सभी मुनिराज अपने-अपने ठहरने के लिए निर्धारित स्थानों में जा विराजे। यहां पर प्रातःकाल तथा दोपहर के बाद मीटिंग होती रही, जिसमें दर्शक रूप से साध्वियां भी भाग लेती रहीं। यहां की चर्चा का मुख्य विषय सचित अचित निर्णय और उपाध्याय पद की नियुक्ति व नये सिरे से मन्त्रियों का चुनाव था। सचित विषय में बहुत लम्बी चर्चा चली। अन्ततः निर्णय हुआ कि बिना शास्त्र परिणित कोई भी खाद्य तथा पेय पदार्थ न लिया जाय। ध्वनिवर्द्धक यन्त्र के बारे में बहुत गरमा गरम बहस हुई। अन्त में यह निर्णय हुआ कि यदि अपवाद रूप से इसमें बोलना पड़े, तो यथोचित प्रायश्चित्त लिया जाय। तिथि निर्णय के लिए कुछ मुनिराज और इस विषय के ज्ञाता गृहस्थों की एक सामूहिक उपसमिति बना दी गई।

सादड़ी सम्मेलन में उपाध्याय पद नहीं रखा गया था। अतः इस विषय को लेकर संघ में बहुत चर्चा चल रही थी। वास्तव में सादड़ी सम्मेलन में उपाध्याय पदवी किसी को देनी उपयुक्त भी नहीं थी। कारण कि पहली उपाध्याय पदवियों का विलिनीकरण कर फिर किसी को उपाध्याय पदवी देने से वैमनस्य खड़ा हो सकता था। अब भीनासर सम्मेलन में संघ की मांग और अनुकूल समय देखकर प्रधान मन्त्री श्री आनन्द ऋषि जी महाराज, सह मन्त्री श्री प्यारचन्द जी महाराज, कवि श्री अमरचन्द जी महाराज तथा सह मन्त्री हस्तीमल जी महाराज, इन चारों विभूतियों को उपाध्याय पदवी से विभूषित किया गया। और प्रधानमन्त्री व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलाल जी महाराज को बनाया गया।

आचार्य श्री और उपाचार्य श्री दोनों महापुरुषों की स्वर्ण जयन्ती मनाई गई। इन दोनों धर्म नेताओं के पवित्र जीवन के सम्बन्ध में अनेक मुनिराजों, साध्वियों तथा गृहस्थों ने बड़े मार्मिक शब्दों में प्रकाश डाला। दोनों धर्म नेताओं के दिव्य जीवन और समाज हितकर कार्य कलापों को सुनकर उपस्थित जन समुदाय हर्ष से गद्-गद् हो गया। सम्मेलन में आये हुए विराट जन

समुदाय के समक्ष आप श्री के दो बड़े प्रभावशाली प्रवचन हुए।

इस प्रकार भीनासर साधु सम्मेलन बड़े हर्ष उल्लास और सफलता के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ। सम्मेलन की कार्यवाही के सफलतापूर्वक समाप्त हो जाने के पश्चात् साध्वियों के विहार का उपक्रम प्रारंभ हो गया। ब्यावर श्री संघ ने भीनासर में आपश्री से चातुर्मास ब्यावर में करने के लिए आग्रह भरी विनती की। उपाचार्य श्री की भी यही भावना थी कि आप श्री का चातुर्मास ब्यावर में ही हो। महाराजश्री ने द्रव्य, क्षेत्र, काल, और भाव को ध्यान में रखते हुए सुखे समाधे विनती स्वीकार करली। सम्मेलन की समाप्ति के अनन्तर भीनासर से विहार कर महाराजश्री उदयरामसर, देशनोक, नोखा-मण्डी, अलाया, आदि क्षेत्रों में जिनवाणी की ध्वजा लहराते हुए और उपदेशामृत का पान कराते हुए गोगेलाव पधारे। यहां पर आप के दो तीन व्याख्यान हुए। भगवान महावीर स्वामी की शुभ जयन्ती भी यहीं पर मनाई गई। यहां से नागौर पधारे। यद्यपि यहां पर अधिक ठहरने का विचार नहीं था, तथापि हाथ में कष्ट हो जाने के कारण अनुमानतः एक मास तक ठहरना पड़ा। आराम होने पर यहां से विहार कर मार्ग में तीन रात बिता कुचेरा पहुंचे। यहां पर वयोवृद्ध मन्त्री मुनि श्री हजारीमल जी, तथा कवि उपाध्याय श्री अमर मुनि जी महाराज आदि ६ संत विराजमान थे। आप श्री ठाणे ४ से पधार गये। कुछ समय पश्चात् प्रधान मन्त्री श्री मदनलाल जी महाराज भी ठाणे ८ पधार गये। यहां पर इस छोटे से संत सम्मेलन का बड़ा ही आनन्द रहा। सेठ मोहनलाल जी चोरड़िया की हवेली के विशाल आंगन में महाराज श्री के व्याख्यान का प्रबन्ध किया गया। प्रवचनों में जैन और जैनेतर जनता बड़ी भारी संख्या में भाग लेती रही।

दस बारह दिन यहां विराज कर फिर खजवानाल होते हुए रूण पधारे। यहां पर अनुमानतः २०-२५ जैनों के घर हैं। ज्ञात हुआ कि कुछ समय पूर्व यह सारा क्षेत्र स्थानकवासी जैन धर्म को मानने वाला था। अब केवल इतना ही है कि साधु साध्वी आये तो व्याख्यान वाणी सुन लेना, और आहार पानी दे देना। यहां पर जैन मन्दिर बन चुका है, ये लोग उसी में जाते हैं।

स्थापनाचार्य की विचित्र मान्यता—

यहाँ पर एक मूर्तिपूजक श्वेताम्बर साधु जिस मकान में ठहरे हुए थे आप श्री भी गृहस्थों की आज्ञा लेकर और उस भिक्षु से पूछ कर उसी मकान में ठहर गये। अभी ठहरे थोड़ा ही समय हुआ था, कि सामने तीन पायों वाली लकड़ी की तिपाई के ऊपर एक छोटी-सी पोटली पड़ी हुई देखकर महाराजश्री ने सहज स्वाभाव से उस साधु से पूछा वह क्या है ?

उत्तर मिला—यह हमारा स्थापनाचार्य है।

महाराजश्री ने पूछा कि क्या इसे विहार में भी साथ ही रखते हो।

उत्तर मिला कि हां, क्या यह स्थापनाचार्य आप नहीं रखते ?

महाराजश्री ने फरमाया कि नहीं।

उन्होंने पूछा—क्यों नहीं रखते।

आपने कहा कि शास्त्र में आचार्य तो चला है, किन्तु यह कल्पित स्थापनाचार्य जो शास्त्र में नहीं है।

यह सुनकर वह महात्मा बोले—शास्त्र में चार निक्षेप चले हैं। क्या आप उन्हें नहीं मानते ? आपने कहा, हां हम उन्हें अपने-अपने स्थान पर अपने-अपने रूप में मानते हैं।

वे महात्मा बोले—उन चार निक्षेपों में से ही स्थापना निक्षेपरूप यह स्थापनाचार्य हैं।

'सजन्नो, आप स्थापनाचार्य शब्द सुन कर झमेले में पड़ गये होंगे कि यह स्थापनाचार्य क्या बला है। तो सुनिए एक छोटी-सी पोटली में पांच कोड़ियां होती हैं। इन्हें ये लोग क्रमशः अरिहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु के रूप में मानते हैं। यह है इनका स्थापनाचार्य। प्रथम तो ये जड़ कोड़ियां अरिहन्त आदि, पंच परमेष्ठि रूप चेतन गुणधारी नहीं हो सकतीं। फिर बात भी विचारणीय है कि जिन पांच कोड़ियों को अरिहन्त, सिद्ध आचार्य

उपाध्याय तथा साधु पंचपरमेष्ठि रूप इन्होंने माना है, उन पांचों को मिलाकर एक ही स्थापनाचार्य बना डाला। यह इन भक्तों की कैसी अनूठी बात है। आचार्य तो अरिहन्त सिद्ध बन सकता है किन्तु इन लोगों ने अरिहन्त और सिद्ध भगवान को भी आचार्य रूप देकर एक ही स्थापनाचार्य बना दिया, यह कैसी विडम्बना है।

हां तो वे महात्मा जी बोले स्थापनाचार्य तो बड़ी महत्व की काम देने वाली चीज है।

महाराज श्री बोले, काम देने वाली चीज होना और बात है, किन्तु पूजनीय होना और बात है। जिन चीजों से काम चलाया जाय वे सभी पूजनीय नहीं हो सकतीं। महाराज ने कहा कि मैं इस पट्टे पर बैठा हूँ यह भी बहुत काम का है। यदि काम देने वाली सभी वस्तुएं पूज्य हों, तब तो इस पट्टे को भी पूजिए और मत्था टेकिए।

यह सुनकर बाबा जी कुपित हो गये। और बोले, जड़ पट्टा कैसे पूजनीय हो सकता है?

महाराजश्री बोले, आपकी मान्यतानुसार चारों निक्षेप वन्दनीय एवं पूजनीय हैं। तो इस पट्टे मे भी चारों निक्षेप विद्यमान हैं। नाम निक्षेप से इसका नाम पट्टा है, स्थापना निक्षेप से इस पट्टे की आकृति विशेष स्थापना निक्षेप है। जिस वृक्ष के काष्ट से यह बना है वह द्रव्य निक्षेप है। इसमें जो अनन्त अनन्त वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श की पर्यायें है। वह भाव निक्षेप है। इस प्रकार इस पट्टे में चारो निक्षेप घटित होते हैं। फिर आप इसे अपूज्य कैसे मानते हैं।

महात्मा जी फिर भी दुस्साहस कर बोले यह पट्टा तो पट्टा है। जिन मूर्ति तो जिन सारखी है अर्थात् जिनेन्द्र भगवान के समान है।

महाराज ने कहा, यदि जड़ मूर्ति भी अरिहन्त भगवान के बराबर है, तो मैं पूछता हूँ कि अरिहन्त में गुणस्थान कितने हैं ज्ञान तथा चारित्र्य कितने हैं है और मूर्ति में कितने हैं, इत्यादि अनेक शास्त्रीय प्रश्नों की झड़ी लगा दी।

किन्तु वह महात्मा इन प्रश्नों का सही उत्तर न दे सके। यह चर्चा लगभग तीन घंटे तक चली। इस चर्चा को सुन बहुत से लोग इकट्ठे हो गये। उस दिन कुचेरा और नोखा के कितने ही स्थानकवासी भाई भी कारणवश वहां आये हुये थे। वे भी आवाज सुन वहां आ गये उन्होंने भी इस चर्चा को सुनने में बहुत रस लिया। अन्ततः महात्मा जी निरुत्तर हो, विवर्ण वदन हो गये।

स्मरण रहे कि ये वही महात्मा हैं जिन्होंने बीकानेर में श्रमण संघ के उपाचार्य श्री गणेशीलाल जी महाराज को शास्त्रार्थ करने के लिए चैलेंज दिया था, जिसके उत्तर में उपाचार्य श्री ने फरमाया था कि तुम एकले होने के कारण साधु-मर्यादा से बाहर हो। मर्यादाहीन से चर्चा करना मैं उचित नहीं समझता। हां कोई तुम्हारा आचार्य हो तो प्रेमपूर्वक चर्चा करने को तैयार हूं।

महाराजश्री ने कहा कि आप हमारे उपाचार्य श्री से चर्चा करने को तैयार थे। आज हमसे ही निपट लें, उपाचार्य श्री से तो फिर देखना। महाराजश्री की चुटकी भरी शास्त्रोक्त युक्तियां सुन उपस्थित लोग बड़े आनन्दित होते थे। और महात्मा जी की लचर दलीलें सुन उन पर रह-रह कर हंसते थे।

दोपहर को महाराजश्री धर्मोपदेश देकर वहां से विहार कर दो दिन मार्ग में बिता मेड़ता पधार गये। यहां पर एक व्याख्यान तो मीराबाई के विशाल मन्दिर में हुआ और तीन चार यहां के किले के विशाल आंगन में हुए। व्याख्यान श्रवणार्थ देहातों से लोग चल-चल कर आते थे। यहां पर ब्यावर के तीस चालिस भाई महाराजश्री के दर्शनार्थ आये, और ब्यावर शीघ्र पधारने की विनती की। यहां से विहार कर रीयां, आलणियावास, गोविन्दगढ़ और पुष्कर आदि क्षेत्रों को धर्म लाभ देते हुए अजमेर पधारे। उधर ब्यावर की ओर से श्री प्रधानमन्त्री मदनलाल जी महाराज भी ठाणे पांच से पधार गये। लोढ़ा जी की धर्मशाला में सब मुनिराजों का मिलन हुआ। फिर यहां से यह मुनि मंडली जैन धर्म की जय, भगवान महावीर स्वामी की जय, श्री वर्द्धमान श्रमण संघ की जय, श्रमण संघ अमर रहे, आदि गगन भेदी नारों से नगर के

समस्त वातावरण को गुंजाते हुए विशाल जन समुदाय के साथ प्रमुख बाजारों से होती हुई, ओसवाल जैन हाईस्कूल में पहुंची। व्याख्यान वाचस्पति प्रधान-मन्त्री श्री मदनलाल जी महाराज और आपश्री ने संक्षिप्त रूप में कुछ समयोचित प्रवचन किया। फिर मंगलाचरण सुना, मुनिमंडल इसी स्कूल में विराजमान हो गया।

इस स्कूल में आपके चार पांच सार्वजनिक व्याख्यान हुए। आपके दांतों में कष्ट रहता था, अतः डाक्टर को दिखाया, उसने सभी दांत निकलवा देने को कहा, क्योंकि दांतों में पायरिया था। इसलिए निकलवा देना ही ठीक समझकर डाक्टर निगम से १७ दांत और दाढ़ें तीन दिन में ही निकलवा दीं। इधर ग्रीष्मावकाश के बाद स्कूल खुलने वाला था अतः आप सेठ केशरीमल जी लोढ़ा की हवेली में विराज गये। यहीं पर आपके इसी डाक्टर से नये दांत लगवाये गये। यहां अनुमानतः २० दिन विराज कर फिर विहार कर तबीजी होते हुए खरवा पहुंचे। यहां एक प्रवचन कर दूसरे दिन यहां से चार मील की दूरी पर मोहनपुरा स्टेशन पर जा विराजे। यहां पर हजार बारह सौ के लगभग ब्यावर के बाई भाई महाराजश्री के दर्शनार्थ आये। सबका भोजन प्रबन्ध यहीं पर ब्यावर संघ की ओर से प्रीति भोजन के रूप में किया गया।

ब्यावर में विराजित मुनि हस्तीमल जी तथा भानु ऋषि जी भी ठाणा दो महाराजश्री की सेवा में पहुंच गये। यह स्टेशन जंगल में है, किन्तु महाराजश्री के यहां पधारने से जंगल ही में मंगल हो गया। जिधर देखो उधर ही स्त्री पुरुषों के झुंड के झुंड दृष्टिगोचर होते थे। यह स्थान एक तीर्थ सा प्रतीत होता था।

दूसरे दिन प्रातःकाल ब्यावर की ओर विहार कर दिया। बहुत से भाई वहीं से महाराजश्री के साथ चल रहे थे। ज्यों-ज्यों आप मुनि मंडली के साथ ब्यावर की ओर बढ़ रहे थे, त्यों-त्यों हर्षोल्लास से प्रेरित जन समुदाय उमड़-उमड़कर महाराजश्री के स्वागतार्थ सामने आ रहा था। यद्यपि इस समय रह-रह कर वर्षा हो रही थी, जिसके कारण मुनियों को मार्ग में थोड़ी-थोड़ी देर के लिए

कई स्थानों पर रुकना पड़ा। फिर भी जनता बादलों की तरह झूम-झूम कर आ रही थी। इस प्रकार हर्षोल्लास और गुरुभक्ति के पवित्र प्रवाह में निमग्न होता हुआ जन समुदाय मारे हर्ष के फूला नहीं समा रहा था। अनुमानतः आठ बजे के लगभग व्यावर नगर के बाहर स्थित दिगम्बर जैन मंदिर—नसियां में पहुंचा। वर्षा आ जाने के कारण आज रात्रि यहीं विश्राम करना पड़ा। दूसरे दिन हजारों नर-नारियों के साथ यह मुनि मंडली प्रमुख बाजारों में होती हुई जैनोपाश्रय में पहुंची।

महाराजश्री ने आई हुई जनता को परिमित शब्दों में समयोचित धर्मोपदेश दिया। तत्पश्चात् श्रीमान चिमनसिंह जी लोढ़ा ने महाराजश्री के पधारने की खुशी में अपने कुछ भाव व्यक्त किये। फिर महाराजश्री ने मंगलाचरण सुनाकर जनता की मंगल कामना की। इस प्रकार सब लोग सानन्द स्थानक से अपने-अपने घरों को चल पड़े।

ब्यावर चातुर्मास

संवत् २०१३

इस प्रकार वीर संवत् २४ विक्रम संवत् २०१३ तदनुसार सन् १९५६ का चातुर्मास ब्यावर में प्रारम्भ हुआ। प्रवचनों का क्रम भी नियमित रूप से चल रहा था। आपके उपदेशामृत का पान करने के लिए जनसमूह उमड़-उमड़ कर आने लगा। यद्यपि जैनोपासरा विशाल था, फिर भी जनता को स्थान नहीं मिलता था। यह देखकर ब्यावर संघ ने विशाल पंचायती नोहरे में व्याख्यान का प्रवन्ध किया। यहां पर जनता बड़ी भारी संख्या में आनन्द पूर्वक आप श्री के प्रवचनों का लाभ लेने लगी।

प्रेम सुधा तृतीय भाग का प्रकाशन—

यहां पर कुछ विचारक भाइयों ने सोचा कि महाराजश्री के ये अमूल्य प्रवचन यदि लिपिवद्ध हो जाएं, और फिर प्रकाशित कर दिये जाएं, तो जनता के लिए स्थायी रूप से महान् कल्याण कारक सिद्ध होंगे। यह योजना लोगों को बहुत पसन्द आई। फलतः अजमेर निवासी धर्मपाल जी महता जैन काव्य कोविद को संकेत लिपि में महाराजश्री के प्रवचन लिपिबद्ध करने के लिए डेढ़ सौ रुपया मासिक पर नियत किया गया। उनके संकेत लिपि में लिखे हुए प्रवचनों का हिन्दी में सम्पादन, शोभा चन्द जी भारिल्ल के द्वारा हो रहा है। सम्पादन का व्यय ब्यावर श्रीसंघ की ओर से हो रहा है। ब्यावर चातुर्मास के व्याख्यानों का मेटर अनुमानतः ७,८ पुस्तकों का है जिसमें से दो भाग प्रकाशित हो चुके हैं—एक ब्यावर श्री संघ की ओर से, और एक श्री लाला इन्द्रसेन जैन मालिक कुमार ब्रदर्स कैमिस्ट चांदनी चौक दिल्ली की ओर से।

लगभग तीन पुस्तकों का मेटर सम्पादित होकर तैयार पड़ा है जो कि धीरे-धीरे समय-समय पर प्रकाशित होता रहेगा। आपश्री के इस चातुर्मास के प्रवचनों का मुख्य विषय सम्यक् दर्शन था। कारण कि इधर के स्थानक वासी जैनों में सम्यक् दर्शन के सम्बन्ध में बहुत कमजोरी पाई जाती है। अतः महाराजश्री ने दर्शन शुद्धि पर विशेष बल दिया। फलतः अनेक स्त्री पुरुषों ने आप के दर्शन विशुद्धि विषयक प्रवचन सुनकर जड़ोपासना आदि अनेक प्रकार के मिथ्यात्व का परित्याग कर दिया।

यहां पर एक शान्तिनाथ हाई स्कूल श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैनों की ओर चल रहा है, जिसमें स्थानकवासी जैन के लड़के अधिक संख्या में जाते हैं। इस स्कूल के मुख्याध्यापक स्याल कोट निवासी शोरीलालजी हैं जो पहले स्थानकवासी थे, किन्तु वे अपने मामा के यहां रहने से मन्दिरमार्गी विचारों के हो गये और कट्टर मूर्तिपूजक बन गये। स्मरण रहे कि ये वही शोरीलालजी महाशय हैं, जिन्होंने विक्रम संवत् १९९७ में महाराजश्री प्रेम चन्दजी को पंजाब के माझा पट्टी नामक नगर में एक पत्र भेजा था जिसमें महाराजश्री से कुछ प्रश्न किये थे, उस पत्र में आपने यह भी लिखा था कि यदि आप हमारे श्वेताम्बर मूर्तिपूजक समाज में आ जाएं तो आपकी श्री आत्मानन्द जी सूरीश्वर के समान पूजा और प्रतिष्ठा हो सकती है।

जो व्यक्ति महाराजश्री को भी अपनी ओर खींचने का इस प्रकार प्रयत्न कर सकता है, वह अपने स्कूल में आने वाले बच्चों को बहकाने में कोई कसर क्यों उठा रखेगा। उसने स्थानक वासी लड़कों को बहकाना शुरू किया। रात्रि को धर्म शिक्षा देने के लिए लड़कों को बुला लेता, और उन्हें मूर्तिपूजा का उपदेश देता। स्थानकवासी जैनों के वह लड़के तो उसके उपदेश से प्रभावित होकर ऐसे बन गये, कि जैन मन्दिर में दर्शन किये बिना खाना भी नहीं खाते। यह सारी स्थिति महाराजश्री ने अपनी समाज के आगे रखी, और कहा कि यदि तुमने अपने बच्चों को न सम्हाला तो बहुत से मूर्तिपूजक बन जायेंगे। फलतः यहां के संघ ने श्री महावीर ज्ञान पाठशाला स्थापित की जिसमें धर्म

शिक्षा के लिए स्थानकवासी जैन धर्म के दृढ़ विश्वासी तीन अध्यापक रखे गये।

चातुर्मास में धर्म ध्यान तपस्या आदि खूब होती रही। पर्यूषण पर्व में श्री अन्त गड़ सूत्र का वाचन किया, जिसे सुन सब जनता अत्यन्त आनन्दित हुई। लोगों का कहना था कि इतने बड़े समुदाय में ऐसे स्पष्ट और विस्तृत रूप में श्री अन्त गड़ सूत्र का वाचन इससे पहले सुनने में कभी नहीं आया। यहां पर भाद्रपद शुक्ल द्वादशी को पूज्य श्री आत्मा रामजी महाराज की जयन्ती बड़े समारोह के साथ मनाई गई।

इस उपलक्ष में उस दिन कसाई खाना बन्द रहा। और कस्साब खाने में बध किये जाने वाले ३५ बकरे छुड़ाकर ब्यावर की बकरशाला में पहुंचा दिये गये। पोषा, दया, व्रत, आदि धर्म ध्यान भी बहुत किया गया।

इस चातुर्मास में धर्म ध्यान का खूब ठाठ रहा। ब्यावर का चातुर्मास सानन्द पूर्ण कर मार्गशीर्ष कृष्ण प्रतिपदा को हजारों स्त्री पुरुषों के साथ विहार कर नगर के बाहर दिगम्बर जैन नसिया में आ विराजे। वहाँ से दूसरे दिन विहार कर खरवा पधारे। यहां पर व्याख्यान बाजार में हुआ, जिसमें ब्यावर के भाइयों और बाइयों ने पर्याप्त संख्या में भाग लिया। यहां से विहार कर जेठाणा तबीजी होते हुए अजमेर पधारे।

अजमेर की जनता को चार पाँच दिन तक व्याख्यान वाणी का लाभ देकर यहाँ से भी विहार कर दिया। एक रात रास्ते में बिता मदन गंज पधारे। यहां पर स्थानक में एक व्याख्यान हुआ, और एक बाजार में हुआ। यहां से किशन गढ़ शहर में पधारे, जहां तीन चार व्याख्यान देकर जयपुर की ओर विहार कर दिया।

मार्ग में धर्म प्रचार करते हुए दोदुआ नामक ग्राम में पधारे। यहाँ पर अपने स्थानकवासी भाइयों का एक ही घर है। किन्तु धर्म ध्यान में उनकी लगन बहुत अच्छी है। यहाँ पर किशन गढ़ के तीस चालीस भाई भी महाराज-श्री के दर्शनों को आये। और जयपुर संघ के भी दस एक भाई पहुँच गये। किशन गढ़ के भाइयों ने अपने क्षेत्र में चातुर्मास करने के लिए आग्रह भारी विनती की।

महाराजश्री ने फरमाया कि अभी तो चातुर्मास बैठने में बहुत देर है। अभी से चातुर्मास के लिए कुछ नहीं कहा जा सकता। मेरा विचार दिल्ली की ओर जाने का है। जीवनराम पंडित जी को ब्यावर निवासी सेठ माणकचन्द जी छलाणी ने मार्ग दर्शक रूप से महाराजश्री के साथ भेजा था। उससे ज्ञात हुआ कि किशनगढ़ के सेठ गोविन्दरामजी तो आप के चातुर्मास के लिए इतने उत्कंठित हैं कि उनका कहना है कि यदि महाराजश्री हमारे यहाँ चातुर्मास करना स्वीकार करलें तो मैं अकेला ही २१००० इक्कीस हजार रूपया तक खर्च करने को तैयार हूँ।

यहाँ से विहार कर तीन चार दिन रास्ते में लगा, जयपुर के बाहर एक श्वेताम्बर जैन भाई की कोठी में विराजे। दोदुआ से ही महाराजश्री के दर्शनों के लिए आने वाले जयपुर के भाइयों का तांता सा बन्ध गया।

दूसरे दिन यहाँ से विहार कर जब जयपुर पधारे, तो आपके स्वागतार्थ उपाध्याय कवि श्री अमरचन्द जी महाराज, मन्त्री श्री पुष्कर मुनि जी महाराज तथा पंडित विजय मुनि जी महाराज आदि मुनि आपके सामने आये। मुनि मंडली और श्रावक श्राविकाओं के जन समुदाय के साथ नगर में प्रवेश कर आप श्री जयपुर के जैन संघ के लाल भवन में विराजे। स्वागतार्थ आई हुई जनता को महाराजश्री ने कुछ समयोचित प्रवचन सुनाया। फिर कवि उपाध्याय श्री अमरचन्द जी महाराज ने आपके स्वागत के सम्बन्ध में प्रवचन करते हुए आपका परिचय करवाया और कहा कि यद्यपि आप लोग महाराजश्री के नाम से भली भांति परिचित हैं, फिर भी मैं आपको विशेष परिचय देता हुआ बतलाना चाहता हूँ कि महाराजश्री हमारे समाज के एक प्रखर वक्ता, स्पष्टवादी कर्मयोगी हैं।

आपने पंजाब जैसे मांसाहारी देश में वेजीटेरियन सोसाइटी अर्थात् निरामिष भोजी संस्था स्थापित करवाई जिनके द्वारा अनेक मांसाहारियों का उद्धार हुआ। और लाखों जीवों को प्राणदान मिला। अभी अभी आप मेवाड़, मारवाड़, मध्यभारत, मालवा, महाराष्ट्र, गुजरात, काठियावाड़, सौराष्ट्र आदि

शिक्षा के लिए स्थानकवासी जैन धर्म के दृढ़ विश्वासी तीन अध्यापक रखे गये।

चातुर्मास में धर्म ध्यान तपस्या आदि खूब होती रही। पर्यूषण पर्व में श्री अन्त गड़ सूत्र का वाचन किया, जिसे सुन सब जनता अत्यन्त आनन्दित हुई। लोगों का कहना था कि इतने बड़े समुदाय में ऐसे स्पष्ट और विस्तृत रूप में श्री अन्त गड़ सूत्र का वाचन इससे पहले सुनने में कभी नहीं आया। यहां पर भाद्रपद शुक्ल द्वादशी को पूज्य श्री आत्मा रामजी महाराज की जयन्ती बड़े समारोह के साथ मनाई गई।

इस उपलक्ष में उस दिन कसाई खाना बन्द रहा। और कस्साब खाने में वध किये जाने वाले ३५ बकरे छुड़ाकर ब्यावर की बकरशाला में पहुंचा दिये गये। पोषा, दया, व्रत, आदि धर्म ध्यान भी बहुत किया गया।

इस चातुर्मास में धर्म ध्यान का खूब ठाठ रहा। ब्यावर का चातुर्मास सानन्द पूर्ण कर मार्गशीर्ष कृष्ण प्रतिपदा को हजारों स्त्री पुरुषों के साथ विहार कर नगर के बाहर दिगम्बर जैन नसिया में आ विराजे। वहाँ से दूसरे दिन विहार कर खरवा पधारे। यहां पर व्याख्यान बाजार में हुआ, जिसमें ब्यावर के भाइयों और बाइयों ने पर्याप्त संख्या में भाग लिया। यहां से विहार कर जेठाणा तबीजी होते हुए अजमेर पधारे।

अजमेर की जनता को चार पांच दिन तक व्याख्यान वाणी का लाभ देकर यहाँ से भी विहार कर दिया। एक रात रास्ते में बिता मदन गंज पधारे। यहां पर स्थानक में एक व्याख्यान हुआ, और एक बाजार में हुआ। यहां से किशन गड़ शहर में पधारे, जहां तीन चार व्याख्यान देकर जयपुर की ओर

महाराजश्री ने फरमाया कि अभी तो चातुर्मास बैठने में बहुत देर है। अभी से चातुर्मास के लिए कुछ नहीं कहा जा सकता। मेरा विचार दिल्ली की ओर जाने का है। जीवनराम पंडित जी को ब्यावर निवासी सेठ माणकचन्द जी छलाणी ने मार्ग दर्शक रूप से महाराजश्री के साथ भेजा था। उससे ज्ञात हुआ कि किशनगढ़ के सेठ गोविन्दरामजी तो आप के चातुर्मास के लिए इतने उत्कंठित हैं कि उनका कहना है कि यदि महाराजश्री हमारे यहाँ चातुर्मास करना स्वीकार करलें तो मैं अकेला ही २१००० इक्कीस हजार रूपया तक खर्च करने को तैयार हूँ।

यहाँ से विहार कर तीन चार दिन रास्ते में लगा, जयपुर के बाहर एक श्वेताम्बर जैन भाई की कोठी में विराजे। दोदुआ से ही महाराजश्री के दर्शनों के लिए आने वाले जयपुर के भाइयों का तांता सा बन्ध गया।

दूसरे दिन यहाँ से विहार कर जब जयपुर पधारे, तो आपके स्वागतार्थ उपाध्याय कवि श्री अमरचन्द जी महाराज, मन्त्री श्री पुष्कर मुनि जी महाराज तथा पंडित विजय मुनि जी महाराज आदि मुनि आपके सामने आये। मुनि मंडली और श्रावक श्राविकाओं के जन समुदाय के साथ नगर में प्रवेश कर आप श्री जयपुर के जैन संघ के लाल भवन में विराजे। स्वागतार्थ आई हुई जनता को महाराजश्री ने कुछ समयोचित प्रवचन सुनाया। फिर कवि उपाध्याय श्री अमरचन्द जी महाराज ने आपके स्वागत के सम्बन्ध में प्रवचन करते हुए आपका परिचय करवाया और कहा कि यद्यपि आप लोग महाराजश्री के नाम से भली भांति परिचित हैं, फिर भी मैं आपको विशेष परिचय देता हुआ बतलाना चाहता हूँ कि महाराजश्री हमारे समाज के एक प्रखर वक्ता, स्पष्टवादी कर्मयोगी हैं।

आपने पंजाब जैसे मांसाहारी देश में वेजीटेरियन सोसाइटी अर्थात् निरामिष भोजी संस्था स्थापित करवाई जिनके द्वारा अनेक मांसाहारियों का उद्धार हुआ। और लाखों जीवों को प्राणदान मिला। अभी अभी आप मेवाड़, मारवाड़, मध्यभारत, मालवा, महाराष्ट्र, गुजरात, काठियावाड़, सौराष्ट्र आदि

दूर दूर के प्रदेशों में जैन धर्म की अहिंसा पताका फहराते हुए पांच वर्ष के बाद पंजाब की ओर पधार रहे हैं।

आप लोगों का यह सौभाग्य है, कि महाराजश्री ने अपने चरण कमलों से आपका क्षेत्र पवित्र किया है। आप लोगों को महाराजश्री के प्रवचनों से अधिकाधिक लाभ उठाना चाहिए। ऐसे स्वर्णावसर बार-बार नहीं मिला करते। तत्पश्चात् महाराजश्री से मंगलाचरण सुनकर जनता सानन्द अपने घरों को लौट गई।

अमर, प्रेम, और पुष्कर मिलकर जयपुर में यह त्रिवेणी संगम रूप एक तीर्थ बन गया। आपके प्रवचनों का प्रवन्ध लाल भवन के विशाल प्राँगण में किया गया। श्रोतागण आपके प्रवचनों का उमड़-उमड़ कर लाभ लेने लगे। दो प्रवचन आपके सुवोध ट्रेनिंग कालेज में हुए जिनमें हजारों स्त्री पुरुषों ने भाग लिया।

इसी समय आगरा संघ का शिष्ट मंडल आप की सेवा में पहुंचा जिसने आगरा पधारने की आग्रह भरी प्रार्थना की, और आगरा में विराजित वयो वृद्ध मन्त्री श्री पृथ्वीचन्द जी महाराज का संदेश भी सुनाया था कि आपको वे भी बहुत याद करते हैं।

यद्यपि आपका सीधे अलवर होकर दिल्ली पहुंचने का विचार था, किन्तु उपर्युक्त स्थिति को ध्यान में रखते हुए आपने आगरा संघ की विनती मान ली।

फिर अलवर जैन संघ का शिष्ट मंडल भी श्री सेवा में पहुंच गया था। उसने अलवर पधारने की विनती की। महाराज ने उन्हें कहा कि मैं सुखे समाधे आगरा संघ की विनती मान चुका हूं। अतः अलवर की ओर जाना कठिन है, क्योंकि अलवर होकर जाने में लगभग पचास साठ मील का चक्कर पड़ता है।

यह सुनकर अलवर संघ के भाई बहुत निराश हो गये, और कहने लगे कि यदि आप इस समय अलवर न पधारे तो फिर क्या पता कब पधारना

हो। अलवर के भाइयों को इस प्रकार निराश देख कर महाराजश्री को करुणा आ गई। और सुखे समाधे अलवर होकर आगरे जाने का विचार कर लिया।

लाल भवन से विहार कर जयपुर के उपनगर आदर्शनगर में पधारे। यहां पर पंजाब के स्यालकोट के भाइयों के दस बारह ही घर हैं। लाला सुन्दर लालाजी, फग्गे शाहजी, दीवानचन्द जी आदि सभी सज्जनों में धर्म प्रेम खूब है। यहां पर आपके तीन सार्वजनिक व्याख्यान हुए जिनमें पंजाब के शरणार्थियों ने विशेष रूप से भारी संख्या में लाभ लिया। यहां से पुनः लाल भवन में पधारे। यहां दो दिन ठहर कर फिर यहां से विहार कर जयपुर की पुरानी राजधानी अम्बर (आमेर) जो कि यहां से पांच मील दूर है, पहुंचे।

उपाध्याय कवि श्री अमरचन्द जी महाराज, मन्त्री श्री पुष्कर मुनि जी महाराज तथा पं० श्री विजय मुनि जी महाराज भी यहां तक आपके साथ आये। यहां पर एक रात्रि विराज कर आपने अलवर की ओर विहार कर दिया। यहां से विहार कर ६-७ दिन में विराट गये। यहां पर एक रात ठहर कर विहार कर दिया। एक रात मार्ग की पुलिस चौकी में ठहर दूसरे दिन ठाणा नामक कस्बे में पहुंचे। वहां पर दिगम्बर जैनों के घर हैं।

अलवर के भाई भी यहां पहुंच गये। आहार पानी यहीं पर किया गया। फिर स्थानीय स्कूल में आपका एक प्रवचन हुआ, जिसमें सभी अध्यापकों तथा छात्रों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। दोपहर के पश्चात् विहार कर महाराज अलवर के महकमा जंगलात के बंगले में ठहरे। यह जंगल इतना हरा भरा है कि इसका सुन्दर दृश्य मानव-हृदय को अनायास ही अपनी ओर आकृष्ट कर लेता है। इस जंगल में शेर बहुत रहते हैं। वर्षा के कारण आपको यहीं पर दो रात ठहरना पड़ा। यहां पर आहार पानी का कोई साधन नहीं था। यहां के एक बाबू से केवल तीन लड्डू मिले जिनसे तीन मुनियों ने गुजारा किया। एक तो शीत ऋतु थी, दूसरे वर्षा हो गई, तीसरे पर्वतीय प्रदेश अत्यन्त ठंडा था। इसपर भी प्रबल शीत वायु तीव्र वेग से चल रही थी। साधु के परिमित वस्त्र और मर्यादित जीवन इत्यादि कारणों से यहां पर शीत परिषह का बड़ा

मुनि श्री चन्द जी और मुनि कस्तूरचन्द जी को आपकी सेवा के लिए हाथरस तक साथ भेजा गया। मार्गवर्ती ग्रामों में धर्म प्रचार करते हुए चार दिन में आप हाथरस पधार गये। यहां पर जैनधर्मशाला में विराजे। यहीं पर आपके प्रवचन होते रहे, अन्त में आपका एक प्रवचन गांधी चौक में हुआ। इससे जनता बहुत प्रभावित हुई। आप श्री से विशेष ठहरने की विनती की गई, किन्तु गर्मी के आ जाने के कारण अपने वहां ठहरना अधिक उचित न समझ विहार कर दिया।

मार्ग में एक बड़ा नगर पड़ता था। वहां के कालेज के मुख्याध्यापक के आग्रह करने से आप स्कूल में ही विराजे। इस स्कूल के अध्यापकों और बड़ी कक्षाओं के छात्रोंमें आपका प्रभावशाली प्रवचन हुआ। इस धर्मोपदेश का स्थानीय छात्रों तथा अध्यापक वर्ग पर अच्छा प्रभाव पड़ा। उन्होंने कहा कि हम जैन धर्म और जैन साधुओं से बिल्कुल अनिभिज्ञ थे। किन्तु आपके व्याख्यान से आज हमें जैन धर्म और जैन साधुओं के बारे में कुछ जानकारी मिली है। दूसरे दिन जब आपने विहार किया तो प्रिंसिपल महोदय और अध्यापकगण डेढ़ दो मील चलकर महाराजश्री को छोड़ने आये। इस प्रकार तीसरे दिन मथुरा पधार गये। एक रात्रि यहां ठहर दूसरे दिन वृन्दावन पहुँचे। मथुरा और वृन्दावन सनातन धर्म के सुप्रसिद्ध तीर्थ धाम हैं।

यहां पर सनातन धर्मानुयायी हजारों लोग यात्रा करने आते हैं। यहां के पंडे और पेड़े बहुत प्रसिद्ध हैं।

आप श्री वृन्दावन में एक रात्रि विराजे। यहां के प्रमुख स्थानों का निरीक्षण किया। यहां पर सनातन मन्दिर बड़ी-बड़ी लागत के बहुत बड़ी संख्या में हैं। यहां पर मंगते बहुत हैं जिन का जीवन पराश्रित है। ये लोग स्वावलम्बी न बनकर अपना जीवन पुरुषार्थ हीन और आलस्यमय बिताते हैं। उनका जीवन समाज व राष्ट्र के लिए हित रूप न होकर देश के लिए अभिशाप रूप बना हुआ है। यहां पर आप छिपी वाली गली में सेठ चांदमल जी श्वेताम्बर जैन के यहां ठहरे। आगरे की ओर से तथा देहली के ओर से आने वाले साधु

साध्वियों की आप अच्छी सेवा भक्ति करते हैं।

वृन्दावन से विहार कर आपश्री जैंतु, चौमा, छापर, कोसी, बनचरी, बांमणीखेड़ा, पलवल, बघोला, प्रथला, बल्लभगढ़, फरीदाबाद, बदरपुर आदि ग्राम नगरों को स्पर्शते हुए चिराग दिल्ली पधारे। मार्ग में अनेक स्थानों पर लाला इन्द्रसेन जी, मुन्शीलाल जी चम्पालाल जी, आदि दिल्ली के अनेक सज्जन महाराजश्री की सेवा में उपस्थित होते रहे। जिस रोज पलवल से विहार कर बघोला पधारे, तो दिल्ली शहर, सदर बाजार और सब्जी मण्डी के लगभग पच्चीस तीस भाई कारें ले महाराजश्री के दर्शनार्थ यहां पहुँच गये। महाराजश्री ने उन्हें धर्मोपदेश दिया, ये लोग सायंकाल वापिस दिल्ली लौट आये।

देहली की पुरानी राजधानी का सदर दरवाजा चिराग देहली है। यह दिल्ली से १२ मील की दूरी पर अवस्थित है। महाराजश्री विहार करते हुए यहां पधार गये तो दिल्ली सदर बाजार सब्जी मण्डी आदि के हजार डेढ़ हजार भाई बाई महाराजश्री के दर्शनार्थ यहां पहुंच गये। यहां पर विशाल पंडाल में आपके प्रवचन का प्रबन्ध किया गया। किन्तु स्थानीय और दिल्ली की जनता इस प्रकार उमड़-उमड़ कर आई कि यह पंडाल भी छोटा पड़ गया। इसलिए चारों तरफ की कनातें हटा दी गई, फिर मैदान खुला हो जाने से जनता आराम से आपके प्रवचन का लाभ लेने लगी। आपके आजके प्रवचन का मुख्य विषय था, जीवन क्या है? आप श्री ने इस व्याख्यान में इस विषय की ऐसे अनुपम और सुलझे हुए ढंग से व्याख्या की कि जनता मन्त्र मुग्ध हो गई। आपके स्वागत विषयक तथा अन्य शिक्षा सम्बन्धी अनेक कवियों की कविताएं सुनाई गई।

महरोली (कुतुबलाट) के शिष्टमण्डल ने महाराजश्री से अपना क्षेत्र स्पर्शने की आग्रह भरी विनती की। तदनुसार चार पांच दिन यहां विराजकर आप महरोली पधार गये। यहां दो दिन में और एक रात्रि में आपके तीन प्रवचन हुए। दिल्ली में लाला इन्द्रसेन, लाला कुन्जलाल जी आदि कितने ही भाई महरोली में महाराजश्री की सेवा में पहुंच गये। और उन्होंने देहली पधारने की विनती की।

आप श्री ने उसी दिन चार बजे के लगभग महरोली से विहार कर दिया। लाला इन्द्रसेन आदि कितने ही भाई आप श्री के साथ पैदल ही चल पड़े। लगभग एक घण्टे में आप वस्ती युसुफखां सराय में पहुंच गए। यहां पर दिगम्बर जैन भाइयों के मकान में ठहरे। इस मकान वाले सज्जन बहुत प्रेमी हैं, साधु साध्वी जब इधर से आते हैं तो उनका प्रायः आपके ही यहां ठहरना होता है। यहां पर भी रात्रि में महाराजश्री का एक प्रवचन हुआ। दूसरे दिन प्रातः यहां से विहार कर लेडी हार्डिङ्ग रोड़ के जैन कान्फ्रेंस भवन नई दिल्ली में विराज गये।

रविवार के दिन आपके सार्वजनिक व्याख्यान की सूचना बड़े-बड़े पोस्टरों और पंफलेटों के द्वारा दिल्ली निवासी जनता को दी गई।

धर्म और मजहब—

इसके पश्चात् आप श्री ने धर्म और मजहब इस विषय पर दस हजा व्यक्तियों के विराट जनसमुदाय में बड़े बुलन्द और प्रभावशाली शब्दों में प्रव चन करते हुए फरमाया कि धर्म और चीज है और मजहब और है। धा ध्रौव्य, नित्य, शाश्वत, अविनाशी, स्वतन्त्र ठोस तत्व है यह न बनता है न नष्ट होता है। धर्म भूतादि तीनों कालवर्ती हैं। मजहब बनने और बिगड़ने वाली चीज है। धर्म सत्य में है मजहब मत में, बुद्धि की कल्पना में है। इस विश्व में नये-नये अनेक मजहब अर्थात् मत आये और नष्ट हो गए। किन्तु धर्म ज्यों का त्यों विद्यमान है।

आपने आगे कहा, लोगों ने आज के युग में धर्म को मन बहलाने का साधन बना लिया है। उचित तो यह था कि हम अपने जीवन को धर्म के सांचे में ढालते, किन्तु ऐसा न कर धर्म को अपने विलासी जीवन के अनुरूप बना रहे हैं। मनुष्यों ने मति कल्पित अपनी-अपनी दीवारें खड़ी कर धर्म को घटाकाश मठाकाश के रूप में परिवर्तित कर दिया है। वास्तव में ऐसा होना देश समाज और राष्ट्र के लिए अभिशाप रूप है। इसी अभिशाप से भारत के टुकड़े-टुकड़े हो गये। धर्म मानव को परस्पर में मिलना सहानुभूति रखना और सहिष्णुता सिखाता है। और धर्म शून्य मजहब वैर, विरोध, फूट तथा स्वार्थपूर्ति का पाठ पढ़ाता है। इस प्रकार जब आपने धर्म और मजहब का पृथक्-पृथक् स्वरूप समझाया और इन दोनों में स्पष्ट अन्तर कर दिखाया, तो जनता सुन कर अत्यन्त आनन्दित हुई। यहां पर आप दस-बारह दिन विराजे, फिर देहली सदर के श्री संघ ने सदर पधारने की विनती की।

इस अवसर पर समूचे देहली श्री संघ की ओर से बड़े-बड़े पोस्टरों के द्वारा देहली नगर वासियों को सूचना दी गई कि—

समाज भूषण पंजाब केसरी प्रसिद्ध वक्ता

श्री १००८ मन्त्री श्री स्वामी प्रेमचन्द जी महाराज

अपनी शिष्य मण्डली सहित ३१-३-५७ रविवार को प्रातः आठ बजे नई देहली से चित्र गुप्त रोड व पहाड़ गंज थाना के मार्ग से सदर बाजार देहली पधार रहे हैं। अतः आप लोग उनके शानदार स्वागत में सम्मिलित होकर अपने धर्म प्रेम का परिचय दें।

इन्हीं पोस्टरों और विज्ञापनों के द्वारा जनता को यह भी सूचित किया गया कि उसी समय आते ही आपश्री का पहला जोरदार भाषण बस्ती हरफूलसिंह में होगा।

यह सूचना पाते ही जनता हजारों की संख्या में आपके स्वागतार्थ आई। अनेक प्रकार के जय घोषों व मंगल गानों से आकाश मंडल को गुंजाते हुए विशाल जन समुदाय के साथ यह मुनि मंडली उपर्युक्त निर्धारित राजमार्गों से होती हुई बस्ती हरफूलसिंह में निर्मित विशाल पंडाल में पहुंची।

यहाँ पर वयोवृद्ध श्री मागमलजी महाराज तथा श्री छोटे लालजी महाराज व साध्वी समुदाय भी पहुँच गया। कुछ सज्जनों के संक्षिप्त सामयिक भाषण और भजन आदि हुए।

पंडित श्री त्रिलोक मुनि जी तथा पंडित मुनि श्री सुशील कुमार जी ने संक्षिप्त रूप में भाषण दिये। तत्पश्चात् आपश्री का वास्तविक धर्म विषय पर जोरदार भाषण हुआ जिससे उपस्थित सब जनता प्रसन्न हुई। इस प्रकार यह कार्यवाही सानन्द सम्पन्न हुई। यहाँ से यह मुनिमण्डली सदर बाजार के स्थानक में पधार गई।

यहाँ पर आपके व्याख्यानों का प्रबन्ध सिद्धी गंज के मैदान में विशाल पंडाल बनाकर किया गया। चौदह दिन तक इस पंडाल में आपके भावपूर्ण प्रवचन होते रहे। जनता हजारों की संख्या में उपस्थित होकर इन प्रवचनों से लाभ उठाती रही।

देहली में महावीर जयन्ती—

देहली में सभी जैन सम्प्रदायों की ओर से सामूहिक रूप से श्री महावीर जयन्ती महोत्सव एक सप्ताह तक मनाया जाता है, जिनमें कभी सदर बाजार, कभी सब्जी मण्डी, कभी दरयागंज, कभी पहाड़गंज, कभी विनय नगर, इस प्रकार स्थान-स्थान पर जयन्ती महोत्सव मनाया जाता है जिनमें साधु मुनि-राजों के भाषण तथा अच्छे-अच्छे गृहस्थ विद्वानों के व्याख्यान व भगवान महा-वीर स्वामी के जीवन विषयक कविता आदि का कार्यक्रम रहता है। जयन्ती समारोह चालू सप्ताह में आप का एक सार्वजनिक भाषण लाल किले के पास बनाये गये पंडाल में हुआ जिसमें सात आठ हजार के लगभग जनता ने भाग लिया। और दूसरा प्रवचन सब्जी मण्डी के रामद्वारा मन्दिर के विशाल प्राङ्गण में हुआ। इन प्रवचनों में आपने भगवान महावीर स्वामी के पवित्र जीवन पर तथा उनके मौलिक सिद्धान्तों पर बड़े सुन्दर ढंग से प्रकाश डाला।

सब्जी मण्डी के प्रवचन में जनता इस प्रकार उमड़ कर आई कि व्याख्यान स्थान में जगह न मिलने के कारण बहुत से लोग बाजार में खड़े होकर प्रवचन का लाभ लेते रहे। सदर बाजार में आप पन्द्रह दिन विराजे। इसी बीच सब्जी मण्डी के भाइयों ने अपने यहां पधारने की विनती की अतः आप सदर से विहार कर सब्जी मण्डी पधारे गये।

यहाँ पर जैन उपाश्रय के साथ जैनसमाज ने जो जमीन गत वर्ष बीस हजार रुपये में ख़रीदी थी, उसमें बनाये गये पंडाल में आपके प्रवचन प्रारम्भ हुए। जैन जैनेतर धर्म प्रेमी स्त्री पुरुष, बड़ी संख्या में नित्यप्रति इन प्रवचनों में भाग लेने लगे। अपने-अपने प्रवचनों में माँस,अंडे, मछली आदि भक्षण करने का बड़े प्रभावशाली शब्दों में खंडन किया। और बतलाया कि मांसाहार मानव का भोजन नहीं है। मानव तो निरामिष भोजी है। माँस भक्षण से हृदय का दया भाव नष्ट हो जाता है। और इससे तमोगुणी वृत्ति बन जाती है। इतना ही नहीं मांस भक्षण से अनेक प्रकार के रोग शरीर में व्याप्त हो जाते

देहली चातुर्मास

(संवत् २०१४)

आपश्री जब आगरे में विराजमान थे, उसी समय सब्जी मण्डी देहली का एक शिष्ट मण्डल चातुर्मास की विनती करने के लिए आपकी सेवा में पहुंचा और चातुर्मास के लिए आग्रह भरी प्रार्थना की। तब महाराजश्री ने उसके उत्तर में फरमाया कि इस समय इतना ही कह सकता हूँ कि आप की विनती को प्रधानता दी जायगी।

तदनुसार आपने यहाँ आने पर पुनः की गई चातुर्मास की विनती स्वीकार कर ली। एक मास यहां विराजकर आप चांदनी चौक पधार गये। यहां कि जनता ने आप का बड़े समारोह के साथ स्वागत किया। यहां पर वयोवृद्ध श्री जग्गूमल जी महाराज वृद्धावस्था के कारण कई वरसों से विराजमान हैं। आपकी सेवा में व्याख्यानवाचस्पति प्रधान मन्त्री श्री मदन लालजी महाराज के सुशिष्य श्री सुदर्शन मुनि जी तथा सेवाभावी श्री विनोद मुनि जी विराजमान हैं।

श्री सुदर्शन मुनि जी एक बड़ अच्छे प्रभावशाली मनोहर व्याख्याता हैं। आपके यहां विराजने से जनता को धर्म-प्रेरणा खूब मिलती रहती है। श्री सुदर्शन मुनि जी का समाज पर अच्छा प्रभाव है। आपका विद्यानुराग भी आदर्श और अनुकरणीय है।

चांदनी चौक की बारादरी की विशाल खुली छत पर पंडाल बनाकर महाराज श्री के प्रवचन का प्रबन्ध किया गया। यहां पर भी आपके प्रवचनामृत का पान करने के लिए जनता उमड़-उमड़ कर आने लगी। यहां पर एक मास र्ण हो जाने से यहाँ से विहार कर आप फिर सदर बाजार पधार गये।

पैर में चोट आ जाने के कारण इस वार स्थानीय जनता को आप प्रवचनों का विशेष लाभ न दे सके।

पूज्य श्री सोहन लाल जी महाराज का निधन दिवस—

यहां पर स्वर्गीय बालब्रह्मचारी चारित्रचूडामणि घोरतपस्वी, शास्त्रवारिधि पूज्य श्री सोहनलाल जी महाराज का निधन अर्थात् स्वर्गारोहण दिवस डिप्टी गंज मैदान में बड़े समारोह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर हजारों नर-नारियों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया।

पूज्य श्री के जीवन के सम्बन्ध में कविता-पाठ भजन व्याख्यान आदि का आयोजन हुआ। बालक बालिकाओं के भजन के अनन्तर लाला कुन्ज लालजी जैन, मास्टर शादी लालजी जैन, लाला चैन लालजी जैन, आदि के भाषण हुए। तदनन्तर पं० मुनि श्री त्रिलोक मुनि जी महाराज का व्याख्यान हुआ। और पंडित मुनि श्री सुशील कुमार जी ने भी संक्षिप्त प्रवचन किया।

अन्त में महाराजश्री ने पूज्यश्री के पवित्र जीवन पर विशेष रूप से प्रभावशाली शब्दों में प्रवचन किया, जिसमें आपके पूज्यश्री के दीर्घकालीन तत्पश्चर्यामय जीवन शास्त्र ज्ञान, साथ ही साथ ज्योतिषज्ञान व चतुर्विध श्रीसंघ की सेवा आदि विषयों पर व्यापक प्रकाश डाला।

यह समारोह बड़ा ही प्रभावशाली रहा। दूसरे दिन प्रवचन कर फिर चातुर्मासार्थ सब्जीमण्डी पधार गये।

संवत्सरी महापर्व भी बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। पर्युषण महापर्व के अवसर पर इस पंडाल के अन्दर अतिवृष्टि के कारण निगोद (काई) और छोटी-छोटी घास उत्पन्न होने लगी। यह देखकर महाराज श्री के मन में विचार आया कि यह तो असंख्य तथा निगोद के अनन्त जीवों की हिंसा का कारण बन गया है। यदि यहाँ पर व्याख्यान होते रहे, तो इन वनस्पति कायिक जीवों की रक्षा नहीं हो सकेगी।

जब भाइयों को महाराजश्री का यह विचार ज्ञात हुआ तो आपके प्रवचनों का प्रबन्ध शोरा कोठी के विशाल प्रांगण में पंडाल बनाकर कर दिया गया। आज-कल इसी पंडाल में आपके प्रवचन चल रहे हैं।

आपश्री ने राज्य प्रश्रेणा सूत्र प्रारम्भ किया हुआ है जिसमें एक नास्तिक अनात्मवादी राजा परदेशी की पापमयी जीवनी महायोगी मुनि केशी कुमार के संसर्ग से किस प्रकार सुधरती है, इसका विवेचन करते हुए बताया गया है कि जहां पर राजा परदेशी ने महान् क्रूर पाप कर्मों से नरक जाने की तैयारी का सामान इकट्ठा कर रक्खा था, वहां पर एक आस्तिक आत्मवादी महान् तपस्वी केशी कुमार के संसर्ग से वह स्वर्ग का अधिकारी बन गया।

राजा परदेशी ने मुनि केशी कुमार से आत्मविषयक अनेक प्रश्न किये। उत्तर उन्होंने बड़े सुलझे हुए ढंग से इस प्रकार दिया, जिससे प्रभावित होकर राजा परदेशी नास्तिकता और अनात्मवाद के विचारों को त्याग कर सच्चा आस्तिक व आत्मवादी बन गया।

अन्ततः इस महायोगी के संगति का फल उसे यह हुआ कि वह स्वर्ग का अधिकारी बन गया। वहां से देव आयु पूर्ण कर विदेह क्षेत्र में मनुष्य का जन्म धारण कर वह मोक्ष में जायगा। यह है महापुरुषों की संगति व जीवन चरित्रों के पठन आदि का शुभ फल।